विख्यात फ्रांसीसी उपन्यास 'योज़ेन ग्रांदे' का अनुवाद

सूनाघर

लेखक

बाल्ज़ाक

अनुवादक

हंसराज 'रहबर'

प्रकाशक

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

६६, दरियागंज : दिल्ली

९६, दरियागंज, दिल्ली.

प्रथम संस्करण
दिसम्बर, १९५९

मूल्य
पांच रुपये

मुद्रक :
बालकृष्ण, एम० ए०
युगान्तर प्रेस, दिल्ली

लेखक-परिचय

सन् १७८६ की फ्रांसीसी क्रान्ति एक महान ऐतिहासिक घटना थी, जिसने दुनिया भर को हिला दिया था। वास्तव में यह राजनीतिक क्रान्ति औद्योगिक क्रान्ति का परिणाम थी, जिससे योरुप भर में सामंतवाद का अन्त और पूंजीवाद का प्रादुर्भाव हुआ, इसीलिए इस फ्रांसीसी क्रान्ति को बुर्जुवा क्रान्ति भी कहा जाता है। इस क्रान्ति के कारण सामाजिक व्यवस्था में इतने मूल परिवर्तन आये कि उन्नीसवीं शताब्दी का फ्रांस अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस से एकदम भिन्न हो गया। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप सम्राट्वादी तत्त्व—पुराने रईसों और जागीरदारों का प्रभुत्व समाप्त हुआ और उनका स्थान पूंजीवादी वर्ग ने ग्रहण किया और स्वभावत: पूंजीवाद के साथ-साथ नए सामाजिक तत्त्व—मज़दूर वर्ग और मध्यमवर्ग का प्रादुर्भाव हुआ और इन नए तत्त्वों ने राजनीति, दर्शन और साहित्य को नए ढंग से प्रभावित करना शुरू किया।

सामंतवादी सामाजिक व्यवस्था का नैतिक आधार धार्मिक मान्यताएं थीं अर्थात् इसकी संस्कृति, साहित्य और दर्शन की बुनियाद आदर्शवाद का सिद्धान्त था। लेकिन इस क्रान्ति के बाद सामंतवादी वर्ग के साथ उनके जीवन-दर्शन आदर्शवाद का भी ह्रास हुआ और उसका स्थान विज्ञान और भौतिकवाद ने ग्रहण किया। उन्नीसवीं सदी विज्ञान और आविष्कारों की सदी के नाम से प्रसिद्ध है और इस युग में विज्ञान के विकास और उन्नति का अधिकांश श्रेय फ्रांस को प्राप्त है। विज्ञान और भौतिकवादी विचारधारा के कारण ही साहित्य में पहले रोमांसवाद और

फिर यथार्थवाद का प्रादुर्भाव हुआ। कहना नहीं होगा कि इस युग में भौतिकवादी दर्शन और यथार्थवादी साहित्य की जितनी प्रगति हुई, उतनी योरुप के सारे देशों में भी नहीं हुई होगी। फ्रांस के डीडारो आदि महान विचारकों ने हेगल के द्वन्द्वात्मक आदर्शवाद की कड़ी आलोचना करके भौतिकवादी मानव विचारों पर वस्तुस्थिति का प्रभाव सिद्ध किया। बालज़ाक ने भी अपने उपन्यासों को इसी नई विचारधारा के प्रसार का साधन बनाया और अपने युग के समाज का यथार्थ विश्लेषण किया। बालज़ाक ने योंही हवा में लाठी नहीं घुमाई, उसने एक निश्चित विचारधारा और उद्देश्य के साथ यथार्थवादी साहित्य का निर्माण किया है और उसके उपन्यासों से क्रान्ति के बाद से सन् १८४० तक के फ्रांस का यथार्थ ऐतिहासिक चित्र उभरकर सामने आता है। यही कारण है कि यद्यपि फ्रांस ने स्टैंडल, विक्टर ह्यूगो, फ्लावेयर और ज़ोला जैसे महान उपन्यासकार उत्पन्न किये हैं, लेकिन बाल्ज़ाक इन सबसे महान है और उसकी गणना विश्व के तीन बड़े उपन्यासकारों में होती है।

होनोरे दे बालज़ाक का जन्म महान क्रान्ति के दस साल बाद अर्थात् १७९९ में तोर (Tours) में हुआ। इसी उथल-पुथल में उसका घराना किसान परिवार से एक मध्यवर्गी परिवार बन गया था। उसने पेरिस में शिक्षा प्राप्त की और शिक्षा-काल के जो अनुभव थे, वह उसने अपने शाहकार उपन्यास बूढ़ा गोरियो में प्रस्तुत किये हैं जो हिन्दी में 'खंडहर' के नाम से प्रकाशित हुआ है। शिक्षा समाप्त करके उसने लेखन-कार्य अपनाया। पहले-पहल उसने गाथिक पृष्ठभूमि पर ऐतिहासिक उपन्यास लिखे, जो समय की माँग के अनुसार नहीं थे; इसलिए चल नहीं सके। इस असफलता से हताश होकर बाल्ज़ाक एक टाइप फाउण्डरी और प्रेस में हिस्सेदार बन गया। व्यवसाय-कुशलता भी उसमें नहीं थी। तीस वर्ष की आयु में जब वह इस व्यवसाय से अलग हुआ तो उसपर कर्ज़ का इतना बोझ था, जिसे वह उमर भर नहीं उतार सका। इस असफलता के बावजूद इस कार्य में उसे जो अनुभव प्राप्त हुआ, उससे वह पूँजीवादी सामाजिक

व्यवस्था, विभिन्न वर्गों और उनके स्वभाव को समझने में सफल हुआ और जब इसके बाद दुबारा लिखना शुरू किया तो यह अनुभव उसके बड़े काम आया।

इस अनुभव के बाद जब उसने दुबारा लिखना शुरू किया तो सन् १८२९ में उसका जो उपन्यास प्रकाशित हुआ, उसे काफी सफलता प्राप्त हुई। इसमें क्रान्ति के दिनों में एक शाही विद्रोह की कहानी थी। इसके उपरान्त बाल्ज़ाक ने क्रान्ति के बाद फ्रांसीसी समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने की एक बृहद योजना स्थिर कर ली। सन् १८३४ में उसका उपन्यास बूढ़ा गोरियो प्रकाशित हुआ, जिसमें सामंती तत्त्वों को मिटते और नए बुद्धिजीवी वर्गों को उभरते दिखाया है। इस उपन्यास में बाल्ज़ाक ने अपनी पूर्ण साहित्यिक निष्ठा के साथ विज्ञान का समर्थन किया है और एक सहृदय और संवेदनशील नौजवान द्वारा अपने विज्ञान सम्बन्धी विचारों को आगे बढ़ाया है। वास्तव में यह एक ऐसे साधारण मानव की कहानी है, जो पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था में अपना व्यक्तित्व खो कर एक अकिंचन प्राणी बनकर रह गया है। बाल्ज़ाक की सहानुभूति इस अकिंचन प्राणी के साथ है। इसी सहानुभूति से उसने बूढ़े गोरियो को शेक्सपीयर के किंगलीयर जैसा अमर और महान पात्र बना दिया है।

बाल्ज़ाक इस समय जो उपन्यास लिख रहा था उन सबके लिए सिर्फ एक नाम "उन्नीसवीं सदी के लोक-व्यवहार का अध्ययन" (Studies of Nineteenth Century Manners) प्रयोग कर रहा था परन्तु सन् १८४२ तक यह योजना और परिपक्व हो गई और बाल्ज़ाक ने अपने उपन्यासों का पहला नाम बदलकर "दि ह्यूमन कॉमेडी" (The Human Comedy) कर दिया। तय यह हुआ कि उसने अब तक जितने उपन्यास लिखे हैं, उन सबका एक संकलन इस नाम से प्रकाशित हो और इस संग्रह के लिए लेखक ने अपनी प्रसिद्ध भूमिका लिखी, जिसमें उसने इस बात की व्याख्या की वह जो उपन्यास लिख रहा

है अथवा लिखना चाहता है, उनका नाम 'ह्यूमन कॉमेडी' रखना क्यों उचित है।

बाल्ज़ाक की योजना यह थी कि वह अपनी इन कृतियों में तीन-चार हज़ार पात्र प्रस्तुत करे और यह पात्र उस समय के समाज के प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक स्तर, प्रत्येक धंधे और प्रत्येक विचार-धारा के प्रतिनिधि हों ताकि इन उपन्यासों द्वारा उन्नीसवीं सदी के समूचे मानव इतिहास को समझने में मदद मिले और इनमें मानव-चरित्र का गहरा अध्ययन हो।

बाल्ज़ाक ने अपने उपन्यासों की जो योजना स्थिर की थी, सन् १८४५ में उनकी एक सूची भी प्रकाशित की थी। इस सूची के अनुसार उसका इरादा एक सौ बयालीस उपन्यास लिखने का था। अपने इस इरादे को व्यावहारिक रूप देने के लिए वह लगातार लिखता था और कई बार इतना व्यस्त रहता था कि हफ्तों और महीनों अपने मकान से बाहर नहीं निकलता था। इतने काम के बावजूद लेखक की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उसका मकान पेरिस की एक ग़रीब और गंदी वस्ती में था, जहाँ दिनभर हो-हल्ला, शोर और लड़ाई झगड़ा रहता था। यह शोर और हो-हल्ला लेखक के काम में बाधक होता था; इसलिए बाल्ज़ाक दिन को सोता और रात को जागता था; जागता देर तक रहे, नींद न आये, इसलिए वह ब्लैक काफी पीता था। इन परिस्थितियों और अधिक काम का उसके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि अपनी योजना स्थिर करने के पाँच साल बाद अर्थात् सन् १८५० में इस दुनिया से चल बसा और उसका एक सौ चवालीस उपन्यास लिखने का स्वप्न पूरा न हो सका।

फिर भी उसने बड़े-छोटे निन्यानवें उपन्यास लिखे, जिनमें उसने दो हज़ार विभिन्न पात्र प्रस्तुत किये। इन उपन्यासों में पैंतीस ऐतिहासिक दृष्टि से उच्चकोटि के माने जाते हैं और उनका संसार की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। इन उपन्यासों में बाल्ज़ाक ने समाज का जो विश्लेषण किया है वह इतना यथार्थ और वैज्ञानिक है कि मार्क्स

ने भी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है और अपनी विश्व-विख्यात पुस्तक कैपिटल (पूंजी) में उनसे उद्धरण दिये हैं।

'सूनाघर' को बाल्ज़ाक के इन उपन्यासों में एक विशेष स्थान प्राप्त है। फ्रांसीसी और अंग्रेज़ी में इस उपन्यास का नाम 'योजेन ग्रांदे' है जो उपन्यास की नायिका के नाम पर रखा गया है। बाल्ज़ाक आदि किसी भी महान लेखक के उपन्यास में कहानी को कुछ अधिक महत्व प्राप्त नहीं होता। कहानी के बिना यद्यपि पात्रों का विकास सम्भव नहीं है और उसके विना कलाकृति में रवानी और रोचकता भी पैदा नहीं होती, तथापि इन उपन्यासों में कहानी गौण होती है। वह लेखक के विचारों और जीवन-दर्शन को पाठक तक पहुंचाने का साधन मात्र है। इन उपन्यासों में मुख्य और महत्वपूर्ण तत्व सामाजिक आचार-व्यवहार और वर्ग-सम्बन्धों का विश्लेषण होता है। इसीसे इन्हें साहित्य और इतिहास में अमरत्व प्राप्त होता है।

बाल्ज़ाक के समय पुराने मानव-सम्बन्ध टूट रहे थे और पूंजीवादी मनोवृत्ति समाज पर अपना पंजा गहरा करती जा रही थी। 'सूने घर' में इस मानवता रहित पूंजीवादी आर्थिक मनोवृत्ति का सफल चित्रण हुआ है। उपन्यास का नायक एक प्रसिद्ध व्यापारी है। वह अंगूरों की काश्त करता और उनसे शराब बनाकर बेचता है। जितना नफा बढ़ता है, उतना ही उसका लोभ भी बढ़ता है। घर में सिर्फ तीन ही प्राणी हैं—वह खुद, पत्नी और उनकी एकमात्र संतान एक पुत्री। इतना धन होते हुए भी धन का खर्च कम से कम है और जो खर्च है, वह उसे और भी कम कर देना चाहता है। उसे पत्नी और पुत्री से और खुद अपने आप से तनिक भी प्रेम नहीं, है तो सिर्फ पैसे से। पैसे को बढ़ाना और उसे बार-बार गिनना ही उसके जीवन का एकमात्र मनोरंजन है। वह धन के अम्बार लगाकर और उनके दर्म्यान बैठकर प्रसन्न होता है। वास्तव में वह लोक-कथा का नायक मायादास है, जिसने हर चीज़ को छूकर सोने में बदलने का वरदान प्राप्त कर लिया है और इसी कारण उसके

लिए खाना-पीना हराम हो गया है।

बाल्ज़ाक ने अपने युग के आर्थिक जीवन का बहुत निकट से अध्ययन किया था; इसलिए छोटे-छोटे सजीव उदाहरण देकर उसने अपने नायक की कृपण-प्रवृत्ति को बहुत ही रोचक ढंग से चित्रित किया है। उसकी इस मनोवृत्ति के कारण पत्नी और पुत्री हमेशा दुःखी रहते हैं। इस मनोवृत्ति के कारण उनके घर में मानवता के सम्बन्धों का अभाव है और इसीसे भरा-पूरा घर सदा सूना दिखाई देता है। इस मनोवृत्ति के कारण धन के लोभी इस मायादास का पारिवारिक जीवन एक दुःखान्त कहानी बनकर रह जाता है। अन्तर यह है कि मायादास की लोक-कथा कल्पना पर आधारित है और बाल्ज़ाक का यह उपन्यास समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।

नवीन शाहदरा
९-१२-५९

—हंसराज 'रहबर'

कई देहाती बस्तियों के कुछ मकानों का दृश्य ऐसा भयावह होता है कि उनके सामने अंधेरे से अंधेरे मठ, निर्जन से निर्जन खंडहर और शुष्क से शुष्क मैदान भी कोई हकीकत नहीं रखते। शायद इस प्रकार के मकानों में इन तीनों स्थानों की विशेषतायें एकत्रित हो जाती हैं। मठों की असह्य नीरवता के साथ-साथ उनमें खंडहरों का-सा भय और वीरानों की-सी उदासी पायी जाती है। उनमें जीवन-चिह्नों का इतना अभाव होता है कि एक अजनबी यह समझने लगता है कि इनमें इंसान बिलकुल नहीं बसते। फिर भी अपरिचित पगों की चाप सुनकर कोई न कोई खिड़की में अवश्य आ खड़ा होता है। सहसा एक निर्जीव सा चेहरा नीचे झांकता है और यात्री को अत्यंत उपेक्षा और उदासीनता की दृष्टि से देखता है—ठीक उसी प्रकार जैसे कोई संन्यासी एक क्षण के लिये दुनिया पर नज़र डाल ले।

सोमूर के एक मकान के अगले भाग में ये सारी अप्रिय विशेषतायें मौजूद हैं। शहर के ऊपर के भाग में, जो पहाड़ी गली किले की ओर जाती है, यह उसके नुक्कड़ पर स्थित है। आजकल इस गली का प्रयोग बहुत कम होता है। यह गली सर्दियों में सर्द और गर्मियों में गर्म होती है और इसके कुछ हिस्सों में बहुत ही अंधेरा रहता है। इसके अलावा यह बेहद तंग और टेढ़ी-मेढ़ी है। इस गली के मकानों के इर्द-गिर्द विचित्र प्रकार का जो निस्तब्ध वातावरण है, उसका मस्तिष्क

पर असाधारण प्रभाव पड़ता है और आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ प्रत्येक पग-ध्वनि गूंज उठती है—जड़ से उखड़े हुए पत्थर, जो सदा साफ सुथरे और खुश्क होते हैं—हर गुजरने वाले के कदमों से बज उठते हैं। यह शहर का सब से पुराना भाग है और फसील से सटा हुआ है। यहाँ जो मकान हैं वे तीन सौ साल पहले बनाये गये थे। यद्यपि वे लकड़ी के बने हुए हैं, फिर भी ठोस और मज़बूत हैं। हर मकान की अपनी-अपनी विशेषता है, शायद इसीलिये शहर का यह भाग सबसे अधिक दिलचस्प है और इसीलिये कलाकार और प्राचीन काल की वस्तुओं का संग्रह करने वाले यहां अकसर आते रहते हैं।

यह सम्भव नहीं है कि कोई व्यक्ति इधर आये और एक क्षण ठहर कर इन मकानों को आश्चर्य और विस्मय की दृष्टि से न देखे। इनकी निचली मंजिलों के ऊपर वाले भाग में उभरे हुए बड़े-बड़े शहतीरों पर अजीब-अजीब शक्लें बनी हुई हैं। कहीं-कहीं इन शहतीरों को मौसम के प्रहारों से बचाने के लिए पत्थर की तख्तियां-सी लगा दी गई हैं। इन मकानों की जर्जर दीवारों के इर्द-गिर्द नीले मद्धम रंग की रेखाएं दिखाई देती हैं और फिर इन सब पर विचित्र प्रकार की ढलवां छतें हैं, जो पुरानी हो जाने के कारण झुक चली हैं। छतों के ऊपर लकड़ी की जो तख्तियाँ बिछी हुई हैं, बरसों की धूप और वर्षा से वे चटख गई हैं। कहीं-कहीं खुदाई का बढ़िया काम भी किया हुआ है, यद्यपि धुंधला पड़ जाने से वह कुछ कम ही दिखाई देता है। खिड़कियों की पुरानी दहलीजों में सुर्ख फूलदान भी रखे नज़र आते हैं, जिनमें प्राय: निर्धन स्त्रियाँ गुलाब अथवा कई दूसरे फूल लगा देती हैं। मगर यह दहलीजें ऐसी खस्ता हैं कि लगता है कि इन गमलों का बोझ भी नहीं सहार सकेंगी। इसी गली में तनिक आगे जाकर कुछ अच्छे मकान भी मिलते हैं। उनके दरवाज़ों पर बड़ी-बड़ी कीलें जड़ी हुई हैं। उनके निर्माण में हमारे पूर्वजों ने अपनी कला को व्यक्त किया है। यहाँ उन्होंने चित्रों की लिखावट में अपने युग की भावनाओं को अंकित कर

दिया है। उस समय प्रत्येक व्यक्ति उनका मतलब समझ लेता था; लेकिन अब उनका अर्थ कोई भी समझ नहीं पाता और आगे भी समझ नहीं सकेगा। कहीं उन चित्र-लिखावटों में किसी प्रोटेस्टेंट ने अपनी मान्यताओं को घोषित किया है, कहीं सम्राट् हेनरी चतुर्थ को गालियाँ दी गई हैं और कहीं किसी साधारण नागरिक ने थोड़े दिनों के लिये कोई पद पा जाने का स्मारक स्थापित किया है। अगर हम उन लिखावटों को पढ़ सकें तो पुराने घरों पर फ्रांस का पूरा इतिहास लिखा हुआ मिल सकता है।

यहीं एक टूटा-फूटा लकड़ी का बना हुआ छोटा-सा घर है, जिस पर भद्दे प्रकार की कारीगरी का प्रदर्शन किया गया है। इसकी दीवार पर कारीगर ने अपने पेशे का चिह्न अर्थात् रंदा भी बना दिया है। इसी के बराबर में किसी नवाब का महल है, जिसका गोल मेहराबदार फाटक बहुत बड़ा है। उसके ऊपर खुदा हुआ पारिवारिक चिह्न कुछ-कुछ अब भी दिखाई देता है, यद्यपि सन् १७८९ से जो क्रांतियाँ होती रही हैं, जिन्होंने देश को हिला दिया, उनमें से किसी एक में यह चिह्न भी विकृत कर दिया गया है।

इस गली की निचली मंजिल में लोग कारोबार करते हैं। नीचे छतों वाले कमरे अंधेरे और गुफाओं जैसे हैं और वैसे भी उनमें किसी प्रकार की शीशेदार अलमारियाँ और खिड़कियाँ नहीं है। बाहर या भीतर कहीं भी सामान को सजा कर रखने का प्रयत्न नहीं किया जाता। आप इन्हें और कुछ भी कहें, लेकिन दुकानें नहीं कह सकते। मध्यकाल के प्रेमियों के निकट ये हमारे पूर्वजों के कारखाने हैं, जिनमें प्राचीन काल की सरलता और सादगी पाई जाती है। इनके दरवाज़े बहुत मजबूत हैं जिनमें लोहे की सलाखें लगी हुई हैं। फिर उनके दो भाग हैं। ऊपर का आधा भाग दिन के समय खोल दिया जाता है और नीचे का आधा भाग जिसमें घंटी लगी हुई है सतत खुलता और बंद होता रहता है। इन अंधेरी, सीली और तंग गुफाओं में हवा और रोशनी या तो ऊपर का

दरवाज़ा खुल जाने से आती है या फिर दुकान के सामने की ओर नीची छत और दीवार के बीच में जो स्थान छोड़ दिया गया है, उसमें से आती है। यह आगे की दीवार कुहनी तक ऊँची है जो ऊँची दीवार, फर्श और छत के दरम्यान आधा स्थान घेरे हुए है। खिड़कियों के बजाय लकड़ी के भारी-भारी जो तख्ते लोहे के कब्ज़ों द्वारा दीवार में लगे हुए रहते हैं रात के समय उन्हें गिरा दिया जाता है और सुबह उठा लिया जाता है।

यही दीवार गाहकों को चीजें दिखाने के लिये मेज़ का काम देती है। इस व्यापार में झूठ या कपट का लेश मात्र भी नहीं होता। आपको जो चीज जैसी दिखाई जाती है, वैसी ही दी जाती है। आपको नमक अथवा नमकीन मछली के दो टीन पड़े हुए दिखाई देंगे। बादबानों के लिए कपड़े के दो तीन गट्ठे अथवा सुतली का ढेर, कुछ तांबें के तार कड़ियों में टंगे हुए, टीनसाज़ों के लिए कुछ छल्ले दीवार पर लटके हुए अथवा अलमारियों में कपड़े के एक-दो थान रखे हुए। दुकान में घुसते ही आप को एक साफ-सुथरी लड़की बैठी मिलेगी। बिना आस्तीन के फ्राक से उसकी लाल-लाल बाहें दिखाई देंगी, मुख से जवानी की ताज़गी और सुन्दरता झलकती होगी और गले में सफेद रूमाल पिन से बंधा होगा। आपको देखते ही वह अपनी ऊन-सलाइयाँ छोड़ अपनी माता या पिता को बुलाने दौड़ेगी, जो आकर आपकी इच्छित वस्तु आपके सामने लाकर रख देगा। चाहे यह वस्तु दो हजार फ्रांक की हो अथवा दो पैसे की। बेचने का ढंग एक-सा ही होगा और फिर लेने-देने का अंतिम निर्णय बेचने वाले के स्वभाव पर भी निर्भर होगा, जो या तो विनम्र और शिष्ट होगा या फिर चिड़चिड़ा।

कनस्तरों का व्यापारी अपने घर के दरवाज़े पर बैठा दिखाई देगा, जो अंगूठे नचा-नचाकर अपने पड़ोसी से बातें कर रहा होगा। यों देखने तो लगेगा कि उसके पास टूटी-फूटी अलमारियों में रखी हुई बोतलों और कुछ-कुछ पतली-पतली लकड़ियों के गट्ठों के अतिरिक्त और कुछ नहीं

है लेकिन घाट पर उसका लकड़ी का बहुत बड़ा गोदाम है; जहाँ से आँजे के तमाम टीनसाज अपनी जरूरत की चीजें खरीदते हैं। वह खूब जानता है कि छोटे-से-छोटे टीन में कितनी शराब समा सकती है और अंगूर की फसल अच्छी हो तो वह कितने कनस्तर बेच सकेगा। अगर कुछ दिन झुलसा देने वाली धूप पड़ जाय तो उसके वारे न्यारे हो जाते हैं। लेकिन गर्मियों में वर्षा का होना, उसके लिये बहुत ही हानिकारक सिद्ध होता है क्योंकि एक ही दिन में कनस्तर का मूल्य ग्यारह फ्रांक के बजाय ६ फ्रांक रह जाता है।

तोरेन की तरह इस शहर का व्यापार भी मौसम की तब्दीलियों पर निर्भर है। जागीरदार, अंगूर के कृषक, लकड़ी के व्यापारी, टीनसाज, सराय के मालिक और इस तरह के सभी लोग धूप निकलने की प्रतीक्षा किया करते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं, जो रात को यह डर दिल में लेकर न सोता हो कि कहीं सुबह उठकर रात को कोहरा पड़ने की खबर न मिले। अगर वे वर्षा के भय से मुक्त होते हैं तो हवा चलने अथवा अनावृष्टि की चिंता में सूखने लगते हैं। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि गर्मी पड़े तो उसकी इच्छा के अनुसार और सर्दी पड़े तो उसकी इच्छा के अनुसार। सारांश यह कि प्राकृतिक शक्तियों और व्यापारी हितों में सदा ठनी रहती है। बेरोमीटर के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ चेहरों पर हर्ष या विषाद के चिह्न उत्पन्न होते रहते हैं। सोमूर की पुरानी गली में कई बार एक कोने से दूसरे कोने तक यह शब्द मुखरित हो उठते हैं—"मौसम बहुत अच्छा है।" या फिर यह वाक्य दोहराया जाता है, "यह मेंह तो कंचन बरसा रहा है।" यह अलंकार मात्र नहीं। उन्हें धूप और मेंह के मूल्य का पूर्ण ज्ञान है और वे मौसम को देख मन ही मन लाभ और हानि का हिसाब लगाते रहते हैं। सोमूर की इस गली के लोग अपने आप गर्मी के मौसम में इतवार को बारह बजे बाद के एक धेले का लेन-देन नहीं कर सकते। हर एक के पास थोड़ी-बहुत जमीन है और अंगूरों का बागीचा भी इसलिये वे देहात में छुट्टी मनाने चले जाते हैं।

सब लोग एक ही वातावरण में रहते हैं और लाभ हानि मौसम पर निर्भर है, इसलिये एक के व्यापार का रहस्य दूसरे से छिपा नहीं रहता। व्यापार तो व्यापार किसी की कोई भी बात दूसरे से छिपी नहीं रहती। वे एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानते हैं। उन्हें मालूम है कि कोई कहां आता-जाता है, क्या खरीदता और क्या बेचता है, उसे कितना नफा या नुकसान हुआ है। इसलिये लोग बारह घण्टों में से दस घंटे छोटी-छोटी टोलियाँ बनाकर अपने पड़ोसी के व्यापार-व्यवहार की चर्चा करते हैं। पत्नी तीतर खरीदती है तो पड़ोसी उसके पति से पूछते हैं कि तीतर कैसा पका था। यों ही कोई रमणी मुंह खिड़की से बाहर निकालती है तो सब की निगाहें एक साथ उस पर पड़ती हैं। देखने को तो यह मकान सूने, अंधेरे और रहस्यमय लगते हैं, लेकिन किसी की कोई भी बात दूसरे से ढकी-छिपी नहीं रहती। हर आदमी यह जानता है कि दूसरा इस समय क्या सोच रहा है।

जीवन प्रायः खुली हवा में व्यतीत होता है। लोग अपने मकानों की सीढ़ियों पर बैठे रहते हैं। वहीं नाश्ता करते हैं और अकसर भोजन भी वहीं बैठे-बैठे कर लेते हैं। छोटे-मोटे पारिवारिक झगड़ों का फैसला भी ड्योढ़ी में ही होता है। प्रत्येक राही का बड़े ध्यान से निरीक्षण होता है। निरीक्षण ही से पीछा नहीं छूट जाता, हर आने वाले पर हर दहलीज़ से सवालों की बौछार होती है। ये लोग सवाल करने में बड़े तेज़ हैं। अगर इन सवालों को जमा किया जाय, तो लतीफों का एक अच्छा संग्रह तैयार हो सकता है। यही कारण है कि आँजे के जो बासी तनिक बुद्धिमान हैं और फब्ती कसने में निपुण हैं, उन्हें 'गप्पी' की उपाधि दी जाती है।

इस पुराने शहर के सब अच्छे-अच्छे मकान जिनमें किसी समय इलाके के रईस रहते थे, इस गली के ऊपर वाले भाग में स्थित हैं। इन्हीं में वह उदास-सा मकान भी शामिल है, जिसमें वह सारी घटनाएं घटित हुई, जो इस कहानी में बयान की गई हैं। ये मकान उस जमाने में बनाये

गये थे, जब सीधे-सादे लोग सीधे-सादे ढंग से जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन आधुनिक फ्रांस उस सादगी से दिन-दिन दूर होता चला जा रहा है। इस टेढ़ी-मेढ़ी विचित्र गली में चलते-चलते आपको बहुत-सी वस्तुएं ऐसी मिलेंगी, जिनसे मध्यकाल की स्मृतियाँ मस्तिष्क में उभर आयेंगी और आप अवचेतन रूप से सपनों में उलझकर रह जायेंगे। आखिर काफी आगे चलकर आप एक अंधेरे कोने में पहुंच जायेंगे। यहाँ आपको मोसियो ग्रांदे के घर का दरवाजा दिखाई देगा। हां, मोसियो ग्रांदे के घर का! आपके लिये यह अंदाज लगाना सम्भव नहीं कि इन शब्दों से इस इलाके के लोगों के मस्तिष्क में क्या-क्या विचार उत्पन्न होते हैं। इसलिये बेहतर यही होगा कि मोसियो ग्रांदे की जीवन-कहानी सुना दी जाय।

मोसियो ग्रांदे को सोमूर में एक विशेष प्रकार की ख्याति प्राप्त है। उसके प्रभाव और कारणों का पूर्ण रूप से अनुमान लगाना उन लोगों के लिए सम्भव नहीं है, जो कुछ दिनों इस इलाके के देहात में न रहे हों। दो चार बड़े-बूढ़े अभी जीवित है, जिन्हें पहले का जमाना याद है। वे मोसियो ग्रांदे को "ग्रांदे महाशय" कहकर पुकारा करते थे। लेकिन ऐसे लोगों की तादाद कम है और वे भी प्रत्येक वर्ष बड़ी तेज़ी के साथ इस संसार से उठते जा रहे हैं।

सन् १७८९ में ग्रांदे बहुत बड़ा टीनसाज़ था। उसका कारोबार खूब चल रहा था। वह लिखना-पढ़ना जानता था इसलिये सारा हिसाब-किताब खुद करता था। जब सोमूर शहर के आस-पास गिर्जे की जमीनें फ्रांसीसी जनतन्त्र ने अपने कब्ज़े में कर लीं और उन्हें नीलाम किया, तो उस समय टीनसाज़ की उम्र चालीस साल थी और उन्हीं दिनों उसने लकड़ी के एक धनी व्यापारी की बेटी से विवाह किया था; उसके पास अपना भी बहुत-सा धन था। इसके अतिरिक्त पत्नी का दहेज मिला था अतः वह जमीन खरीदने पहुंचा। जो अफसर नीलाम पर नियुक्त था, उसे ग्रांदे के ससुर ने दो सौ लूई दिये। उसने इसके बदले टीनसाज़ को अंगूर के

बेहतरीन खेत, एक पुराना गिरजा और जमीन के कुछ टुकड़े दे दिये। यद्यपि प्राप्त करने का ढंग अनैतिकतापूर्ण था; लेकिन वैधानिक रूप से वह अब इतनी बड़ी सम्पत्ति का मालिक था।

सोमूर के वासियों को क्रांति से तनिक भी सहानुभूति नहीं थी। मोसियो ग्रांदे को बड़ा साहसी, देशभक्त, जनतन्त्रवादी और प्रगतिशील विचारों का व्यक्ति समझा जाता था, जबकि सत्य यह था कि टीनसाज़ को अपने अंगूर के खेतों के अतिरिक्त किसी बात से कोई सरोकार नहीं था। सोमूर के जिले में उसे सरकार का प्रतिनिधि नियुक्त किया गया। और उसका प्रभाव राजनीतिक और व्यापारिक दोनों दृष्टियों से लाभदायक सिद्ध हुआ। राजनीतिक तौर पर उसने पुराने रईसों से भी मित्रता बनाये रखी और इस बात का प्रयत्न किया कि जो सम्राटवादी भाग गये थे उनकी जमीनें भी बिकने न पायें। व्यापार के सिलसिले में उसने जनतन्त्र की सेनाओं को दो हजार बड़े कनस्तर सफेद शराब देने का ठेका ले लिया और इसके बदले में अत्यन्त उपजाऊ चरागाहें प्राप्त कीं, जो देवदासियों के एक मठ की सम्पत्ति थीं और जिन्हें पहले नीलाम में बिकने से बचा लिया गया था।

जनतन्त्र के दिनों में ग्रांदे शहर का मेयर बन गया। उसने जनता के साथ अच्छी निभाई और अपने लिए बहुत कुछ कर लिया। जब नेपोलियन बादशाह बना तो वह मोसियो ग्रांदे बन गया। लेकिन उसे अब भी जनतन्त्रवादी समझा जाता था और नेपोलियन को जनतंत्रवादी बिल्कुल पसन्द नहीं थे। इसलिये उसकी जगह एक बहुत बड़े पुराने रईस को मेयर बना दिया गया, जिसे नवाब की उपाधि मिलने की भी आशा थी। मोसियो ग्रांदे को इस पद के छिन जाने का ज़रा भी अफसोस न हुआ। अपने शासनकाल में उसने शहर की काफी सेवा की थी और कई सुन्दर सड़कें बनवाई थीं, जो निस्सन्देह उसकी जमीनों के पास से होकर गुजरती थीं। उसे अपने मकानों और जमीनों पर जो टैक्स देना पड़ता था, वह कुछ अधिक नहीं था। इसलिये पद की जिम्मेदारियों से छुट्टी

पाकर उसने अंगूरों की काश्त पर अधिक परिश्रम करना शुरू कर दिया, जिससे उसके खेतों में उत्तम प्रकार के अंगूर पैदा होने लगे। 'लेजन आफ आनर' के पदक पर भी उसका काफी अधिकार था और आखिर सन् १८०६ में वह उसे मिल भी गया।

उस समय मोसियो ग्रांदे की अवस्था सत्तावन वर्ष थी। और उसकी पत्नी की छत्तीस वर्ष के लगभग थी। और उनकी एकमात्र संतान सरल और निरीह एक दस साल की बच्ची थी। शायद दैव को उसका पद छूट जाने की पूर्ति करना अभिप्रेत था क्योंकि उसी साल वह तीन जायदादों का वारिस बन गया, जिनकी आमदनी के बारे में कल्पनाएं ही होती रहीं, क्योंकि ठीक विवरण कहीं से न मिल सका। इनमें से पहली तो उसे मादाम दे लाॅ गोदीनियर की मृत्यु पर मिली, जो मादाम ग्रांदे की मां थी। वह बरतेलियर कुल से सम्बन्ध रखती थीं। कुछ दिन बाद उसके पिता मोसियो दे ला बरतेलियर का भी देहान्त हो गया। तीसरी मृत्यु मादाम जांतिले की हुई, जो माँ के रिश्ते से मोसियो ग्रांदे की नानी होती थी। बूढ़े मोसियो दे ला बरतेलियर का खयाल था कि किसी काम में पैसा लगाना फेंक देने के बराबर है। अपने रुपये पर अधिक से अधिक सूद लेकर भी उसे इतना आनन्द प्राप्त न होता, जितना अपने अर्जित किये हुए सोने के ढेर को देखकर होता था। इसलिये सोमूर के मेयर ने जायदाद की कीमत उसकी वार्षिक आय से निश्चित की। हम समता के कितने ही पक्षपाती हों लेकिन धन और सम्पत्ति से जो विषमता उत्पन्न होती है, उसे मिटाया नही जा सकता। मोसियो ग्रांदे को भी अब रईसों में गिना जाने लगा। वह जिले भर में सबसे अधिक टैक्स देता था।

अब वह सौ एकड़ भूमि में अंगूर बोया करता था। फसल अच्छी होती तो कोई सात-आठ सौ कनस्तर हो जाती थी। उसके तेरह छोटे खेत थे, एक पुराना गिरजा था (बचत के ख्याल से उसने खिड़कियों में ईंटें लगा दी थीं, ताकि सुन्दर शीशे और सजावट की दूसरी वस्तुयें सुरक्षित

रह सकें) इसके अलावा सत्ताईस एकड़ की चरागाह थी, जिसमें सन् १७९३ के बोये हुए पोपलर के पेड़ हर साल बढ़ते जा रहे थे। और फिर जिस घर में वह रहता था, वह भी उसकी अपनी सम्पत्ति था। उसकी समृद्धि के ये तीन साधन तो प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते थे। उसकी पूंजी क्या थी, इसकी मात्रा का एक अस्पष्ट-सा अनुमान दो ही व्यक्ति कर सकते थे। उनमें एक सरकारी वकील मोसियो क्रोशो था, क्योंकि मोसियो ग्रांदे जब कभी किसी काम में रुपया लगाता तो उसके लिये आवश्यक कार्रवाई क्रोशो ही करता। दूसरा व्यक्ति शहर का सबसे धनी साहूकार मोसियो दे ग्रासीं था, जिसने मोसियो ग्रांदे के बहुत से ऐसे कार्य सम्पन्न किये थे, जिनका सोमूर में किसी को कुछ पता नहीं था। यद्यपि बूढ़ा क्रोशो और मोसियो ग्रासीं दोनों ही बड़े सतर्क और गम्भीर थे, और कोई भी रहस्य पचा सकते थे, जोकि व्यापार की दृष्टि से अत्यावश्यक भी है, किन्तु वे मोसियो ग्रांदे को इतने आदर और सम्मान से सम्बोधित करते थे कि लोग सहज में अनुमान लगा सकते थे कि उनके पूर्व मेयर के पास अतुल धन है, तभी तो उनकी इतनी खुशामद की जा रही है।

सोमूर भर में कोई व्यक्ति ऐसा न था, जिसे यह विश्वास न हो कि मोसियो ग्रांदे ने एक गुप्त स्थान पर ढेरों अशरफियाँ छिपा रखी हैं और वह हर रात सोने से पूर्व इस अतुल ढेर को टकटकी लगाये देखा करता है और खुशी से फूला नहीं समाता। सोमूर में वही एक व्यक्ति न था, जिसे सोने से प्यार हो, इसलिये धन के बहुत से प्रेमी उसकी आँखों को देखने से ही इस बात के सत्य होने का विश्वास कर लेते थे, क्योंकि उन का कहना था कि उसकी आँखों में जो पीली चमक है, वह सिर्फ सुनहरी सिक्कों ही से पैदा हो सकती है, जिन्हें वह घंटों बैठा घूरता रहता था। और फिर यही एक प्रमाण न था। बहुत-सी छोटी-छोटी और भी बातें थीं, जो उसकी लोभी मनोवृत्ति को व्यक्त करती थीं और उस जैसे धन के पुजारियों की तीक्ष्ण दृष्टि से छिपी नहीं रहती थीं। वास्तव में जो

व्यक्ति अपने रुपये पर बहुत अधिक सूद लेता हो, उसकी आँखों में लोमड़ी की-सी धूर्तता झलकने लगती है, और वह धीरे-धीरे एक जुवारी, विलासी और दरबारी की आँखों के सदृश सुकड़ जाती हैं। बात यह है कि रहस्यमय धार्मिक सम्प्रदायों की भांति भावनाओं के भी कुछ अपने गुप्त संकेत होते हैं और इन संकेतों को समान स्वभाव के व्यक्ति सहज ही में समझ लेते हैं।

खैर, मोसियो ग्रांदे को उस इलाके में बड़े आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था और वह इसका अधिकारी भी था, क्योंकि उसने आजीवन किसी से एक पैसा भी उधार नहीं लिया था। और फिर यह टीनसाज़ और अंगूरों का कृषक इतना बुद्धिमान भी था कि ज्योतिषियों की भाँति उसे पहले ही से मालूम होता था कि अंगूर की कौन सी फसल पर सिर्फ पाँच सौ कनस्तर शराब बेचना काफी होगा और कब एक हजार कनस्तर तैयार रखना चाहिए। उसके अनुमान कभी गलत न निकलते थे। और जब कनस्तर इतने महंगे हो जाते कि उनका मूल्य उनमें डाली जाने वाली शराब से भी अधिक होता तो उसके पास खाली कनस्तरों का अम्बार लग जाता। वह अपनी अंगूरों की फसल कोठरियों में जमा कर रखता और इन्तजार में रहता। कई छोटे-मोटे कृषक अपनी फसल आधे-पौने दाम मिलने पर ही बेच डालते; लेकिन उसकी शराब सैंकड़ों फ्रांक में बिकती। इसी दूरदर्शिता के कारण उसकी सन् १८११ की फसल जो उसने भाव चढ़ जाने के समय बेची थी, दो लाख चालीस हजार लिवर में बिकी थी।

अगर आमदनी और खर्च को देखा जाये तो वह चीते और अजगर की विशेषताओं का सम्मिश्रण था। वह धरती पर बहुत नीचे झुका अपने शिकार की प्रतीक्षा करता रहता और समुचित अवसर मिलते ही नि:संकोच झपट पड़ता। तब उसके बटुवे के जबड़े खुलते और वह सिक्कों का ढेर निगल जाता। फिर वह एक रेंगने वाले जीव के समान उसे पचाने के लिए बैठा सुस्ताया करता। सांप की भांति उसके स्वभाव में भी

अत्यन्त भावशून्यता और व्यवस्था मौजूद थी। और उसके व्यापार के समय अजीव थे। जव ग्रांदे सामने से गुजरता तो लोग उसकी प्रशंसा किये बिना न रह सकते। उनकी प्रशंसा में भय और आदर का सम्मिश्रण होता। उसकी शेर की-सी पकड़ में इस्पात की कठोरता थी और उसके पंजे नोकीले और तेज़ थे। सोमूर भर में कोई व्यक्ति ऐसा न था, जिसका उससे वास्ता न पड़ा हो। उदाहरण के किए कोई जमीन खरीदने का इच्छुक होता तो मोसियो क्रोशो उसे ग्यारह प्रतिशत सूद पर कर्ज दिला देता इसी प्रकार किसी दूसरे जरूरतमंद का तमस्सुक मोसियो दे ग्रासीं भुनवा देता लेकिन ऐसे दर पर कि उस बेचारे का दीवाला निकल जाता।

अधिक दिन न बीतने पाते थे कि किसी न किसी सिलसिले में ग्रांदे का जिक्र अवश्य छिड़ जाता, चाहे यह वार्तालाप शाम को किसी के घर में होता हो अथवा शहर के किसी कोने में गप्पे हांकी जा रही हों। उनमें कुछ लोग ऐसे भी थे जो इस बूढ़े के धन-दौलत पर अपना देशवासी होने के नाते गर्व करते थे। उदाहरण के लिए सराय के मालिक अथवा व्यापारी बाहर से आने वालों को बड़े आत्म-संतोष के साथ बताते—"साहब, हमारे यहाँ कुछ लोग तो लखपती हैं; लेकिन ग्रांदे एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे अपने धन का खुद भी सही अंदाज़ा नहीं है।"

सन् १८१६ में सोमूर के कुछ बुद्धिजीवियों ने टीनसाज़ की भूमि-सम्पत्ति के मूल्य का अनुमान कोई चालीस लाख लगाया; लेकिन उनका ख्याल था कि सन् १७९३ से सन् १८१७ तक हर फसल पर उसकी आमदनी एक लाख वार्षिक के लगभग हुई होगी। इसलिये अब ग्रांदे के पास भूमि के मूल्य के बराबर ही रुपया जमा होगा। जब कभी ताश खेलते हुए अथवा अंगूर की फसल की बातें करते हुए ग्रांदे का नाम आ जाता, तो लोग अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करते हुए कहते—"किस का जिक्र है? बुड्ढे ग्रांदे का?....अजी उसके पास तो अवश्य पचास-साठ लाख की रक़म होगी।"

"ओह, तुम तो मुझसे भी अधिक चतुर निकले। मुझे तो आज तक यह अंदाजा नहीं हो सका कि उसके पास कितना धन है।" अगर मोसियो क्रोशो अथवा मोसियो ग्रासीं यह बात सुन लेते तो इसका यही उत्तर देते। अगर कोई पेरिस से आने वाला वहाँ के किसी करोड़पति का जिक्र करता तो सोमूर के वासी पूछते—"क्या वे लोग इतने धनी हैं जितने मोसियो ग्रांदे ?" और अगर पेरिस वाला सकारात्मक उत्तर देता तो ये लोग इस प्रकार एक दूसरे की ओर देखते और सिर झटकते जैसे उन्हें विश्वास न हो रहा हो।

मोसियो ग्रांदे का यह असीम धन भी एक सुनहला आवरण बन गया था, जो अपने स्वामी और उसके प्रत्येक कृत्य को ढांपे रहता था। एक जमाना ऐसा था कि उसके रहन-सहन के विचित्र ढंग को लेकर लोग परिहास किया करते थे लेकिन शीघ्र ही इस परिहास का अन्त हो गया और ग्रांदे उसी ढंग से जीवन व्यतीत करता रहा। अब हालत यह थी कि लोग उसे आदर्श व्यक्ति मानते थे और उसकी तनिक-सी बात को भी बड़ा महत्त्व प्रदान करते थे। उसके वाक्य, उसके वस्त्र, उसके संकेत और आँखें झपकने का ढंग आदि सब बातों का इतनी सावधानी से अध्ययन किया जाता था, जैसे कोई वैज्ञानिक जंगली पशुओं की प्रवृत्तियों का निरीक्षण करता है और इन संकेतों में लोग मूक और असीम बुद्धि का कोई न कोई लक्षण खोज निकालते थे।

"इस बार सख्त सर्दी पड़ेगी।" वे सब कहते, "बुड्ढे ग्रांदे ने अपने समूर के दस्ताने पहन लिये हैं। अब हमें अंगूर इकट्ठे कर लेने चाहिये।" अथवा "ग्रांदे बहुत से कनस्तर जमा कर रहा है। मालूम होता है इस साल शराब अधिक होगी।"

मोसियो ग्रांदे ने कभी भी डबल रोटी अथवा गोश्त बाजार से नहीं खरीदा था। उसके लगान का कुछ भाग जिस की शकल में अदा किया जाता और प्रत्येक सप्ताह उसके कृषक मुर्गियाँ, अंडे, मक्खन और गेहूँ इतनी मात्रा में लेकर आते कि घर भर की ज़रूरतों के लिए ये वस्तुयें

काफी हो जातीं। ग्रांदे की एक पनचक्की भी थी और चक्की वाला किराया अदा करने के अतिरिक्त घर आकर अनाज ले जाता और पीसकर दे जाता। घर की नौकरानी 'लम्बं नानों' हर इतवार की सुबह को आठ दिनों के लिए डबलरोटी बनाकर रख लेती थी। यद्यपि अब वह ऐसी जवान न रही थी जैसी शुरू में थी। दूसरे किरायेदार सब्जी बेचते थे। ग्रांदे ने उनसे तय कर रखा था कि वे ताज़ी सब्जियां दे जाया करेंगे। फलों की भी कोई कमी न थी, बल्कि वह उनका कुछ भाग बाज़ार में बेच दिया करता था। जलाने की लकड़ी उसके बाड़ों में से इकट्ठी कर ली जाती थी अथवा उन पेड़ों के तने काट लिये जाते थे, जो उसके खेतों के किनारे लगे होते थे। उसके किरायेदार यह लकड़ी काट देते और फिर अपनी गाड़ियों पर लकड़ियों के गट्ठे लादकर उसके घर पहुँचा देते, जिसके एवज़ में उन्हें किराया मिलता—ग्रांदे का शाब्दिक धन्यवाद। उसे बहुत ही कम चीज़ें खरीदनी पड़ती थीं। उसके खर्च का कुछ विवरण इस प्रकार था; धार्मिक रसम अदा करने के लिए रोटी, गिरजे में अपनी पत्नी और बेटी के बैठने के स्थान का खर्च, नानों की तनखाह, नानों की रसोई के बर्तनों की कलई, घर की मरम्मत, मोमबत्तियाँ, टैक्स आदि के अलावा कुछ वह खर्च जो खेत बोने के लिए आवश्यक होता। हाल ही में उसने जंगल की नौ सौ एकड़ ज़मीन खरीदी थी और उसकी देखभाल वह खुद न कर सकता था, इसलिए उसने एक पड़ोसी के चौकीदार को राज़ी कर लिया था कि वह उसके जंगल का ध्यान रखे और उससे वादा किया था कि उसके परिश्रम का उचित पुरस्कार दिया जायगा। इस जीमन की खरीद के बाद ही ग्रांदे की खाने की मेज़ पर शिकार का गोश्त आने लगा, जो इस से पहले उनके भोजन में शामिल न था।

ग्रांदे का स्वभाव बहुत ही सरल और सादा था। वह अधिक बातें करने का आदी न था। वह अपने विचार बहुत थोड़े शब्दों में और नपे-तुले वाक्यों में धीमे स्वर के साथ व्यक्त किया करता था। क्रांति के समय

से कुछ दिनों के लिए लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया था तो इस भले आदमी ने कष्टप्रद ढंग से हकलाना शुरू कर दिया था। जब कभी लम्बी बात-चीत करनी होती अथवा किसी बहस में ही भाग लेना होता तो वह झट हकलाने लगता। हकलाने के अतिरिक्त वह असम्बंधित और निरर्थक वाक्यों का प्रयोग करता। वह अपने विचारों को शब्दों के तूफान में डुबो देता, कोई तर्कपूर्ण बात कहने में सर्वथा असमर्थ रहता, इन सबका कारण साधारणतः उसकी अधूरी शिक्षा को समझा जाता। लेकिन ये और इनके अलावा बहुत-सी बातें उसने अपने भीतर जान-बूझकर पैदा कर ली थीं। इसके कारण कहानी के बीच में पूर्णरूप से स्पष्ट हो जायेंगे। अपने वार्तालाप में वह कई और उपायों से भी काम लेता था। उसे चार वाक्य याद थे, जो गणित के सिद्धान्तों की भांति प्रत्येक अवसर पर सहज में प्रयोग हो सकते थे और पारिवारिक और व्यापारिक समस्याओं को हल करने में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते थे।—वे चार वाक्य ये थे : "मैं नहीं जानता", "मैं यह नहीं कर सकता", "मेरा इससे कोई सम्बंध नहीं" और "हम सोचेंगे"—उसने स्पष्ट शब्दों में कभी "हां" या "न" नहीं की और कभी कुछ लिखकर नहीं दिया। जब कभी उसे सम्बोधित किया जाता वह अपने दायें हाथ से ठोड़ी थामे और बायें हाथ को कुहनी के नीचे रखे उदासीनभाव से सुनता रहता। मगर किसी व्यापारिक विषय में वह अपनी राय बना लेता तो फिर कभी उसे न बदलता। लेकिन वह छोटी-छोटी बातों पर भी बड़ी देर तक विचार किया करता। जब बहुत-सी लम्बी-चौड़ी बातें करने के बाद वह अपने प्रतिद्वंद्वी के विचारों को भलीभांति भांप लेता जो अपनी जगह यह समझे होता कि उसने ग्रांदे को अच्छी तरह जान लिया है तो ग्रांदे कह दिया करता "मैं इस समय कोई फैसला नहीं कर सकता, पहले मैं अपनी पत्नी से सलाह लेना चाहता हूँ।" व्यापारिक मामलों में ऐसे बहाने बनाने के लिए पत्नी बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती थी, लेकिन वास्तव में ग्रांदे की दृष्टि में उसकी हैसियत एक तुच्छ दासी से अधिक नहीं थी।

वह कभी किसीसे मिलने नहीं जाता था। उसने न तो कभी घर से बाहर भोजन किया था और न कभी किसीको अपने घर पर निमंत्रित किया था। वह जब भी चलता तो तनिक भी आवाज़ न होती। लगता था कि वह अपनी मितव्ययिता को प्रत्येक वस्तु पर लागू करना चाहता है। किसी प्रकार की फिज़ूल आवाज़ न निकलती और उसी प्रकार शारीरिक संकेतों में भी बड़ी कंजूसी से काम लेता। वह स्वामित्व के अधिकारों की इतनी प्रतिष्ठा करता था कि दूसरों की वस्तु को इधर से उधर भी उठा कर नहीं रखता था। लेकिन उसके धीमे स्वर, उसकी दूरदर्शिता और सतर्कता के प्रदर्शनों के बावजूद टीनसाज़ के वास्तविक चरित्र का उसकी बातों और व्यवहार से पता चले बिना नहीं रहता था। विशेषकर अपने घर में उसकी वास्तविकता अधिक प्रकट हो जाती थी, क्योंकि यहाँ वह सावधानी से काम न लेता था।

जहाँ तक ग्रांदे के डील-डौल और रूप-रंग का सम्बन्ध है, उसके कंधे चौड़े-चकले, शरीर सुगठित और क़द लगभग पांच फुट था। उसकी टागें पतली-दुबली थीं। उसकी पिंडलियों की गोलाई मुश्किल से बारह इंच थी। घुटनों के जोड़ बहुत बड़े और उभरे हुए थे। उसका सिर बंदूक की गोली के सदृश था। चेहरे की रंगत धूप से झुलस गई थी और उस पर चेचक के अनगिनत दाग़ थे। ठोड़ी छोटी-सी थी और मुँह के गिर्द किसी प्रकार का ख़म अथवा लकीर नहीं थी। उसके दांत बहुत सफेद थे और आँखों में हविश की ऐसी चमक थी, जो सांप का गुण कही जा सकती है। माथे पर झुर्रियाँ थीं और जगह-जगह से हड्डियाँ बड़े अर्थपूर्ण ढंग से निकली हुई थीं। बालों का रंग किसी समय मटियाला था; लेकिन अब वे तेजी से सफेद होते जा रहे थे। अल्हड़ नौजवान जो किसी बात का भी मजाक उड़ाये बिना नहीं रहते, कहा करते थे कि ग्रांदे के तो बाल भी 'सोना चांदी' हैं। उसकी चौड़ी और भद्दी-सी नाक पर एक मस्सा था, जो अकसर रंग बदलता रहता और गपबाज लोग एक हद तक ठीक ही कहते थे कि इस परिवर्तन का कारण द्वेष और स्पर्द्धा होती है। उसके

चेहरे से एक भयानक प्रकार की धूर्तता झलकती थी यद्यपि कानून के नाते वह एक ईमानदार आदमी समझा जाता था। उसमें स्वार्थ कूट-कूटकर भरा था। दुनिया में सिर्फ दो चीज़ें ऐसी थीं, जो उसे प्रिय थीं। पहली वस्तु तो धन संचय करने का उल्लास और दूसरे अपनी इकलौती लड़की योज़ेन, जिसे एक दिन उसके धन की उत्तराधिकारिणी बनना था। उसकी शक्ल और व्यवहार से प्रकट होता था कि उसे अपने ऊपर बहुत विश्वास है। और यह विश्वास उसकी सतत सफलताओं का अनिवार्य परिणाम था। उसकी बातचीत में यद्यपि शिष्टता और नम्रता होती थी; लेकिन मोसियो ग्रांदे में इस्पात की-सी कठोरता थी। वह सदा एक ही ढंग के कपड़े पहना करता था। सन् १८१९ में उसकी वही वेश-भूषा थी जो आज से अट्ठाईस वर्ष पहले सन् १७९१ में थी। उसके भारी-भारी जूतों में चमड़े के तस्मे लगे होते और वह सालभर मोटी ऊनी जुराबें पहने रहता। उसकी बिरजिस कथई रंग के मोटे कपड़े की होती, जिसमें चांदी के बकसुए लगे होते। भूरे रंग की मखमली वास्केट, जिस पर पीली धारियाँ पड़ी होतीं, गले तक बंद रहती। उसके ऊपर वह खुले घेरे का ढीला-ढाला कोट पहने रहता। गले में एक काला मफलर पड़ा रहता और सिरपर चौड़ी कन्नी का पादरियों का-सा हैट पहने रहता। उसे घुड़सवारों के-से मजबूत दस्ताने पसंद थे ताकि वे ज्यादा दिन चलें और वाकई उसके पास एक जोड़ा दो साल तक काम दे जाता। साफ-सुथरा रखने के लिये वह उन्हें हैट के ऊपर रख दिया करता, यहाँ तक कि अब यह बात एक आदत बन गई थी। सोमूर के वासियों को अपने इस नागरिक के बारे में इतनी ही बातें मालूम थीं।

शहर वालों में से सिर्फ छै व्यक्तियों को ग्राँदे के घर आने-जाने का अधिकार प्राप्त था, और वे दो कैम्पों में विभाजित थे। इनमें मोसियो क्रोशो के भतीजे को विशेष महत्व प्राप्त था। वह सोमूर की अदालत में मजिस्ट्रेट था। जबसे उसे यह पद मिला था उसने अपने पारिवारिक नाम के साथ 'दे बोन फोन' की उपाधि जोड़ ली थी और उसे उम्मीद थी

कि कुछ समय बाद यह उसके पारिवारिक नाम का स्थान ग्रहण करेगी। उसने अभी से अपने आपको काउंट दे वोन फोन कहलाना शुरू कर दिया था। अगर कोई मुकदमे वाला अदालत में अधिकारपूर्वक उसे मोसियो क्रोशो कहकर पुकार लेता तो शीघ्र ही उसे अत्यन्त कष्टप्रद ढंग से इस बात का बोध करा दिया जाता कि उसने बड़ी गलती की है। और जो उसे मोसियो 'मोसियो दे बोन फोन' कहकर पुकारते थे उन चापलूसों का वह मृदु मुस्कान से स्वागत करता था।

मैजिस्ट्रेट की उम्र कोई तेंतीस वर्ष की थी और वह वोन फोन जागीर का मालिक था, जिसकी वार्षिक आय सात हजार लीवर थी। इसके अतिरिक्त कुछ और आशायें भी थीं। अर्थात् एक दिन उसे अपने चचा सरकारी वकील की जायदाद मिलने वाली थी और फिर एक दूसरे चचा की, जो सेंट मार्टि दे तोर के प्रसिद्ध प्रमुख पादरी थे, सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी भी उसे ही बनना था। ये दोनों सम्बन्धी काफी अमीर थे। इसलिये यह तीनों क्रोशो अपने कुछेक सम्बन्धियों समेत जो शादियों द्वारा कई एक परिवारों से सम्बंधित थे, शहर में एक अच्छी-खासी ऐसी ही जमात बना बैठे थे, जैसा पुराने जमाने में फ्लोरेंस में मेडीची लोगों का परिवार था। मेडीची लोगों की भांति क्रोशो परिवार के भी विरोधी मौजूद थे।

मादाम ग्रासीं जो एक तेईस वर्ष के लड़के की मां थी, ग्रांदे के घर अकसर आती थी और मादाम ग्रांदे से इस आशा में ताश खेला करती थी कि वह एक न एक दिन अपने प्यारे बेटे ओदलफ के साथ मादामुआजेल योज़ेन का विवाह कराने में सफल होगी। उसके प्रयत्नों में उसका पति भी पूर्ण सहयोग देता था और गुप्त रूप से बुड्ढे कंजूस के कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कर चुका था इसलिये मादाम ग्रासीं का इस शुभ कार्य में अपने पति से बेहतर साथी और कौन हो सकता था। इन तीनों दे ग्रासीं लोगों की सहायता के लिये भी अपने सम्बन्धियों और सहायकों की एक पूरी जमात मौजूद थी। पादरी जो क्रोशो गिरोह

का नेता था, वह अपने भाई सरकारी वकील की सहायता से मादाम ग्रासीं से बराबर संघर्ष करता रहता था। वह धनी ग्रांदे की इकलौती बेटी को अपने भतीजे मैजिस्ट्रेट के लिये प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था।

क्रोशो और ग्रासीं परिवारों में योजेन ग्रांदे के लिये भीतर ही भीतर जो संघर्ष चल रहा था, सोमूर के वासियों की तीक्ष्ण दृष्टि से वह छिपा न था और वे इसमें बड़ी दिलचस्पी ले रहे थे। मादमुआजेल किससे विवाह करेगी ? न जाने वह मैजिस्ट्रेट को पसन्द करेगी अथवा मोसियो ओदलफ ग्रासीं को ? कुछ लोगों का मत था कि ग्रांदे इन दोनों में से किसी को भी अपनी बेटी नहीं देगा। उनका खयाल था कि वह फ्रांस के किसी रईस को दामाद बनाने की फिक्र में है और वह कोई ऐसा रईस खोज रहा है, जो तीन लाख आमदनी के लोभ में आकर उसकी शराब फरोशी को भुलादे और यह रिश्ता स्वीकार कर ले। कुछ लोग इस मत से सहमत नहीं थे उनका कहना था कि मोसियो और मादाम ग्रासीं दोनों अच्छे परिवारों से सम्बन्धित हैं। फिर उनके पास धन भी बहुत अधिक है और ओदलफ अत्यन्त सुन्दर और अच्छे स्वभाव का युवक है। इस दृष्टि से यह सम्बन्ध बहुत उपयुक्त है। अलबत्ता अगर ग्रांदे के मस्तिष्क में पोप के भतीजे को दामाद बनाने की सनक हो तो दूसरी बात है क्योंकि ग्रांदे की अपनी हैसीयत तो कुछ भी नहीं थी। सोमूर के वासी उसे बढ़इयों की भांति बसूला हाथ में लिये काम पर जाते देख चुके थे और क्रांति के दिनों में वह जनतंत्रवादी भी तो रह चुका था। इनसे कुछ अधिक सूक्ष्म दृष्टि वालों का कहना था कि क्रोशो दे बोन फोन जब चाहे ग्रांदे के घर जा सकता है जबकि उसका प्रतिद्वन्द्वी सिर्फ इतवार को वहाँ जाता है। कुछ और लोगों कहना था कि मादाम ग्रासीं की घर की औरतों से गहरी मित्रता है, इसलिए वह ऐसी बात सुझा सकती है कि अन्त में उसीको सफलता हो। दूसरे इस बात का उत्तर यों देते थे कि संसार में पादरी से अधिक चापलूस व्यक्ति दूसरा नहीं है। इसलिये वह और मादाम ग्रासीं

दोनो एक ही टक्कर के हैं और दोनों की सफलता की सम्भावनाएं बराबर-बराबर हैं। "यह औरत और पादरी का मुकाबला है," किसी विनोद-प्रिय व्यक्ति ने चुटकी ली।

कुछ बड़े-बूढ़े जो पारिवारिक परम्परा से परिचित थे, कहते कि ग्रांदे लोग बड़े चतुर हैं, वे अपना धन परिवार से बाहर न जाने देंगे; इसलिये एक-न-एक दिन मादमुआजेल योजेन ग्रांदे का विवाह पेरिस में रहने वाले शराब के थोक व्यापारी मोसियो गयोम ग्रांदे के बोटे से होगा। इसके उत्तर में क्रोशो और ग्रासीं परिवारों के समर्थक कहा करते :—

"पहली बात तो यह है कि दोनों भाई एक दूसरे से पिछले तीस वर्ष में शायद दो बार से अधिक नहीं मिले दूसरे पेरिस वाला ग्रांदे अपने बेटे के बारे में बहुत ही महत्वाकांक्षी है। वह अपने ज़िले का मेयर, डिपुटी और नैशनल गार्ड का कर्नल और व्यापारी अदालत का जज यों ही तो नहीं है। वह सोमूर वाले ग्रांदे से किसी प्रकार का पारिवारिक सम्बन्ध स्वीकार ही नहीं करता और वह नेपोलियन के किसी ड्यूक से सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है।"

ग्रांदे की इस उत्तराधिकारिणी के बारे में लोग क्या कुछ न कहते थे। योजेन का जिक्र आस-पास के इलाके में साठ-साठ मील तक होता रहता था। सिर्फ यही नहीं, सवारी ले जाने वाली गाड़ी में लोग आँजे और बावा तक इसी की बातें किया करते!

सन् १८११ के शुरू में क्रोशो लोगों को ग्रासीं परिवार पर एक शानदार विजय प्राप्त हुई थी। हुआ यों कि नौजवान फरवालें को रुपये की सख्त जरूरत थी। इसलिये उसने फरवाओं की जागीर, उद्यान और कोठी जिनके कारण वह बहुत प्रसिद्ध था, बेचने की घोषणा की। उसके साथ बहुत-सी भूमि, नदी, मछलियों के तालाब और जंगल भी थे और इन सब का मूल्य तीस लाख फ्रांक था। मोसियो क्रोशो, मजिस्ट्रेट क्रोशो और पादरी क्रोशो तीनों ने मिल-मिलाकर कोशिश की कि जागीर के टुकड़े न हों। सरकारी वकील ने अपने मुवक्कल के लिये बहुत

ही सस्ता सौदा चुकाया क्योंकि उसने मार्कूई को सुझाया कि छोटे-छोटे भाग बनाकर बेचने में कीमत इकट्ठी करना एक मुसीबत बन जायगा और खर्च भी बढ़ेगा क्योंकि कई प्रकार के गाहकों से पाला पड़ेगा। इसके विपरीत मोसियो ग्रांदे एक ऐसा व्यक्ति है, जिसकी सब इज्जत करते हैं और वह तत्क्षण नकद पैसे देकर सौदा चुकाने को तैयार है। इसलिये मोसियो ग्रांदे जो दे, उसे स्वीकार कर लेने में लाभ होगा। इस प्रकार फरवाओं की जागीर को मोसियो ग्रांदे हड़प कर गया और सोमूर के वासियों को अधिक आश्चर्य इस बात पर हुआ कि कानूनी कार्रवाई के मुकम्मल होते ही उसने कीमत नक़द अदा कर दी। इस नये सौदे की ख़बर दूर-दूर तक फैल गई, यहाँ तक कि ओरलियाँ और नाँते में भी उसकी चर्चा होने लगी।

मोसियो ग्रांदे अपनी कोठी देखने गया। दरअसल संयोग से उसे उस ओर जाती हुई एक गाड़ी मिल गई। उसने इस अवसर का लाभ उठाया और स्वामी की हैसियत से अपनी नई खरीदी हुई जागीर का मुआयना किया। जब वह सोमूर वापिस आया तो उसे विश्वास हो चुका था कि इस नई जागीर से उसे सहज में पांच प्रतिशत का लाभ हुआ करेगा। फिर उसे एक बहुत अच्छा उपाय यह सूझा कि अपनी भूमि के सारे छोटे छोटे टुकड़े इस जागीर में मिलाकर एक ही अहाता-सा खींच लिया जावे। अभी तो उसे अपने लगभग खाली खज़ाने को फिर से भरने की चिन्ता थी और वह सोच रहा था कि अपने पोपलर खेतों के किनारे वाले पेड़ और जंगल के वृक्ष कटवाकर बेच डाले।

इस सारे विवरण के बाद यह अनुमान सहज में लगाया जा सकता है कि "मोसियो ग्रांदे का घर" किस प्रकार का होगा। वह एक सर्द निस्तब्ध और अंधेरा घर था, जो शहर के परले सिरे पर खंडहर फसील की छाया में स्थित था।

फाटक की ऊपर की महराब के दोनों ओर स्तून बने हुए थे। इन स्तूनों और पूरी इमारत के बनाने में एक सुराखदार और भुरभुरा-सा

पत्थर इस्तेमाल किया गया था। जो लवार नदी के किनारे वाले इलाके में बहुधा पाया जाता है। यह पत्थर इतना नर्म होता है कि मुश्किल से दो साल चलता है। वर्षा और कोहरे ने बहुत-से उलटे-सीधे सूराख उसमें बना डाले थे, जिनके कारण कुछ विचित्र-सा प्रभाव उत्पन्न होता था। फाटक ऐसा लगता था, जैसे जेल का दरवाज़ा हो। महराब के ऊपर सख्त पत्थर में कुछ मूर्ति-कला का काम भी बना हुआ था, जिसमें चारों ऋतुओं को मानव रूप में प्रस्तुत किया गया था। ये चारों ऋतुओं के आघातों के कारण धुंधले और मटियाले-से हो गये थे। इस भाग के ऊपर कुछ स्थान बाहर की ओर उभरा हुआ था, जहाँ संयोग से बीज गिर जाने से नाना प्रकार के पौधे उग आये थे और एक बेरी का पेड़ तो काफी बड़ा हो गया था।

बड़ा दरवाज़ा गहरे रंग की शाहबलूत की लड़की से बना हुआ था, जिसपर सुकड़ने के कारण बहुत-सी दरारें पड़ गई थीं। देखने में वह बहुत ही कमजोर मालूम होता था; लेकिन उसकी लकड़ी में बहुत-सी मोटे-मोटे सिरों वाली कीलें ठोंककर उसे मजबूत बना दिया गया था। बीच में एक छोटा-सा चौकोर जंगला था, जिसमें बहुत-सी ज़ंगदार सलाखें लगी थीं। जंगले के ऊपर एक हथौड़ा-सा लटक रहा था, जिससे दरवाज़ा खटखटाने का काम लिया जाता था। अगर कोई प्राथमिक तत्ववेत्ता ध्यान से उसका निरीक्षण करता, तो उसे इसमें एक विचित्र प्रकार के इंसानी सिर के चिह्न मिलते। दरअसल किसी जमाने में यह एक विदूषक का सिर था; लेकिन बहुत अधिक प्रयोग के कारण विदूषक की आकृति विकृत होकर रह गई। यह छोटा-सा जंगला गृह-युद्ध के दिनों में लगवाया गया था ताकि घर वाले आने वाले मित्रों को भीतर आने से पहले पहचान लें। लेकिन अब तो आने वालों की प्रश्न-सूचक दृष्टि को सीली हुई उदास-सी ड्योढी और टूटी हुई सीढ़ियों वाला ज़ीना नजर आता था, जो सुन्दर उद्यान की ओर जाता था; जिसके चारों ओर मोटी-मोटी दीवारें बनी हुई थीं, जिनमें से सील रिसती रहती थीं। इर्द-गिर्द झाड़ियों

की बाढ़ थी, जो अब पीली पड़ गई थी। ये दीवारें पुरानी किलेबंदियों का भाग थीं। फसील से परे बाग थे जो पड़ौसियों की सम्पत्ति थे।

फाटक वाली महराब के नीचे एक दरवाजा था जो एक बड़ी बैठक में खुलता था। निचले भाग में यह सबसे बड़ा कमरा था। बहुत कम लोग जानते हैं कि आंज़ें, बेरी और तोरेन के छोटे-छोटे शहरों में इस कमरे का महत्व क्या है। यह कमरा बैठक, हाल, अध्ययन का कमरा एक साथ सभी कुछ है। यह एक ऐसा रंग-मंच है जिस पर गृहस्थ जीवन का पूरा नाटक खेला जाता है। यह कमरा गृहस्थी का केन्द्र है। यहीं छै महीने में एक बार नाई मोसियो ग्रांदे के बाल काटने आया करता था। किराए-दार, गिरजे के पादरी, मिलवालों का लड़का हर एक को इसी कमरे में बैठाया जाता था। इसमें दो खिड़कियां हैं, जो गली की ओर खुलती हैं, फर्श पर लकड़ी के तख्ते बिछे हुए हैं। दीवारों पर फर्श से छत तक लकड़ी लगी हुई है, जिस पर खुदाई का काम हुआ है और उस पर भूरे रंग का पालिश किया हुआ है। शहतीर भीतर से दिखाई देते हैं और उन पर भी भूरा ही रंग फिरा हुआ है। बीच के स्थानों में किया हुआ पलस्तर पीला पड़ गया है।

आतिशदान सफेद पत्थर का था, जिस पर टेढ़े-मेढ़े चित्र खुदे हुए थे। इस अतिशदान पर घड़ी का एक पुराना तांबे का संदूकचा रखा रहता था, जिस पर कछुवे की हड्डी से मीनाकारी की हुई थी। उसके ऊपर हरे-से रंग का एक शीशा टंगा रहता था, जिसके किनारे ढलान की भांति कटे हुए थे, जिससे कि शीशे की चौड़ाई का अन्दाज़ हो सके। इस पर प्रतिबिम्ब पड़ने से कमरे में रंगदार प्रकाश की एक रेखा फैल जाती थी और यही रेखा दूसरी दीवार पर टंगे हुए इस्पात के शीशे पर पड़ती थी।

चमकदार तांबे की शाखाओं वाले दो शमादान अंगीठी पर दोनों ओर रखे हुए थे, जिनसे दो काम निकलते थे। टहनियों के साथ लगे हुए गुलाब के फूल मोमबत्ती रखने का काम देते थे; लेकिन उन्हें निकाला भी जा सकता था और बीच की मोटी टहनी को नीले स्फटिक के स्टैंड

पर रखी हुई पुरानी-सी तांबे की एक चीज़ में टिकाकर साधारण अव-सरों पर मोमबत्ती जला दी जाती थी।

पुराने ढंग की कुर्सियों पर जो कपड़ा मढ़ा हुआ था, उस पर लाफोनतेन की कहानियों के चित्र बने हुए थे। लेकिन उन्हें समझने के लिए यह आवश्यक था कि आदमी ने पहले से वह कहानियां पढ़ रखी हों, क्योंकि उनके रंग बहुत मद्धम हो चुके थे और कई बार रफू हो चुकने के कारण शक्लें मुश्किल से दिखाई देती थीं। कमरे के चारों कोनों में मेजें रखी हुई थीं, और हर मेज़ के नीचे गंदे-गंदे खानों की पंक्तियां बनी हुई थीं। दोनों खिड़कियों के बीच के स्थान में ताश खेलने की एक पुरानी-सी मेज़ पड़ी थी, जिसके ऊपर शतरंज की बिसात भी बनी हुई थी। इस मेज के ऊपर दीवार पर काली लकड़ी में जड़ा हुआ एक बैरोमीटर लटक रहा था, जिसके फ्रेम पर फीतों का गुच्छा खुदा हुआ था। किसी समय इन फीतों पर मुलम्मा था; लेकिन मक्खियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी उसकी चमक को नष्ट कर दिया था यहां तक कि उसका अस्तित्व एक पहेली बनकर रह गया था। आतिशदान के सामने वाली दीवार पर दो रंगीन चित्र टंगे हुए थे। एक के बारे में कहा जाता था कि मादाम ग्रांदे के दादा मोसियो दे ला बरतेलीयर का चित्र है जो सेना में लैफ्टीनेंट था और दूसरा स्वर्गीय मादाम जांतिये का चित्र था, जिसने चरवाहों जैसे वस्त्र पहन रखे थे।

खिड़कियों में किरमिज़ी रंग के पर्दे लगे थे, जिन्हें रेशमी डोरियों से पीछे की ओर बांध रखा था। इन डोरियो में बड़े-बड़े फुंदने लगे हुए थे। इन वैभवशाली पर्दों का ग्रांदे लोगों के स्वभाव से तनिक भी सामंजस्य न था। वास्तव में उन्हें ये सब वस्तुएं मकान खरीदते समय उसके साथ मिली थीं। इसी प्रकार वह आइना, पीतल की घड़ी, कपड़ा चढ़ी हुई कुर्सियां और कोने में रखी हुई मेज़ें भी उनके हाथ लगी थीं। परली खिड़की के पास तिनके के गद्दों वाली कुर्सी बिछी थी, जिसे लकड़ी के तख्तों पर रखा गया था, जिससे मादाम ग्रांदे बैठी-बैठी गली में से गुजरने वालों

को देख सके। दूसरी खिड़की के सामने काम करने की मेज़ रखी थी, जो धूप पड़ती रहने के कारण धुंधली पड़ गई थी और उसका रंग भी उतर गया था। उसके समीप ही योज़ेन ग्रांदे की छोटी-सी बाजुओं वाली कुर्सी पड़ी थी।

इन दोनों, मां-बेटियों का जीवन पिछले पन्द्रह वर्ष से बड़े शांतिपूर्ण ढंग से व्यतीत हो रहा था। अप्रैल के महीने से लेकर नवम्बर तक वे खिड़कियों के सामने बैठी काम करती रहतीं। लेकिन दिसम्बर के पहले ही दिन वे अपना काम संभाले आग के निकट आ बैठतीं और फिर सर्दियों भर वहीं उनके स्थान बने रहते। ग्रांदे इस तिथि से पहले कभी कमरे में आग जलाने की इजाज़त न देता था। और न इकत्तीस मार्च के बाद आग जलाने का हुक्म था, चाहे बसंत और पतझड़ के मौसम में कितनी ही सख्त सर्दी क्यों न पड़े। लम्बी नानों चोरी-छिपे रसोई की आग में से जलती-बलती राख अंगीठी में भर लाती और इस प्रकार मादाम और मादमुआज़ेल ग्रांदे की अक्तूबर और अप्रेल की रातें तनिक आराम से कट जाती थीं। घर भर के कपड़ों की मरम्मत मां-बेटी को करनी पड़ती थी और वे मुस्तैदी से अपना सारा दिन इस कर्तव्य के पालन में लगा देतीं। यह कोई आसान काम नहीं था। अगर योज़ेन अपनी मां के कालर पर कढ़ाई करना चाहती तो उसे अपनी नींद में से समय निकालकर यह काम करना पड़ता और फिर प्रकाश में यह काम करने के लिए उसे तरह-तरह के बहाने बनाकर पिता से मोमबत्ती लेनी पड़ती। बहुत दिन से ग्रांदे की यही आदत थी। जिस प्रकार रोटी और घर की आवश्यक वस्तुयें वह नित्य निकाल कर दिया करता था, उसी प्रकार नानों और अपनी बेटी को बत्तियां भी देता था।

दुनिया भर में शायद लम्बी नानों ही एक ऐसा प्राणी थी जो अपने स्वामी की बर्बरता को सहन किये जा रही थी। उसकी सेवाओं के लिए शहर भर के लोग मोसियो और मादाम ग्रांदे से ईर्षा करते थे। 'लम्बी नानों' को यह उपाधि इसलिए मिली कि वह पांच फीट आठ इंच लम्बी

थी। वह ग्रांदे के घर में पिछले पैंतीस साल से काम कर रही थी। सोमूर भर में वह सब से धनी नौकरानी समझी जाती थी, यद्यपि उसे साल भर में सिर्फ सत्तर लीवर तनख्वाह मिलती थी। यह सत्तर लीवर पिछले पैंतीस साल में जमा होते रहे थे और हाल ही में उसने चार हज़ार लीवर मोसियो क्रोशो को दिये थे कि वह उन्हें किसी ऐसी जगह लगा दे जहां से उसे वार्षिक लाभ होता रहे। इतने अरसे की बचत का यह परिणाम कल्पना को उत्तेजित करता था। यह पूंजी बहुत ही अधिक मालूम होती थी। सारे सोमूर में कोई ऐसी नौकरानी बची न थी, जिसे इस बेचारी स्त्री पर ईर्ष्या न होती हो, जो साठ वर्ष की होने तक इतनी पूंजी संचित कर सकी थी कि बुढ़ापे में वह किसी की मुहताज न हो। लेकिन किसी को यह ध्यान न आता कि यह पूंजी संचित करने में उसे कितनी कठिनाइयां सहन करनी पड़ी थीं।

पैंतीस वर्ष पहले जब वह बाईस वर्ष की थी, उसे ढूंढ़े से भी कहीं काम नहीं मिल रहा था। कारण यह था कि उसका रंगरूप इतना भद्दा था कि उसे कोई नौकर रखने को तैयार नहीं था। अगर उसका सिर किसी बड़े डील-डौल वाले सिपाही के कंधों पर रख दिया जाता तो बहुत अच्छा लगता। कहते हैं कि प्रत्येक वस्तु में कुछ-न-कुछ सामंजस्य होता है; लेकिन [illegible] सिर और धड़ में कोई सामंजस्य न था। पहले वह एक किसान की गायें चराया करती थी। लेकिन जब उसके खेत में आग लग गई तो वह किसी दूसरे स्थान पर नौकरी की तलाश में निकल पड़ी। उसे सिर्फ इसी बात का भरोसा था कि उसे जो काम भी मिले वह कर सकती है। मोसियो ग्रांदे उस समय ब्याह कराने की फिक्र में था और पहले ही से गृहस्थी जुटाने की बात सोच रहा था। उसकी दृष्टि इस लड़की पर पड़ी जिसे दर-दर से दुतकारा जा रहा था। वह टीनसाज था, इसलिए शारीरिक शक्ति का सहज में अनुमान लगा सकता था। उसने झट ताड़ लिया कि यह पहलवान किस्म की औरत बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वह बहुत ही मज़बूत औरत थी और अपने पांव पर इस प्रकार जमकर खड़ी होती थी जैसे

शाहबलूत का पेड़ उस धरती पर खड़ा होता है, जहां वह दो पीढ़ी से बढ़-पल रहा हो। उसका शरीर सुगठित, कंधे चौड़े और हाथ किसानों की तरह मज़बूत थे। उसकी ईमानदारी और नेकी पर किसी प्रकार का संदेह किया ही नहीं जा सकता था। ग्रांदे उसके सिपाहियों जैसे डील-डौल, भद्दे प्रकार के एक-दो मस्सों और जली हुई मिट्टी जैसी रंगत से जरा भी न घबराया और न टीनसाज़ को नानों के चिथडों ही ने परेशान किया, क्योंकि उस समय तक उसका हृदय दरिद्रों के प्रति इतना कठोर नहीं हुआ था। उसने इस ग़रीब लड़की को नौकर रख लिया। उसे भोजन दिया, कपड़े और जूते पहनाये और पैसे भी दिये। नानों के लिए अपना दुख-भरा जीवन असह्य न रहा, वल्कि उसने ग्रांदे के इस उदारतापूर्ण व्यवहार पर चुपके-चुपके खुशी के आंसू बहाये। उसके मन में अपने स्वामी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई, जो उससे इतना ही काम लेना चाहता था जितना प्राचीन काल के सामंत अपने दासों से लिया करते थे।

नानों घर का सारा काम करती थी। वह खाना पकाती, कपड़े धोती, सारे कपड़े लवार नदी तक लेकर जाती और फिर अपने कंधों पर रखकर वापस लाती। वह प्रातःकाल मुंह अन्धेरे उठ बैठती और रात को देर से सोने के लिए लेटती। वह बिना किसी की सहायता के पतझड़ के मौसम में अंगूर के खेतों में काम करने वालों का खाना पकाया करती और फिर बाजार के लोगों का भी बड़ी सतर्कता से ध्यान रखती। वह अपने स्वामी की प्रत्येक वस्तु की वफादार कुत्ते की भांति रक्षा करती और एक अन्धी श्रद्धा के साथ उसके कठोर से कठोर आदेश का बिना चूंचरा किये पालन करती। उसकी हर उलटी-सीधी बात नानों के लिए कानून से कम न होती थी।

बीस बरस की नौकरी के उपरांत सन् १८११ के मशहूर साल में जब बड़े परिश्रम से अंगूर की फसल इकट्ठी की गई थी तो ग्रांदे ने नानों को अपनी पुरानी घड़ी उपहार में दी और यही एक वस्तु थी जो उम्र भर में उसे अपने स्वामी से मिली थी। वैसे तो वह अकसर उसके

पुराने जूतों को उलटवा कर पहना करती थी (जो बिलकुल उसके नाप के होते थे); लेकिन वे ग्राम तौर पर इतने घिस चुकते थे कि किसी और के काम ही न ग्रा सकते थे, इसलिए उपहार में उनकी गिनती नहीं हो सकती। ज़रूरत ने इस बेचारी लड़की को इतना मुहताज बना दिया था कि ग्रन्त में ग्रांदे को उससे मानसिक लगाव उत्पन्न हो गया और वह उससे उतना ही स्नेह करता जितना ग्रादमी ग्रपने कुत्ते से करता है। जहां तक नानों का सम्बन्ध है वह गुलामी का यह पट्टा बड़ी खुशी से पहने हुई थी और उसमें जड़ी हुई कीलों का ग्रब उसे एहसास तक न रहा था। ग्रगर ग्रांदे उसके भोजन में कमी भी कर देता तो वह शिकायत न करती। यद्यपि खाने-पीने के सिलसिले में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था; पर नानों को इसकी तनिक परवाह न थी। उसका स्वास्थ्य बहुत ग्रच्छा था और घर भर में किसी प्रकार का रोग नहीं था।

और नानों इसी परिवार का एक व्यक्ति थी। जिस समय ग्रांदे हँसता, वह भी हँस देती और जब कभी वह निराश ग्रथवा परेशान होता तो वह भी उदास हो जाती, यहां तक कि मौसम के बारे में उसका भी वही मत होता जो ग्रांदे का। वह हर काम में उसका हाथ बटाती, इस प्रकार की समता जीवन की बहुत-सी कटुताग्रों को मधुर बना देती है। जब कभी वह ग्रंगूरों के बागीचे में जाती तो उसका स्वामी उसे किसी बात से न टोकता। ग्रंगूरों की पंक्तियों के बीच में उगे हुए पेड़ों से वह ग्रालूचे, ग्राड़ू ग्रादि तोड़कर खा सकती थी।

"ग्राग्रो नानों, जी भरके फल खाग्रो।" वह उससे कहता। यह ऐसा समय होता था कि जब पेड़ों की टहनियाँ फलों के बोझ से झुकी पड़ती थीं और फल इतने ज्यादा होते थे कि ग्रड़ोस-पड़ोस के क़िसान विवश उन्हें ग्रपने सूग्ररों को खिला दिया करते थे।

इस किसान लड़की के लिए जिसका सारा जीवन खेतों में काम करते बीता था, जिसने बचपन से लेकर ग्रब तक निष्ठुरता के ग्रतिरिक्त और

कुछ न देखा था और जिसे तरस खाकर आश्रय प्रदान किया गया था, बूढ़े ग्रांदे की अस्पष्ट-सी हंसी भी स्वर्ण किरण से कम न थी। फिर इसके अलावा नानों ऐसी सरल स्वभाव की लड़की के मस्तिष्क में एक वक्त में सिर्फ बस एक ही विचार समा सकता था। पैंतीस वर्ष से उसके मस्तिष्क में एक ही चित्र घूमता रहता था। वह अपने आपको सदा नंगे पांव चिथड़े पहने हुए मोसियो ग्रांदे की लकड़ियों की टाल के दरवाजे के सामने खड़ा देखती और टीनसाज़ को यह कहते हुए सुनती—"लड़की! क्या बात है?" और उसका हृदय अब भी पहले दिन की भांति कृतज्ञता से भर जाता।

ग्रांदे जब कभी उसकी ओर देखता तो वह सोचा करता कि इस बेचारी लड़की को प्रशंसा के शब्द सुनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ और जिन प्रेम-युक्त भावनाओं के लिए स्त्री की आत्मा अधीर रहती है; उन सबका उसके जीवन में कोई अस्तित्व ही नहीं है, बहुत सम्भव है किसी दिन यह कुमारी मरियम के सदृश निरीह और निरपराध भगवान के दरबार में पहुंच जाय। ऐसे अवसरों पर ग्रांदे को उस पर बड़ी दया आती और वह कह उठता—"बेचारी नानों।" ये शब्द सुनकर पुरानी नौकरानी उसकी ओर ऐसी दृष्टि से देखती, जिसे वर्णन करना सम्भव नहीं। ये शब्द जो कई साल से समय-समय पर दोहराये जाते थे, मित्रता की अटूट जंजीर में नई कड़ियाँ शामिल करते थे। लेकिन कंजूस ग्रांदे का यह दयाभाव जो इस एकाकी स्त्री के जीवन को उल्लास से भर देता था, एक प्रकार से अत्यंत घृणित वस्तु था। यह बड़ी ही निष्ठुर सहानुभूति थी, जो टीनसाज़ के हृदय में उत्पन्न हो जाती थी, जिस पर उसका कुछ भी खर्च न होता; लेकिन नानों के लिए यह प्रसन्नता की पराकष्ठा होती। "बेचारी नानों!" जैसी मौखिक सहानुभूति कौन नहीं जता सकता था? भगवान एक दिन अपने अनुचरों और भक्तों को उनके स्वर और उनके हृदय में निहित विषाद से पहचानेगा।

सोमूर में बहुत से घर ऐसे थे जहां नौकरों के साथ इससे कहीं

बेहतर बर्ताव किया जाता था। लेकिन इसके बावजूद मालिकों को उसके बदले में बहुत कम आराम मिलता था। इसलिए लोग कहा करते थे—"मालूम नहीं लम्बी नानों पर ग्रांदे लोगों ने क्या जादू कर दिया है कि वह उन पर जान दिया करती है ? उनके लिए वह आग तक में कूद जाने को तैयार है !"

उसकी रसोई जिसकी सलाखों वाली खिड़कियाँ सेहन में खुलती थीं सदा साफ-सुथरी और सर्द पड़ी रहती थी। यह सचमुच एक कंजूस की रसोई थी, जिसमें कोई चीज़ भी व्यर्थ और नष्ट नहीं होने दी जाती थी। नानों प्लेटें और दूसरे बरतन धो-धुलाकर और बचा हुआ भोजन डिब्बे में रखकर, आग बुझाकर रसोई से निकलती और बीच का रास्ता पारकर कमरे में जाती और अपनी मालकिनों के साथ बैठकर रूई कातने लगती। शाम को घर भर के लिए सिर्फ एक ही मोमबत्ती जलाई जाती थी।

नानों रास्ते के एक ओर वाली अंधेरी कोठड़ी में सोचा करती थी, जहाँ इसी कमरे की बत्ती से थोड़ा-बहुत प्रकाश पहुँच जाया करता था। नाँनों का स्वास्थ्य अच्छा था और उसका शरीर लोहे के सदृश कठोर था। यही कारण है कि इस अंधेरी कोठड़ी में बराबर सोते रहने से भी उसे कोई नुकसान नहीं हुआ। यहां लेटे-लेटे वह घर भर पर दिन रात छाई रहने वाली गहरी निस्तब्धता में छोटी से छोटी आवाज़ भी सुन लेती थी। वह पहरा देने वाले कुत्ते के सदृश लेटती, जिसका कान सदा खुला रहता है। वह सोते हुए भी घर की रखवाली किया करती थी।

घर के दूसरे कमरे कैसे थे इसका स्पष्टीकरण, कहानी की बाद की घटनाओं में हो जायगा। लेकिन बैठक, जो घर भर की गरमा-गरमी का केन्द्र थी और जिसमें जितना सामान हो सकता था, सब सजा दिया गया था, इससे ऊपर के कमरों की वीरानी और सूनेपन का सहज में अनुमान लगाया जा सकता है।

सन् १८१९ के मध्य नवम्बर में एक दिन की बात है। शाम का समय था और नानों बैठक में पहली बार आग जला रही थी। क्रोशो और दे ग्रांसी लोगों के लिए यह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण दिन था। छओं प्रतिद्वन्द्वी खूब बन-ठन कर और कील काँटे से लैस होकर घर से निकले थे। ग्रांदे की बैठक युद्ध क्षेत्र था और वे अपनी मित्रता प्रमाणित करने के लिए एक दूसरे को मात देना चाहते थे।

उस दिन सुबह सवेरे मादाम और मादमुअ़ाजेल ग्रांद नानों के समेत गिरजे में प्रार्थना के लिए गई थीं। सोमूर के लोगों ने उन्हें जाते देखा था और उन्हें तुरन्त स्मरण हो आया था कि आज योजेन की वर्षगाँठ है।

मोसियो क्रोशो, पादरी क्रोशो और मोशियो दे बोन फोन तीनों ने निश्चय कर लिया कि ज्योंही भोजन का समय समाप्त हो, वे ग्रांदे के घर पहुँच जांय और ग्रासीं लोगों से पहले जाकर ग्रांदे को बधाई दें। इन तीनों ने अपने बाग में से तोड़े हुए फूलों के बहुत बड़े-बड़े गुलदस्ते हाथों में ले रखे थे। लेकिन मैजिस्ट्रेट के गुलदस्ते में बड़ी चतुरता से एक सफेद साटन का रिबन बांध दिया गया था, जिसमें गोटे की झालर भी लगी थी।

मोसियो ग्रांदे सवेरे ही योजेन के कमरे में गया, जो अभी बिस्तर से भी नहीं उठी थी और सस्नेह उसे एक अलभ्य सिक्का दिया। उसके पिता की आदत थी कि साल में दो बार उसे ऐसा उपहार देकर आश्चर्य-चकित छोड़ जाता था—एक तो उसकी वर्षगांठ के दिन और दूसरे उसके देवता की यादगार के दिन। मादाम ग्रांदे मौसम और स्थितियों के अनुसार गर्मियों या सर्दियों के वस्त्र दिया करती थी। दो जोड़े वस्त्र और दो अशरफियाँ जो उसे अपने पिता की वर्षगाँठ पर मिला करती थीं, इन सबको मिलाकर उसकी वार्षिक आय लगभग सौ क्राऊन बनती थी। ग्रांदे को उसके पास इतने पैसे जमा होते देख बड़ी खुशी होती थी। उसका पैसा कहीं जाता तो था ही नहीं। उसे यों लगता जैसे

उसने पैसे एक संदूकचे से निकालकर दूसरे में डाल दिये हों। और फिर इस बहाने वह अपनी उत्तराधिकारिणी के मन में रुपये की कदर भी तो पैदा कर रहा था ना? इस प्रकार उसे बड़ी अच्छी शिक्षा मिल रही थी। कभी-कभी योजेन से वह उसकी दौलत का हिसाब भी लेता रहता था, जो पहले ही ला बरतेलीयर के उपहारों के कारण काफी अधिक हो चुकी थी और जब कभी वह ऐसा करता तो बेटी से कहता : "जब तुम्हारा विवाह होगा तो यह धन 'दर्जन' का काम देगा।"

पुराने जमाने का एक रिवाज है जो आज तक उसी जोश-खरोश से निभाया जाता है और मध्य फ्रांस के बहुत से कस्बों में उसकी हैसियत एक धार्मिक रीति की है। बेरी और आँजे में दस्तूर है कि जब बेटी की शादी की जाती है तो लड़की के माता-पिता अथवा ससुराल वालों के लिये आवश्यक है कि उसे बटुवा दें, जिसमें एक दर्जन या बारह दर्जन या बारह सौ सोने अथवा चाँदी के सिक्के हों। यह संख्या परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर होती है। गरीब से गरीब लड़की को विवाह के समय इस 'दर्जन' के बिना संतोष नहीं होता, चाहे इसकी संख्या बारह पैसे ही क्यों न हो। इसोदोन में आज तक यह किस्सा चला आता है कि एक धनी लड़की को अपने 'दर्जन' के सिलसिले में एक सौ चवालीस पुर्तगाली अशरफियाँ मिली थीं। और जब कैथरीन दे मैडीची का विवाह हेनरी द्वितीय से हुआ था तो उसके चचा क्लेमेंट सप्तम ने दुल्हन को एक दर्जन पुराने तमगे दिये थे, जिनका मूल्य आँका नहीं जा सकता।

मादमुआजेल ग्रांदे ने भोजन के समय अपनी नई पोशाक पहन रखी थी और वह असाधारण रूप से सुन्दर दिखाई पड़ रही थी। उसका पिता अत्यन्त प्रसन्न था। उसने भावातिरेक से कहा—"कमरे में आग जला दो। आज योजेन की वर्षगांठ है। यह अच्छा शगुन होगा।"

"आप देख लीजियेगा इस साल के भीतर-भीतर बिटिया का ब्याह हो जायगा।" नानों ने बचे हुए बत्तख के गोश्त की रकाबियाँ सरकाते

हुए कहा। सोमूर के टीनसाजों के लिये बत्तख का गोश्त बहुत बड़ी चीज था।

"मेरे ख्याल से तो सोमूर भर में कोई लड़का योजेन के योग्य नहीं है।" मादाम ग्रांदे ने अपने पति पर एक सहमी-सी दृष्टि डालते हुए कहा, जिससे लगता था कि पति की कठोरता ने बेचारी पत्नी की आत्मा को कुचलकर रख दिया है। ग्रांदे ने अपनी बेटी की ओर देखा और खिलखिलाकर हँसते हुए कहा—"वाकई अब हमें इसकी चिंता करनी चाहिये। आज हमारी बिटिया तेईस वर्ष की हो गई।"

योजेन और उसकी मां ने एक दूसरी को देखा और चुप रहीं। उन्होंने निगाहों ही निगाहों में मतलब समझ लिया।

मादाम ग्रांदे का झुर्रियोंदार चेहरा दुबला-दुबला और केसर के सदृश पीला था। वह बड़ी आलसिन और अव्यवस्थित-सी थी। वह उन प्राणियों में से थी जो कठोरताएँ सहन करने के लिए ही उत्पन्न होते हैं। उसकी हड्डी चौड़ी थी, नाक लम्बी, आँखें मोटी-मोटी और माथा उभरा हुआ। पहली बार देखने में वह सर्वथा शुष्क और पिचके हुए फल के सदृश लगती थी। थोड़े-बहुत जो दाँत बच रहे थे, वे काले और बदरंग हो चुके थे। मुंह के गिर्द गहरी लकीरें पड़ गई थीं। उसकी हड्डी छालियाँ काटने वाले सरौते जैसी थीं। वह बहुत ही भली स्त्री थी और सचमुच ला बारतीयर परिवार का सदस्य जान पड़ती थी। पादरी क्रोशो ने उसे कई बार बताया था कि जवानी में वह ऐसी भद्दी न लगती होगी और मादाम को भी इससे कोई मतभेद नहीं था। उसके स्वभाव का निरीह माधुर्य, निष्ठुर बच्चों के हाथों में कीड़ों की सी भीरुता, सच्ची ईश्वर-भक्ति, दया और सहनशीलता, आदि में किसी बात से भी कमी अथवा कटुता आ ही नहीं सकती थी। इन गुणों के कारण सभी लोगों को उसके प्रति सहानुभूति थी और वे उसका आदर करते थे।

उसकी सूरत देखकर यद्यपि हँसी आती थी; लेकिन वह अपने पति के लिये दहेज़ और विरासत में तीन लाख फ्रांक लाई थी। इसके

बावजूद ग्रांदे उसे जेबखर्च के लिए ५ फ्रांक से अधिक कभी न देता था। और वह अपने आपको सदा पति का मुहताज समझती थी। अपनी स्वाभाविक नम्रता के कारण उसने पति की निष्ठुरता और अत्याचार के विरुद्ध कभी विद्रोह व्यक्त नहीं किया था। लेकिन अपनी दीनता और विवशता का भाव उसे इस कदर कोंचता रहता था कि अपनी जबान से उसने कभी एक पैसा भी न माँगा था और जब कभी मोसियो क्रोसो उसे किसी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए कहता तो वह बिना एक शब्द भी मुँह से कहे चुपचाप उसपर अपने हस्ताक्षर टांक देती। उसके इस तर्कहीन गुप्त अभिमान को, जो उससे चुपचाप सब कुछ कराता रहता था; ग्रांदे बिना सोचे-समझे आहत करता रहता था। वह पत्नी के महान् आत्मगौरव को समझने में सर्वथा असमर्थ था।

उसकी पोशाक में कभी कोई परिवर्तन न होता था। वह सदा एक मटियाले हरे रंग का गाउन पहने रहती, जो आम तौर पर बारह महीने चलता था। एक बड़ा-सा सूती रूमाल उसके गले में बंधा रहता। सिर पर तिनकों की टोपी पहनती और एक काला रेशमी एपरन उसके लिबास का अविच्छेद अंग होता। वह घर से इतना कम निकलती कि घर से बाहर प्रयोग होने वाले जूते कभी टूटने ही में न आते। दरअसल उसकी भी आवश्यकताएं बहुत ही कम थीं। अपने लिए उसे कभी किसी चीज़ की जरूरत ही महसूस न होती थी। कई बार ग्रांदे को आप ही ख्याल आता कि मुद्दत हुई मैंने अपनी पत्नी को छः फ्रांक दिये थे और फिर उसकी आत्मा भर्त्सना करती। इसलिए अंगूरों की फसल के अवसर पर जब वह शराब बेंचता तो सौदा चुका लेने के बाद कुछ पैसे ऊपर से अपनी पत्नी के लिए मांग लेता। यों मादाम ग्रांदे को साल भर में अगर किसी आमदनी का विश्वास होता तो बेलजियम और हालैंड के व्यापारियों की जेब से निकले हुए इन चार-पांच सिक्कों का। लेकिन यह पांच लूई मिल जाने के बाद अकसर उसका पति उससे कहता—"क्या तुम मुझे कुछ पैसे कर्ज दे सकोगी ?" जैसे पति-पत्नी का हिसाब एक ही जगह

हो। और वह बेचारी स्त्री इसी में प्रसन्न हो जाती कि जिस आदमी को पादरी ने स्वामी समझने को कहा है, उसके लिये वह कुछ कर सकती है। और इस प्रकार प्रत्येक सर्दी में वह अपनी आमदनी से लगभग एक क्राउन उसे सौंप दिया करती। हर महीने जब ग्रांदे अपनी बेटी को सूई धागे और लिबास के छोटे-मोटे खर्च के लिए पांच फ्रांक का एक सिक्का देता तो जेब में बटन लगवा चुकने के उपरांत पत्नी से पूछता—"अच्छा अब तुम बताओ योजेन की माँ, क्या तुम्हें कुछ जरूरत है?" और मादाम ग्रांदे माता के स्वाभिमान के साथ उत्तर देती—"खैर, देखा जायगा।"

मादाम की उदारता का ग्रांदे पर कुछ भी प्रभाव न होता। उसका खयाल था कि मैं अपनी पत्नी से बहुत अच्छा बर्ताव करता हूँ। अगर कोई दार्शनिक नानों, मादाम ग्रांदे और योजेन आदि, स्त्रियों के बारे में सोचे तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि विधाता ने उन्हें रचकर अवश्य व्यंग्य किया है।

भोजन के उपरांत, जब योज़ेन के विवाह का प्रश्न पहली बार उठा, नानों ऊपर मोसियो ग्रांदे के कमरे से तोरेनवाली शराब की बोतल लेने गई। लौटते समय वह सीढ़ियों पर लुढ़कती-लुढ़कती बच गई।

"बड़ी मूर्ख हो तुम! क्या नट का काम सीख रही हो?" उसके स्वामी ने कहा।

"जी, जीना बहुत खतरनाक हो गया है। अभी-अभी एक सीढ़ी टूट गई।"

"यह ठीक कहती है।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "आपको बहुत अरसा पहले ही उसकी मरम्मत करा लेनी चाहिए थी। योज़ेन के पांव में भी कल मोच आते-आते बची।"

"यह लो।" ग्रांदे ने नानों से कहा, जो बहुत पीली पड़ गई थी। "आज योजेन की वर्षगांठ है और फिर तुम सीढ़ियों से गिरते-गिरते बची हो। एक घूंट पी लो, अभी ठीक हो जाओगी।"

"ईमान से मैं इसकी हक़दार भी हूँ।" नानों बोली, "अगर कोई

बावजूद ग्रांदे उसे जेबखर्च के लिए ५ फ्रांक से अधिक कभी न देता था। और वह अपने आपको सदा पति का मुहताज समझती थी। अपनी स्वाभाविक नम्रता के कारण उसने पति की निष्ठुरता और अत्याचार के विरुद्ध कभी विद्रोह व्यक्त नहीं किया था। लेकिन अपनी दीनता और विवशता का भाव उसे इस कदर कोंचता रहता था कि अपनी जबान से उसने कभी एक पैसा भी न माँगा था और जब कभी मोसियो क्रोसो उसे किसी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए कहता तो वह बिना एक शब्द भी मुँह से कहे चुपचाप उसपर अपने हस्ताक्षर टांक देती। उसके इस तर्कहीन गुप्त अभिमान को, जो उससे चुपचाप सब कुछ कराता रहता था; ग्रांदे बिना सोचे-समझे आहत करता रहता था। वह पत्नी के महान् आत्मगौरव को समझने में सर्वथा असमर्थ था।

उसकी पोशाक में कभी कोई परिवर्तन न होता था। वह सदा एक मटियाले हरे रंग का गाउन पहने रहती, जो आम तौर पर बारह महीने चलता था। एक बड़ा-सा सूती रूमाल उसके गले में बंधा रहता। सिर पर तिनकों की टोपी पहनती और एक काला रेशमी एपरन उसके लिबास का अविच्छेद अंग होता। वह घर से इतना कम निकलती कि घर से बाहर प्रयोग होने वाले जूते कभी टूटने ही में न आते। दरअसल उसकी भी आवश्यकताएं बहुत ही कम थीं। अपने लिए उसे कभी किसी चीज़ की जरूरत ही महसूस न होती थी। कई बार ग्रांदे को आप ही ख्याल आता कि मुद्दत हुई मैंने अपनी पत्नी को छः फ्रांक दिये थे और फिर उसकी आत्मा भर्त्सना करती। इसलिए अंगूरों की फसल के अवसर पर जब वह शराब बेंचता तो सौदा चुका लेने के बाद कुछ पैसे ऊपर से अपनी पत्नी के लिए मांग लेता। यों मादाम ग्रांदे को साल भर में अगर किसी आमदनी का विश्वास होता तो बेलजियम और हालैंड के व्यापारियों की जेब से निकले हुए इन चार-पांच सिक्कों का। लेकिन यह पांच लूई मिल जाने के बाद अकसर उसका पति उससे कहता—"क्या तुम मुझे कुछ पैसे कर्ज दे सकोगी?" जैसे पति-पत्नी का हिसाब एक ही जगह

हो। और वह बेचारी स्त्री इसी में प्रसन्न हो जाती कि जिस आदमी को पादरी ने स्वामी समझने को कहा है, उसके लिये वह कुछ कर सकती है। और इस प्रकार प्रत्येक सर्दी में वह अपनी आमदनी से लगभग एक क्राउन उसे सौंप दिया करती। हर महीने जब ग्रांदे अपनी बेटी को सूई धागे और लिबास के छोटे-मोटे खर्च के लिए पांच फ्रांक का एक सिक्का देता तो जेब में बटन लगवा चुकने के उपरांत पत्नी से पूछता—"अच्छा अब तुम बताओ योजेन की माँ, क्या तुम्हें कुछ जरूरत है ?" और मादाम ग्रांदे माता के स्वाभिमान के साथ उत्तर देती—"खैर, देखा जायगा।"

मादाम की उदारता का ग्रांदे पर कुछ भी प्रभाव न होता। उसका खयाल था कि मैं अपनी पत्नी से बहुत अच्छा बर्ताव करता हूँ। अगर कोई दार्शनिक•नानों, मादाम ग्रांदे और योजेन आदि, स्त्रियों के बारे में सोचे तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि विधाता ने उन्हें रचकर अवश्य व्यंग्य किया है।

भोजन के उपरांत, जब योज़ेन के विवाह का प्रश्न पहली बार उठा, नानों ऊपर मोसियो ग्रांदे के कमरे से तोरेनवाली शराब की बोतल लेने गई। लौटते समय वह सीढ़ियों पर लुढ़कती-लुढकती बच गई।

"बड़ी मूर्ख हो तुम! क्या नट का काम सीख रही हो ?" उसके स्वामी ने कहा।

"जी, जीना बहुत खतरनाक हो गया है। अभी-अभी एक सीढ़ी टूट गई।"

"यह ठीक कहती है।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "आपको बहुत अरसा पहले ही उसकी मरम्मत करा लेनी चाहिए थी। योज़ेन के पांव में भी कल मोच आते-आते बची।"

"यह लो।" ग्रांदे ने नानों से कहा, जो बहुत पीली पड़ गई थी। "आज योजेन की वर्षगांठ है और फिर तुम सीढ़ियों से गिरते-गिरते बची हो। एक घूंट पी लो, अभी ठीक हो जाओगी।"

"ईमान से मैं इसकी हक़दार भी हूँ।" नानों बोली, "अगर कोई

दूसरा होता तो बोतल जरूर टूट जाती। मैं तो इसे बचाने के लिए हाथ ऊंचा किये रही। चाहे मेरी कोहनी टूट जाती।"

"बेचारी नानों।" ग्रांदे ने उसके लिए शराब उंडेलते हुए कहा।

"तुम्हें चोट तो नहीं लगी?" योजेन ने सम्वेदना से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"नहीं, गिरने से तो बच ही गई। मैंने टांग का सहारा ले लिया था।"

"अच्छा," ग्रांदे ने कहा, "आज योजन की वर्षगांठ है। इसलिए मैं तुम्हारी सीढ़ी दुरुस्त किये देता हूँ। जाने तुम औरतें क्यों उस तरफ कदम नहीं रखतीं जो अब तक मज़बूत और ठीक है।"

ग्रांदे ने बत्ती उठा ली और रसोई घर की ओर चल दिया, जहाँ औजार, कीलें और लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े पड़े रहते थे। तीनों औरतें अंधेरे में बैठी रह गईं क्योंकि कमरे में आग के कम्पित प्रकाश के अतिरिक्त और कोई बत्ती नहीं थीं।

"मैं मदद को आऊं?" नानों ने सीढ़ियों पर हथौड़े की आवाज़ सुनते ही पुकार कर पूछा।

"नहीं, नहीं। मैं यह काम खूब जानता हूँ।" टीनसाज़ ने उत्तर दिया।

ग्रांदे स्वयं ही अपनी दीमक चाटी सीढ़ियों की मरम्मत कर रहा था और जोर-जोर से सीटी बजाता जा रहा था। इस समय उसके मस्तिष्क में अपनी जवानी की अनेकों स्मृतियाँ उभर रही थीं। ठीक इसी समय क्रोशो परिवार के तीन व्यक्तियों ने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"अरे मोसियो क्रोशो, क्या आप हैं?" नानों ने छोटे से चौकोर जंगले में से झाँकते हुए पूछा। "हाँ।" मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया।

नानों ने दरवाज़ा खोल दिया और आग का प्रकाश तीनों क्रोशो प्राणियों पर पड़ा जो ड्योढ़ी के अंधेरे में रास्ता टटोल रहे थे।

"ओहो, आप बीबी की वर्षगांठ में शरीक होने आये हैं।" नानों ने

फूलों की सुगंध से अनुमान लगाते हुए कहा।

"सज्जनो, मुझे एक क्षण के लिए क्षमा कीजिये।" ग्रांदे ने पुकारकर कहा क्योंकि उसने आगन्तुकों की आवाजें पहचान ली थीं। "मैं तो आपका तुच्छ सेवक हूँ और मुझे किसी प्रकार का अहंकार नहीं है। मैं अपनी सीढ़ी की मरम्मत आप ही कर रहा हूँ।"

"अजी, छोड़िये भी मोसियो ग्रांदे कोयला फरोश भी अपने घर में मेयर से कम नहीं होता।" मैजिस्ट्रेट ने अपनी समझ में परिहास किया। लेकिन यह संकेत कोई भी न समझ सका और वह आप ही हँस कर चुप हो गया।

मादाम और मादमुआजेल ग्रांदे उनके स्वागत के लिए उठ खड़ी हुईं। मैजिस्ट्रेट अंधेरे से लाभ उठाते हुए योजेन से बोला—

"मादमुआजेल, अपनी वर्षगांठ के शुभ अवसर पर मेरी बधाई स्वीकार कीजिये। तुम्हारे जीवन में ऐसे दिन हजार बार आयें और तुम्हारा स्वास्थ्य बना रहे।"

फिर उसने फूलों का एक ऐसा गुलदस्ता भेंट किया जो सोमूर में बहुत कम देखने में आता था। और ग्रांदे की उत्तराधिकारिणी को बाहों में थामकर उसके दोनों गालों का चुम्बन किया। इस जोशीले अभिवादन से योजेन का चेहरा लाल हो गया। मैजिस्ट्रेट लम्बा और दुबला-पतला आदमी था और जंग लगे कील के सदृश था। उसके निकट एक रमणी से प्रेम करने का यही ढंग था।

"आप लोग बैठे रहिये।" ग्रांदे ने कमरे में वापस आते हुए कहा, "मैजिस्ट्रेट साहब, आप त्यौहार के दिनों का खूब सदुपयोग करते हैं।"

"अगर मादमुआजेल इसके पास रहें तो मेरे भतीजे के लिए हर रोज़ त्यौहार होगा।" पादरी क्रोशे ने उत्तर दिया। उसके पास भी गुलदस्ता था जो उसने योजेन को दिया और उसका हाथ चूमा। रहा मोसियो क्रोशो तो उसने बड़ी बेतकल्लुफी से उसके गालों पर बोसा दिया और कहा: "ऐसे अवसर पर मनुष्य अपने आपको कुछ बड़ा अनुभव करने

लगता है न ? प्रत्येक बारह महीने बाद उम्र में एक साल की वृद्धि हो जाती है।"

ग्रांदे ने बत्ती आतिशदान पर पीतल की घड़ी के पास रख दी। उसकी आदत थी कि जब कोई लतीफा उसे पसंद आता तो वह उसे दोहराये चला जाता, यहाँ तक कि उसमें जान बाकी न रहती। अब भी उसने कहा—"आज योज़ेन की वर्षगांठ है, इसलिए हम खूब रोशनी करेंगे।"

उसने बड़ी सावधानी से शमादान से बचे-खुचे टुकड़े निकाल लिए और दोनों ओर मोमबत्तियों के लिए जगह बनाई। फिर नानों के हाथ से बिल्कुल नई बत्ती, जो कागज़ के टुकड़े में लिपटी हुई थी, ले ली और शमादान में लगाकर उसे रोशन कर दिया। फिर वह अपनी पत्नी के बराबर वाली कुर्सी पर जाकर बैठ गया। कभी बेटी को देखता, कभी मित्रों को और कभी जलती हुई दो मोमबत्तियों को।

पादरी क्रोशो मोटा और ठिंगने कद का आदमी था, जिसके सिर पर बालों की बनी हुई टोपी थी, जो बहुत अधिक इस्तेमाल से भद्दे रंग की हो गई थी। उसकी मुखाकृति बड़ी विचित्र थी। वह एक ऐसी बुढ़िया के समान था जिसका सारा जीवन सुख और संतोष से व्यतीत हुआ हो। इस समय वह पांव फैलाये अपने साफ और मज़बूत जूतों का प्रदर्शन कर रहा था जिन पर सफेद बकसुए लगे हुए थे।

"दे ग्रासीं लोग यहाँ नहीं पहुँचे ?" उसने पूछा।

"अभी तक तो नहीं आये।" ग्रांदे ने उत्तर दिया।

"क्या वे ज़रूर आयेंगे ?" बूढ़े सरकारी वकील ने दरियाफ्त किया। यह बात उसने इस प्रकार मुँह बिगाड़ कर कही थी कि गढ़ों के कारण उसका सारा चेहरा अच्छा-खासा छलनी-सा मालूम होने लगा।

"हाँ, मेरे खयाल में तो वे ज़रूर आयेंगे।" मादाम ग्रांदे ने कहा।

"क्या फसल तैयार हो गई है ?" मैजिस्ट्रेट दे बोन फोन ने ग्रांदे से पूछा, "क्या आपके सब अंगूर इकट्ठे हो गये ?"

"हाँ, सब अंगूर इकट्ठे हो गये।" मोसियो ग्रांदे ने यह वाक्य बड़े ही सगर्व भाव से कुछ अकड़कर कहा और वह उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।

जब वह उस दरवाज़े के पास से गुजरा, जो रसोई की ओर जाता था तो उसने देखा कि आग अब तक जल रही है। और एक मोमबत्ती भी रोशन है। नानों अंगीठी के पास बैठकर चर्खा कातने की तैयारी कर रही है क्योंकि वह वर्षगांठ की पार्टी में से दूर रहना चाहती थी।

"नानों!" उसने बाहर निकलकर पुकारा, "तुम आग क्यों नहीं बुझा देतीं? बत्ती बुझाकर यहाँ भीतर आ जाओ! भगवान की कसम, कमरा इतना बड़ा है कि हम सब आसानी से उसमें बैठ सकते हैं।"

"लेकिन श्रीमान जी, आपके पास तो कुछ प्रतिष्ठित अतिथि आने वाले हैं।"

"क्या तुम भी उन्हीं की तरह मनुष्य नहीं हो? आखिर तुम भी आदम की पसली से उत्पन्न हुई हो, जैसे वे हुए हैं।"

फिर ग्रांदे मैजिस्ट्रेट के पास लौट आया।

"क्या आपने अपनी शराब बेच डाली?" उसने पूछा।

"नहीं; मैंने उसे सँभाल कर रख लिया है। अगर शराब इस समय अच्छी है तो दो साल के अरसे में और अच्छी हो जायगी। शायद आपको मालूम ही होगा कि अंगूर के सारे कृषकों ने आपस में समझौता कर लिया है। वे चाहते हैं कि दर ऊँचे रहें। इस साल वेलजियम के व्यापारी अपनी इच्छा के अनुसार सौदा नहीं कर सकेंगे। अगर वे बिना खरीदे लौट जायें तो भी कोई हर्ज नहीं। अन्त में वे फिर यहीं आयेंगे।"

"हाँ, लेकिन हमें अपने इस निश्चय पर दृढ़ रहना चाहिए।" ग्रांदे ने कुछ ऐसे स्वर में कहा कि मैजिस्ट्रेट कांप उठा।

"अगर इसने हमसे छिपाकर शराब बेच डाली, तो?" उसने सोचा!

उसी क्षण दरवाज़े पर दस्तक हुई और दे ग्रासीं आ पहुँचे। उ

आगमन से मादाम ग्रांदे और पादरी क्रोशो के शान्तिपूर्ण वार्तालाप का अन्त हो गया।

मादाम ग्रासीं छोटे कद की विनोदप्रिय, सुर्ख और सफेद रंगत की औरत थी। और उसकी गणना ऐसी महिलाओं में होती थी, जिनके देहाती जीवन में एकान्तवास की गम्भीरता होती है और जो इस सरल और सादा जीवन के कारण चालीस की अवस्था में भी जवान मालूम होती हैं। ये स्त्रियाँ पतझड़ के गुलाब के अंतिम फूल के समान होती हैं, जो देखने में सुन्दर और आकर्षक लगते हैं; लेकिन उनकी पत्तियों में सुगंध खत्म हो चुकी होती है और वे कुछ मुड़ी-तुड़ी-सी दिखाई देती हैं। उन्हें देखकर कुछ ऐसा लगता है, जैसे सर्दियाँ करीब आ रही हों। वह काफी अच्छा लिबास पहनती थी। उसके कपड़े पेरिस से सिलकर आते थे। सोमूर की सोसाइटी में उसका बड़ा महत्त्व था। और कई बार उनके घर पार्टी भी होती थी। उसका पति शाही फौज में अफ़सर रह चुका था। एक युद्ध में बहुत अधिक घायल हो जाने के कारण उसने अब पैंशन लेली थी। यद्यपि वह ग्रांदे का बड़ आदर करता था; लेकिन उसमें फौजियों की सी अकड़ अब तक बाक़ी थी। कम से कम दूसरों के प्रति उसके व्यवहार से यही बात प्रकट होती थी।

"ग्रांदे, नमस्कार।" उसने स्वभाव के अनुसार महत्ता के भाव से टीनसाज़ की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। इस अंदाज़ के सामने क्रोशो वाली टोली अप्रतिभ हो जाती थी। मादाम ग्रांदे की ओर श्रद्धा से झुकने के बाद उसने योजेन से कहा—"मादमुआजेल, आप सदा ऐसी ही आकर्षक, भोली-भाली और सुन्दर लगती हैं फिर इससे अधिक मैं आपके लिए और क्या प्रार्थना कर सकता हूँ?"

यह कहते हुए उसने नौकर से लेकर एक छोटा-सा डिब्बा उपहार रूप प्रस्तुत किया जिसमें एक पौधा था जो हाल ही में विदेश से योरप लाया गया था। और यहाँ बहुत कम मिलता था।

मादाम दे ग्रासीं ने बड़े प्रेम से योज़ेन को गले लगाया, उसका हाथ

भींचा और कहा :—"मैंने तुम्हें वर्षगांठ का यह छोटा-सा उपहार देने के लिए ओदल्फ को बुलाया है।"

अब एक सुन्दर बालों वाला लम्बे कद का नौजवान आगे बढ़ा; जिसका चेहरा कुछ पीला और क्षीण मालूम होता था। यद्यपि वह लजीला जान पड़ता था, फिर भी उसके हाव-भाव काफी आकर्षक थे। वह पेरिस से अभी-अभी कानून की परीक्षा पास करके आया था। उसने निश्चित रकम से आठ-दस फ्रांक अधिक खर्च कर दिये थे। उसने योज़ेन के दोनों गालों पर बोसा दिया और उसके सामने चांदी का मुलम्मा किया हुआ एक डिब्बा रख दिया। उसके ढक्कन पर एक छोटी-सी तख्ती पर जर्मन ढंग के अक्षरों में "आग" अंकित था जिसके कारण वह डिब्बा जितना कि वह वास्तव में था, उससे अधिक सुन्दर और मूल्यवान मालूम होता था; इसलिए योज़ेन ने बड़ी प्रसन्नता से उसकी ओर देखा। यह वह प्रसन्नता थी जिससे युवा रमणियों का चेहरा दुखने लगता है और हाथ कांपने लगते हैं। उसने अपने पिता की ओर यों देखा, जैसे पूछ रही हो कि क्या मैं इसे स्वीकार कर लूँ? इस मूक प्रश्न के उत्तर में मोसियो ग्रांदे ने कहा "ले लो, मेरी बच्ची।" और ये शब्द कुछ इस ढंग से कहे गये कि अगर कोई अभिनेता उन्हें इस ढंग से अदा करता तो निश्चय ही उसकी बड़ी शोहरत होती। तीनों क्रोशो आश्चर्य-चकित खड़े रह गये, जब उन्होंने देखा कि योज़ेन ने एक ऐसा उपहार पाकर जो शायद उसने कभी स्वप्न में भी नहीं देखा था, एक आह्लाद और उल्लास भरी दृष्टि ओदल्फ ग्रासीं पर डाली है।

मोसियो दे ग्रासीं ने अपनी नस्वार की डिबिया मोसियो ग्रांदे को पेश की और एक चुटकी खुद भी ली। फिर उसने अपने नीले कोट और उसके काज में लगे हुए सम्मान पदक पर नस्वार के कण झाड़ते हुए क्रोशो लोगों की ओर देखा, जैसे कह रहा हो—"इस वार को रोको तो जानें।"

मादाम ग्रासीं की निगाह नीले काँच के फूलदानों पर पड़ी, जिनमें

क्रोशो लोगों के लाये हुए गुलदस्ते रखे थे। उसने उनके उपहारों को कुछ ऐसे निरीह भाव और झूठी दिलचस्पी के साथ देखा, जिसका स्पष्ट अर्थ व्यंग्य और परिहास था।

स्थिति काफी गम्भीर हो गई। सब लोग आग के गिर्द एक घेरे में बैठे थे। पादरी उनके बीच से उठकर ग्रांदे के साथ कमरे में टहलने लगा। जब दोनों बुड्ढे कमरे के आखिरी कोने की खिड़की तक पहुँचे, जो आग के गिर्द बैठे हुए लोगों से बहुत दूर थी, तो पादरी ने कंजूस के कान में कहा—"ये लोग तो अपना पैसा पानी की तरह बहा रहे हैं।"

"मुझे इससे क्या ? आखिर यह पैसा मेरे ही काम आ रहा है न ?" अंगूर के बुड्ढे कृषक ने कहा। "आप तो खुद इतने समर्थ हैं कि चाहें तो बेटी को सोने की कैंची बनवाकर दे सकते हैं।" पादरी बोला। "मैं तो उसे कैंची से कोई अधिक उपयोगी वस्तु दूँगा।"

"मेरा भतीजा भी कितना मूर्ख है।" पादरी ने मैजिस्ट्रेट पर दृष्टि डालते हुए सोचा, जिसके चेहरे पर बिखरे हुए बालों ने उसे और भी कुरूप बना दिया था। "उसे भी कोई ऐसा ही मूल्यवान और मूर्खतापूर्ण उपहार देने की बात क्यों नहीं सूझी ?"

"आइये मादाम ग्रांदे, ताश की एक बाज़ी हो जाये।" ग्रासीं ने कहा। "इस समय हम सब यहाँ एकत्रित हैं और दो मेजों के लिए काफी आदमी हैं······।" "आज योजन की वर्षगाँठ है इसलिए आज सब मिल-कर लुड्डो क्यों न खेलें ?" बूढ़ा ग्रांदे बोला, "इस खेल में यह दो बच्चे भी शरीक हो सकते हैं।"

यह कहते हुए बूड्ढे ग्रांदे ने अपनी बेटी और ओदल्फ की ओर इशारा किया। खुद उसने आज तक किसी खेल में भाग न लिया था।

"यहाँ आओ, नानों। मेजें बाहर निकाल दो।"

"हम सब तुम्हारी सहायता करेंगे।"

मादाम ग्रासीं ने विनोद भाव से कहा। वह बड़ी प्रसन्न थी क्योंकि वह योजेन को खुश करने में सफल हुई थी। "मैंने कभी ऐसी सुन्दर वस्तु

नहीं देखी।" योज़ेन ने उससे कहा था, "मैंने जीवन में पहले कभी ऐसी प्रसन्न नहीं थी।"

"यह ओदल्फ की पसन्द है।" मादाम ग्रासीं ने लड़की के कान में कहा, "वह पेरिस से लेकर आया है।"

"अपना दांव खेलती रहो, तुम धूर्त्त लोमड़ी।" मैजिस्ट्रेट मन ही मन में बड़बड़ाया। "अगर तुम या तुम्हारे पति महोदय कभी अदालत में आये तो भुगत लूंगा।"

सरकारी वकील ने संतोष से कोने में अपनी कुर्सी पर बैठे हुए पादरी की ओर देखा और मन में सोचने लगा—"दे ग्रासीं जो भी चाहें कर लें। मेरी, मेरे भाई और भतीजे की जायदाद मिलाकर कोई ग्यारह-लाख फ्रांक होती है। ग्रासीं के पास तो इससे आधी रकम भी न होगी फिर उनके एक बेटी भी है, उन्हें उसे भी देना है। अब उनका जो जी चाहे दे लें, आखिर एक दिन सब हमारा हो जायगा—ग्रांदे की उत्तराधिकारिणी भी और ये सब उपहार भी।"

साढ़े आठ बजे तक दोनों मेजें तैयार हो गईं। मादाम दे ग्रासीं ने ऐसी चतुरता से काम लिया कि उसके बेटे को योज़ेन के पास वाली कुर्सी मिल गई। इस नाटक के सभी पात्र देखने में साधारण प्राणी नजर आते थे; लेकिन भीतर से वे बड़े ही दिलचस्प थे। हर आदमी को गत्ते का एक रंग-बिरंगा तख्ता और शीशे के नीले टुकड़े दे दिये गये। बूढ़ा सरकारी वकील हर नम्बर निकालने से पहले कोई न कोई चुभता हुआ वाक्य अवश्य कहता। ऐसा मालूम होता था कि उसके लतीफों को सब लोग बड़ी दिलचस्पी से सुन रहे हैं। लेकिन वास्तव में सब ग्रांदे की अतुल सम्पत्ति के बारे में सोच रहे थे। खुद बूढ़ा टीनसाज़ भी एक प्रकार के आत्म-संतोष के साथ इन लोगों का निरीक्षण कर रहा था। उसने मादाम दे ग्रासीं की ओर देखा, जो सिंगार किये और टोपी में प्याजी रंग के पंख खोंसे बैठी थी। फिर साहूकार के सैनिकों जैसे चेहरे पर नज़र डाली। उनके अतिरिक्त ओदल्फ, मैजिस्ट्रेट, पादरी और

सरकारी वकील सबका बारी-बारी निरीक्षण किया। उन्हें देखकर वह सोचने लगा— 'ये लोग मेरे धन के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं और इसीलिए यहाँ आते हैं। मेरी बेटी के लिए इतना कष्ट सहन करते हैं। आहा, ये मेरी बेटी को जीतने की फिक्र में हैं। लेकिन मेरी बेटी इनमें मे किसी की भी नहीं होगी। मैं इन लोगों को मछली पकड़ने के कांटे की तरह इस्तेमाल करूंगा।"

इस पारिवारिक पार्टी की सारी चहल-पहल महज़ दिखावे की थी। अगर कहीं सहृदयता थी तो योज़ेन और उसकी माँ की हँसी में, जिसमें नानों के चर्खे की रूँ-रूँ भी शामिल हो जाती थी। धन के लिए ये लोग नीचता पर उतर आये थे। इस युवा रमणी की स्थिति अलभ्य पक्षी की थी, जिसे यह भी मालूम न हो कि मेरा मूल्य क्या है। लेकिन इस मूल्य के कारण उसका शिकार किया जा रहा हो। लोग उससे मित्रता जता रहे थे और वह भी इस धोखे में आ गई थी। दो बत्तियों के मद्धम प्रकाश में इस भूरे रंग की पुरानी बैठक में जो नाटक खेला जा रहा था, उसका प्रत्येक दृश्य एक खेदजनक सुखान्त नाटक का दृश्य था। लेकिन क्या यह वही नाटक नहीं है जो दुनिया के हर हिस्से में हर एक युग में खेला जाता रहा है। अन्तर सिर्फ इतना है कि यहाँ इसका अभिनय अत्यंत सीधे-सादे और स्पष्ट रूप में हो रहा था।

बूढ़े गोरियो को इस नाटक के दूसरे पात्रों पर विशेषता प्राप्त थी, जो दोनों परिवारों के झूठे प्रेम को अपने फायदे के लिये इस्तेमाल कर रहा था और उनकी दिखावे की मित्रता द्वारा हजारों बना रहा था। इसका अर्थ उसमें मूर्तिमान हो गया। उसकी मुखमुद्रा इस अर्थ को स्पष्ट किये देती थी। वह ऐसे देवता के समान था, जिसकी इस युग में हर कोई पूजा करता है—पूर्ण रूप से शक्ति सम्पन्न धन का देवता।

ग्रांदे के लिए कोमलतम भावनाएँ सर्वथा गौण थीं, इसके विपरीत नाँनों, योज़ेन और उसकी माता के पवित्र हृदयों में ये भावनाएं इतनी अधिक थीं कि वहाँ और किसी विचार के लिए स्थान ही न था। लेकिन

उनकी इस निरीह सरलता में अज्ञान का कितना समावेश था। योज़ेन और उसकी माँ को ग्रांदे के धन-दौलत के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। उन्होंने अपनी एक छोटी-सी दुनिया अलग बसा रखी थी और वे इसी दुनिया के विचारों के धुंधले प्रकाश में प्रत्येक वस्तु को देखती थीं। उन्हें धन से न तो कोई रुचि थी और न ही अरुचि क्योंकि पैसे के बिना जीवन बिताने की वे अभ्यस्त हो चुकी थीं। अफसोस कि वे अपनी श्रेष्ठतम भावनाओं से भी परिचित नहीं थीं। इसका मतलब यह है कि वे गुप्त रूप से उनके हृदय में विद्यमान थीं और इन्हीं भावनाओं के कारण वे उन लोगों में भी अजनबी बनी हुई थीं, जो यहाँ इकट्ठे होते थे और जिनके जीवन शुद्ध रूप से भौतिकवादी थे। मनुष्य की स्थिति भी कितनी भयानक है; उसके जीवन में एक भी प्रसन्नता ऐसी नहीं, जिसका उद्गम किसी न किसी प्रकार का अज्ञान न हो।

ठीक इसी समय जबकि मादाम ग्रांदे ने सोलह सौ की शानदार रकम जीतकर जेब में डाली थी और नाँनों अपनी मालकिन को इस घर में इतनी रकम पहली बार हाथ में लेते देखकर खुशी से फूली न समा रही थी, दरवाजे पर इस ज़ोर से दस्तक हुई कि स्त्रियाँ अपनी कुर्सियों पर बैठी-बैठी उछल पड़ीं।

"सोमूर भर में कोई इतने ज़ोर से दरवाज़ा नहीं खटखटाता!" सरकारी वकील ने कहा।

"इतने जोर से कौन खटखटा रहा है?" नाँनों चिल्लाई, "क्या हमारा दरवाजा तोड़ोगे?"

"यह कौन शैतान आया है?" ग्राँदे चिल्लाया।

नाँनों ने दोनों में से एक बत्ती उठा ली और दरवाजा खोलने चली। ग्रांदे भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

"ग्रांदे! ग्राँदे!" उसकी पत्नी ने चीखकर कहा। वह भय से कांप रही थी। और जल्दी से उठकर दरवाजे की ओर चल दी।

सब खिलाड़ियों ने एक दूसरे की ओर देखा। "क्यों न हम भी चलें?"

मोसियो दे ग्रासीं ने कहा, "कोई अजीब तरह से खटखटा रहा है। मुझे तो इसमें कोई शरारत जान पड़ती है।"

एक नौजवान और उसके साथ एक कुली भीतर आया, जो दो बड़े-बड़े ट्रंक सिर पर रखे था और सामान के कई थैले घसीटता ला रहा था। मोसियो दे ग्रासीं ने नौजवान का चेहरा अभी अच्छी तरह देखा भी न था कि ग्रांदे बड़ी तेज़ी से अपनी पत्नी की ओर पलटा और बोला—

"मादाम ग्रांदे, तुम जाओ और अपने खेल जारी रखो। मैं इन महाशय से खुद निबट लूंगा।"

और उसने दरवाज़ा ज़ोर से बन्द कर दिया। खिलाड़ी फिर अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गये। लेकिन वे इतने उद्विग्न थे कि उनके लिए खेल जारी रखना कठिन हो गया।

"मोसियो दे ग्रासीं, क्या वह कोई सोमूर का रहने वाला है?" उसकी पत्नी ने पूछा।

"नहीं, कोई मुसाफिर है।"

"तब तो ज़रूर पेरिस से आया होगा।"

"यह क्या बात है?" सरकारी वकील ने जेब से एक पुरानी घड़ी निकालते हुए कहा, जो दो अंगुल मोटी थी और हालैंड की नाव के सदृश भद्दी थी, "नौ बज गये। डाक गाड़ी तो कभी देर से नहीं आती।"

"क्या आने वाला कोई जवान आदमी है?" पादरी क्रोशो ने पूछा।

"हाँ।" मोसियो दे ग्रासीं ने उत्तर दिया। "उसके सामान का वज़न कम से कम तीन चार मन होगा।"

"नानों अभी नहीं लौटी?" योज़ेन बोली।

"यह ज़रूर कोई आपका सम्बन्धी होगा।" मजिस्ट्रेट ने अपना मत प्रकट किया।

"आओ खेल शुरू कर दें।" मादाम ग्रांदे ने विनम्रता से कहा, "मैं उनके स्वर से समझ गई हूँ कि मोसियो ग्रांदे को कोई बात बुरी लगी है। अगर उन्होंने भीतर आकर हमें अपने मामलों पर बातचीत करते

सुना तो शायद अप्रसन्न होंगे।"

"मादमुआज़ेल !" ओदल्फ योजेन से बोला "यह अवश्य आपके चचेरे भाई ग्रांदे होंगे। बड़े सुन्दर युवक हैं। मैं उनसे एक बार मोसियो दे नोसंजेन के घर डांस में मिला था।"

ओदल्फ और अधिक न बोल सका क्योंकि उसकी मां ने मेज़ के नीचे से उसके पांव पर ज़ोर से पांव मारा और उच्च स्वर में उससे चाल चलने के लिए दो सौ साऊस मांगे। लेकिन धीरे से उसके कान में बोली, "अपना मुंह बन्द रखो। तुम भी कितने बड़े मूर्ख हो।"

इन लोगों ने सीढ़ियों पर नानों और कुली के कदमों की चाप सुनी। लेकिन इसके तुरन्त बाद ग्रांदे कमरे में लौट आया और उसके पीछे-पीछे वह नौजवान भी आया, जिसने इन लोगों को इस प्रकार आश्चर्य-चकित कर दिया और उनके मस्तिष्क में हलचल मचा दी थी। दरअसल इस गिरोह में उसका आगमन ऐसा ही था, जैसे कोई घोंगा शहद के छत्ते में आजाय, अथवा जैसे किसी गांव के पालतू पक्षियों में जंगली मोर आ निकले।

"आग के निकट होकर बैठ जाओ।" ग्रांदे ने अजनबी से कहा।

नौजवान ने कमरे में चारों ओर एक दृष्टि डाली, और फिर बैठने से पहले बड़ी शिष्टता से झुककर प्रणाम किया। पुरुष सम्मान से उठ खड़े हुए। स्त्रियों ने भी अत्यन्त शिष्टता से प्रणाम का उत्तर दिया। "महोदय, मेरे खयाल में आपको सर्दी लग रही है।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "आप शायद बड़ी दूर से..."

"बस औरतों की यही बातें होती हैं।" ग्रांदे ने हाथ में जो पत्र ले रखा था, उससे दृष्टि उठाकर कहा, "इन बेचारों को ज़रा इतमीनान से बैठने तो दो।"

"लेकिन पिताजी, इन्हें शायद सफर के बाद किसी चीज़ की ज़रूरत होगी।" योज़ेन बोली।

"तो इनके मुंह में जबान है।" उसके पिता ने निष्ठुरता से उत्तर दिया।

सिर्फ अजनबी ही ऐसा व्यक्ति था, जिसे यह दृश्य अखरा वरना बाकी सब बूढ़े की धृष्टता के आदी हो चुके थे। लेकिन जब यह दो प्रश्नोत्तर हो चुके तो अजनबी उठकर आग की ओर पीठ करके खड़ा हो गया और अपने एक बूट का तला सुखाने के लिए पैर आग की ओर कर दिया। फिर योज़ेन से कहने लगा—"बहुत धन्यवाद, मैंने तोर में भोजन कर लिया था। और अब मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं," और ग्रांदे की ओर पलट कर कहा, "मुझे कोई ऐसी थकान भी महसूस नहीं हो रही।"

"क्या आप पेरिस से आये हैं?" इस बार मादाम ग्रासीं ने प्रश्न किया।

मोसियो शारल ने, यह उस नौजवान का नाम था और वह पेरिस वाले ग्रांदे का बेटा था, जब किसी को अपने से प्रश्न करते सुना, तो गर्दन में डोरी से लटकती हुई ऐनक को आंख पर ले गया और मेज़ पर रखी हुई वस्तुओं और उसके गिर्द बैठे हुए लोगों का ध्यान से निरीक्षण किया फिर अपनी जांच-पड़ताल करके उसने बड़ी उद्दण्डता से मादाम ग्रासीं को घूरा और बोला, "हाँ मादाम, मैं पेरिस से आया हूँ। चची, आप ताश खेल रही हैं, खेलती रहिये। यह तो इतना दिलचस्प खेल है कि छोड़ने को जी नहीं चाहता।"

"मैं जानती थी कि यह उसका चचेरा भाई होगा।" मादाम दे ग्रासीं ने सोचा और उसे कनखियों से बार-बार देखने लगी।

"सैंतालीस!" बूढ़ा पादरी बोला, "गिनिये, मादाम दे ग्रासीं यह आपका नम्बर है न?"

मोसियो दे ग्रासीं ने पासा अपनी पत्नी के पत्तों पर रख दिया। लेकिन पत्नी को अब खेल से तनिक भी दिलचस्पी न रही थी। उसे तो अब भांति-भांति की शंकायें परेशान कर रही थीं। कभी योज़ेन की ओर

देखती थी और कभी पेरिस से आये हुए चचेरे भाई की ओर। योज़ेन थोड़ी-थोड़ी देर बाद चुपके से अजनबी की ओर देख लेती थी और उसकी निगाहों में साहूकार की पत्नी को आश्चर्य और उत्सुकता का सम्मिश्रण दिखाई दे रहा था।

इसमें सन्देह नहीं कि इस बाइस वर्षीय सुन्दर युवक मोसियो शारल ग्रांदे और कस्बे के इन प्रतिष्ठित वासियों में आकाश और पाताल का अन्तर था। ये लोग उसके अमीराना ठाठ और हाव-भाव से विक्षुब्ध हो उठे थे, और बड़ी सावधानी से और इस दृष्टि से उसका निरीक्षण कर रहे थे ताकि उसका कोई दोष खोज निकालें और परिहास कर सकें। यहाँ इस बात का स्पष्टीकरण आवश्यक है।

बाईस वर्ष की अवस्था कुछ ऐसी होती है कि इन्सान को इस समय अपना बचपन अधिक दूर मालूम नहीं होता और यद्यपि यौवनकाल का प्रारम्भ हो चुकता है; लेकिन बाल-सुलभ चंचलता पर लज्जा नहीं आती। शारल ग्रांदे के व्यवहार में भी बचपना था। लेकिन शायद निन्यान्वे फीसदी नौजवान ऐसा ही व्यवहार करते जैसा कि उसने किया था। कुछ दिन पहले उसके पिता ने उसे दो चार महीने अपने चचा के पास सोमूर जाकर रह आने को कहा था। शायद पेरिस वाले मोसियो ग्रांदे को उस समय योज़ेन का भी खयाल आया हो। शारल का किसी कस्बे में आने का यह पहला अवसर था। इसलिए उसके बारे में उसके विचार भी विभिन्न थे। उसका जी चाहा कि इस कस्बे के लोगों के सामने फैशनेबल नौजवान की शान के साथ जाऊं। मेरी सज-धज देखकर आस-पड़ोस में हलचल मच जाये और मेरे कारण लोग पेरिस के ठाठ-बाठ से परिचय प्राप्त करें। सारांश यह है कि उसने सोचा था कि सोमूर में मैं अपने नाखूनों की सफाई पर पेरिस से अधिक ध्यान दूँगा और हर रोज बढ़िया से बढ़िया पोशाक पहनूंगा और उसके पहनने में किसी प्रकार की असावधानी को पास न आने दूंगा, यद्यपि असावधानी फैशनेबल नौजवानों के स्वभाव में शामिल है और उसका अपना एक आकर्षण भी है।

और इसलिए शारल शिकार की बढ़िया वर्दी, अत्यन्त सुन्दर राईफल और एक चमकदार चाकू जिस पर पेरिस का नफीसतर ग़िलाफ चढ़ा हुआ था, अपने साथ लाया था। इसके अतिरिक्त उसके पास विभिन्न प्रकार की वास्कटें थीं—भूरी, सफेद, स्याह, हरी और सुनहरे बेल-बूटों वाली। कुछ छाती के ऊपर से दोहरी, किसी के कालर गोलाई से मुड़े हुए, तो कोई खड़े कालर की, कुछ के कालर नीचे को मुड़े हुए, कोई गले पर से खुली हुई तो किसी में ठुड्डी पर सुनहरे बटन लगे हुए। उस समय जिन टाइयों और मफलरों का रिवाज था, वे सब उसने इकट्ठे कर रखे थे। उसके सब कपड़े एक से एक बढ़िया थे और वह एक सुनहरी काम वाला ड्रेसिंग केस भी साथ लाया था, जो उसकी मां ने उसे दिया था। सारांश यह कि वह बांकपन की सारी वस्तुएं साथ लाया था, यहां तक कि वह एक छोटा-सा आकर्षक राइटिंग केस भी लाना नहीं भूला था, जो एक अत्यंत सहृदय रमणी ने, जिसे कम से कम वह सहृदय समझता था, उपहार दिया था। वह इस समय अपने पति के साथ स्काटलैंड की नीरस और थका देने वाली यात्रा कर रही थी। पति को उसके चरित्र पर संदेह हो चुका था। इसलिये समझदारी का तकाज़ा था कि वह इस समय के लिये अपनी प्रसन्नता का त्याग करे। शारल इस स्त्री को हर पंद्रहवें दिन पत्र लिखता था और इसके लिए अत्यंत सुन्दर कागज़ अपने साथ लाया था।

पेरिस का सारा निरर्थक सामान उसके साथ था, कोई भी वस्तु छूटने न पाई थी—घोड़े के चाबुक से लेकर जो द्वन्द्व-युद्ध शुरू करने के काम आता है, बेलबूटे कढ़ी हुई पिस्तौल का एक जोड़ा तक, जिनसे द्वन्द्व-युद्ध का अंत होता है, उसके पास मौजूद थी। एक विलासी नौजवान को जीने की कला सीखने के लिए, जिन औज़ारों की आवश्यकता होती है, वे सब उसके पास मौजूद थे।

उसके पिता ने उसे अकेले और सीधे-साधे ढंग से यात्रा करने को कहा था। और उसने पिता के आदेश का पालन किया था। वह डाक

गाड़ी में बैठकर आया था, और एक पूरी सीट किराये पर लेली थी। यह कुछ ऐसा बुरा भी नहीं रहा क्योंकि इससे उसकी नई आराम देह और फैशनेबल वग्घी खराब होने से बच गई, जिसमें बैठकर वह आनेत से मिलने के लिए जाना चाहता था। यह वह रमणी थी जो''''इत्यादि इत्यादि, जिसके पास उसे जून में बाडन-बाडन के स्थान पर पहुँचना था।

गारल को उम्मीद थी कि अपने चचा के पास रहते हुए उसकी बीसियों लोगों से भेंट होगी, वह चचा के जंगलों में शिकार खेला करेगा। फिर उसे यह भी आशा थी कि बहुत बड़ी जागीर में एक बड़ा-सा मकान होगा, वह तो सोच ही नहीं सकता था कि उसका चचा सोमूर में रहता होगा। उसे तो फिरवाफोन का पता पूछते-पूछते पता चला कि वह यहां रहते हैं। लेकिन यह मालूम हो जाने के बाद भी उसे आशा थी कि उनकी रहायश एक लम्बी-चौड़ी हवेली में होगी। खैर, उसका चचा फिरवाफोन में होता चाहे सोमूर में, उसने निश्चय कर लिया था कि मैं चूंकि पहली बार मिलूँगा, इसलिए शान से जाना चाहिए। अतः उसने यात्रा का बढ़िया से बढ़िया लिबास पहन रखा था, जिसमें कुछ ऐसी सादगी थी जो आँखों में खुबी जाती थी। किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के सर्वोत्तम गुणों की प्रशंसा के लिए अगर उस समय का प्रचलित वाक्य प्रयोग किया जाये तो यह लिबास "अत्यंत आकर्षक" था। तोर में उसने एक हज्जाम से अपने भूरे सुन्दर बाल बनवाये और वस्त्र बदल कर गले में काले साटन का रूमाल बांधा, जो उसके गोरे रंग और मुस्कराते हुए चेहरे पर बहुत ही भला लग रहा था। वह लम्बा कोट पहने हुए था जो कमर पर से खूब कसा हुआ था। उसके भीतर से एक गर्म ऊनी कपड़े की गोल मुड़े हुए कालरों वाली वास्कट दिखाई दे रही थी। उसके नीचे किसी सफेद कपड़े की एक और वास्कट थी। उसने घड़ी बड़ी बेपरवाही से एक जेब में ठूंस रखी थी। अगर सोने की जंजीर काज में न लगी होती तो यह मालूम होता कि घड़ी वैसे ही साथ चली

आई है। उसकी मटियाले से रंग की पतलून के दोनों ओर बटन लगे हुए थे और समोनों पर काले रेशमी धागे से बेलबूटे बने थे। इसी रंग के चमकदार दस्ताने थे और हाथ में उसने सुनहरी मूठ वाली एक छड़ी बड़ी शिष्टता से थाम रखी थी। छड़ी इतनी साफ थी कि दस्ताने खराब होने की तनिक भी आशंका न थी। उसके सारे लिबास से उसकी परिष्कृत रुचि व्यक्त होती थी और यात्रा की टोपी इस चित्र को पूर्ण किये देती थी। ऐसे लिबास में तो पेरिस का वासी ही भला लग सकता है, बल्कि पेरिस का भी वह व्यक्ति जो किसी ऊंचे वर्ग का हो। वह बेढंगेपन को इस पराकाष्ठा पर ले जा सकता है कि उसे देखकर हंसी न आये बल्कि निरर्थक वस्तुओं में भी एक प्रकार का सामंजस्य उत्पन्न हो जाये। फिर यह नौजवान तो एक और कारण से भी शानदार लग रहा था। उसमें एक ऐसे पक्के निशानेबाज़ का सा आत्मविश्वास था, जो यह जानता हो कि मेरे पास दो सुन्दर पिस्तौल हैं और मुझे आनेत का प्रेम प्राप्त है।

सोमूर के वासियों और पेरिस के इस नौजवान ने जब एक दूसरे को देखा तो उनके मन में किस विस्मय की कैसी भावनाएं उत्पन्न हुईं और मैले और अंधेरे कमरे में मेज़ के गिर्द बैठे हुए लोगों में इस अजनबी के बढ़िया वस्त्रों तथा उत्कृष्ट रुचि से जो हलचल मची अगर आप उसे भली भांति समझना चाहते हैं तो कल्पना-चक्षु से क्रोशो परिवार के लोगों को देखिये।

वे तीनों नसवार सूंघते थे और इसके इस्तेमाल के कारण उनकी मैली कमीज़ों की झालरों पर काली पपड़ी-सी जम गई थी। लेकिन उन्हें सफाई का तनिक भी खयाल न था। उनके मुड़े-तुड़े-से रेशमी रूमाल मोटी रस्सी के सदृश बटे हुए थे और वे उन्हें कसकर गर्दन के गिर्द बांधे हुये थे। उनके कालर मसले-वसले और दागदार थे और कपड़े भी मैले थे। इसके अतिरिक्त उनके पास नीचे पहने जाने वाले कपड़े इतने अधिक थे कि साल में एक बार ही धुलाने की जरूरत पड़ती थी और अलमारी में पड़े-पड़े उनके रंग काफी फीके पड़ जाते थे। उनमें बुढ़ापे

और कुरूपता का एक विचित्र सम्मिश्रण हो गया था। उनके कठोर और झुर्रियोंदार चेहरों और घिसे हुये कपड़ों में बड़ा सामंजस्य था। वे और उनके कपड़े दोनों पुराने मुड़े-तुड़े और असुन्दर थे।

देहात के लोग अपने रहन-सहन के बारे में प्रायः उदासीन और असावधान रहने लगते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह लिबास के बारे में दूसरों की पसंद की परवाह करना छोड़ देते हैं और नये दस्ताने तक खरीदने की ज़रूरत महसूस नहीं करते। कमरे में बैठे हुए दूसरे मेहमानों के वस्त्र भी ऐसे ही भद्दे और मुड़े-तुड़े थे जैसे क्रोशो परिवार के। उनमें सफाई और ताज़गी का अभाव था। क्रोशो और ग्रासीं लोग एक बात में लगभग सहमत थे—उन दोनों के निकट फैशन अत्यन्त घृणित वस्तु था।

पेरिस के इस नौजवान ने अपनी आँखों पर चश्मा फिर चढ़ा लिया और कमरे की विचित्र वस्तुओं का निरीक्षण करने लगा। उसकी दृष्टि छत की कड़ियों से टकराती हुई मैली-कुचैली आलमारियों पर पड़ी, जिन्हें मक्खियों ने गंदा कर दिया था। उनमें बागबानी और कृषि सम्बन्धी जो पुस्तकें रखी हुई थीं, उनके बीच-बीच में काले धब्बे पड़ गए थे। इसी समय लुड्डो के सब खिलाड़ी उसे कुछ ऐसी उत्सुकता और आश्चर्य से देख रहे थे, जैसे उनके बीच जिराफ़ आ खड़ा हो। फिर मोसियो दे ग्रासीं और उसका बेटा भी दूसरों की भांति आश्चर्यचकित थे, हालांकि उन्होंने फैशनेबल लोगों को काफी देखा था। शायद इसका कारण यह हो कि इस अजनबी के बारे में जो भावनाएं दूसरों में उत्पन्न हुई थीं उसका अस्पष्ट-सा प्रभाव उनपर भी पड़ा, शायद उनके मन में उपेक्षा का भाव न था और उनकी व्यंग्ययुक्त दृष्टि अपने पड़ोसियों से यह कहती मालूम हो रही थी—'देखा आपने, पेरिस के लोग किस शान से रहते हैं!' सब लोग इस समय शारल को बड़े इतमीनान और आज़ादी से देख सकते थे। उन्हें मालिक-मकान की अप्रसन्नता का भय नहीं था क्योंकि ग्रांदे एक लम्बा पत्र पढ़ने में तल्लीन था। पत्र उसने हाथ में थाम रखा था और मेज़ पर जल रही अकेली मोमबत्ती उसने अपने मेहमानों की असुविधा का विचार

किये बिना ही अपनी ओर सरका ली थी।

योज़ेन ने सुन्दरता को पहले कभी यों मूर्तिमान नहीं देखा था; इसलिये उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका चचेरा भाई कोई देवता है अथवा कोई ऐसा प्राणी है जो आकाश से उतरा है। उसके सुन्दर घुंघराले बालों से जो सुगन्धि आ रही थी उसे वह बहुत ही भली मालूम हो रही थी। उसका जी चाहता था कि शारल के कोमल और चिकने दस्तानों को छू कर देखे। उसे अपने चचेरे भाई के छोटे-छोटे हाथों, रंग-रूप और अंग-विधान के माधुर्य और कोमलता पर ईर्ष्या हो रही थी। पेरिस के इस नौजवान को देखकर उसके मन में वही कोमल भावनायें उत्पन्न हुईं जो अंग्रेजी अलबमों में सुन्दर स्त्रियों के कल्पित चित्र देखकर किसी नौजवान के मन में उत्पन्न होती हैं। चिकने कागज़ पर ये चित्र ऐसी निपुणता से बनाये जाते हैं कि आँख झपकते डर लगता है, कहीं यह दृश्य नज़र से ओझल न हो जाय। लेकिन योज़ेन का बेकारी का जीवन तो जुरावें ठीक करते और पिता के कपड़ों में पैबंद लगाते बीता था। वह तो इस गन्दी खिड़की में बैठी रहती थी, जहाँ से घंटे भर में बस एक प्राणी निस्तब्ध गली में से गुज़रता दिखाई देता था। इस सुन्दर और आकर्षक युवक को देखकर उसके मन में जो अस्पष्ट-सी भावनाएं उत्पन्न हुई थीं, वह इस उपमा द्वारा पूर्ण रूप से कदाचित व्यक्त नहीं हो सकतीं।

शारल ने जेब से वही रूमाल निकाला जो स्काटलैंड में यात्रा करने वाली धनी स्त्री ने काढ़ा था। यह रूमाल कितना बढ़िया था! वह प्रेम के हाथों ऐसे क्षणों में तैयार हुआ था, जो प्रेम के काम न आ सके। योज़ेन ने विस्मय में भरकर अपने भाई की ओर देखा। क्या वह इसे वाकई इस्तेमाल करेगा? शारल का आचार-व्यवहार, उसके संकेत, उसका ऐनक लगाने का ढंग, उसकी अकड़ और अभिनय, उस छोटे से डिब्बे के प्रति उसका उपेक्षाभाव, जिसे लेकर ग्रांदे की उत्तराधिकारिणी थोड़ी देर पहले इतनी प्रसन्न हुई थी और जो शारल के निकट बहुत ही बेकार-सी शै थी, सारांश यह कि प्रत्येक छोटी-छोटी बात, जिससे क्रोशो

और ग्रासीं लोग चिढ़ रहे थे, योज़ेन को इस कदर प्रसन्न और विमुग्ध कर रही थी कि रात को सोने से पहले बहुत देर तक लेटे-लेटे वह अपने इस विचित्र भाई के बारे में सोचती रही।

इस बीच में नम्बर निकालने का काम बड़ी सुस्ती से हो रहा था; इसलिये खेल जल्द ही खत्म हो गया। लम्बी नॉनों कमरे में आई और उसने बड़े जोर से कहा :—

"मादाम, इन साहब के बिस्तर के लिए मुझे कुछ चादरें दे दीजिये।"

मादाम ग्रांदे नॉनों के साथ चली गई। और मादाम दे ग्रासीं ने चुपके से कहा—"आओ अब हम पैसे रख लें और खेल खत्म करें।"

हर खिलाड़ी ने टूटी हुई तश्तरी में से जिसमें बाजी के पैसे जमा थे अपना-अपना सिक्का उठा लिया। फिर एक हलचल-सी पैदा हुई और सबने आग की ओर सरकना शुरू किया।

"क्या खेल खत्म हो गया ?" ग्रांदे ने पूछा जो अभी तक पत्र पढ़ रहा था।

"हाँ, हाँ," मादाम ग्रांसीं ने शारल के निकट बैठते हुए उत्तर दिया।

योज़ेन के हृदय में यह अस्पष्ट-सी भावना पहली बार उत्पन्न हुई थी। बैठे-बैठे उसे जाने क्या खयाल आया कि वह एकदम उठी और नॉनों और अपनी माँ की सहायता करने के लिये बाहर चली गई। अगर कोई चतुर पादरी उससे प्रश्न करता तो निस्सन्देह वह स्वीकार कर लेती कि वह नॉनों अथवा अपनी माँ के बारे में तनिक भी न सोच रही थी। उसके भीतर एक विचित्र प्रकार की उद्विग्नता और तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई थी कि अपने भाई के कमरे की प्रत्येक वस्तु ठीक-ठाक कर दे। वह चाहती थी कि उसके किसी न किसी काम में व्यस्त रहे ताकि कोई चीज़ ऐसी न हो जिसकी उसके चचेरे भाई को जरूरत हो और वह वहाँ न हो। फिर वह इस बात का भी विश्वास कर लेना चाहती थी कि प्रत्येक वस्तु साफ-सुथरी और जहाँ तक सम्भव हो सके सुन्दर भी हो। उसने आप ही आप सोच लिया था कि सिर्फ वही एक ऐसी है जो अपने इस भाई के

विचारों और रुचि को समझ सकती है।

वह ठीक समय पर पहुँची। उसकी माँ और नॉनों यह निश्चय कर लेने के उपरांत कि कमरा बिल्कुल ठीक है, वहाँ से निकलने ही वाली थीं लेकिन योज़ेन ने एक क्षण में उन्हें यह बोध करा दिया कि अभी तो सब कुछ करना बाकी है। उसने नॉनों को बताया कि चादरों को हवा नहीं लगवाई गई। उन्हें गर्म करने के लिये अंगीठी लानी चाहिये। नीचे चूंकि आग जल रही थी, इसलिए राख वहाँ से लाई जा सकती थी। उसने खुद एक पुरानी-सी मेज़ पर एक सफेद और साफ कपड़ा निकाल कर डाल दिया और नॉनों को ताकीद की कि नित्य उसे बदल दिया करे। उसने कहा कि कमरे में आग अच्छी तरह जला देनी चाहिये। और इस बारे में उसने माँ की आपत्ति की भी परवाह नहीं की। उसने नॉनों को इस बात पर सहमत कर लिया कि वह बाहर दालान में बहुत-सी लकड़ियाँ भी रख देगी और मालिक से इस विषय में कुछ न कहेगी। वह भागती हुई नीचे गई और मेज़ की दराज़ में से काले रंग का एक पुराना-सा ट्रे निकाला, जो स्वर्गीय बारतेलियर की सम्पत्ति था। और यहीं से उसे आठ किनारों वाला संगमरमर का एक गिलास भी मिल गया। वहाँ एक छोटा-सा चमचा भी था जिस पर किया हुआ सोने का मुलम्मा सब उतर चुका था। इसके अतिरिक्त पतली गर्दन वाली शीशे की एक बोतल थी, जिस पर प्रेम के अंधे देवता मदन का चित्र अंकित था। इन सबको उसने विजय-भाव से आतिशदान के एक कोने में सजा दिया। इस पन्द्रह मिनट के समय में उसे इतनी बातें सूझीं कि पैदा होने के दिन से आज तक न सूझी थीं। "माँ!" वह बोली, "इस चरबी वाली बत्ती की दुर्गंध तो उनसे कदाचित् सहन न होगी। मोमबत्ती क्यों न मँगवालें?"

वह चिड़िया की-सी फुर्ती के साथ अपना बटुवा लेने दौड़ी और उसमें से पांच फ्रांक का नोट निकाल लाई, जो उसे महीने-भर के जेब खर्च के लिये मिला था।

"यह लो, नॉनों जल्दी से लाओ।"

"लेकिन तुम्हारे पापा क्या कहेंगे ?"

मादाम ग्रांदे ने योज़ेन को हाथ में चीनी का वह बर्तन लिये देखा जो ग्रांदे फरवाफोन वाली कोठी से साथ ले आया था, तब भी उसने यही भयानक एतराज़ किया।

"और आखिर चीनी आयगी कहाँ से ?" वह कहती गई, "क्या तुम्हारा दिमाग खराब हुआ है ?"

"मगर माँ, नॉनों मोमबत्ती लेने बाज़ार जायेगी तो चीनी भी सहज में ला सकती है।"

"लेकिन तुम्हारे पापा को कौन समझायगा ?"

"अगर उनका भतीजा शरबत का एक गिलास पीना चाहे और न मिले तो क्या यह कोई अच्छी बात होगी ? फिर उन्हें तो इसका पता भी न चलेगा।"

"तुम्हारे पापा को सदा सब बातों का पता चल जाता है।" मादाम ग्रांदे ने सिर हिलाते हुए कहा। नॉनों भी असमंजस में पड़ी थी, क्योंकि वह अपने स्वामी के स्वभाव से परिचित थी।

"तुम जरूर जाओ, नॉनों ! तुम्हें मालूम है कि आज मेरी वर्षगाँठ है।"

नॉनों प्रयत्न करके भी हँसी न रोक सकी क्योंकि यह पहला अवसर था कि उसकी छोटी मालकिन ने कोई मजाक किया हो। और वह बाज़ार चल दी।

मोसियो ग्रांदे ने जो कमरा अपने भतीजे को दिया था, उसे सजाने में योज़ेन और उसकी माँ पूरी कोशिश कर रही थीं और उधर मादाम दे ग्रासीं का सारा ध्यान शारल पर केन्द्रित था। बातें करते हुए वह अपनी आँखों को नचा रही थी।

"आपकी बड़ी हिम्मत है" वह बोली, "कि आप सर्दियों में इतने बड़े शहर की दिलचस्पियाँ छोड़कर सोमूर में रहने चले आये। लेकिन अगर आप हमें देखते ही हम से नाराज़ नहीं हुए तो आपको पता चल जायगा कि यहाँ भी मनोरंजन का अभाव नहीं।" और उसने विशुद्ध कस्बाती

ढंग से उसकी ओर अदा से देखा।

देहात की स्त्रियाँ कुछ ऐसा संयम और गम्भीरता धारण किये रहती हैं कि उनकी आँखों में एक चोरी-की-सी उत्सुकता उत्पन्न हो जाती है और यह ऐसी आदत है जो पादरियों में पाई जाती है जिनके लिए प्रसन्नता एक निषेधात्मक वस्तु है और उसके लिए उन्हें चोरी ही करनी पड़ती है। इस कमरे के वातावरण में शारल का दम घुटा जा रहा था। उसने अपने चचा की रहायश के लिए जिस बड़े मकान और उसके आस-पास के जंगल की जो कल्पना की थी, उससे इसका कोई सरोकार न था। इसलिए तनिक ध्यान देने पर मादाम दे ग्रासीं की आकृति में उसे पेरिस के जीवन की झलक नज़र आई, जिसे वह यहाँ आकर कुछ भूल-सा चला था। मादाम की ओर से उसे जो निमंत्रण मिल रहा था, उसे उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया और उन दोनों में बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया।

मादाम दे ग्रासीं ने धीरे-धीरे अपने स्वर को धीमा कर लिया जो उसकी निजी और रहस्यमय बातचीत के लिए उपयुक्त था। उसे और शारल दोनों ही को एक दूसरे को विश्वास में लेने और घुल-मिलकर बातें करने की ज़रूरत महसूस हो रही थी। और कुछ इधर-उधर की व्यंग्य और परिहास की बातें करने के उपरांत, यह धूर्त्त कस्बाती महिला शारल के कान में कुछ ऐसे शब्द डालने में सफल हो गई, जो वह सिर्फ उसीसे कहना चाहती थी, उसने यह देख लिया था कि इन्हें दूसरे लोग नहीं सुनेंगे क्योंकि वे अंगूर बेचने की समस्या पर बातचीत कर रहे थे और आजकल सोमूर में बातचीत का यह सबसे प्रिय विषय था।

"अगर आप कभी आकर हमारे घर को सुशोभित करें?" वह बोली, "तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। मैं और मेरा पति हम दोनों आपसे मिल-कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। सोमूर भर में सिर्फ हमारा ही मकान ऐसा है, जहाँ आप धनी व्यापारियों और रईसों दोनों से मिल सकेंगे। हमारा सम्बन्ध इन दोनों से है। ये लोग हमारे घर के अतिरिक्त एक दूसरे से

श्रौर कहीं नहीं मिलते। हमारे यहाँ इसलिए आते हैं कि वहाँ अच्छी दिल्लगा रहती है। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे पति को इन दोनों वर्गों में सम्मान प्राप्त है। इसलिए हम भरसक प्रयत्न करेंगे कि आप जितने दिन यहाँ रहें आपको कष्ट न हो। अगर आप ग्रांदे लोगों के पास रहें तो भगवान ही आपकी रक्षा करें। तोबा। आपके चचा बहुत ही कंजूस हैं। उनका दिमाग अंगूरों की कटाई के अलावा कहीं काम ही नहीं करता। आपकी चची तो बेचारी बे सींग की गाय हैं। वे तो यह भी नहीं जानतीं कि दो और दो मिलकर चार होते हैं। और आपकी चचेरी बहन एक पगली-सी साधारण लड़की है, जिसकी शिक्षा-दीक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की गई और न उसे पैसे मिलते हैं। उसका जीवन तो बस झाड़न सींते गुज़रता है।"

"यह तो बड़ी अच्छी औरत है।" शारल ने मन में सोचा। मादाम दे ग्रासीं का छल प्रपंच व्यर्थ नहीं गया।

"मुझे तो ऐसा लगता है कि तुमने इन महाशय का ठेका ले लिया है।" मोसियो दे ग्रासीं ने हंसते हुए अपनी पत्नी से कहा। यह वाक्य सुनते ही वकील और मैजिस्ट्रेट को शह मिल गई और उन्होंने तुरन्त व्यंग्य-प्रहार करना शुरू कर दिये। लेकिन पादरी ने आँखों ही आँखों में उन्हें कुछ संकेत किया। नस्वार की एक चुटकी ली और डिबिया दूसरों की ओर बढ़ा दी। फिर अपने विचारों को यों व्यक्त किया— "सोमूर में इनकी मेजबानी मादाम दे ग्रांसीं से बेहतर और कौन कर सकता है?"

"ज़रा बताइये तो पादरी साहब, इससे आपका क्या मतलब है?" मोसियो दे ग्रासीं ने पूछा।

"जी, मैं तो आपकी भी प्रशंसा कर रहा हूँ, आपकी श्रीमती की भी, अपने शहर की भी और इन साहब की भी।"

चालाक पादरी ने शारल की ओर मुड़ते हुए कहा, लगता तो यह था कि उसने उन दोनों की बातचीत पर ध्यान ही न दिया था। लेकिन

दरअसल वह भांप गया था कि बात किधर जा रही है।

आखिर ओदल्फ दे ग्रासीं ने भी जबान खोली और अत्यन्त सहज भाव से कहा, "मालूम नहीं आपको याद है या नहीं। एक बार मोसियों ला बारों दे नौसंजेन के घर मुझे आप वाली चौकड़ी में डांस करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था....."

"मुझे खूब याद है।" शारल ने उत्तर दिया। अपने आपको लोगों के ध्यान का केंद्र बने देख वह कुछ चौंक-सा गया था।

"क्या यह आपके सुपुत्र हैं ?" उसने मादाम दे ग्रासीं से पूछा।

पादरी ने मादाम की ओर द्वेष की दृष्टि से देखा।

"जी, हाँ। मैं इसकी माँ हूं।" उसने उत्तर दिया।

"जब आप पेरिस पधारे थे तो शायद आपकी आयु बहुत कम थी।" शारल ने ओदल्फ से वार्तालाप जारी रखते हुए कहा।

"जनाब, यह हमारे बस की बात नहीं।" पादरी बोला, "हमारे बच्चे अभी पूरी तरह दूध भी नहीं छोड़ पाते कि हम उन्हें बाबल भेज देते हैं।"

मादाम दे ग्रासीं ने एक चुभती-सी दृष्टि पादरी पर डाली। ऐसा लगता था जैसे वह पूछ रही है कि आपके इन शब्दों का मतलब क्या है।

पादरी बोलता रहा, "अगर आप ऐसी औरतें देखना चाहते हैं, जिनकी उम्र तीस से ऊपर हो गई हो, बेटा वकालत की सनद ले आया हो, मगर अभी तक ऐसी जवान और नई-नवेली मालूम हों जैसी मादाम दे ग्रासीं हैं तो देहात में जाइये। मादाम, यह अभी कल की बात है कि नौजवान मर्द और औरतें कुर्सियों पर चढ़-चढ़कर डांस करते हुए देखा करते थे।" पादरी ने अपने सुन्दर प्रतिद्वन्द्वी की ओर पलटते हुए कहा, "आपकी सफलताओं की धूम मेरे ज़ेहन में ऐसी ताज़ी है जैसे हाल ही की घटना हो।"

"अरे ! यह कमबख्त बूढ़ा।" मादाम दे ग्रासीं ने सोचा, "क्या यह सम्भव है कि वह मेरे इरादे ताड़ गया हो।"

"ऐसा मालूम होता है कि मुझे सोमूर में बड़ी सफलता होगी।" शारल ने सोचा। उसने ओवरकोट के बटन खोल दिये, वास्कट की जेब में हाथ डालकर उठ खड़ा हुआ और शून्य में ताकने लगा। ताकने का यह वही ढंग था, जो कलाकार शांतरी ने बायरन की मूर्ति बनाते समय उसे प्रदान किया था।

ग्रांदे पत्र पढ़ रहा था। उसकी बेध्यानी और अत्यन्त व्यस्तता सरकारी वकील और मैजिस्ट्रेट की दृष्टि से छिपी न रह सकी थी। बूढ़े के चेहरे पर बत्ती का समस्त प्रकाश पड़ रहा था और ये दोनों उसके चेहरे के तनिक और अस्पष्ट परिवर्तनों से पत्र के विषय का अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहे थे। बूढ़े कृषक के लिए अपना स्वाभाविक सयंम स्थिर रखना असम्भव हो रहा था। आपके लिए कल्पना करना कठिन नहीं है कि उसका बदला हुआ चेहरा कैसा लग रहा होगा। घातक पत्र इस प्रकार था :—

"प्यारे भाई !

हमें एक दूसरे से मिले लगभग तेईस साल का समय बीत चुका है। तब मेरी शादी हो रही थी। लेकिन जिस समय तुम मेरे सौभाग्य पर अपने आपको धन्यवाद दे रहे थे, उस समय मुझे यह खयाल तक न आया था कि एक दिन तुम हमारे परिवार का एकमात्र सहारा बनोगे। जब यह पत्र तुम्हें मिलेगा मैं इस संसार में न रहूँगा। मेरी स्थिति का व्यक्ति दीवालिया होने का अपमान सहन नहीं कर सकता। मैंने अन्तिम समय तक अपने सिर को इस आशा में बुलन्द रखा कि शायद तूफान टल जाये। लेकिन इससे अब कुछ लाभ नहीं। मुझे डूबना ही पड़ेगा। मेरा दलाल भी असफल रहा और उसके बाद मेरा वकील रोगें भी। मेरी आखिरी पाई तक खर्च हो चुकी है और अब कुछ भी बाकी नहीं रहा। मेरा बड़ा दुर्भाग्य है कि इस समय मैं कोई चालीस लाख का कर्ज़दार हूँ। मेरे पास शराब का बहुत बड़ा स्टाक है, लेकिन तुम्हारी शराब इतनी अच्छी और मात्रा में इतनी अधिक है कि मेरी शराब का भाव बहुत गिर गया है।

तीन दिन के अन्दर सारा पेरिस यह कहेगा कि 'ग्रांदे धोखेबाज़ था !' और मैं यद्यपि ईमानदार आदमी हूँ, बदनामी के कफ़न में लिपटा पड़ा रहूँगा। मैंने अपने बेटे को उसकी मां की ओर से मिली हुई जायदाद से भी वंचित कर दिया है और कुल के नाम को कलँकित कर दिया है। यह बेचारा बच्चा जिसे मैंने देवता की भांति पूजा है, इन सब बातों से अनभिज्ञ है। अच्छा ही हुआ कि जिस समय हम एक दूसरे से अलग हुए, उसे कुछ मालूम न था और मेरे हृदय में उसके लिए प्रेम उमड़ा पड़ रहा था। अब इस हृदय की गति शीघ्र बन्द होने वाली है। क्या एक दिन ऐसा आयगा कि वह मुझे शाप देगा। आह ! मेरे भाई अपने ही बच्चों का शाप कितना भयानक होता है ! अगर हम अपने बच्चों को शाप दें तो वे भगवान से दया की प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन उनके शाप की कहीं अपील नहीं। हमारी प्रार्थना भगवान भी नहीं सुनता। ग्रांदे ! तुम मेरे बड़े भाई हो, मुझे इस संकट से बचायो। ऐसा न होने पाये कि मैं कब्र में पड़ा हूँ और शारल मुझे बुरा भला कहे। आह ! मेरे भाई, अगर इस पत्र का प्रत्येक शब्द मेरे लहू अथवा आँसुओं से लिखा जाता तो मुझे इतना दुख न होता कि तब तो मैं रोते-रोते अपना लहू बहाते-बहाते मर जाता और मेरे दुखों का अन्त हो जाता। लेकिन इस समय तो मैं अत्यंत कष्ट में हूँ—मैं अपने शुष्क नेत्रों से मृत्यु को सामने खड़ा देख रहा हूँ।

"अब तुम्हीं शारल के पिता हो। माँ की ओर से उसका कोई सगा-सम्बन्धी नहीं है, जिसका कारण तुम्हें मालूम है। अब सोचता हूँ कि मैंने सामाजिक रीति-रिवाज का पालन क्यों नही किया ? मैं प्रेम की रीति पर क्यों चला ? मैंने एक रईस की अवैध संतान से ब्याह किया ! शारल अपने परिवार का एकमात्र प्राणी है और इस संसार में अकेला है। आह ! बेचारा लड़का, मेरा अभागा पुत्र !……सुनो, ग्राँदे, मैं तुम से अपने लिए कुछ नहीं मांगता, वैसे अगर तुम चाहो भी तो मेरे लेन-दारों को संतुष्ट नहीं कर सकते क्योंकि तुम्हारी जायदाद तीस लाख रुपया चुका देने के लिए काफी नहीं हो सकती। यह मैं अपने बेटे के

त्याग दे और फिर आ दे ! तुम उसे सारी बातें साफ-साफ बता देना कि उसे जीवन में कैसी-कैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा और क्या-क्या कठिनाइयाँ झेलनी पड़ेंगी। उसकी जिंदगी मेरे कारण खराब हुई है। लेकिन अगर उसके हृदय में मेरे लिये थोड़ा-सा प्रेम बाकी हो तो मेरी ओर से उसे कह देना कि अब भी उसके लिए सारी आशाओं का अंत नहीं हुआ है। देखो, उससे कहना मत भूलना। श्रम से हमारी मुक्ति हुई थी और श्रम से वह धन फिर लौटकर आ सकता है, जो मैंने खो दिया है। उसका बाप तो उसे कब्र से भी पुकारता रहेगा। अगर वह बाप की बात माने तो देश छोड़कर इंडीज़ चला जाये। भाई, शारल बड़ा ईमानदार और चुस्त चालाक है। मैं जानता हूं कि अगर उसने व्यापार शुरू किया तो पहली बार उसकी सहायता करोगे। आह ! अगर मेरे बेटे को तुम्हारी ओर से किसी प्रकार की सहानुभूति अथवा सहायता न मिली तो मैं सदा भगवान् से प्रार्थना करता रहूँगा कि वह तुम्हें इस-निष्ठुरता का दंड दे !

"अगर मैं कुछ रकमें अदा न करता तो उसके लिए कुछ रुपया बचा सकता था। आखिर अपनी माँ की कुछ जायदाद पर उसका भी अधिकार है—लेकिन महीने के अंत में जो अदायगी करनी पड़ी, उससे बिल्कुल सफाया हो गया और मैं कुछ भी न बचा सका। अगर मुझे उसके भविष्य के बारे में तसल्ली होती तो मैं कितने संतोष से मरता। काश ! तुम्हारे हाथ से लिखी हुई कोई दृढ़ प्रतिज्ञा मुझे प्राप्त हो जाती तो मुझे कितनी शांति अनुभव होती। लेकिन समय अब इतना अवकाश नहीं देता। शारल तो अभी रास्ते ही में है और मुझे अपने कर्ज़े की सूची दाखिल करनी है। मैंने अपने सब मामले ठीक-ठाक कर दिये हैं। मैं हर चीज़ इस ढंग से व्यवस्थित कर देने का प्रयत्न कर रहा हूँ जिससे यह प्रकट हो कि मेरी असफलता का कारण अयोग्यता या छल कपट नहीं है, बल्कि हठात् परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी हो गईं, जिन्हें रोकना मेरे सामर्थ्य में न था। क्या यह सब कुछ मैं शारल ही के विचार से नहीं कर रहा हूँ ?

अच्छा अब विदा ! मेरे भाई, मुझे विश्वास है कि तुम मेरी इसी वसीयत पर अमल करोगे। भगवान् तुम्हें इस उदारता का फल देगा। उस दुनिया में जहाँ हम सब को एक दिन अवश्य जाना है, एक व्यक्ति सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना करता रहेगा और मैं तो इस समय भी उसी दुनिया में महसूस कर रहा हूँ।

—विकतर-ग्रांजे-गिलूमे ग्रांदे।

"हां, तो आप सब लोग गप्पें हांक रहे हैं?" ग्रांदे ने बड़ी सावधानी से पत्र को उसी ढंग से तह किया, जैसे वह उसे मिला था और फिर उसे अपनी वास्कट की जेब में डालते हुए यह प्रश्न किया। इसके उपरांत कुछ झेंपते और कुछ बौखलाते हुए उसने भतीजे की ओर देखा और अपनी भावनाओं और शकाओं को छिपाने का प्रयत्न करते हुए बोला : "कुछ गर्मी आई?"

"मेरे प्यारे चचा, मैं बड़े आराम से हूँ।"

"अच्छा, ये औरतें क्या करती फिर रही हैं?" उसने अपनी बात जारी रखी। इस समय यह बात उसे एकदम भूल दी गई थी कि उसका भतीजा इसी घर में सोएगा। वह यह कह ही रहा था कि योज़ेन और मादाम ग्रांदे ने कमरे में प्रवेश किया।

"क्या ऊपर सब ठीक हो गया?" इन महाशय ने पूछा। अब उसने अपनी भावनाओं को पूर्ण रूप से संयत कर लिया था और उसे सारी स्थिति स्मरण हो आई थी।

"हां, पापा।"

"बहुत अच्छा। बेटे, अगर तुम थकावट महसूस कर रहे हो तो नाँनों तुम्हें तुम्हारा कमरा बता देगी। कमरा कोई ऐसा अच्छा तो नहीं है। लेकिन तुम्हें इसका खयाल न करना चाहिये क्योंकि यहाँ तुम ग़रीब किसानों के घर आये हो, जिन्हें एक पैसा भी नहीं बचता। हमारे पास तो जो कुछ होता है, वह टैक्स ही में निकल जाता है।"

त्याग दे और फिर आंदे ! तुम उसे सारी बातें साफ-साफ बता देना कि उसे जीवन में कैसी-कैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा और क्या-क्या कठिनाइयाँ झेलनी पड़ेंगी। उसकी जिंदगी मेरे कारण खराब हुई है। लेकिन अगर उसके हृदय में मेरे लिये थोड़ा-सा प्रेम बाकी हो तो मेरी ओर से उसे कह देना कि अब भी उसके लिए सारी आशाओं का अंत नहीं हुआ है। देखो, उससे कहना मत भूलना। श्रम से हमारी मुक्ति हुई थी और श्रम से वह धन फिर लौटकर आ सकता है, जो मैंने खो दिया है। उसका बाप तो उसे कब्र से भी पुकारता रहेगा। अगर वह बाप की बात माने तो देश छोड़कर इंडीज़ चला जाये। भाई, शारल बड़ा ईमानदार और चुस्त चालाक है। मैं जानता हूं कि अगर उसने व्यापार शुरू किया तो पहली बार उसकी सहायता करोगे। आह ! अगर मेरे बेटे को तुम्हारी ओर से किसी प्रकार की सहानुभूति अथवा सहायता न मिली तो मैं सदा भगवान् से प्रार्थना करता रहूँगा कि वह तुम्हें इस-निष्ठुरता का दंड दे !

"अगर मैं कुछ रकमें अदा न करता तो उसके लिए कुछ रुपया बचा सकता था। आखिर अपनी माँ की कुछ जायदाद पर उसका भी अधिकार है—लेकिन महीने के अंत में जो अदायगी करनी पड़ी, उससे बिलकुल सफाया हो गया और मैं कुछ भी न बचा सका। अगर मुझे उसके भविष्य के बारे में तसल्ली होती तो मैं कितने संतोष से मरता। काश ! तुम्हारे हाथ से लिखी हुई कोई दृढ़ प्रतिज्ञा मुझे प्राप्त हो जाती तो मुझे कितनी शांति अनुभव होती। लेकिन समय अब इतना अवकाश नहीं देता। शारल तो अभी रास्ते ही में है और मुझे अपने कर्ज़े की सूची दाखिल करनी है। मैंने अपने सब मामले ठीक-ठाक कर दिये हैं। मैं हर चीज़ इस ढंग से व्यवस्थित कर देने का प्रयत्न कर रहा हूँ जिससे यह प्रकट हो कि मेरी असफलता का कारण अयोग्यता या छल कपट नहीं है, बल्कि हठात् परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी हो गई, जिन्हें रोकना मेरे सामर्थ्य में न था। क्या यह सब कुछ मैं शारल ही के विचार से नहीं कर रहा हूँ ?

अच्छा अब विदा ! मेरे भाई, मुझे विश्वास है कि तुम मेरी इसी वसीयत पर अमल करोगे। भगवान् तुम्हें इस उदारता का फल देगा। उस दुनिया में जहाँ हम सब को एक दिन अवश्य जाना है, एक व्यक्ति सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना करता रहेगा और मैं तो इस समय भी उसी दुनिया में महसूस कर रहा हूँ।

—विकतर-आंजे-गिलूमे ग्रांदे।

"हां, तो आप सब लोग गप्पें हांक रहे हैं?" ग्रांदे ने बड़ी सावधानी से पत्र को उसी ढंग से तह किया, जैसे वह उसे मिला था और फिर उसे अपनी वास्कट की जेब में डालते हुए यह प्रश्न किया। इसके उपरांत कुछ झेंपते और कुछ बौखलाते हुए उसने भतीजे की ओर देखा और अपनी भावनाओं और शकाओं को छिपाने का प्रयत्न करते हुए बोला : "कुछ गर्मी आई ?"

"मेरे प्यारे चचा, मैं बड़े आराम से हूँ।"

"अच्छा, ये औरतें क्या करती फिर रही हैं ?" उसने अपनी बात जारी रखी। इस समय यह बात उसे एकदम भूल दी गई थी कि उसका भतीजा इसी घर में सोएगा। वह यह कह ही रहा था कि योज़ेन और मादाम ग्रांदे ने कमरे में प्रवेश किया।

"क्या ऊपर सब ठीक हो गया ?" इन महाशय ने पूछा। अब उसने अपनी भावनाओं को पूर्ण रूप से संयत कर लिया था और उसे सारी स्थिति स्मरण हो आई थी।

"हां, पापा।"

"बहुत अच्छा। बेटे, अगर तुम थकावट महसूस कर रहे हो तो नाँनों तुम्हें तुम्हारा कमरा बता देगी। कमरा कोई ऐसा अच्छा तो नहीं है। लेकिन तुम्हें इसका खयाल न करना चाहिये क्योंकि यहाँ तुम ग़रीब किसानों के घर आये हो, जिन्हें एक पैसा भी नहीं बचता। हमारे पास तो जो कुछ होता है, वह टैक्स ही में निकल जाता है।"

"ग्रांदे, हम बाधा डालना नहीं चाहते।" साहूकार ने कहा, "तुम्हें अपने भतीजे से कुछ बातें करनी होंगी। इसलिए हम अब चलते हैं। कल तक के लिए विदा।"

इस पर सब उठ खड़े हुए और सबने अपने-अपने ढंग से विदा मांगी। बूढ़े सरकारी वकील ने ड्योढ़ी से अपनी लालटैन लेकर जलाई और दे ग्रासीं लोगों को उनके घर तक पहुँचाने का जिम्मा लिया।

मादाम दे ग्रासीं को कदाचित यह आशा न थी कि ऐसी घटना घटेगी। और शाम की महफिल इतनी जल्द समाप्त हो जायगी। इसलिए उसकी नौकरानी अभी तक न आई थी।

"मादाम, मेरा बाजू थाम लीजिए। मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाइये।" पादरी क्रोशो ने उससे कहा।

"पादरी साहब, आपका धन्यवाद।" महिला ने रुखाई से कहा, "मेरा बेटा मेरे साथ है।"

"किसी महिला का मेरे साथ होना, कोई लज्जा की बात नहीं।" पादरी बोला।

"मोसियो क्रोशा का बाजू थाम लो।" उसके पति ने कहा।

पादरी इस सुन्दर रमणी को साथ लिये तेज़ी से कुछ कदम आगे निकल गया ताकि दूसरे लोगों से जरा फासले पर हो जायें।

"मादाम, यह नौजवान बहुत सुन्दर है।" उसने मादाम की बांह पर तनिक बोझ डालते हुए कहा ताकि वाक्य में जोर पैदा हो जाये। "सवारी बढ़ाइये। जो मिलना था मिल चुका। अब आप मादमुआजेल ग्रांदे का खयाल छोड़ दीजिये। योज़ेन तो अवश्य अपने चचेरे भाई ही के लिये है। अगर वह पहले ही पेरिस में किसी सुन्दर रमणी के प्रेम में फँसा नहीं है तो आपके बेटे ओदल्फ का समझिये एक और प्रतिद्वन्द्वी उत्पन्न हो गया।........"

"आप बेकार बातें करते हैं पादरी साहब, इस नौजवान को यह जानने में देर न लगेगी कि योज़ेन ऐसी लड़की है, जो अपने बारे में कुछ

भी तो नहीं कह सकती। और उसकी शक्ल भी ऐसी-वैसी होके रह गई है। क्या आपने ध्यान नहीं दिया ? आज शाम वह बिल्कुल पीली दिखाई पड़ रही थी।"

"और शायद, यह बात आपने उसके चचेरे भाई को सुझा भा दी है ?"

"दरअसल, मैं क्यों यह कष्ट······"

"मादाम, अगर आप सदा योज़ेन के निकट बैठा करें।" पादरा ने उसकी बात काटते हुए कहा, "तो आपको इस नौजवान से कुछ अधिक कहने की जरूरत ही न पड़ेगी। वह खुद ही तुलना करके देख लेगा।"

"उसने तुरन्त मुझसे वादा कर लिया कि वह परसों हमारे साथ भोजन करेगा।"

"मादाम, अगर आप चाहें·······"

"पादरी साहब, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं ? क्या आप मेरे मस्तिष्क में कुविचार उत्पन्न करना चाहते हैं। भगवान की दया है कि उनतालीस की उम्र हो गई, मेरी कीर्ति स्वच्छ और निर्मल है। किसीको अंगुली उठाने का अवसर नहीं मिला। क्या अब अपने नाम को बट्टा लगाऊँ ? अगर मुगलों का राज्य भी मिले तो भी ऐसा न करूँ। हम दोनों कोई बच्चे तो हैं नहीं। हमें मालूम है कि इस प्रकार की बातों का क्या अर्थ है। क्षमा कीजियेगा ! आपका पेशा तो बड़ा पवित्र है। ऐसे विचार आपको शोभा नहीं देते। इस पेशे की शर्म कीजिये। ये तो ऐसे विचार हैं जो 'फोबला' में लिखे हैं।"

"अच्छा तो आपने यह उपन्यास पढ़ा है ?"

"नहीं, पादरी साहब। मैं दरअसल 'खतरनाक दोस्त' का जिक्र कर रही थी।"

"अरे, वह तो बड़ा ही शिक्षाप्रद उपन्यास है।" पादरी ने हँसते हुए कहा, "लेकिन आप तो मुझे आजकल के फैशनेबल नौजवानों की भाँति भ्रष्टाचारी समझ रही हैं। मैं सिर्फ यह कहना चाहता था······"

"क्या आप वाकई दिल पर हाथ रखकर यह कह सकते हैं कि आप मुझ पर चोट नहीं कर रहे थे ? बात तो बिल्कुल सीधी-सादी है। वह नौजवान वाकई बहुत सुन्दर है। मैं आपकी यह बात मानती हूँ। लेकिन अगर वह मुझसे इश्क लड़ा रहा था तो यह कुछ इस कारण तो न था कि मुझे उसकी चचेरी बहन से दिलचस्पी है। पेरिस में तो मैं जानती हूँ कि बहुत-सी स्नेही मातायें अपने आपको अपनी संतान की प्रसन्नता और भलाई के लिये बलिदान कर देती हैं। लेकिन पादरी साहब हम पेरिस में तो रहते नहीं।"

"नहीं, मादाम।"

"और इसके अतिरिक्त," उसने अपनी बात जारी रखी, "फिर ओदल्फ अथवा मैं इस मूल्य पर तो एक करोड़ की सम्पत्ति को भी हाथ न लगायें।"

"मादाम, मैंने तो एक करोड़ का नाम भी नहीं लिया। शायद इस प्रकार का लोभ तो हम दोनों के लिए बहुत होता। लेकिन मेरा खयाल है, किसी ईमानदार औरत के लिये निर्दोषी लगावटबाजी में कुछ ऐसा हर्ज भी नहीं है। यह तो उसका सामाजिक कर्त्तव्य और उसके...."

"क्या आप ऐसा समझते हैं ?"

"क्या यह हमारा कर्त्तव्य नहीं कि हम ऐसा आचरण करें, जो दूसरों को पसन्द हो ?....क्षमा कीजियेगा, मैं तनिक नाक साफ कर लूँ। मादाम यह तो मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि उसने अपनी ऐनक द्वारा जिस विशेष ध्यान और रुचि से आपको देखा, मुझे नहीं देखा। लेकिन इसके लिए मैं उसे क्षमा कर सकता हूँ कि उसने सफेद वालों की अपेक्षा सौंदर्य को प्रतिष्ठा के अधिक योग्य समझा......"

"यह तो स्पष्ट ही है," मैजिस्ट्रेट ने अपनी मोटी आवाज़ में कहा, "कि पेरिस वाले मोसियो ग्रांदे ने अपने बेटे को सोमूर क्यों भेजा है। उसका इरादा होगा कि यह सम्बन्ध निश्चित हो जाय..."

"लेकिन अगर यही बात थी तो इस चचेरे भाई को इस प्रकार

सहसा आकाश से टपक पड़ने की क्या ज़रूरत थी ?" सरकारी वकील ने कहा।

"खैर, यह तो कोई बात नहीं।" मोसियो दे ग्रासीं बोला, "बूढ़ा ग्रांसी बड़ा घाघ है।"

"दे ग्रांसी", उसकी पत्नी बोली, "मैंने उस नौजवान को भोजन के लिये निमंत्रित किया है। इसलिये तुम मोसियो और मादाम दे ला सीनीयर को भी बुलावा दे आना और दुहातुवा लोगों से कहना कि वे अपनी सुन्दर लड़की को भी साथ में लायें। आशा है कि वह कम से कम इस बार तो अच्छे कपड़े पहन कर आयगी। उसकी माँ को तो उससे जलन है। सदा उसे बेढंगी-सी बनाए रखती है। आशा है कि आप लोग भी पधार कर हमारा सम्मान बढ़ायेंगे।" उसने जलूस को रोककर दोनों क्रोशो लोगों से कहा, जो तनिक पीछे रह गये थे।

"लीजिये मादाम हम तो आपके दरवाज़े पर आ पहुँचे।" सरकारी वकील ने कहा।

तीनों क्रोशो दे ग्रासीं लोगों से विदा हुए। घर तक रास्ते में एक वे दूसरे की खूब खबर लेते गये। कस्बाती लोग इस बात में बड़े निपुण होते हैं, इसलिये इस कला का भली भाँति प्रदर्शन हुआ। शाम की घटना पर हर पहलू से बहस की गई। क्रोशो और ग्रासीं लोगों पर उसके विभिन्न प्रभावों पर विचार किया गया। यह बात स्पष्ट है कि दोनों का भला इसमें था कि किसी प्रकार योज़ेन को अपने इस चचेरे भाई से प्रेम न होने पाये और शारल को योज़ेन में दिलचस्पी लेने से रोका जाय। धूर्तता पूर्ण संकेत, मन को लुभाने वाले हाव-भाव, धीमे स्वरों में प्रशंसायें और सच्ची मित्रता की आड़ में द्वेष और प्रतिकार की भावना, जब इतने छल-प्रपंच रचे जायें तो पेरिस का वासी उनका कैसे मुकाबला कर सकेगा।

जब यह चारों सम्बन्धी बड़े कमरे में अकेले रह गये तो ग्रांदे ने अपने भतीजे से कहा—"अब हमें सो जाना चाहिए क्योंकि जिस सिलसिले में

"क्या आप वाकई दिल पर हाथ रखकर यह कह सकते हैं कि आप मुझ पर चोट नहीं कर रहे थे ? बात तो बिल्कुल सीधी-सादी है। वह नौजवान वाकई बहुत सुन्दर है। मैं आपकी यह बात मानती हूँ। लेकिन अगर वह मुझसे इश्क लड़ा रहा था तो यह कुछ इस कारण तो न था कि मुझे उसकी चचेरी बहन से दिलचस्पी है। पेरिस में तो मैं जानती हूँ कि बहुत-सी स्नेही मातायें अपने आपको अपनी संतान की प्रसन्नता और भलाई के लिये बलिदान कर देती हैं। लेकिन पादरी साहब हम पेरिस में तो रहते नहीं।"

"नहीं, मादाम।"

"और इसके अतिरिक्त," उसने अपनी बात जारी रखी, "फिर ओदल्फ अथवा मैं इस मूल्य पर तो एक करोड़ की सम्पत्ति को भी हाथ न लगायें।"

"मादाम, मैंने तो एक करोड़ का नाम भी नहीं लिया। शायद इस प्रकार का लोभ तो हम दोनों के लिए बहुत होता। लेकिन मेरा खयाल है, किसी ईमानदार औरत के लिये निर्दोषी लगावटबाजी में कुछ ऐसा हर्ज भी नहीं है। यह तो उसका सामाजिक कर्त्तव्य और उसके····"

"क्या आप ऐसा समझते हैं ?"

"क्या यह हमारा कर्त्तव्य नहीं कि हम ऐसा आचरण करें, जो दूसरों को पसन्द हो ?····क्षमा कीजियेगा, मैं तनिक नाक साफ कर लूँ। मादाम यह तो मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि उसने अपनी ऐनक द्वारा जिस विशेष ध्यान और रुचि से आपको देखा, मुझे नहीं देखा। लेकिन इसके लिए मैं उसे क्षमा कर सकता हूँ कि उसने सफेद बालों की अपेक्षा सौंदर्य को प्रतिष्ठा के अधिक योग्य समझा·······"

"यह तो स्पष्ट ही है," मैजिस्ट्रेट ने अपनी मोटी आवाज में कहा, "कि पेरिस वाले मोसियो ग्रांदे ने अपने बेटे को सोमूर क्यों भेजा है। उसका इरादा होगा कि यह सम्बन्ध निश्चित हो जाय···"

"लेकिन अगर यही बात थी तो इस चचेरे भाई को इस प्रकार

सहसा आकाश से टपक पड़ने की क्या ज़रूरत थी ?" सरकारी वकील ने कहा ।

"खैर, यह तो कोई बात नहीं ।" मोसियो दे ग्रासीं बोला, "बूढ़ा ग्रांसी बड़ा घाघ है ।"

"दे ग्रांसी", उसकी पत्नी बोली, "मैंने उस नौजवान को भोजन के लिये निमंत्रित किया है । इसलिये तुम मोसियो और मादाम दे ला सीनीयर को भी बुलावा दे आना और दुहातुवा लोगों से कहना कि वे अपनी सुन्दर लड़की को भी साथ में लायें । आशा है कि वह कम से कम इस बार तो अच्छे कपड़े पहन कर आयगी । उसकी माँ को तो उससे जलन है । सदा उसे बेढंगी-सी बनाए रखती है । आशा है कि आप लोग भी पधार कर हमारा सम्मान बढ़ायेंगे ।" उसने जलूस को रोककर दोनों क्रोशो लोगों से कहा, जो तनिक पीछे रह गये थे ।

"लीजिये मादाम हम तो आपके दरवाज़े पर आ पहुँचे ।" सरकारी वकील ने कहा ।

तीनों क्रोशो दे ग्रासीं लोगों से विदा हुए । घर तक रास्ते में एक वे दूसरे की खूब खबर लेते गये । कस्बाती लोग इस बात में बड़े निपुण होते हैं, इसलिये इस कला का भली भाँति प्रदर्शन हुआ । शाम की घटना पर हर पहलू से बहस की गई । क्रोशो और ग्रासीं लोगों पर उसके विभिन्न प्रभावों पर विचार किया गया । यह बात स्पष्ट है कि दोनों का भला इसमें था कि किसी प्रकार योज़ेन को अपने इस चचेरे भाई से प्रेम न होने पाये और शारल को योज़ेन में दिलचस्पी लेने से रोका जाय । धूर्तता पूर्ण संकेत, मन को लुभाने वाले हाव-भाव, धीमे स्वरों में प्रशंसायें और सच्ची मित्रता की आड़ में द्वेष और प्रतिकार की भावना, जब इतने छल-प्रपंच रचे जायें तो पेरिस का वासी उनका कैसे मुकाबला कर सकेगा ।

जब यह चारों सम्बन्धी बड़े कमरे में अकेले रह गये तो ग्रांदे ने अपने भतीजे से कहा—"अब हमें सो जाना चाहिए क्योंकि जिस सिलसिले में

तुम यहां आये हो, आज रात उस बारे में बातें करने का समय नहीं। रात अधिक बीत चुकी है। वैसे भी कल इसके लिए काफी समय होगा। हम यहाँ आठ बजे नाश्ता करते हैं। दोपहर के वक्त थोड़ा-बहुत फल, रोटी का एक-आध कौर लेकर शराब का एक गिलास पी लेते हैं और फिर पेरिस वालों की तरह पांच बजे भोजन करते हैं। हमारे यहाँ यही नियम है। अगर तुम शहर देखना चाहो अथवा इधर-उधर मैदानों में घूमना चाहो तो शौक से घूमो। अगर अपने काम मे व्यस्त होने के कारण मैं सदा तुम्हारे साथ न जा सकूँ तो मुझे क्षमा कर देना। सम्भव है कि लोग तुम्हें बतायें कि मैं बड़ा अमीर हूँ क्योंकि मोसियो ग्रांदे का हर जगह जिक्र होता रहता है। मैं इन बातों की परवाह नहीं करता। उनके बातें बनाने से मेरी नेकनामी को कोई नुकसान नहीं पहुँचता। लेकिन मेरे पास एक धेला भी नहीं बचता। देखते हो कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। फिर भी ऐसे बढ़ई की भाँति काम करता हूँ जिसके पास रंदे और बसूले के अतिरिक्त कुछ न हो। शायद कुछ दिन में तुम्हें खुद मालूम हो जायेगा कि जो पैसा अपना पसीना बहाकर कमाया जाता है, उसके लिए कितना कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। नाँनों, चलो बत्तियाँ लेकर आओ।...बेटे, उम्मीद है कि तुम्हें अपनी जरूरत की हर चीज़ वहीं मिल जायगी।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "लेकिन अगर कोई चीज़ रह गई हो तो नाँनों को आवाज़ दे लेना।"...."मेरी प्यारी चची, शायद ही मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े क्योंकि मैं समझता हूँ कि मैं अपनी सब चीज़ें साथ लेकर आया हूँ। अच्छा, अब मैं आपको और बहन को रात का प्रणाम कहकर आज्ञा चाहता हूँ।"

शारल ने नाँनों के हाथ से जलती हुई मोमबत्ती ले ली। यह इसी शहर की बनी हुई थी और दुकान में पड़ी-पड़ी पुरानी, गंदी और पीली-सी हो गई थी और चरबी की साधारण बत्ती से इतनी मिलती-जुलती थी कि ग्रांदे को संदेह तक न हो सका कि उसके सामने यह ठाट-बाट हो रहे हैं। और सच तो यह है कि वह कभी सोच भी न सकता था कि घर में

कोई इस प्रकार की हरकत होगी ।

"मैं तुम्हें मार्ग दिखाता हूँ ।" इस भले आदमी ने कहा ।

भोजन के कमरे का एक दरवाज़ा सीधा ड्योढ़ी की ओर खुलता था और सामने सीढ़ियाँ थीं । लेकिन आज रात मेहमान की खातिर के ख्याल से वह उस मार्ग से गया जो रसोई को भोजन के कमरे से अलग करता था । एक तह हो जाने वाला दरवाज़ा जिसमें गोल-सा शीशा लगा था इस मार्ग की ओर खुलता था । लेकिन सीढ़ियों के निकट उसे बंद कर दिया गया था जिसका उद्देश्य यह था कि ठंडी हवा के उन झोकों से बचाव हो सके जो ड्योढ़ी में से होते हुए भीतर आते थे, और इसी विचार के रंग-बिरंगी धज्जियों की पट्टियाँ बनाकर दरवाज़ों पर कीलों से जड़ दी गई थीं । लेकिन सर्दियों में पूर्वी हवा भीतर आ ही जाती और सर्राटे भरती रहती; इसलिए भोजन का कमरा कभी ठीक तरह गर्म न होता ।

नाँनों बाहर निकल गई और फाटक की कुंडी चढ़ा दी । भोजन के कमरे के दरवाज़े की चटखनी बंद की और फिर अस्तबल की ओर चली । ताकि एक लम्बे-चौड़े भेड़ियानुमा कुत्ते की जंजीर खोल दे । इस कुत्ते की आवाज़ फटी हुई-सी थी । बिलकुल ऐसा लगता जैसे उसका गला सूज गया हो । उसके भयंकर स्वभाव से सभी परिचित थे । नाँनों ही एक ऐसी थी जो उसे काबू कर लेती थी । इन दोनों मैदानों के रहने वालों में बर्बरता के तत्व मौजूद थे और दोनों एक दूसरे को भली भांति समझते थे ।

शारल ने मैली-कुचैली पीली दीवारों और धुएँ से काली छत पर निगाह डाली और यह भी देखा कि दीमक चाटी हुई पुरानी सीढ़ियाँ उसके चचा के कदमों के नीचे कैसी कांप रही हैं । अब उसकी आँखें खुलती जा रही थीं । वास्तव में यह स्थान मुर्गियों का अच्छा खासा दरबा मालूम हो रहा था । उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से चाची और बहन को देखा । लेकिन वह इस जीने की विशेषताओं की इतनी आदी हो चुकी थीं कि उन्हें कभी यह ख्याल तक न आया था कि इसमें कोई आश्चर्यजनक बात है । इस-लिए उसकी इस परेशानी को मित्रता का द्योतक समझते हुए वे उसकी

ओर देखकर अत्यन्त शिष्टता से मुस्करा दीं। इस मुस्कराहट ने उसकी हिम्मत तोड़ दी और वह बेचारा गुमसुम रह गया।

"आखिर मेरे पिता को मुझे यहाँ भेजने की क्या सूझी ?" उसने अपने मन में सोचा।

पहली मंज़िल पर पहुँचकर उसे तीन दरवाज़े मिले, जिन पर मटियाला-सा लाल रंग फिरा हुआ था। उन पर बेल-बूटे बिल्कुल नहीं थे। अतः मिट्टी से अटी हुई दीवारों में दरवाज़े मुश्किल से दिखाई देते थे। उनके अस्तित्व का पता लोहे की उन भारी-भारी सलाखों से लगता था, जो उनके दोनों ओर सजावट के लिए लगी थीं और जिनके सिरों पर भद्दा सा फूल बना हुआ था। सीढ़ियों के ऊपर एक दरवाज़ा था जो किसी समय रसोई के ऊपर वाले कमरे में खुलता था। लेकिन अब बिलकुल बंद कर दिया गया था। अब तो यह दशा थी कि प्रवेश सिर्फ ग्रांदे के कमरे में से हो सकता था। और यह रसोई के ऊपर वाला कमरा मानो अंगूरों के इस कृषक का मन्दिर था।

दिन का प्रकाश एक ही खिड़की द्वारा भीतर आता था, जो बाहर सेहन की ओर खुलती थी और जिसमें हिफाजत के ख्याल से लोहे की बहुत मोटी-मोटी सलाखों का जंगला लगा हुआ था। मकान-मालिक किसी को भी इस कमरे में कदम रखने की आज्ञा न देता था। यहाँ वह हर प्रकार की बाधा से सुरक्षित अकेला बैठता था जैसे रसायन शास्त्री अपनी कुठालियों के बीच। निःसंदेह यहाँ अत्यन्त चतुरता से बना हुआ एक गुप्त स्थान था। उसमें वह अपनी जायदाद की दस्तावेजें रखा करता था और यहीं वह बढ़िया तराज़ू रहती थी जिसमें वह अपने सिक्के तौला करता था। इसी कमरे में बैठकर वह हर रात रसीदें बनाता, उगाही हुई रकम का विवरण लिखता और विभिन्न योजनाओं पर विचार करता था। दूसरे व्यापारी लोग उसे कभी व्यस्त न देख पाते; लेकिन फिर भी वह अकस्मात उत्पन्न हो जाने वाली परिस्थिति के लिए सदा तैयार मिलता, तो उनका यह सोचना ठीक ही था कि ग्रांदे के कब्जे में कोई जिन या भूत है, जो प्रत्येक अवसर

पर उसकी सहायता के लिए आ उपस्थित होता है। जब नाँनों के खर्राटे छत की कड़ियाँ तक हिला देते, पहरा देने वाला भयंकर कुत्ता शिकार की खोज में बाहर भोंकता फिरता, मादाम ग्रांदे और योज़ेन गहरी नींद सो रही होतीं, उस समय बूढ़ा टीनसाज़ अपना सोना निकाल बैठता, उसे चुमकारता, झुक के प्यार करता, खिलौने के सदृश उससे खेलता रहता और फिर इस प्रकार जी भरकर खेलने के बाद नशे में धुत होकर आखिर सो जाता। दीवारें मोटी-मोटी थीं और मज़बूती से बंद की हुई खिड़कियाँ और रोशनदान ये सारी बातें गुप्त रखते थे। इस प्रयोगशाला की चाभी सिर्फ उसी के पास रहती थी। अगर अफवाहें सच थीं तो उसके पास ऐसे नक्शे थे, जिनमें उसकी जमीनों का एक-एक पेड़ बना हुआ था। यहां बैठकर वह इन नक्शों पर विचार करता और उनकी सहायता से अंगूरों की एक-एक बेल की पैदावार का अनुमान लगा लेता। और अपनी लकड़ी के एक-एक टुकड़े का हिसाब कर लेता।

योज़ेन के कमरे का दरवाज़ा इस बन्द किये हुये कमरे के सामने था। मकान के सामने वाले भाग में मोसियो और मादाम ग्रांदे का कमरा था। भीतर की ओर से उसके दो भाग कर दिये गये थे। मादाम ग्रांदे का कमरा योज़ेन के बराबर वाला था और बीच में आने-जाने के लिये एक शीशे का दरवाज़ा था। कमरे का आधा भाग एक मोटी-सी दीवार खींचकर इस रहस्यमय एकांतवास से अलग कर दिया गया था और वह मालिक-मकान का कमरा था। इस व्यक्ति ग्रांदे ने बड़ी धूर्तता से अपने भतीजे को दूसरी मंज़िल पर कमरा दिया था जो खूब हवादार और ठीक उसके अपने कमरे के ऊपर स्थित था ताकि वह इस नौजवान की प्रत्येक गति-विधि की आवाज़ सुन सके। और अगर वह बाहर जाने का निश्चय करे तो भी पता चल जाय।

योज़ेन और उसकी माँ पहली मंजिल पर पहुची। एक ने दूसरी को चूमा और रात का प्रणाम कहकर एक दूसरी से विदा हुईं। तब शारल से विदाई के कुछ शब्द कहे, जो भाव शून्य और शिष्टाचार मात्र जान

पड़ते थे; लेकिन वह लड़की के हृदय से निकले थे। वे अपने-अपने कमरा में चली गईं।

"बेटे, यह तुम्हारा कमरा है।" ग्रांदे ने दरवाज़ा खोलते हुए शारल से कहा, "अगर तुम बाहर जाना चाहो तो तुम्हें नांनों को बुलाना पड़ेगा क्योंकि अगर तुमने ऐसा न किया तो तुम्हारी कुशल नहीं। तुम संभलने भी न पाओगे कि कुत्ता तुम्हें झंझोड़ कर रख देगा। अच्छा प्रणाम। खूब अच्छी तरह सोना। हा, हा, हा! इन स्त्रियों ने तुम्हारे कमरे में आग जला दी है।" वह चलते-चलते बोला।

ठीक इसी समय लम्बी नांनों अंगीठी लिए हुए वहां आई।

"कभी किसी ने ऐसा तमाशा भी देखा है।" मोसियो ग्रांदे ने कहा, "क्या तुमने मेरे भतीजे को कोई बीमार औरत समझ लिया है? लेकिन वह बीमार नहीं है। नांनों भागो यहाँ से और अपनी यह अंगीठी भी लेती जाओ।"

"लेकिन जनाब चादरें सीली हैं और यह महाशय स्त्री की भांति कोमल हैं।"

"अच्छी बात है तो जाओ, सुखा आओ। अब तुम्हें यह सूझ ही गई तो क्या किया जाय।" ग्रांदे ने अपने कंधे झटकते हुए कहा, "लेकिन ध्यान रखना कहीं आग ही न लग जाय।" और कंजूस अंधेरे में मार्ग टटोलता हुआ और धीरे-धीरे बड़बड़ाता हुआ सीढ़ियां उतर गया।

शारल अपने सन्दूकों के बीच आश्चर्य-चकित खड़ा रह गया। उसने अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई। इस अटारी की ढलवान छत को देखा और दीवार पर लगे हुए उस कागज़ पर दृष्टि डाली, जो छोटी-छोटी देहाती सरायों में आमतौर पर लगा मिलता है और जिसमें भूरे से रंग की पृष्ठभूमि पर फूलों के गुच्छे एक विशेष ढंग से बने होते हैं। फिर उसकी नज़र खुरदुरे से पत्थर के आतिशदान पर पड़ी जिसमें जगह-जगह दरारें थीं। उसे देखकर ही उसके भीतर सर्दी की एक लहर-सी दौड़ गई यद्यपि अंगीठी में आग जल रही थी। इसके अलावा बेंत की कुछ कुर्सियां पड़ी

थीं, जिनका जोड़-जोड़ हिलता था। फिर एक बड़ी-सी मेज़ थी, जिस पर एक अच्छा कद्दावर सिपाही इत्मीनान से लेट सकता था। पर्दे बार-बार इस तरह हिलते थे, जैसे यह दीमक चाटा काठ-घर अभी टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। यह सब चीज़ें देख चुकने के बाद उसका ध्यान नांनों की ओर गया और वह बड़ी गम्भीरता से बोला :

"देखो, एक बात तो बताओ। क्या मैं वाकई मोसियो ग्रांदे के घर में हूँ ? वही मोसियो ग्रांदे जो सोमूर के मेयर रह चुके हैं और पेरिस वाले मोसियो ग्रांदे के भाई हैं।"

"जी हां, आप उन्हींके घर में हैं। वे बड़े ही दयालु और अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं। क्या मैं ये ट्रंक खोलने में आपकी सहायता कर सकती हूँ ?"

"भगवान के लिए मेरा हाथ बटाओ। तुम तो बिल्कुल सिपाही लगती हो। कहीं तुम सवारों के दस्ते में तो नहीं थीं ?"

"हा, हा, हा !" नांनों हंसने लगी। "वे क्या होते हैं ? यह कैसा जन्तु है ? जल का या थल का ?"

"यह लो, मेरा ड्रेसिंग गाऊन निकाल दो। वह इस सफरी बैग में पड़ा है और यह इसकी चाभी है।"

नांनों यह हरा रेशमी गाऊन देखकर चकित रह गई, जिस पर पुराने ढंग के सुनहरी फूल कढ़े हुए थे। "क्या आप यह पहनकर सोयेंगे ?" उसने पूछा।

"हां।"

"क्वांरी मरियम की कसम। यह कपड़ा हमारे गिरजे की वेदी पर बहुत ही सुन्दर लगेगा। मोसियो, आप यह गाऊन गिरजे को दे डालिये। इसे पहनने से आपको पाप लगता होगा और यों भेंट चढ़ाने से बड़ा पुण्य मिलेगा। ओहो, इसे पहनकर आप कितने अच्छे लगते हैं। मैं जाकर बीबी को बुला लाती हूं कि वे भी आपको देखें।"

"अच्छा, सुनो नांनों। यही नाम है न तुम्हारा ? अब तुम अपनी

जबान बन्द करो और मुझे सोने दो। मैं अपना सामान कल ठीक कर लूंगा। तुम्हें मेरा गाऊन बहुत पसन्द आया है, मैं तुम्हीं को पुण्य अर्जित करने का अवसर दूंगा। मैं सच्चा ईसाई हूं इसलिए जाते हुए इसे अपने साथ नहीं ले जाऊंगा। तुम्हें देता जाऊंगा फिर तुम इसका जो जी चाहे करना।"

नांनों प्रतिमा-सी बनी शारल को तकती रही। उसे विश्वास नहीं आ रहा था कि जो कुछ उसने सुना है, वह सच है।

"तो क्या आप यह सुन्दर ड्रेसिंग गाऊन मुझे दे देंगे ?" वह जाने के लिए मुड़ते हुए बोली, "मालूम होता है मोसियो नींद में बोल रहे हैं। रात का प्रणाम।"

"प्रणाम नांनों—आखिर मैं यहाँ करने क्या आया हूं ?" शारल ने मन में सोचा, "मेरे पिता ऐसे मूर्ख तो नहीं हैं कि उन्होंने बिना प्रयोजन मुझे यहाँ भेज दिया। हूँ, छोड़ो यह गम्भीर बातें कल देखी जायेंगी।" और वह यह सोचते हुए सो गया।

"मेरा चचेरा भाई कितना सुन्दर है!" योज़ेन ने अपनी प्रार्थना के मध्य में सोचा और उस रात उसकी प्रार्थना अधूरी ही रह गई।

सिर्फ मादाम ग्रांदे ही इस घर में एक ऐसा प्राणी थी जो इत्मीनान से सो गई और उसके मन में कोई विचार ही न आया। बराबर के कमरे में उसे अपने पति के इधर-उधर घूमने की चाप सुनाई दे रही थी। सभी भावुक और निर्बल स्त्रियों की भांति उसने भी अपने स्वामी के चरित्र का भली भांति अध्ययन किया था। जिस प्रकार समुद्र का पक्षी तूफान का पहले से ही अनुमान लगा लेता है उसी प्रकार निश्चित रूप से वह सहज ही में पता चला लेती थी कि ग्रांदे के मस्तिष्क में तूफान बरपा है और अपने ही कथनानुसार ऐसे अवसरों पर वह "मुर्दे की भांति चुप बैठ जाती।" ग्रांदे ने अपने गुप्त कमरे पर दृष्टि डाली। दरवाज़े की ओर देखा। जिसके अन्दर की ओर लोहे की चादर लगी हुई थी। इस ओर से सन्तुष्ट होकर वह बड़बड़ाया :

"मेरे भाई को भी क्या सूझी कि अपने बच्चे को मेरे सिर मढ़ दिया। अच्छी विरासत मिली है। मेरे पास तो बीस फ्रांक भी नहीं बचते। फिर इस बांके की दृष्टि में बीस फ्रांक का महत्व ही क्या है? वह तो मेरी दीवार की घड़ी को ऐसे देख रहा था जैसे आग में झोंकने के योग्य भी न हो।"

और ग्रांदे अपने भाई की दुखप्रद प्रार्थना के सम्भावित परिणामों पर विचार करने लगा और सोचते-सोचते इतना दुखी और परेशान हो उठा कि प्रार्थना करते समय उसका भाई भी नहीं हुआ होगा।

"क्या वाकई मुझे वह सुनहरी गाऊन मिल जाएगा?" नांनों ने लेटे हुए सोचा और कल्पना ही में अपने आपको वेदी के इस सुन्दर कपड़े में लिपटा हुआ महसूस किया। जिस प्रकार योज़ेन जीवन में पहली बार प्रेम के स्वप्न देख रही थी, उसी प्रकार वह भी सुनहरी, भड़कीले और फूलदार रेशमी कपड़ों के स्वप्न देखने लगी।

एक लड़की के शांत और निरीह जीवन में उल्लास के ऐसे क्षण भी आते हैं, जब वह सूरज के प्रकाश को अपनी आत्मा में जगमगाते हुए महसूस करती है और उसे ऐसा लगता है जैसे फूल उसकी भावनाओं को व्यक्त कर रहे हों। उसके हृदय की गति तीव्र हो जाती है, उत्तेजित मस्तिष्क में कुछ ऐसा सामंजस्य उत्पन्न हो जाता है, जैसे उसने सोचना छोड़ दिया और समस्त विचारों और भावनाओं ने एक अस्पष्ट-सी अभिलाषा का रूप धारण कर लिया हो। उसे अपने दिन निरीह उदासी और सूक्ष्म प्रसन्नताओं से ओत-प्रोत मालूम होते हैं। बच्चे जब अपने इर्द-गिर्द की चीजों को पहली बार देखते हैं तो मुस्करा देते हैं और जब एक लड़की को पहली बार प्रेम के अस्तित्व का अस्पष्ट-सा बोध होता है तो वह भी मुस्कराती है और ऐसे मुस्कराती है जैसे कभी बचपन में मुस्कराती थी। अगर प्रकाश वह पहली वस्तु है, जिससे हम प्यार करना सीखते हैं तो प्रेम निश्चित रूप से वह पहला प्रकाश है, जो हृदय को आलोकित करता है। योज़ेन के जीवन में वह क्षण आन पहुँचा था। उसने दुनिया

की चीजों को पहली बार स्पष्ट रूप से देखना शुरू किया था।

दूसरी देहाती लड़कियों की भांति योजेन भी सुबह-सबेरे उठ बैठती थी, और आज तो नियम से पहले ही उसकी आंख खुल गई। उसने प्रार्थना की और कपड़े बदलना शुरू किये। इस बनाव-सिंगार में अब उसे एक विशेष रुचि का अनुभव हो रहा था। उसने अपने सुनहरे बालों में कंघी की और मोटी-मोटी चोटियों को सिर के गिर्द ऐसा लपेटा जैसे ताज-सा बन जाये और एक भी बाल बाहर न रहे। बाल बनाने का यह सीधा-सा ढंग उसकी बाल-सुलभ मुख-मुद्रा के बिल्कुल अनुरूप था, जिससे लज्जा भी झलकती थी और भोलापन भी। फव्वारे के ठंडे पानी से बार-बार हाथ धोने से उसकी खाल खुरदरी और सूखी हो गई। उसने अपनी सुन्दर सुडौल बाहों पर नज़र डाली और सोचने लगी कि जाने मेरे भाई क्या करते हैं कि उनके हाथ ऐसे कोमल और सफेद और नाखून इतने सुन्दर हैं। उसने जुराबों का नया जोड़ा पहना और अपने बढ़िया जूते निकाले और फिर उनमें बड़ी सावधानी से तस्मे डाले। दरअसल जिन्दगी में पहली बार उसके मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि वह सुन्दर लगे और उसने अच्छी सिली हुई पोशाक पहनने का आनन्द भी अनुभव किया।

जब वह तैयार हो चुकी तो उसे गिरजे के घंटे की आवाज़ सुनाई दी और गिनने पर जब मालूम हुआ कि अभी सिर्फ सात बजे हैं तो बड़ा आश्चर्य हुआ। अपने बनाव-सिंगार पर अधिक समय लगाने की चिंता में वह आज बहुत सवेरे उठ बैठी थी लेकिन यह काम शीघ्र ही समाप्त हो गया। वह इतनी भोली-भाली थी कि उसे बालों को बार-बार इधर से उधर करके उसके विभिन्न प्रभावों के अध्ययन की कला भी नहीं आती थी, इसलिए वह सीधे स्वभाव बाज़ू पर बाज़ू रखकर खिड़की के सामने बैठ गई और बाहर आंगन में बाग के लम्बे-से टुकड़े और फसील पर उगी हुई फुलवारी को देखने लगी।

यह दृश्य जिसे चट्टानों की दीवारों ने घेर रखा था बहुत शुष्क, नीरस

और उदास-उदास था। लेकिन इसमें भी एक आकर्षण अवश्य था। यह ऐसा रहस्यमय आकर्षण था जो निस्तब्ध घने बागों अथवा निर्जन जंगलों ही में पाया जाता है। रसोई की खिड़की के नीचे एक कुआँ था, जिसके गिर्द पत्थर की मुंडेर थी और पानी के ऊपर लोहे के ब्रैकेट पर लगी हुई एक चर्खी लटक रही थी। लोहे का यह ब्रैकेट अंगूर की बेल से ढक गया था जिसके पत्ते लाल पड़कर मुरझा चुके थे क्योंकि पतझड़ का मौसम खत्म होने वाला था। बेल की मुड़ी-तुड़ी डंडी बल खाती हुई घर की दीवार के साथ-साथ काफी दूर तक चली गई थी और एक जगह लकड़ी के ढेर तक पहुंच कर खत्म होती थी। यहां लकड़ी के गट्ठे ऐसी सफाई और खूबी से चुने हुए थे जैसे कोई किताबों का प्रेमी अलमारी में किताबें सजा कर रखता है। आंगन के फर्श पर जो पत्थर लगे हुए थे वे एक तो पुराने थे, दूसरे काले पड़ गये थे और हवा की घुटन के कारण सील भी गये थे। कहीं-कहीं शिगाफों में घास भी उग आई थी। पुरानी और मोटी-मोटी फसीलें काई से सब्ज़ पड़ गई थीं और जहाँ-जहाँ पानी टपकता था वहां गहरे बादामी रंग की लम्बी-लम्बी लकीरें थीं। आंगन के अंत पर आठ टूटी-फूटी सीढ़ियां बाग में उतरती थीं, लेकिन पौधों के बढ़ जाने से बिलकुल छिपी हुई थीं, और मध्यकाल के किसी योद्धा की कब्र जैसी जान पड़ती थीं, जिसे धर्म-युद्धों के जमाने में उसकी पत्नी ने बनवाया हो और अब जो खंडहर हो कर रह गई हो। इस जर्जर पथरीली दीवार के साथ-साथ खुली जाली के काम की बाढ़ थी, जो पुरानी पड़ जाने के कारण प्रतिक्षण टूटती जा रही थी और बहुत सी जंगली बेलों ने बढ़कर उसे ढांप लिया था। बाग में जाने के लिए लकड़ी का जो दरवाजा था उसके दोनों ओर सेब के दो पेड़ थे, जिन्हें पाला मार गया था और जिनकी बल खाई हुई टहनियां दरवाज़े पर फैली थीं। बाग में बजरी की तीन पगडंडियां थीं, जिनके दोनों ओर छोटी-छोटी झाड़ियां लगाई गई थीं और बीच-बीच में एक मार्जन-सा था। बाग के अन्त में फसीलों के नीचे नींबू के पेड़ों के झुंड थे और एक पंक्ति रसभरी के

पौधों की थी। मकान का जो भाग बाग के निकट था, वहाँ अखरोट का एक जबंदस्त पेड़ खड़ा था, जिसने टीनसाज़ के खास कमरे को अपनी लम्बी चौड़ी डालियों से ढक रखा था।

पतझड़ का सुन्दर सुहाना प्रभात था और आकाश निर्मल और स्वच्छ था, ऐसे प्रभात लवार नदी के इलाके ही में होते हैं। धुंध का कहीं नाम निशान भी न था। पिछली रात के कोहरे के चिह्न धीरे-धीरे मिटते जा रहे थे। और सूरज की धीमी-धीमी किरणें इस विचित्र दृश्य पर, पुरानी फसीलों पर, हरी-हरी झाड़ियों पर, बाग और सेहन पर पड़ रही थीं।

यह सब चीज़ें बहुत ही साधारण थीं और योज़ेन उन्हें एक ज़माने से देखती चली आ रही थी; लेकिन आज उसे इस दृश्य में एक नये आकर्षण का अनुभव हो रहा था। बाहर की दुनिया को सूरज की किरणों से आलोकित होते देखकर उसके मस्तिष्क में बहुत से विचार आने लगे। एक अस्पष्ट और अवर्णनीय प्रसन्नता उसके समस्त शरीर में समा गई और वह उसके भीतर और बाहर यों लिपटी और फैली हुई थी जैसे उसके शरीर के गिर्द बादल लिपटा हो। यह विचित्र बाग, पुरानी दीवारें और अपनी इस छोटी-सी दुनिया की प्रत्येक वस्तु उसे अपने विचारों और भावनाओं से ओत-प्रोत मालूम हो रही थी और वह अपने वातावरण के साथ पूर्ण सामंजस्य का अनुभव कर रही थी। धूप खिसकते-खिसकते दीवार से फरन की झाड़ी तक जा पहुँची, जिसके पत्ते और टहनियाँ कबूतर के रंग-बिरंगे सीने की भांति चमकने लगीं। और योजेन का भविष्य जगमगाती आशाओं से आलोकित हो गया। आज से दीवार का यह भाग, उसके ऊपर उगे हुए पीले और नीले फूल और सूखी-सी घास उसकी दृष्टि में एक सुन्दर दृश्य बन गये और ऐसी भावनायें उत्पन्न करने लगे, जो बचपन की स्मृतियों की भाँति मधुर और आकर्षक थीं।

वह विचार-विमग्न बैठी रही। पत्तियों के धरती पर गिरने की सरसराहट और आंगन से आती हुई प्रतिध्वनि उसे अपने गुप्त प्रश्नों का उत्तर

मालूम हो रही थीं। इस हालत में वह खिड़की के पास सारा दिन भी बैठी रहती तो उसे समय के बीतने का एहसास न होता। लेकिन उसके मस्तिष्क में इसके अतिरिक्त और विचार भी उठ रहे थे। वह बार-बार उठकर शीशे के सामने खड़ी हो जाती और अपने ऊपर नज़र डालती। उसकी दशा उस ईमानदार और सचेत लेखक की-सी थी जो अपनी रचना को पढ़े, जांचे, आलोचना करे और उसकी त्रुटियों के लिए अपने आपको बुरा-भला कहे।

"उसके लिए मैं सुन्दर नहीं हूँ।"

योज़ेन विनीत भाव से ऐसा सोच रही थी और यह विचार उसके लिये बड़ा ही दुखप्रद था। बेचारी लड़की अपने आपसे न्याय नहीं कर रही थी। लेकिन वास्तव में इस प्रकार की विनम्रता बल्कि भय तो प्रेम ही का एक भाग होता है। योज़ेन के सौन्दर्य में निचले मध्य वर्ग की स्त्रियों की भाँति स्वास्थ्य की आभा थी और कोमलता का तनिक अभाव था। लेकिन इस वीनस जैसे सौन्दर्य में ईसाई भावनाओं के माधुर्य और पवित्रता ने चार चांद लगा दिये थे। और यह भावनायें स्त्री में ऐसा आत्मगौरव उत्पन्न कर देती हैं, जिससे प्राचीनकाल के मूर्तिकार परिचित नहीं थे। उसका सिर बहुत बड़ा था। उसके माथे की पुरुषोचित लेकिन सूक्ष्म रेखायें फिडियास द्वारा बनाई गई ज्यूपीटर की मूर्ति के सदृश थीं। उसकी आँखें भूरी और चमकदार थीं, जो उसके जीवन की पवित्रता को प्रतिबिम्बित करती थीं। एक बार उस पर चेचक का आक्रमण हुआ था, जो इतना मामूली था कि उसके अंडाकार और सुन्दर चेहरे पर कोई दाग नहीं पड़ा था; लेकिन उसके शरीर की ताज़गी और सफेद रंगत को वह कुछ धुंधला कर गया था। लेकिन इसके बावजूद, उसकी खाल अब भी इतनी चिकनी और मुलायम थी कि माँ के कोमल चुम्बन का उसके गाल पर थोड़ी देर के लिये चिह्न उभर आता। उसकी नाक शायद कुछ बड़ी थी, लेकिन उसके सुन्दर होठों और मुख से जो स्नेह और संवेदना प्रकट होती थी, उसमें इससे किसी प्रकार का अन्तर न आता

था। सुर्ख-सुर्ख होठों के ऊपर रोयें की एक महीन-सी लकीर थी, गर्दन बड़ी नाजुक और गोल, बन्द गले के लिबास के बावजूद शरीर के अंग-विधान में वह आकर्षण कि मनुष्य देखता ही रह जाय।

इसमें सन्देह नहीं कि उसमें वह माधुर्य नहीं था जो बनाव-श्रृंगार से उत्पन्न होता है। कद लम्बा अवश्य था; लेकिन शरीर फुरतीला नहीं बल्कि सुदृढ़ था। मगर सुन्दरता के पारखी के लिए उसमें एक आकर्षण था।

योज़ेन लम्बी थी और उसका शरीर सुगठित था। उसमें वह सौंदर्य न था जिसकी आम लोग प्रशंसा करते हैं। लेकिन उसके सुन्दर होने में सन्देह न था। उसका सौन्दर्य कुछ इस प्रकार का था कि कलाकार ही उससे मुग्ध हो सकता था। अगर कोई चित्रकार किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में होता, जिसमें क्वांरी मेरी की-सी आध्यात्मिक पवित्रता हो, अथवा महिलाओं की आंखों में वह सुन्दरता ढूंढ़ रहा होता, जिसका स्वप्न राफायेल ने देखा और अपने शाहकारों में चित्रित किया; अथवा गौरवपूर्ण नम्रता से ओतप्रोत आँखें और पवित्र मुखमुद्रा, जो प्रायः किसी कलाकार की कल्पना-प्रसूत होती है; लेकिन जो वास्तव में सचरित्र और धार्मिक जीवन बिताने ही से प्राप्त होती और सुरक्षित रखी जाती है—अगर कोई चित्रकार इस धुन में होता तो उसे तुरन्त योज़ेन ग्रांदे के मुख में एक सहज और स्वाभाविक महानता दीख पड़ती। उसके शान्त हृदय में प्रेम की एक दुनिया आबाद थी। उसकी आँखों और पलकों में कुछ ऐसा देवत्व था, जिसकी व्याख्या असम्भव जान पड़ती है। उसके मुख पर ऐसे संयम और संतोष की झलक थी, जिसे प्रसन्नता का भाव भी उद्वेलित न कर पाता था। बिल्कुल ऐसा लगता था, जैसे किसी स्थिर झील में कहीं दूर से आकाश के बराबर ऊँचे पहाड़ों का अस्पष्ट-सा प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा हो। योज़ेन के निरीह और सुकोमल चेहरे का सौन्दर्य एक अधखिले फूल की सुषमा के सदृश था। उसमें ऐसी स्थिरता थी, जो एक निर्विकार और निष्कपट व्यक्ति का विशेष गुण है और यह बात देखने

वाले को मोह लेती थी। योज़ेन अभी तक जीवन के उस स्तर पर थी, जहाँ मनुष्य बच्चों के सदृश स्वप्नों की दुनिया में रहता है और प्रसन्नता की जो कलियाँ बुनता है आगामी जीवन में उनका कहीं पता ही नहीं चलता।

और वह योंही उठकर आइने में अपनी सूरत देखने लगी। अभी उसके मस्तिष्क में प्रेम का विचार तक नहीं आया था, बोली, "वह मुझे कहाँ खातिर में लायेंगे। मैं तो बहुत कुरूप हूँ।"

फिर उसने दरवाज़ा खोला, दहलीज़ पर खड़ी होकर जीने पर से झुकी और घर में से आ रही आवाज़ों को सुनने लगी।

"अभी नहीं उठे।" उसने सोचा। उसे नॉनों के चलने-फिरने और खाँसने की आवाज़ सुनाई दी। वह भोजन करने के कमरे में झाड़ू लगा चुकी थी, रसोई में उसने आग जला दी थी, कुत्ते को जंजीर से बाँध दिया था और अस्तबल में पशुओं से मित्रों की भाँति बोल-बतला रही थी।

योज़ेन जल्दी से सीढ़ियाँ उतरी और नॉनों की ओर भागी, जो इस समय गाय का दूध दुह रही थी।

"नॉनों!" वह चिल्लाई, "तुम बड़ी अच्छी हो। देखो, भाई की काफी के लिये हमें मलाई तो दोगी न?"

"लेकिन बीबी, अभी तो दूध निकाला है। इतनी जल्दी मलाई कहाँ से आजायगी?" वह खिलखिलाकर हँस दी, "अब मैं मलाई बनाने से तो रही। आपके भाई इतने सुन्दर हैं कि क्या बताऊँ! आपने उन्हें रात का रेशमी गाऊन पहने नहीं देखा। सारे में सोने का काम है। मैंने तो देखा है! वह तो जो कपड़ा पहनते हैं, ऐसा अच्छा लगता है जैसे पादरी साहब का चोगा।"

"नॉनों तो फिर केक ही बना लो।"

"लेकिन चूल्हा जलाने और आटा और मक्खन गर्म करने के लिए लकड़ियाँ कहाँ से आयेंगी?" नॉनों ने पूछा।

ग्रांदे के प्रधानमन्त्री की हैसियत से योज़ेन और उसकी माँ की दृष्टि

में उसका बड़ा महत्व था। बोली, "क्या आप अपने भाई की दावत के लिए मालिक को लूटना चाहती हैं ? उनसे जलाने के लिए लकड़ी, मक्खन और आटा माँगिये। वह आपके पिता हैं। जाइये और उनसे मांगिये। आपको शायद दे दें। वह देखिये। वह आ रहे हैं। रसद का सामान देने के लिये...."

लेकिन योज़ेन बाग की ओर भाग निकली क्योंकि चरमराती हुई सीढ़ियों पर पिता के कदमों की चाप से वह डर गई थी। उसे ऐसी प्रसन्नता अनुभव हो रही थी, जो दूसरों की दृष्टि से बचना चाहती है। यह वह प्रसन्नता है जो हमारे विचार में, और यह विचार कुछ गलत भी नहीं, हमारी आँखों में चमकती है। और हमारे माथे से व्यक्त होती है। सिर्फ इतना ही नहीं उसके मन में कुछ दूसरे विचार भी आये थे। उसे पहली बार अपने पिता के घर वीरानी और बे आरामी का अंदाज़ा हुआ था। और विरक्तता की मध्यम-सी भावना के साथ बेचारी लड़की का जी चाहा कि काश वह इन परिस्थितियों को बदलकर इसे अपने भाई के योग्य बना सके। उसके मन में हठात् यह अभिलाषा उत्पन्न हुई कि उसके लिये कुछ करे ! लेकिन यह समझ में न आता था कि करे क्या। अपने चचेरे भाई को पहली बार देखते ही उसमें स्त्री-सुलभ भावना उत्पन्न हो गई थी और इसमें तीव्रता इस कारण आई कि वह अब तेईस वर्ष की हो चुकी थी और उसका मन और मस्तिष्क पूर्ण रूप से विकसित हो चुका था। वह इतनी सीधी-सादी और भोली-भाली थी कि अपनी हृदय-गत भावनाओं को समझे बिना ही अपनी निरीह प्रकृति के तकाज़ों पर कार्यान्वित होती थी।

जीवन में पहली बार उसे पिता को देखकर डर लगा। उसे ऐसा लगा, जैसे वह उसके भाग्य का निर्माता है। और वह अपराधी के सदृश अपने कुछ विचार उससे छिपा रही है। उसने तेज़ी से इधर-उधर टहलना शुरू कर दिया। वह हैरान थी कि हवा में इतनी ताज़गी कहाँ से आ गई। सूरज का प्रकाश शरीर में जान-सी डाल रहा था। लगता था

कि उसके भीतर भी वही प्रकाश है, जो बाहर है। बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे नए जीवन का आरम्भ हो रहा हो।

अभी वह केक बनवाने के प्रबन्ध पर विचार कर रही थी कि इतने में नाँनों और ग्रांदे के झगड़ने की आवाज़ सुनाई दी और यह ऐसी विचित्र बात थी जैसे सर्दियों में कोई अबाबील आ निकले। उस भले आदमी ने चाभियाँ निकाली थीं और आज के लिए खाने-पीने का सामान निकाल कर देखने वाला था।

"क्या कल कोई रोटी बची थी ?" उसने नाँनों से पूछा।

"एक टुकड़ा भी नहीं बचा था, मोसियो।"

ग्रांदे ने बड़ी-सी डबल रोटी उठाई, जो गोल और हर तरफ से बराबर थी। उसकी शकल चौड़ी-सी टोकरी के समान थी जो इस इलाके में डबल रोटी रखने के लिए इस्तेमाल की जाती है। वह इसे काटने ही वाला था कि नाँनों बीच में बोल उठी।

"मोसियो, आज हम पाँच आदमी हैं।"

"ठीक है।" ग्रांदे ने उत्तर दिया, "लेकिन तुम्हारी यह एक डबल रोटी तीन-तीन सेर की है। इसमें से तो बच भी जायगी। फिर इसके अलावा तुम देखना यह पेरिस के रहने वाले नौजवान रोटी को छूने तक नहीं।"

"तो क्या वे तोशा खाते हैं ?" नाँनों ने दरियाफ्त किया।

इस भू-भाग की बोलचाल में शब्द 'तोशा' से प्रत्येक वह वस्तु अभिप्रेत थी, जो रोटी पर लगाकर खाई जाती है। सबसे साधारण तोशा मक्खन है और सबसे बढ़िया आड़ू का मुरब्बा। जिन लोगों ने बचपन में रोटी छोड़कर तोशा खाया है वह नाँनों के वाक्य का अर्थ तुरन्त समझ जायेंगे।

"नहीं" ग्रांदे ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "न वे रोटी खाते हैं, न तोशा, बस यह समझ लो उनकी दशा ऐसी होती है, जैसे किसी लड़की को प्रेम हो गया हो।"

दिन के राशन को जहाँ तक सम्भव हो सका कम करने के उपरांत कंजूस फलों की कोठरी में जाने ही वाला था। जाने से पहले गोदाम की अल्मारियों में उसने बड़ी सावधानी से ताला लगाया। इतने में नाँनों ने उसे रोका, "मोसियो, मुझे थोड़ा-सा आटा और मक्खन दे दीजिये, मैं बच्चों के लिए केक बनाऊँगी।"

"तो क्या तुम मेरे भतीजे के आजाने के कारण घर की व्यवस्था ही गड़बड़ कर देना चाहती हो?"

"आपके भतीजे तो अलग रहे, मुझे तो आपके कुत्ते का भी खयाल नहीं रहा था···अब देखिये आपने मुझे चीनी की छः डलियाँ दी हैं और मुझे आठ दरकार हैं।"

"सुनो, नाँनों, मैंने इससे पहले तुम्हें कभी हुज्जत करते नहीं देखा। क्या हो गया है तुम्हें? क्या तुम यहाँ की मालकिन हो? तुम्हें चीनी की छः डलियों से अधिक और कुछ नहीं मिलेगा।"

"अजी, बहुत अच्छा। और आपके भतीजे काफी में क्या डालेंगे?"

"वह दो डलियाँ ले सकता है, मैं बिना चीनी की काफी पी लूँगा।"

"आप बिना चीनी की काफी पी लेंगे और इस उम्र में? मैं तो अपनी जेब से इसकी कीमत अदा करने को तैयार हूँ।"

"तुम अपना काम करो।"

चीनी के मूल्य कम होने के बावजूद ग्रांदे की दृष्टि में यह उपनिवेशों की तमाम वस्तुओं से अधिक मूल्यवान वस्तु थी। उसका खयाल था कि चीनी हमेशा कम इस्तेमाल करनी चाहिए। बादशाहत कायम होने के जमाने से लेकर अब तक एक पाउंड चीनी का मूल्य छः फ्रांक था। इस प्रकार की बचत उसकी पुख्ता आदत बन चुकी थी। लेकिन प्रत्येक स्त्री चाहे वह कितनी ही भोली-भाली क्यों न हो अपनी इच्छा पूरी करने का कोई न कोई उपाय खोज निकालती है। और नाँनों ने भी केक की बात मनवाने के लिए चीनी का प्रश्न छोड़ दिया।

"बीबी" उसने खिड़की में से आवाज़ दी, "क्या आप केक खायेंगी?"

"नहीं, नहीं।" योज़ेन ने उत्तर दिया।

"ठहरो, नाँनों।" ग्रांदे ने अपनी बेटी की आवाज़ सुनकर कहा, "यह लो।"

उसने कनस्तर खोलकर थोड़ा-सा आटा तोला और पहले निकाले हुए मक्खन के टुकड़े में कुछ आऊँस और बढ़ा दिया।

"और लकड़ी ? मुझे तन्दूर जलाने के लिए लकड़ी की ज़रूरत पड़ेगी।" निष्ठुर नाँनों ने कहा।

"अच्छा जिस चीज़ की तुम्हें ज़रूरत पड़े ले लेना।" उसने अवसाद युक्त स्वर में कहा, "लेकिन तुम फलों के समोसे भी साथ ही बना लेना और भोजन भी तन्दूर में पका लेना। इससे दूसरी बार आग जलाने की ज़रूरत न पड़ेगी।"

"हे भगवान ?" नाँनों चिल्लाई, "क्या मैं इतनी बात भी नहीं जानती !"

ग्रांदे ने अपने विश्वस्त प्रधान मंत्री को ऐसी दृष्टि से देखा, जिसमें पिता का स्नेह निहित था।

"मादमुआजेल !" नाँनों ने पुकार कर कहा, "हम केक बनायेंगे !"

ग्रांदे फल लेकर वापस आया और रसोई की मेज़ पर प्लेट भरकर रख दी।

"यह देखिये।" नांनों ने कहा, "आपके भतीजे के बूट कितने सुन्दर हैं। क्या उमदा चमड़ा और कैसी अच्छी सुगन्ध आती है। अब इनको साफ किस चीज़ से किया जाये ? क्या आपकी वह अंडे वाली पालिश इन पर लगा दूँ ?"

"नहीं, नांनों। मेरा खयाल है कि अंडे से इस प्रकार का चमड़ा खराब हो जाता है। तुम उससे कह देना कि मुझे यह चमड़ा साफ करने का ढंग नहीं आता। हाँ, यह मराकश लैदर कहलाता है।···और फिर वह सोमूर ही में से अपने बूटों के लिए कोई पालिश ला देगा। मैंने सुना

है कि वे पालिश में चीनी मिलाते हैं। इसी के कारण जूते ऐसे चमक जाते हैं।"

"फिर तो यह खाने के काबिल हुए।" नौकरानी ने बूटों को उठाकर सूंघते हुए कहा, "ओह! इनमें से तो मुझे मादाम रा दे क्लोन की सुगन्ध आती है। अरे, कितनी अजीब बात है!"

"अजीब!" उसके स्वामी ने कहा, "लोग अपनी हैसियत से कहीं अधिक पैसे जूतों पर खर्च कर देते हैं और तुम समझती हो कि यह अजीब बात है।" वह अभी फलों की कोठरी से दूसरी और आखिरी बार होकर आया था। दरवाज़ा उसने बड़ी सावधानी से बन्द कर दिया था।

"जब तक आपके भतीजे यहाँ रहेंगे, आप हफ्ते में एक दो बार तो शोरबा बनवाया करेंगे न?"

"हाँ।"

"तब मैं कसाई से कह आऊँगी।"

"तुम ऐसी कोई हरकत मत करना। तुम चूजों की यखनी बना सकती हो, जो तुम्हें किरायेदार लाकर देते रहेंगे। फिर मैं कोरनिवाये से कहूँगा कि मेरे लिये कुछ पहाड़ी कव्वे शिकार कर लाये। इस प्रकार के शिकार का शोरबा बेहतरीन होता है।"

"मोसियो, क्या यह सच है कि ये कौव्वे मुरदार खाकर पेट भरते हैं?"

"तुम मूर्ख हो नांनों! दूसरे सब प्राणियों की भाँति ये भी जो चीज़ मिल जाये, उसी पर गुजारा करते हैं। क्या हम सभी मुरदारों पर नहीं जीते? आखिर यह विरासतें और क्या हैं?" ग्रांदे को और आदेश नहीं देना था। इसलिए अपनी घड़ी निकालकर समय देखा तो पता चला कि अभी नाश्ते में आधा घंटा बाकी है। उसने अपनी टोपी उठाई, योज़ेन को प्यार किया और बोला—"क्या लवार के किनारे मेरे साथ सैर को चलोगी? मुझे उन चरागाहों में कुछ देखना है।"

योज़ेन ने अपनी तिनकों वाली टोपी पहन ली, जिसके अन्दर गुलाबी रंग की सिल्क लगी हुई थी और फिर बाप-बेटी टेढ़ी-मेढ़ी गली में से

बाज़ार की ओर चल पड़े।

सरकारी वकील क्रोशो ने इन दोनों को देखा तो पूछा—"इतने सवेरे कहाँ चल दिये ?"

"हम ज़रा कुछ देखने जा रहे हैं ?" उसके मित्र ने जवाब दिया। वह वकील के इस सवाल का मतलब खूब समझता था।

जब कभी ग्रांदे "कुछ देखने" के लिए जाता था तो सरकारी वकील को अनुभव से मालूम था कि उसके साथ जाने में कुछ लाभ ही होता है, इसलिए वह उनके साथ चल पड़ा।

"आओ क्रोशो।" ग्रांदे ने वकील से कहा, "तुम मेरे मित्र हो। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि अच्छी मिट्टी में पोपलर बोना कितनी मूर्खता है।"

"तो क्या लवार की चरागाहों के पेड़ों के जो साठ हज़ार फ्रांक आपको मिले, कुछ भी नहीं थे ?" क्रोशो ने विस्मय से उसकी ओर देखते हुए कहा, "कितनी खुश किस्मती थी आपकी !.........आपने लकड़ी उस समय कटवाई जब नांत भर में सफेद लकड़ी न मिलती थी। इस प्रकार आपको हर पेड़ के तीस फ्रांक मिले थे !"

योज़ेन ने सब सुना। लेकिन अनसुनी कर गई। उसे बिलकुल मालूम न था कि उसके जीवन को बदल देने वाला गम्भीर क्षण तेजी से करीब आता जा रहा है कि सरकारी वकील के एक प्रश्न के उत्तर में उसे पिता का शाही हुकम सुनना पड़ेगा।

ग्रांदे लवार की शानदार चरागाह में पहुंच चुका था, जो जनतन्त्र के दिनों में उसके हाथ लगी थी। इस समय यहाँ कोई तीस मजदूर पोपलर के उन पेड़ों की जड़ें उखाड़ने में व्यस्त थे, जो पहले यहाँ उगे हुए थे और गढ़ों को भरकर जमीन हमवार करते जा रहे थे।

"अच्छा, मोसियो क्रोशो, देखो एक पोपलर कितनी जगह घेरता है।" ग्रांदे ने क्रोशो से कहा और फिर एक मज़दूर से बोला, "जां त... तनि.......तनिक अपने फीते से इस गढ़े का घेर तो नापो।"

"आठ फीट को चार गुणा कर लीजिए।" आदमी ने नाप खत्म

करने के बाद कहा।

"बत्तीस फीट वर्ग का नुकसान होता है।" ग्रांदे ने क्रोशो को बताया। "अब इस पंक्ति में तीन सौ पेड़ थे, थे न ? अच्छा तो तीन सौ को ग·········ग·········गुणा करो बत्तीस फीट से। इसका मतलब है पांच हंडरडवेट सूखी घास का नुकसान हुआ। इससे दुगनी दोनों ओर उग सकती थी। तो यह मिलाकर पंद्रह हंडरडवेट हुई। इसके इलावा बीच की जगह में भी घास हो सकती थी। यों कुल घास के एक हजार ग··· ग······गट्ठे हुए।"

"अच्छा।" क्रोशो ने हिसाब में अपने मित्र की सहायता करते हुए कहा, "इन हज़ार गट्ठों की कीमत कोई छः सौ फ्रांक बैठेगी।"

"क········क········कहो कि बारह सौ फ्रांक होगी क्योंकि द···द··· दूसरी फसल तो तीन चार सौ फ्रांक के बराबर होती है। हां, तो अब हिसाब लगायो कि ब···ब·······बारह सौ फ्रांक वार्षिक चा···चालीस साल के अरसे में सूददरसूद के साथ कितने हो जायेंगे।"

"साठ हजार फ्रांक के लगभग होंगे।" सरकारी वकील ने कहा।

"मेरा भी यही अांदाजा है! साठ हजार फ···फ···फ्रांक अच्छा।" अब अंगूरों का व्यापारी बिना हकलाये बोलने लगा, "दो हजार पोपलर के पेड़ों की कीमत तो कभी भी चालीस साल में पचास हजार नहीं बनेगी। इसलिए उनके बोने से नुकसान रहता है। यह बात मैंने मालूम की है।" ग्रांदे अपने हिसाब-किताब से बड़ा प्रसन्न था, "जाँ," उसने फिर मज़दूर को पुकारा, "नदी के किनारे वाले गढ़ों को छोड़कर बाकी सब गढ़े भर दो और उनमें मेरे खरीदे हुए पौधे लगा दो क्योंकि लवार के किनारे लगाये पेड़ अच्छे बढ़ेंगे और खर्च सरकार का होगा।" अंतिम वाक्य कहते हुए उसने क्रोशो की ओर देखा तो उसकी नाक पर उभरे हुए मस्से में एक झुरझुरी-सी पैदा हुई जो एक व्यंगात्मक मुस्कराहट से कहीं तीखी थी।

"हाँ, यह तो सच है। पोपलरों को कमज़ोर मिट्टी में बोना चाहिए।" क्रोशो ने कहा। वह ग्रांदे की बुद्धि पर हैरान था।

"ह···ह···हां। मोसियो।" टीनसाज़ ने व्यंग भाव से कहा।

योज़ेन इस शानदार दृश्य और नदी के किनारे को देख रही थी। उसने अपने पिता के हिसाब-किताब की ओर कोई ध्यान न दिया था। लेकिन अब क्रोशो और उसके मुवक्किल की बातचीत का विषय बदल गया और उसमें सहसा योज़ेन की भी दिलचस्पी पैदा हो गई।

"अच्छा तो पेरिस से आपका दामाद आ गया है। सोमूर भर में आपके भतीजे के सिवाय और कोई जिक्र भी नहीं हो रहा। मुझे जल्द ही शादी के कागज़ तैयार करने पड़ेंगे। है न, ग्रांदे ?"

"क्या तुम सुबह-सुबह मेरे साथ यही ब······ब······बताने आये थे ?" ग्रांदे ने पूछा और नाक का मस्सा फिर कसमसाया। "बहुत अच्छा तुम मेरे पुराने मित्र हो। मैं तुम्हें साफ-साफ बताए देता हूँ। जो तुम ज······ज······जानना चाहते हो, तुम सुन रखो कि मैं अपनी ब······बे······टी को लवार में फेंक दूँगा; मगर उसके चचेरे भाई से नहीं व्याहूँगा। यह तुम सब को बता देना। लेकिन नहीं, लोगों को बकने दो।"

योज़ेन को अपनी आँखों के सामने हर एक चीज़ तैरती मालूम होने लगी। भावी प्रसन्नता की आशायें सहसा उसके मन में दृढ़ता से अपनी जड़ें जमा चुकी थीं। आशाओं के पौधे बढ़कर लहलहाने लगे थे। लेकिन देखते-देखते चमन उजड़कर रह गया और फूल धूल में मिल गये। कल से वह इस प्रसन्नता का ताना-बाना बुन रही थी जो दो आत्माओं को एक कर देती है। लेकिन अब ऐसा लगता था कि दुख इन बंधनों को और दृढ़ कर देगा। शायद यह तो स्त्री के भाग्य में लिख दिया गया है कि उस के मन पर धन और ऐश्वर्य से अधिक प्रभाव दुख की महानता का होता है।

आखिर पिता का हृदय पैतृक स्नेह की भावनाओं से रिक्त कैसे हो गया ? कम से कम जान तो यही पड़ता था। और फिर शारल का दोष ही क्या है ? उसके मस्तिष्क में रहस्यमय प्रश्नों का तांता बंधा था, लेकिन उनका कोई उत्तर न मिलता था। उसकी जवान मुहब्बत, जो खुद एक

रहस्य थी, अब अधिक रहस्यों में लिपटी जा रही थी।

जब वे घर की ओर लौटे तो उसका अंग-अंग कांप रहा था। जब वे उस पुरानी अंधेरी गली में पहुँचे, जिसमें से अभी थोड़ी देर पहले वह इतनी प्रसन्नचित्त गुज़र कर गई थी तो उसे वह बहुत ही उदास और भयानक जान पड़ी। जिस हवा में वह सांस ले रही थी उसमें उसे पतझड़ की सी उदासी अनुभव हो रही थी। गरज कि उसे इस वातावरण की प्रत्येक वस्तु विषादयुक्त जान पड़ती थी। मुहब्बत उसे अपने सारे पाठ पढ़ा रही थी।

जब वे घर के निकट पहुँचे तो वह अपने पिता से चंद कदम आगे बढ़ गई और दरवाज़ा खटखटाकर उसके खुलने का इंतज़ार करने लगी। लेकिन ग्रांदे ने देखा कि वकील के हाथ में अखबार है, जो अभी तक बंद ही था तो उसने पूछा—"सरकारी कर्जों का क्या हाल है ?"

"ग्रांदे, मैं जानता हूं कि तुम मेरी सलाह नहीं मानोगे।" क्रोशो ने उत्तर दिया, "तुम्हें तुरन्त हिस्से खरीद लेने चाहिये। दो साल में बीस प्रतिशत का लाभ प्राप्त करने का अवसर अभी तक है, और इसके अतिरिक्त रकम पर माकूल सूद भी मिलता है। अस्सी हज़ार फ्रांक पर पाँच हजार लीवर मिल जाना छोटी बात नहीं, तुम अस्सी फ्रांक पचास सेंट के हिसाब से खरीद सकते हो।"

"अच्छा देखेंगे।" ग्रांदे ने अपनी ठुड्डी रगड़ते हुए चिंतित भाव से उत्तर दिया।

"तोबा ! तोबा !" सरकारी वकील चिल्लाया। उसने अब तक अखबार खोल लिया था।

"अरे क्या हुआ ?" ग्रादे ने ज़ोर से पूछा।

"यह खबर पढ़ो।" क्रोशो ने अखबार उसे देते हुए कहा।

"पेरिस के एक प्रतिष्ठित व्यापारी मोसियो ग्रांदे ने परसों तीसरे पहर नियमपूर्वक ऐक्सचेंज से लौटने के उपरांत सिर में गोली मारकर आत्म-हत्या करली। इससे पहले वह अदालत के प्रधान को अपना इस्तीफा भेज

कर जज के पद का त्याग कर चुके थे। उनका कारोबार उनके दलाल और वकील अर्थात् मोसियो रोगें और सूशे का दीवाला निकल जाने के कारण बहुत बिगड़ गया था। मोसियो ग्रांदे की बड़ी इज़्जत थी और लोग उनका विश्वास करते थे। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि अगर वह चाहते तो उन्हें दूसरे व्यापारियों से सहायता मिल सकती थी और कठिन समय किसी न किसी तरह गुजर ही जाता। बड़े अफसोस की बात है कि ऐसे उच्च चरित्र का व्यक्ति इतनी जल्दी निराशा का शिकार हो जाय आदि-आदि।"

"मुझे पहले से मालूम था।" बुड्ढे ने कहा।

क्रोशो यद्यपि बड़े शान्त स्वभाव का व्यक्ति था; लेकिन ये शब्द सुनकर उसके शरीर में एक भयानक कँपकँपाहट दौड़ गई। शायद पेरिस के ग्रांदे ने सोमूर वाले ग्रांदे की लाखों की सम्पत्ति से जो उम्मीद लगाई थी, वह व्यर्थ ही थी। इस विचार से क्रोशो की शिराओं में खून जमने लगा।

"और उसका बेटा?" उसने तत्क्षण पूछा, "वह तो कल इतना खुश था।"

"उसके बेटे को अभी इस बारे में कुछ मालूम नहीं है।" ग्रांदे ने उत्तर दिया। उसकी भावनाओं में कोई अन्तर नहीं था।

"अच्छा, मोसियो ग्रांदे, अब मैं चलता हूँ।" क्रोशो ने कहा। वह अब सारी बात समझ गया था इसलिये अपने भतीजे मजिस्ट्रेट को शुभ समाचार सुनाने चल दिया।

ग्रांदे को नाश्ता तैयार मिला। मादाम ग्रांदे लकड़ी के तख्तों पर रखी हुई कुर्सी पर बैठ चुकी थी और सर्दियों के लिए ऊनी आस्तीन बुन रही थी। योज़ेन ने दौड़कर मां की गर्दन में बाहें डाल दीं। इस गुप्त विपत्ति ने उसे प्रेम का और भी भूखा बना दिया था।

"आपका नाश्ता मैं लाये देती हूँ।" नांनों ने तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरते हुए कहा, "वह तो मासूम बच्चों की भांति सो रहे हैं। आँखें बंद किये

हुये तो वह और भी सुन्दर मालूम होते हैं। मैंने भीतर जाकर उन्हें आवाज भी दी; लेकिन इससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। उन्होंने सुना ही नहीं।"

"उसे सोने दो।" ग्रांदे ने कहा, "उठेगा तो बुरी खबर ही सुननी पड़ेगी।"

"क्या हुआ ?" योज़ेन ने कहा, वह अपनी प्याली में चीनी की दो छोटी डलियाँ डाल रही थी, जो हवा की तरह हल्की थीं। उसके पिता महाशय को जब और कुछ काम न होता तो वह चीनी की डलियों को तराश-तराश कर छोटी किया करते थे।

मादाम ग्रांदे की हिम्मत न पड़ी थी कि वह खुद यह सवाल करती। उसने पति की ओर देखा।

"उसके पिता ने सिर में गोली मारकर आत्महत्या कर ली है।"

"मेरे चचा ने ?" योज़ेन ने कहा।

"आह, बेचारा !" मादाम ग्रांदे चीखी।

"आह, बेचारा लड़का !" ग्रांदे ने कहा, "अब उसके पास एक पाई भी नहीं है।"

"अरे, वह गरीब तो ऐसे सो रहा है जैसे सारी दुनिया का राजा हो"। नांनों ने हार्दिक संवेदना से कहा।

योज़ेन से खाया नहीं जा रहा था। उसका हृदय शोक से फटा जा रहा था। औरत को ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्रेमी के दुखों पर तरस आ रहा हो तो उसकी यही दशा होती है। वह फूट-फूट कर रोने लगी। "तुम तो अपने चचा को जानती तक नहीं। फिर इस रोने का क्या मतलब ?" उसके पिता ने उसे भूखे शेर की-सी दृष्टि से देखते हुये कहा, कुछ ऐसी ही दृष्टि से वह अपने सोने के ढेर को देखा करता था।

"लेकिन मोसियो, इस बेचारे नौजवान की हालत पर किसे अफसोस न होगा ?" नौकरानी ने कहा, "वह बिल्कुल बेसुध सो रहे हैं। उन्हें अपनी किस्मत की कुछ खबर ही नहीं।"

"नांनों, मैंने तुमसे बात नहीं की थी ! तुम चुप रहो ।"

उस समय योज़ेन को पता चला कि जो स्त्री प्रेम करती है उसे अपनी भावनाओं को छिपाना पड़ता है । वह चुप हो गई ।

"मादाम ग्रांदे, जब तक मैं लौट न आऊं, मुझे आशा है कि तुम इस विषय में उससे कुछ न कहोगी ।" बूढ़े टीनसाज़ ने बात जारी रखी, "मेरी चरागाहों में सड़क के साथ-साथ खाई खोदी जा रही है और मुझे उसे देखने जाना है । मैं दूसरी बार नाश्ता करने दोपहर को आऊंगा । फिर इस सिलसिले में अपने भतीजे से बात कर लूंगा । और, मादमुआज़ेल योज़ेन, अगर तुम इस छबीले की खातिर रो रही थीं, तो अब इसे खत्म करो । वह जल्द ही इंडीज़ की ओर रवाना हो जायगा और फिर तुम उसे कभी न देख सकोगी ।"

उसके पिता ने हैट के छज्जे पर पड़े हुए दस्ताने उठा लिये और अत्यन्त संतोष और सावधानी के साथ पहनने लगा । वह एक हाथ की अंगुलियां दूसरे हाथ में फंसा देता, जिससे हाथ दस्ताने में अच्छी तरह आ जाते थे । दस्ताने पहनकर वह बाहर निकल गया ।

"आह माँ, मुझे सांस लेना भी दूभर हो रहा है ।" योज़ेन माँ के साथ अकेली रह गई तो रोते हुए बोली, "मुझे इतना दुख आज तक नहीं हुआ ।"

मादाम ग्रांदे ने देखा कि बेटी का चेहरा पीला पड़ गया है । उसने उठकर खिड़की खोल दी ताकि ताज़ी हवा कमरे में दाखिल हो सके ।

"अब मैं कुछ ठीक हूं ।" योज़ेन ने थोड़ी देर बाद कहा ।

योज़ेन आमतौर पर अत्यन्त संयत और गम्भीर रहती थी, ऐसी लड़की को उद्विग्न और दुखी देखकर मादाम ग्रांदे का दिल पसीज गया । उसने अपनी बेटी की ओर देखा और मातृ-स्नेह और संवेदना ने सब कुछ स्पष्ट कर दिया । लेकिन सच तो यह है कि हंगरी की सुप्रसिद्ध जुड़वाँ बहनें भी जो प्रकृति की भूल के कारण बिलकुल जुड़ी हुई थीं, एक-दूसरी से इतनी हमदर्दी न रखती होंगी, जैसे उसकी मां और योज़ेन में थी ।

वे सदा साथ रहतीं, सारा-सारा दिन खिड़की में बैठतीं तो साथ, गिरज जातीं तो साथ, और जब सो भी जातीं तो तब भी क्या वे एक ही हव में सांस नहीं लेती थीं ?

"बेचारी बच्ची ।" मादाम ग्रांदे ने उसे अपनी ओर खींचते हुए कहा फिर उसका सिर अपनी छाती पर टिका लिया ।

उसकी बेटी ने अपना चेहरा ऊपर किया और मां की ओर ऐसे प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा जैसे उसके भीतरी विचार पढ़ने का प्रयास कर रही हो । "उन्हें इंडीज़ की ओर क्यों भेजा जा रहा है ?" लड़की ने कहा, "अगर वह मुसीबत में हैं तो क्या उन्हें हमारे साथ ही नहीं ठहरना चाहिए ? क्या वह हमारे सबसे निकटतम सम्बन्धी नहीं हैं ?"

"हां, मेरी प्यारी बच्ची, होना तो यही चाहिए । लेकिन तुम्हारे पापा जो कुछ करते हैं सोच समझकर ही करते हैं और हमें उनकी बात माननी चाहिए ।"

मां और बेटी चुप बैठी रहीं । एक तो लकड़ी के तख्तों पर रखी हुई कुर्सी पर बैठी थी और दूसरी अपनी छोटी-सी आराम कुर्सी पर । दोनों महिलाओं ने अपनी-अपनी सिलाई सम्भाल ली । योज़ेन को महसूस हुआ कि मेरी मां मेरा मतलब समझ गई है और इस स्नेह और संवेदना के लिये उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया । "प्यारी अम्मां, आप कितनी अच्छी हैं !" यह कहते हुए उसने अपनी माँ का हाथ पकड़कर चूम लिया, माँ का झुर्रियों भरा शांत चेहरा जो आघात सहन करते-करते बूढ़ा हो गया था, यह शब्द सुनकर चमक उठा । "क्या आप उन्हें पसन्द करती हैं ?" योज़ेन ने पूछा ।

उत्तर में मादाम ग्रांदे सिर्फ मुस्करा दी । फिर एक क्षण चुप रहने के बाद धीरे से बोली : "कहीं तुम्हें उससे प्रेम तो नहीं हो गया ? यह तो बड़े दुख की बात होगी ।"

"दुख क्यों होगा ?" योज़ेन ने पूछा, "आप उन्हें पसन्द करती हैं, नानों पसन्द करती है, फिर मैं भी उन्हें क्यों न पसन्द करूं ? आओ माँ

हम नाश्ता मेज़ पर लगा दें।"

उसने हाथ का काम पटक दिया और माँ ने भी उसका अनुसरण किया और बोली—"तू तो दीवानी है।" लेकिन बेटी के उन्माद में उसने हर प्रकार से सहायता दी, मानो उसे स्वीकृति प्रदान की।

योज़ेन ने नांनों को आवाज़ दी।

"बीबी, क्या आपकी इच्छा की सब वस्तुएं अभी मेज़ पर नहीं पहुंचीं ?"

"नांनों, बारह तक तो तुम मलाई ज़रूर तैयार कर लोगी न ?"

"बारह बजे तक, हाँ, जरूर।" नांनों ने उत्तर दिया।

"अच्छी बात है। देखो काफी बहुत तेज़ बनाना। मोसियो दे ग्रासीं कहा करते हैं कि पेरिस में लोग बहुत तेज़ काफी पीते हैं। काफी ज़रा ज़्यादः डालना।"

"मगर आयगी कहां से ?"

"तुम खरीद लाओ।"

"अगर मालिक मुझे मिल गये तो ?"

"वह तो नदी की ओर गये हैं।"

"तो फिर मैं जाती हूं। लेकिन जब मैं मोमबत्ती लेने गई थी तो मतियार मुझ से पूछ रहा था कि क्या तुम्हारे यहां बादशाह सलामत आने वाले हैं। इसका चर्चा शहर भर में हो जायगा।"

"तुम्हारे पापा के कान में इसकी भनक भी पड़ गई तो वह हम सब को पीट डालेंगे।" मादाम ग्रांदे ने कहा।

"अरे, पीटने दीजिये कोई बात नहीं। अगर वह मारेंगे तो हम मार भी सह लेंगे।"

मादाम ग्रांदे ने बेटी की बात सुनकर आँखें आकाश की ओर उठाई और मुंह से कुछ नहीं कहा। नांनों ने धूप की टोपी पहनी और बाहर निकल गई। योज़ेन ने एक साफ-सुथरा मेज़पोश बिछाया फिर अंगूर के कुछ गुच्छे लाने वह ऊपर गई, जो उसने योंही दिल बहलाने के लिए

अटारी में रस्सियों के सहारे टांग रखे थे। वह बहुत संभल-संभल कर चल रही थी। ताकि अपने चचेरे भाई के आराम में बाधक न हो। लेकिन एक क्षण के लिये दरवाज़े के पास ठहरे बिना न रह सकी, जहां से वह सांस की धीमी-धीमी आवाज़ सुन सकती थी।

"यह सो रहे हैं और मुसीबत जाग रही है।" योज़ेन ने अपने मन में सोचा। योज़ेन ने अंगूरों को कुछ बची-खुची सब्ज पत्तियों पर ऐसी सुरुचि से सजाया जैसे वह एक अनुभवी रसोइया हो और विजयोल्लास में भरकर मेज़ पर रख दिया। पिता ने नाशपातियां गिनकर निकाली थीं, उसने और बहुत सी नाशपातियां मिलाकर मीनार-सा बना दिया और उनके बीच पतझड़ की सारी पत्तियां चुन दीं। वह भीतर बाहर फुदकती फिर रही थी। उसका बस चलता तो घर की सारी चीज़ें चुराकर ला रखती। मगर उसका पिता हर चीज ताले में रखता था। और चाबियां उसकी ज़ेब में रहती थीं। नांनों दो ताज़े अंडे लिये हुये वापस आई। योज़ेन का जी चाहा कि उसे गले लगा ले।

"लालांद का किसान टोकरी में अंडे लिये जा रहा था। मैंने उससे मांगे तो मुझे प्रसन्न करने के लिये दो अंडे दे दिये। बड़ा अच्छा आदमी है।"

दो घंटे के सतत परिश्रम के उपरांत योज़ेन ने भोजन तैयार भी किया तो बड़ा सीधा-साधा। यह सच है कि इस पर बहुत कम खर्च हुआ था; लेकिन इस घर के सारे नियमों और रिवाजों का विरोध हुआ था। दोपहर के खाने पर रोटी, फल, मक्खन और शराब के गिलास सब चीज़ें मौजूद हों, ऐसा उनके यहाँ कभी न हुआ था। इस दो घंटे में योज़ेन ने बीसियों बार अपना काम छोड़कर कभी यह देखा कि काफी पक रही है कि नहीं है, कभी वह प्रयत्न करती कि अपने चचेरे भाई के कमरे से आती हुई कोई आवाज़ सुने, जिससे पता चले कि उसका भाई जाग गया है। कई बार वह आग के निकट रखी हुई मेज़ की ओर देखती, जिसके एक तरफ बाजुओं वाली कुर्सी उसने भाई के लिये लगा रखी थी। फिर

"भाई, आपको भूख लगी होगी ? आप बैठ जाइये ।" योज़ेन ने कहा ।

"नहीं, मैंने तो कभी बारह बजे से पहले नाश्ता नहीं किया । और उसी समय सोकर उठता हूँ । लेकिन सफर में खाने-पीने का ऐसा बुरा प्रबन्ध था कि मैं आपका कहना माने लेता हूँ । इसके अतिरिक्त······" उसने जेब से ऐसी सुन्दर घड़ी निकाली, जो कभी देखने ही में न आती थी, "वाह, अभी तो ग्यारह ही बजे हैं, मैं तो बड़े सवेरे जाग उठा ।"

"सवेरे ?" मादाम ग्रांदे ने पूछा ।

"जी हाँ । लेकिन मुझे अपनी चीज़ें भी तो ठीक करनी हैं । लाइये, कुछ खा ही लूं । बस कोई हल्की सी चीज़ हो—मुर्गी या तीतर ।"

"हे भगवान !" नांनों यह सुनकर आश्चर्य-चकित रह गई ।

"तीतर" योज़ेन ने सोचा । इस समय तीतर हासिल करने के लिये वह अपना सब कुछ दे डालने को तैयार थी ।

"आओ, यहां कुर्सी पर बैठो ।" मादाम ग्रांदे ने अपने भतीजे से कहा ।

यह बांका बाजुओं वाली कुर्सी पर ऐसी शिष्टता से बैठ गया, जैसे कोई सुन्दर रमणी सोफे पर टेक लगाकर बैठे । योज़ेन और उसकी माँ ने भी अपनी कुर्सियाँ आग के निकट खींच लीं और शारल के पास आ बैठीं ।

"क्या आप सदा यहीं रहती हैं ?" शारल ने पूछा । उसे रात को बत्ती के प्रकाश में कमरा इतना भयानक न लगा था जितना इस समय दिन के प्रकाश में मालूम हो रहा था ।

"हाँ, सदा ।" योज़ेन ने उत्तर दिया । वह बातचीत में उसे तके जा रही थी । "अंगूर की फसल के दिनों के अलावा यहीं रहते हैं । अलबत्ता उन दिनों हम नांनों को सहायता देने जाते हैं और नवाये के गिरजा में जाकर ठहरते हैं ।"

"क्या आप कभी सैर को नहीं जातीं ?"

"कभी इतवार को शाम की प्रार्थना के बाद अगर मौसम अच्छा हो तो हम पुल तक पैदल चले जाते हैं।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "या कई बार सूखी घास कटती देखने जाते हैं।"

"क्या यहाँ कोई थियेटर नहीं ?"

"खेल देखने जाना !" मादाम ग्रांदे ने विस्मय से कहा, "एक्टरों को देखना ! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह बहुत बड़ा पाप है।"

"यह लीजिये, मोसियो ! हम आपको छिल्के चढ़े चूज़े खिलायेंगे।" नाँनों ने अंडे लाते हुए कहा।

"ओहो, ताजे अंडे।" शारल बोला। वह ऐश के आदी लोगों की भांति तीतर की बात भूल चुका था।

"बहुत ही स्वादिष्ट हैं ? अच्छा यह बताओ तुम कुछ मक्खन ला सकती हो ?"

"मक्खन ? अगर आप मक्खन अकेले लेंगे तो थोड़ी देर बाद आपको केक न मिल सकेगा।" नाँनों ने कहा।

"अरे, क्यों नहीं ? नाँनों, जाओ मक्खन लाकर दो।" योज़ेन ने जोर से कहा।

वह अपने भाई को मक्खन और डबल रोटी काटते देखकर खुश हो रही थी। यह मानना पड़ेगा कि शारल का पालन-पोषण सभ्य और शिष्ट माँ की गोद में हुआ था और शेष शिक्षा-दीक्षा एक अत्यन्त चतुर और फैशनेबुल स्त्री से प्राप्त की थी, इसलिए वह बहुत ही संस्कृत था और उसका स्वच्छता-प्रेम किसी लड़की से कम न था। योज़ेन की मूक सम्वेदना में चुम्बक-शक्ति थी। शारल ने जब अपनी चचेरी बहन और चची को अपनी इतनी खातिर करते देखा तो वह उनके असीम स्नेह से प्रभावित हुए बिना न रह सका। वह खुशी से चहक उठा और उसने योज़ेन की ओर इस अन्दाज़ से देखा, जैसे मुस्कराहट बिखर गई हो। तनिक ध्यान से देखने पर उसे योज़ेन के पवित्र चेहरे के अंगों में शानदार अनुरूपता और स्वच्छ आंखों में प्रेम की झलक दिखाई दी। वह निरीह भाव से उसकी

ओर आकर्षित थी और उसके प्रेम और आकर्षण में किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं था।

"मेरी प्रिय बहन, मैं सच कह रहा हूँ।" वह बोला, "अगर आप शाम की पोशाक पहने किसी थियेटर में बैठी होतीं तो चची का भयानक पाप वाला वाक्य अवश्य सत्य सिद्ध हो जाता। सारे मर्द आप पर ईर्ष्या करते और स्त्रियां स्पर्धा और द्वेष से जल-भुन कर रह जातीं।"

अपनी यह प्रशंसा सुनकर योज़ेन के हृदय की धड़कन एक क्षण के लिए रुक गई और फिर वह खुशी के मारे ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा यद्यपि उसका मस्तिष्क इन शब्दों का कुछ भी अर्थ ग्रहण नहीं कर पाया था।

"आप तो अपनी देहाती बहन का मज़ाक उड़ा रहे हैं।" वह बोली।

"बहन, अगर आप मुझ से भली-भांति परिचित होतीं तो आपको मालूम हो जाता कि मुझे परिहास से घृणा है क्योंकि इससे हृदय कठोर हो जाता है और भावनायें मर जाती हैं......" और यह कहते हुए वह बड़े इत्मीनान से मक्खन का एक टुकड़ा निगल गया। "नहीं" वह फिर बोला, "मैं कभी दूसरों का मज़ाक नहीं उड़ाता। इसका कारण शायद यह हो कि मुझ में इसकी समझ ही नहीं है और इस दोष के कारण मुझे काफी नुकसान होता है। पेरिस के लोग एक बड़ा विषैला वाक्य कहते हैं अर्थात् 'फलां व्यक्ति बड़े अच्छे स्वभाव का है' जिसका अर्थ यह होता है कि 'बेचारा नौजवान बिलकुल घामड़ है।' लेकिन सब जानते हैं कि मैं एक अमीर आदमी हूँ और हर तरह के पिस्तौल से तीस कदम के फासले से भी ठीक निशाना लगा सकता हूँ। इसलिए ऐसे वाक्य मुझ पर नहीं कसे जा सकते।"

"बेटा, तुम जो कुछ कहते हो, उससे पता चलता है कि तुम बड़े नेक-दिल हो।" मादाम ग्रांदे बोली।

"आपकी अंगूठी बड़ी सुन्दर है।" योज़ेन ने कहा, "अगर कुछ हर्ज न हो तो क्या मैं इसे देख सकती हूँ।"

शारल ने अंगूठी निकाल कर आगे बढ़ा दी। जब उसके प्याजी नाखूनों ने योज़ेन की अंगुलियों को स्पर्श किया तो उसका चेहरा आरक्त हो गया।

"माँ, देखिये कितना बढ़िया काम है।"

"अरे, इसमें कितना सोना लगा है !" नाँनों काफी अन्दर लाते हुए बोली।

"वह क्या है ?" शारल ने हँसकर एक अंडाकार हांडी की ओर संकेत किया। यह हँडिया चमकदार भूरे रंग की थी और इसके बाहर की ओर राख से एक गोल किनारी-सी बन गई थी। हंडिया में कलई जैसे रंग का पानी उबल रहा था, जिसमें काफी उभरती और गिरती हुई दिखाई दे रही थी।

"गर्मागर्म काफी है।" नाँनों ने उत्तर दिया।

"ओह, मेरी प्यारी चची ! मुझे अपने यहाँ रहने की कोई उपयोगी स्मृति तो छोड़ जानी चाहिए। आप लोग समय से बहुत पीछे हैं। मैं आपको अच्छी काफी बनाने का ढंग बताता हूँ।" इसके बाद उसने बड़े प्रयत्न से वह सिद्धान्त समझाने शुरू किये जिनके अनुसार काफी तैयार की जाती है।

"हे भगवान् ! अगर काफी बनाने में यह सब कुछ करना पड़ता है तो सारा वक्त इसी में लग जाता होगा।" नाँनों ने कहा, "मैं जानती हूँ, मैं तो कभी ऐसे काफी नहीं बना सकूंगी। अगर मैं काफी ही की चिंता में पड़ी रही तो फिर हमारी गाय के लिए घास कौन काटेगा ?"

"यह काम मैं कर लिया करूंगी।" योज़ेन बोली।

"मेरी बच्ची !" मादाम ग्रांदे ने बेटी की ओर देखते हुए कहा।

इसके साथ ही उन्हें उस आघात का खयाल आया जो इस अभागे नौजवान को शोकग्रस्त कर देगा। तीनों औरतें चुप हो गईं और हमदर्दी से उसकी ओर देखने लगीं। इसने उसे चौंका दिया।

"क्या हुआ, बहन ?" उसने योज़ेन से पूछा।

"हश" मादाम ग्रांदे ने देखा कि लड़की बोल पड़ेगी तो जल्दी से कहा, "तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे पापा इन साहब से·······"

"शारल कहिये न !" नौजवान ग्रांदे ने कहा।

"अरे, आपका नाम शारल है।" योज़ेन बोली, "यह तो बड़ा अच्छा नाम है।"

अशकुन पूरे होकर रहते हैं। मादाम ग्रांदे, योज़ेन और नाँनों, टीन-साज़ की वापसी के विचार ही से काँप रही थीं कि ठीक इस समय उन्हें दरवाज़े पर जानी-बूझी दस्तक सुनाई दी।

"पापा आ गए !" योज़ेन चिल्लाई।

उसने तत्क्षण चीनी की तश्तरी उठा ली। फिर भी मेज़ पर दो एक टुकड़े गिर ही गये। नाँनों ने जल्दी से अंडों के प्याले हटा लिये। मादाम ग्रांदे डरी हुई हिरनी के सदृश चौंक पड़ी। कमरे में एकदम आतंक छा गया। शारल की समझ में कुछ न आया, वह आश्चर्य-चकित देखता रह गया।

"क्यों, क्या हुआ ?"

"मेरे पिता आ रहे हैं।" योज़ेन ने उसे बताया।

"फिर क्या हुआ ?" उसने पूछा।

मोसियो ग्रांदे ने कमरे में प्रवेश किया, एक तीक्ष्ण दृष्टि मेज़ पर डाली, फिर शारल की ओर देखा और सब कुछ समझ गया।

"आह, भतीजे की दावत हो रही है। क्या कहने, खूब, बहुत खूब !" उसने बिना हकलाये कहा, "जब बिल्ली बाहर गई हो तो चूहे खेला ही करते हैं।"

"दावत ?···" शारल ने सोचा। वह इस घर के भोजन और नियम का कुछ अन्दाज़ा न कर सका।

"नाँनों, मुझे मेरा गिलास ला दो।" टीनसाज़ ने कहा।

योज़ेन गिलास लेने चली गई। ग्रांदे ने अपनी जेब से बंद हो जाने वाला एक बड़ा-सा चाकू निकाला, डबल रोटी का एक टुकड़ा काटा, धीरे-

धीरे थोड़ा-सा मक्खन लगाया और खड़े-खड़े खाने लगा। उसी समय शारल ने अपनी काफी में चीनी डाली। इससे ग्रांदे का ध्यान मेज़ पर पड़े हुए चीनी के टुकड़ों की ओर आकर्षित हुआ। उसने अपनी पत्नी की ओर घूरकर देखा, जिससे उसका रंग पीला पड़ गया और उसका सिर पीछे कुर्सी की पुश्त पर जा गिरा। ग्रांदे ने झुककर उसके कान में कहा :

"यह सब चीनी कहाँ से आई ?"

"नाँनों फेसार की दुकान से ले आई थी क्योंकि घर में तो बिलकुल खत्म हो गई थी।"

इस मूक नाटक से इन तीनों स्त्रियों को जो मानसिक पीड़ा हुई, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं। नाँनों अपनी रसोई से निकलकर भोजन के कमरे में देख रही थी कि वहाँ क्या हो रहा है। इसी समय शारल ने अपनी काफी को चखा जो उसे कडुवी लगी और वह मेज़ पर चीनी की एक और डली ढूंढ़ने लगा। लेकिन ग्रांदे ने डली पहले ही झपट ली थी।

"बेटे, तुम्हें क्या चाहिए ?" बूढ़े ने पूछा।

"चीनी।"

"अगर तुम्हारी काफी बहुत तेज़ है तो थोड़ा-सा दूध और डाल लो।" घर के स्वामी ने उत्तर दिया।

जो तश्तरी ग्रांदे ने अपने कब्जे में कर ली थी, वह योज़ेन ने उठाकर मेज़ पर रख दी और चुपचाप अपने पिता की ओर देखती रही। निश्चय ही पेरिस की कोई सुन्दर लड़की अपने प्रेमी को रेशम की सीढ़ी द्वारा भाग जाने में सहायता करते समय अपनी कमज़ोर बाहों की शक्ति खर्च करके भी इतने साहस का प्रदर्शन नहीं करती, जितना इस समय योज़ेन ने मेज़ पर चीनी का प्याला रखने में दिखाया। पेरिस की रमणी को तो इस पर पुरस्कार मिल जायगा। वह बड़े गर्व से अपनी गोल और सफेद बाहों पर रस्सी के निशान दिखायेगी और उसका प्रेमी उन्हें आँसुओं से धो डालेगा, प्यार से चूमेगा और इस प्रकार कष्ट सुख में बदल जायेगा।

लेकिन शारल को तो अपनी चचेरी बहन के इस त्याग का खयाल तक न आया और न वह उस असह्य वेदना को समझ सका, जो पिता की बर्बर दृष्टि देखकर उसके हृदय में उत्पन्न हुई और वह ऐसे खड़ी रह गई, जैसे उस पर बिजली गिरी हो।

"बीबी, तुम कुछ खा नहीं रही हो ?"

वह बेचारी मेज़ की ओर बढ़ी। भय से कांपते हुए हाथों से उसने डबल रोटी का एक टुकड़ा काटा और एक नाशपाती ले ली। योज़ेन ने धृष्टता धारण कर ली थी। उसने पिता के आगे अंगूरों की प्लेट सरका दी और कहा :

"पापा, ज़रा मेरे अंगूर खाकर देखिये ! क्यों भाई, आप भी थोड़े से लेंगे न ? मैं ये मीठे-मीठे अंगूर विशेष रूप से आपके लिए उतार कर लाई हूँ ?"

"बेटे, अगर इनका वश चले तो यह तुम्हारी खातिर में सोमूर भर को उलट-पलट कर रख दें। तुम नाश्ता खत्म कर लो फिर हम ज़रा इकट्ठे बाग में चलेंगे। मुझे तुम से कुछ ऐसी बातें करनी हैं, जिनमें मिठास तनिक कम होगी।"

योज़ेन और उसकी माँ दोनों ने शारल की ओर ऐसी दृष्टि से देखा जिसका अर्थ वह सहज में समझ गया।

"आप क्या कहना चाहते हैं, चचाजान ? जब से मेरी माता का देहान्त हुआ है....." यह कहते हुए उसका स्वर कोमल हो गया, "मेरे लिए कोई आपत्ति शेष नहीं रह गई।"

"बेटे, कौन जान सकता है कि हमारी परीक्षा लेने के लिए ईश्वर हम पर कैसी आपत्ति डालेगा।" उसकी चची बोली।

"तत, तत, तत !" ग्रांदे बड़बड़ाया, "फिर तुमने मूर्खता शुरू की ! बेटे मुझे आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे हाथ इस कदर सफेद हैं।"

उसने अपनी मुट्ठियां बन्द करके दिखाईं, जो सुअर के कंधों की तरह मज़बूत थीं।

"ऐसे हाथों से रुपया जमा होता है। तुम हो कि पैर में ऐसे चमड़े का जूता पहनते हो, जिसे हम अपने तमस्सुक रखने की थैली के लिए इस्तेमाल करते हैं। तुम्हारा पालन-पोषण इस ढंग से हुआ है यह बुरी बात है! बहुत बुरी बात है!"

"प्यारे चचा, आप क्या कह रहे हैं? कसम ले लीजिये जो आपका एक शब्द भी मेरे पल्ले पड़ा हो।"

"मेरे साथ आओ।" ग्राँदे ने कहा।

कंजूस ने खट से अपना चाकू बन्द किया। बाकी शराब गले में उँडेली और दरवाज़ा खोला। "भाई, जरा साहस से काम लीजियेगा।"

लड़की की आवाज़ में कोई ऐसी बात थी, जिससे शारल के शरीर में एक सर्द-सी लहर दौड़ गई।

वह नाना प्रकार की शंकायें मन में लिये अपने इस निर्दय चचा के पीछे चल दिया। योज़ेन, उसकी माँ और नाँनों रसोई में चली गई। सीले छोटे बाग में जो नाटक खेला जाने वाला था उसके दोनों अभिनेताओं को देखने के लिये वे बड़ी अधीर थीं। चचा भतीजे को साथ लिये चुपचाप चल रहा था।

शारल को पिता की मृत्यु का शोक समाचार सुनाने में ग्राँदे को कुछ भी दुःख नहीं हो रहा था; लेकिन यह सोचकर कि उसके पास एक पाई भी नहीं रही, उसके प्रति एक प्रकार की दया का अनुभव हो रहा था। और वह कुछ ऐसे शब्द खोज रहा था, जिनसे इस घातक समाचार का प्रभाव कुछ कम हो जाये। "तुम्हारे सिर से पिता का साया उठ गया" यह वह सहज में बता सकता था क्योंकि पिता साधारणतः बच्चों से पहले मरते हैं। लेकिन "तुम्हारे पास फूटी कौड़ी नहीं रही।" इसमें तो दुनिया भर के गम सिमट आते हैं। इसलिये बाग के बीच में बनी हुई रबिश का उसने तीसरा चक्कर लगाया और मुंह से एक शब्द न निकला। बस उसके भारी भरकम जूते बजरी को कुचलते रहे।

जीवन के प्रत्येक संकट में चाहे उसका कारण बड़ी खुशी हो या

लेकिन शारल को तो अपनी चचेरी बहन के इस त्याग का खयाल तक न आया और न वह उस असह्य वेदना को समझ सका, जो पिता की बर्बर दृष्टि देखकर उसके हृदय में उत्पन्न हुई और वह ऐसे खड़ी रह गई, जैसे उस पर बिजली गिरी हो।

"बीबी, तुम कुछ खा नहीं रही हो ?"

वह बेचारी मेज़ की ओर बढ़ी। भय से कांपते हुए हाथों से उसने डबल रोटी का एक टुकड़ा काटा और एक नाशपाती ले ली। योज़ेन ने धृष्टता धारण कर ली थी। उसने पिता के आगे अंगूरों की प्लेट सरका दी और कहा :

"पापा, ज़रा मेरे अंगूर खाकर देखिये ! क्यों भाई, आप भी थोड़े से लेंगे न ? मैं ये मीठे-मीठे अंगूर विशेष रूप से आपके लिए उतार कर लाई हूँ ?"

"बेटे, अगर इनका वश चले तो यह तुम्हारी खातिर में सोमूर भर को उलट-पलट कर रख दें। तुम नाश्ता खत्म कर लो फिर हम ज़रा इकट्ठे बाग में चलेंगे। मुझे तुम से कुछ ऐसी बातें करनी हैं, जिनमें मिठास तनिक कम होगी।"

योज़ेन और उसकी माँ दोनों ने शारल की ओर ऐसी दृष्टि से देखा जिसका अर्थ वह सहज में समझ गया।

"आप क्या कहना चाहते हैं, चचाजान ? जब से मेरी माता का देहान्त हुआ है...." यह कहते हुए उसका स्वर कोमल हो गया, "मेरे लिए कोई आपत्ति शेष नहीं रह गई।"

"बेटे, कौन जान सकता है कि हमारी परीक्षा लेने के लिए ईश्वर हम पर कैसी आपत्ति डालेगा।" उसकी चची बोली।

"तत, तत, तत !" ग्रांदे बड़बड़ाया, "फिर तुमने मूर्खता शुरू की ! बेटे मुझे आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे हाथ इस कदर सफेद हैं।"

उसने अपनी मुट्ठियां बन्द करके दिखाईं, जो सुअर के कंधों की तरह मज़बूत थीं।

"ऐसे हाथों से रुपया जमा होता है। तुम हो कि पैर में ऐसे चमड़े का जूता पहनते हो, जिसे हम अपने तमस्सुक रखने की थैली के लिए इस्तेमाल करते हैं। तुम्हारा पालन-पोषण इस ढंग से हुआ है यह बुरी बात है! बहुत बुरी बात है!"

"प्यारे चचा, आप क्या कह रहे हैं? कसम ले लीजिये जो आपका एक शब्द भी मेरे पल्ले पड़ा हो।"

"मेरे साथ आओ।" ग्राँदे ने कहा।

कंजूस ने खट से अपना चाकू बन्द किया। बाकी शराब गले में उँडेली और दरवाज़ा खोला। "भाई, जरा साहस से काम लीजियेगा।"

लड़की की आवाज़ में कोई ऐसी बात थी, जिससे शारल के शरीर में एक सर्द-सी लहर दौड़ गई।

वह नाना प्रकार की शंकायें मन में लिये अपने इस निर्दय चचा के पीछे चल दिया। योज़ेन, उसकी माँ और नाँनों रसोई में चली गईं। सीले छोटे बाग में जो नाटक खेला जाने वाला था उसके दोनों अभिनेताओं को देखने के लिये वे बड़ी अधीर थीं। चचा भतीजे को साथ लिये चुपचाप चल रहा था।

शारल को पिता की मृत्यु का शोक समाचार सुनाने में ग्राँदे को कुछ भी दुःख नहीं हो रहा था; लेकिन यह सोचकर कि उसके पास एक पाई भी नहीं रही, उसके प्रति एक प्रकार की दया का अनुभव हो रहा था। और वह कुछ ऐसे शब्द खोज रहा था, जिनसे इस घातक समाचार का प्रभाव कुछ कम हो जाये। "तुम्हारे सिर से पिता का साया उठ गया" यह वह सहज में बता सकता था क्योंकि पिता साधारणतः बच्चों से पहले मरते हैं। लेकिन "तुम्हारे पास फूटी कौड़ी नहीं रही।" इसमें तो दुनिया भर के गम सिमट आते हैं। इसलिये बाग के बीच में बनी हुई रविश का उसने तीसरा चक्कर लगाया और मुंह से एक शब्द न निकला। बस उसके भारी भरकम जूते बजरी को कुचलते रहे।

जीवन के प्रत्येक संकट में चाहे उसका कारण बड़ी खुशी हो या

बड़ा गम, इर्द-गिर्द की वस्तुओं के प्रति हमारी इन्द्रियां अतिरिक्त जागरूक हो जाती हैं, और वे हमारे मस्तिष्क पर सदा के लिये अंकित हो जाती हैं और आगे के लिये हमारे अनुभव का अविच्छेद्य अंग बन जाती हैं। शारल की भी प्रत्येक इन्द्रिय जागरूक हो चुकी थी। उसने बाग के किनारे-किनारे उगे हुये सदा-बहार वृक्षों की बाढ़ का, पतझड़ की गिरती हुई पत्तियों का, टूटी दीवारों का, फलों के पेड़ों की मुड़ी-तुड़ी शाखाओं का अत्यन्त ध्यान से निरीक्षण किया। और फिर आजीवन यह दृश्य उसके मस्तिष्क से मिट न सका। उसे अपनी जवानी की यह दुखप्रद घटना जब कभी स्मरण हो आती, तो बाग की तुच्छ से तुच्छ वस्तु उसकी दृष्टि में फिरने लगती।

"मौसम बड़ा अच्छा है। सर्दी अधिक नहीं।" ग्रांदे ने गहरी साँस लेते हुये कहा।

"जी हाँ, चचाजान! लेकिन आप मुझे क्यों ···?"

"हाँ, मेरे बेटे, मैं तुम्हें एक बुरी खबर सुनाने वाला हूँ। तुम्हारे पापा बहुत बीमार···"

"और मैं यहाँ इत्मीनान से बैठा हूँ।" वह चीखा, "नाँनों!"

उसने पुकारा, "एक गाड़ी मंगवाओ! मेरे ख्याल में इस जगह किसी न किसी किस्म की गाड़ी तो मिल जाती होगी।" उसने अपने चचा की ओर मुड़ते हुये कहा, जो अभी तक उसी स्थान पर खड़ा था।

"घोड़े और गाड़ियाँ अब व्यर्थ हैं।" ग्रांदे ने शारल की ओर देखते हुये कहा, जो चुपचाप सामने धरती को ताकने लगा। "हाँ, मेरे बेटे, तुम समझ ही गये होगे कि क्या बात है। वह इस दुनिया से उठ चुके हैं। लेकिन यह तो कुछ नहीं। इससे भी बुरी बात यह है कि उन्होंने अपने सिर में गोली मारकर आत्म-हत्या कर ली····"

"मेरे पिता ने?"

"हाँ, लेकिन यह भी कोई ऐसी बात नहीं। अखबारों में भी इसकी

चर्चा हो रही है, जैसे यह उनका अपना ही कोई मामला हो। लो, तुम खुद पढ़ लो।"

ग्रांदे ने क्रोशो से अखबार माँग लिया था। और अब उसने वह अशुभ समाचार शारल को दिखाया। शारल अभी लड़का ही तो था। उसने अपनी भावनाओं को छिपाने का तनिक भी प्रयत्न नहीं किया और फूट-फूटकर रोने लगा।

"चलो, यह अच्छा हुआ।" ग्रांदे ने मन में सोचा, "शुरू में तो इसकी नज़रें देखकर मैं डर ही गया था। खैर, अब यह रो रहा है। अब यह ठीक हो जायेगा। घबराओ नहीं, मेरे बच्चे।" उसने उच्च स्वर में कहना शुरू किया, उसे यह पता नहीं था कि शारल सुन भी रहा है या नहीं। "कोई ऐसी बात नहीं है। तुम जल्द ही सम्भल जाओगे लेकिन...."

"नहीं, मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। आह पापा, मेरे पापा।"

"उन्होंने तो तुम्हें बरबाद कर दिया। अब तुम्हारे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।"

"इसकी मुझे परवाह नहीं। लेकिन मेरे पापा कहाँ हैं ? मेरे पापा ?" उसकी सिसकियों की आवाज़ सारे बाग में फैल गई और दीवारों से टकरा-टकराकर गूंजने लगी।

हँसी के सदृश आँसू भी ऐसा रोग है, जो उड़कर लगता है। तीनों स्त्रियाँ उसकी दशा देख रो दीं। शारल ने और कुछ सुनने का इन्तजार न किया। तुरन्त अपने चचा को छोड़कर चल दिया। आँगन में पहुँच-कर सीधा जीने की ओर चला। अपने कमरे में घुसकर वह बिस्तर में मुंह छिपाकर लेट गया ताकि सम्बन्धियों से दूर जी भरकर अपने दुख में आँसू बहाये। "जब तक उसका गम जरा हल्का न पड़ जाये, उसे अकेला ही रहने दो।" ग्रांदे ने बैठक में लौटकर कहा। योजेन और उसकी माँ पहले ही अपने निश्चित स्थानों पर वापस आ चुकी थीं और उन्होंने आँखें पोंछकर अपनी सर्द काँपती अंगुलियों से सिलाई शुरू कर

दी थी। "लेकिन यह लड़का किसी काम का नहीं।" ग्रांदे बोलता गया, "वह मरे हुओं की चिन्ता में ऐसा पड़ा है कि उसे पैसे का ख्याल तक नहीं।"

योज़ेन इस पवित्र शोक का यों जिक्र होते सुनकर कांप उठीं। उसी क्षण से उसने मन ही मन में पिता की आलोचना शुरू कर दी। शारल की सिसकियाँ यद्यपि भिंची-भिंची-सी थीं, फिर भी घर भर में गूंज रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे सिसकियाँ कहीं धरती के नीचे से आ रही हों। ये हृदय-विदारक आहें दिन ढलने पर तनिक मध्यम पड़ीं और कहीं उस समय जाकर खत्म हुईं, जब रात हो चुकी थी।

"बेचारा लड़का !" मादाम ग्रांदे ने कहा।

यह शब्द घातक सिद्ध हुये। ग्रांदे ने पहले पत्नी को, फिर योज़ेन को देखा और उसके बाद चीनी से भरे हुये प्याले पर नज़र डाली। उसे वह असाधारण भोजन स्मरण हो आया, जो आज सुबह उन्होंने अपने अभागे सम्बन्धी के लिये तैयार किया था। वह कमरे के दरम्यान डट-कर खड़ा हो गया।

"हाँ, एक बात याद आई।" वह स्वभावानुसार निष्ठुरता से सोच-सोचकर कहने लगा, "मुझे उम्मीद है, मादाम ग्रांदे कि आगे के लिये तुम ऐसी फिजूल खर्ची कभी न करोगी। मैं अपना पैसा तुम्हें इसलिये नहीं देता कि उसे लुच्चे-लफंगों पर नष्ट करती रहो।"

"माँ को तो इसमें कोई दखल नहीं था।" योज़ेन बोली, "वह तो मैंने····"

"अब तुम सयानी हो गई हो।" ग्रांदे ने बेटी की बात काटकर कहा, "इसलिये तुम समझती हो कि मेरा विरोध कर सकती हो। यही बात है न ? योज़ेन भली-भाँति समझ लो कि तुम क्या कर रही हो ?"

"लेकिन पापा, आखिर वह आपके भाई के बेटे हैं। उन्हें इस घर में चीनी भी न मिले ?"

"तत, तत, तत !" ग्रांदे ने विचित्र स्वर में उन शब्दों का

उच्चारण किया, "हर जगह 'अपने भतीजे' 'भाई के बेटे' ही की बात सुन रहा हूँ। शारल हमारा कुछ नहीं लगता। उसके पास एक फूटी कौड़ी नहीं है। उसका बाप दिवालिया है। जब यह लड़का रोने-धोने से निबट लेगा तो यहाँ से दफा हो जायेगा। मैं उसके कारण अपने घर को बिगड़ने नहीं दूंगा।"

"पापा, दिवालिया क्या होता है?" योज़ेन ने पूछा।

उसके पिता ने उत्तर दिया, "दिवालिया एक ऐसा घृणित काम करता है, जिससे सदा के लिये बदनाम हो जाता है और कहीं मुंह दिखाने के योग्य नहीं रहता।"

"यह तो कोई बहुत बड़ा पाप होता होगा" मादाम ग्रांदे ने कहा, "आपके भाई की आत्मा को शायद कभी शांति प्राप्त न होगी।"

"अपना यह निरर्थक उपदेश रहने दो।" उसके पति ने कंधे सिकोड़ते हुये कहा और फिर योज़ेन की ओर पलटकर बोला, "योज़ेन, दिवालिया ऐसा क्रूर होता है, जिसे दुर्भाग्य से कानून अपनी रक्षा में ले लेता है। लोग ग्यूम ग्रांदे का विश्वास करते थे और अपना माल उसके हवाले कर देते थे क्योंकि वह ईमानदारी और साफ सुथरे लेन-देन के लिये मशहूर था। उसने उन लोगों से सब कुछ छीन लिया और उनके पास कुछ भी नहीं छोड़ा। बस एक आँखें रह गई हैं कि बैठे अपने नुकसान पर रोया करें। दिवालिया तो डाकू से भी बदतर होता है क्योंकि जब डाकू तुम पर हमला करता है तो तुम्हें अपनी रक्षा का अवसर भी मिलता है। इसके अलावा वह अपनी जान खतरे में डालकर यह काम करता है लेकिन दिवालिया तो····वास्तव में शारल के लिये यह बड़ी शर्म की बात है।"

ये शब्द योज़ेन के हृदय पर घन-प्रहारों से पड़े और उसकी आत्मा बिलबिला उठी। वह इतनी नेक और ईमानदार थी कि जंगल के किसी कोने में उगने वाला फूल भी दाग-धब्बों से ऐसा स्वच्छ और निर्मल नहीं होता होगा। सांसारिक बातों से वह सर्वथा अपरिचित थी और न उसे

शाब्दिक हेर-फेर और आडम्बर का ही कोई ज्ञान था। इसलिये दिवालिये की जो उलटी-सीधी और निर्दयतापूर्ण परिभाषा पिता ने की योज़ेन ने उस पर विश्वास कर लिया। उसके पिता ने जान-बूझकर बेईमानी से दीवाला निकालने और अनिवार्य परिस्थिति में दीवाला निकल जाने में कोई अन्तर नहीं बताया था फिर भला योज़ेन कैसे समझ सकती थी। "लेकिन पापा, [illegible] थे?"

"मेरे भाई ने मुझ से सलाह ही नहीं ली। इसके अलावा वह कोई चालीस लाख का कर्ज़दार है।"

"पापा, दस लाख कितना होता है?" योज़ेन ने उस बालक की सरलता से पूछा, जो अपनी इच्छा तुरन्त पूरी होती देखना चाहता हो।

"दस लाख?" ग्रांदे ने प्रश्न दोहराया, "दस लाख फ्रांक को तुम यों समझो कि पाँच-पाँच हजार फ्रांक के कई सिक्के होंगे। हर फ्रांक में बीस सौ होते हैं अतः बीस-बीस सै के फ्रांक का एक लाख मिलता है।"

"उफ, उफ!" योजेन चीखी, "मेरे चचा के पास चालीस फ्रांक आये कहाँ से? क्या फ्रांस में वाकई कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसके पास इतने लाख फ्रांक हों?"

ग्रांदे अपनी बेटी की ठुड्डी को थपथपाते हुये मुस्करा दिया। अब उसका मस्सा और भी बड़ा मालूम हो रहा था।

"अब शारल भाई का क्या होगा?"

"वह ईस्ट इंडीज को चला जायेगा और वहाँ धन कमाने का प्रयत्न करेगा। उसके पिता की यही इच्छा थी।"

"लेकिन उसके पास वहाँ जाने के लिये पैसे हैं?"

"उसके रास्ते का किराया मैं अदा कर दूंगा····हाँ····नाँत तक का किराया।"

योज़ेन उछल पड़ी और अपने पिता की गर्दन में बाँहें डाल दीं।

"पापा, आप बड़े अच्छे हैं।"

योज़ेन का इतने उत्साह से लिपटना ग्रांदे को कुछ बुरा लगा शायद

इसलिये कि उसकी आत्मा संतुष्ट नहीं थी ।

"क्या दस लाख कमाने में बहुत समय लगता है?" योज़ेन ने पूछा ।

"हाँ, और क्या?" टीनसाज़ ने कहा, "तुम यह तो जानती हो कि नैपोलियन कितना होता है, दस लाख फ्रांक बनाने के लिये पचास हज़ार नैपोलियन चाहिये ।"

"माँ, हम उनके लिये गिरजा में प्रार्थना करायेंगे ।"

"मैं भी यही सोच रही थी ।" उसकी माँ ने उत्तर दिया ।

"बस तुम्हारी यही आदत है । हमेशा पैसे खर्च करने की धुन रहती है । कोई समझेगा कि हमारे पास न जाने कितना पैसा है कि यों फेंकते फिरते हैं ।"

वह यह कह ही रहा था कि अटारी की ओर से सुबकी लेने की अत्यन्त आर्द्र और रुंधी हुई ध्वनि सुनाई दी, जो पहली सिसकियों से कहीं अधिक चिन्ताजनक मालूम हो रही थी ! योज़ेन और उसकी मा कांप गईं ।

"नांनों !" ग्रांदे ने आवाज़ दी, "ऊपर जाकर देखो कहीं वह अपनी हत्या तो नहीं कर रहा है ।"

"अच्छा, अब तुम दोनों सुनो ।" उसने अपनी बेटी और पत्नी की ओर पलटते हुए बात जारी रखी । उसकी आवाज़ सुनकर इन दोनों के गाल भय के मारे सफेद पड़ गये थे । "खयाल रहे, मैं किसी प्रकार की बेहूदगी नहीं देखना चाहता ! मैं बाहर जा रहा हूँ । मुझे हालैंड के लोगों से मिलना है, जो आज वापस जा रहे हैं । फिर मैं क्रोशो के पास जाऊँगा और इस विषय पर उससे बातचीत करूँगा ।"

वह बाहर चला गया । जैसे ही वह दरवाज़े से निकला योज़ेन और उसकी माँ ने सुख की सांस ली । लड़की को आज से पहले अपने पिता की उपस्थिति में ऐसे तनाव का अनुभव न हुआ था लेकिन इन चंद घंटों ने उसके विचारों और भावनाओं में बहुत-से परिवर्तन कर दिये थे ।

"माँ, शराब का बड़ा कनस्तर कितने में आता है ?"

"तुम्हारे पापा का कनस्तर तो सौ या डेढ़ सौ फ्रांक में बिकता है और कई बार मैं समझती हूँ दो सौ फ्रांक भी मिल जाते हैं क्योंकि मैंने उन्हें यही कहते सुना है।"

"और क्या अंगूर की फसल के अवसर पर चार सौ कनस्तर न बन जाते होंगे ?"

"बेटी, कसम है। मुझे तो कुछ मालूम नहीं कितने बनते होंगे। तुम्हारे पापा अपने कारोबार के बारे में मुझसे कभी बात नहीं करते।"

"खैर, कुछ भी हो, पापा अमीर तो अवश्य होंगे ?"

"हो सकता है। लेकिन मोसियो क्रोशो ने मुझे बताया था कि तुम्हारे पापा ने दो साल हुए जो फरवाफोन वाली भूमि खरीदी है। उसका उन पर बहुत बोझ पड़ेगा।"

योज़ेन को अपने पिता की दौलत का सही अन्दाजा न हो सका तो उसने हिसाब-किताब छोड़ दिया।

"उन बेचारों ने मेरी ओर देखा तक नहीं।" नांनों ने वापस आते हुए कहा, "वह अपने बिस्तर पर बिलकुल निरीह बालक की भांति लेटे हुए हैं और बस पड़े रोये चले जा रहे हैं। आपने कभी किसी को ऐसे रोते न देखा होगा। आह, बेचारे, न जाने क्या हो गया है उन्हें !"

"माँ, चलिये हम ऊपर चलकर उन्हें दिलासा दें। अगर दरवाज़े पर खटखट हुई तो हम नीचे आ जायेंगे।"

बेटी की सुरीली आवाज़ में कुछ ऐसा असर था कि मादाम ग्रांदे इनकार न कर सकी। योज़ेन अब एक महान व्यक्तित्व बन गई थी। वह लड़की नहीं रही थी, बल्कि स्त्री थी। धड़कते हुए दिलों के साथ वे इकट्ठे सीढ़ियाँ चढ़कर शारल के कमरे में गई। दरवाज़ा खुला हुआ था। शारल को देखने अथवा सुनने का कदाचित होश नहीं था। वह सर्वथा शोक-ग्रस्त था। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद उसके मुंह से एक अस्पष्ट-सी चीख निकल जाती थी।

"उन्हें अपने पिता से कितना प्रेम है ?" योज़ेन ने धीमी आवाज़ ं कहा, उसके स्वर में निस्संदेह कुछ ऐसी बात थी, जो उसकी हृदयगत भावनाओं को व्यक्त किये दे रही थी। और कुछ ऐसी आशाएँ झलक रही थीं, जिनसे वह अभी स्वयं भी परिचित न थी। मादाम ग्रांदे की ममता ने सब कुछ भांप लिया। उसने अपनी बेटी की ओर देखा और उसके कान में धीरे से कहा :

"देखो, तनिक सावधानी से काम लो, वरना तुम इसे चाहने लगोगी।"

"मैं इन्हें चाहने लगूँगी ?" योज़ेन ने कहा, "आह, काश ! आप जानतीं कि पापा ने क्या कहा है।"

शारल ने लेटे-लेटे थोड़ी-सी करवट ली और अपनी चची और बहन को देखा।

"मेरे सिर से बाप का साया उठ गया।" वह चिल्लाया।

"हाय बेचारे पापा ! अगर वह मुझ पर भरोसा करके मुझसे अपनी क्षति की बात कहते तो सम्भव था हम दोनों मिलकर स्थिति सुधार लेते। हे भगवान् ! मेरे पापा मुझपर कितने मेहरबान थे ! मुझे उनसे दुबारा मिलने का इतना विश्वास था कि मैं उनसे बड़ी बेपरवाही के साथ विदा हुआ था। मुझे यह खयाल भी न था कि...."

उसके शब्द सिसकियों में गुम हो गये।

"हम उनके लिए प्रार्थना करेंगे।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "भगवान की इच्छा पर संतुष्ट रहो।"

"भाई, ज़रा हिम्मत से काम लीजिए।" योज़ेन कोमल स्वर में बोली, "अब आपके पिता तो आपको किसी तरह वापस नहीं मिल सकते। अब तो आपको यह सोचना चाहिए कि अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए आपको क्या करना है..."

स्त्री अपनी बुद्धि को स्थिर रखती है, चाहे वह किसी को सांत्वना ही क्यों न दे रही हो। उसका यही स्वभाव है। और इसी स्वभाव के

अनुसार योज़ेन प्रयत्न करने लगी कि उसके भाई का ध्यान अपने दुख से हटकर किसी दूसरी ओर लग जाये और नहीं तो वह अपने ही बारे में सोचने लगे।

"मेरी इज्ज़त ?" नौजवान ने जल्दी से बालों को अपनी आँखों पर से हटाते हुए ज़ोर से कहा, वह पलंग पर उठकर बैठ गया और बाहें छाती पर बांध कर बोला, "आह ठीक है, चचा कह रहे थे कि उनका दीवाला निकल गया।"

उसने एक तीखी और हृदय विदारक चीख मारी और दोनों हाथों से चेहरा ढांप लिया।

"बहन योज़ेन, मुझे अकेला छोड़ दीजिये। मेरे पास से चली जाइये।" उसने प्रार्थना की, "हे भगवान ! मेरे पापा को क्षमा कर दे। उन्हें दुनिया ही में कितना कष्ट सहन करना पड़ा होगा !"

यह नौजवान अपने दुख से बिलकुल ढह गया था। उसके शोक में तकल्लुफ या दिखावे का लेशमात्र न था। इस दृश्य में एक भयानक आकर्षण भी था। यह ऐसा दुख था जो दूसरों की दृष्टि से छिपे रहना चाहता था। शारल ने जब यह प्रार्थना की कि मुझे अकेले छोड़ दिया जाय तो योज़ेन और उसकी माँ तत्क्षण मतलब समझ गईं। वे दोनों चुपचाप नीचे चली आईं और बड़ी खिड़की के सामने अपने-अपने स्थान पर बैठ गईं। फिर लगभग घंटे भर तक एक दूसरे से एक शब्द कहे बिना सिलाई करती रहीं।

योज़ेन कनखियों से अपने भाई के कमरे के चारों ओर देख चुकी थी। लड़कियाँ ऐसे सहज निरीक्षण से एक क्षण में प्रत्येक वस्तु देख लेने में समर्थ होती हैं। इसी प्रकार योज़ेन ने भी सिंगार मेज़ पर रखी हुई सब छोटी-बड़ी चीज़ें देख ली थीं—विशेषकर कैंचियाँ और उस्तरे जिन पर सोना मढ़ा हुआ था। ऐसी विपत्ति में ऐश्वर्य के इस प्रदर्शन ही ने शारल को उसकी दृष्टि में अधिक दिलचस्प बना दिया था। माँ बेटी का जीवन शांत और एकांत वातावरण में व्यतीत हुआ था और उसमें ऐसे

गम्भीर संकट का क्षण पहले न आया था। इस प्रकार के भयानक नाटक ने उनकी कल्पना को पहले कभी इस प्रकार उत्तेजित नहीं किया था।

"माँ!" योज़ेन बोली, "क्या हम शोकवस्त्र पहन लें?"

"इसका फैसला तो तुम्हारे पिता ही करेंगे।" मादाम ग्रांदे ने उत्तर दिया और वह फिर चुपचाप सिलाई में लग गई। योज़ेन की सुई मशीन की-सी बाकायदगी के साथ चल रही थी जिससे उसकी मानसिक उलझन का भेद प्रकट हो रहा था। उस बेचारी लड़की की सबसे बड़ी इच्छा तो यह थी कि किसी प्रकार वह अपने भाई का दुख बांट सके। कोई चार बजे के करीब दरवाज़े पर ऐसी ज़ोर की दस्तक हुई कि मादाम ग्रांदे के शरीर में एकदम से भय की लहर दौड़ गई।

"तुम्हारे पिता इतनी जल्दी कैसे लौट आये?" उसने अपनी बेटी से कहा।

टीनसाज़ भीतर आया तो वह बहुत प्रसन्न मालूम हो रहा था। वह अपने हाथों को इस ज़ोर से रगड़ रहा था कि चमड़े की-सी कठोर खाल ही उसे सहन कर सकती थी। वास्तव में उसके हाथ रूसी चमड़े की तरह मजबूत थे। यद्यपि उनमें वैसी सुगन्ध और महक न थी जो चमड़े में मसालों से उत्पन्न की जाती है। कुछ देर तो वह टहल-टहल कर मौसम का अन्दाजा लगाता रहा। अन्त में बात उससे छिपाई न जा सकी।

"लो बीवी! मैंने उन्हें फांस लिया।" वह बिना हकलाये हुए बोला, "बिलकुल काबू में आ गये। हमारी शराब बिक गई है। हालैंड और बैलजियम के व्यापारी आज सुबह वापस जाने वाले थे। मैं बाज़ार में उनकी सराय के सामने ऐसे मंडलाता रहा, जैसे मुझे कोई मतलब ही न हो। नाम क्या है उसका? तुम भी उस आदमी को जानती हो। वह मेरे पास आया। सब अच्छे-अच्छे कृषक अपनी अंगूरों की फसल संभाले बैठे हैं। वे अभी इन्तज़ार करना चाहते हैं सो इन्तज़ार करते रहें। मैंने तो उन्हें मना नहीं किया है। मैंने देखा कि हमारा वह बैलजियम का

व्यापारी बड़ा हैरान हो रहा है। इसलिए मैंने सौदा तय कर लिया। वह हमारी सारी शराब दो सौ फ्रांक प्रति कनस्तर के हिसाब से खरीद रहा है और उसकी आधी कीमत तो उसने तुरन्त ही सोने में अदा कर दी है और बाकी रकम का मैंने तमस्सुक ले लिया है। तुम्हारे लिए भी छः लूई मिल गये हैं। अब तीन महीने के अन्दर कीमतें गिर जायेंगी।"

अन्तिम शब्द उसने अत्यन्त शांत भाव से कहे। लेकिन उसके स्वर में कुछ ऐसा व्यंग्य था कि जो लोग झुटपुटे के समय सोमूर के बाज़ार में छोटी-छोटी टोलियाँ बनाये खड़े थे और जिन्हें ग्रांदे की सौदेबाज़ी ने हताश कर दिया था, अगर ये शब्द सुन लेते तो सहसा कांप उठते, बाज़ार में खलबली मच जाती और शराब की दर पचास प्रतिशत गिर जाती।

"पापा, इस साल आपके पास एक हज़ार कनस्तर हैं। ठीक है न?" योज़ेन ने पूछा।

"हाँ, बेटी।"

इन शब्दों से मालूम होता था कि टीनसाज़ की प्रसन्नता पराकाष्ठा को पहुँच चुकी है।

"इसका मतलब है दो लाख फ्रांक?"

"हाँ, मादमुआज़ेल ग्रांदे।"

"अच्छा पापा, फिर तो आप शारल की आसानी से मदद कर सकेंगे।"

बेलशज़ार को अपने महल की दीवार पर गुप्त लिखावट देखकर जो आश्चर्य और विस्मय हुआ था और जो क्रोध आया था, वह ग्रांदे के इस सर्द गुस्से के सामने कुछ भी नहीं था। शारल उसके जेहन से बिलकुल उतर चुका था, लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि वह उसकी बेटी के मस्तिष्क में सर्वोपरि है और उसीके लिए यह सारा हिसाब-किताब हो रहा था, तो वह भड़क उठा।

"देखो," वह गरजकर बोला, "जब से मरदूद ने मेरे घर में कदम रखा है हर एक चीज़ गड़बड़ हो गई है। तुम लोग अपने पल्ले से उसके

लिए चीनी मंगवाती हो और तुम यों उसकी दावतें करती हो जैसे कोई त्यौहार या शादी-विवाह हो। मैं यह सब पसंद नहीं करता। मेरा ख्याल है, मैं इस उम्र में इतना तो समझ सकता हूँ कि उचित और अनुचित क्या है। इसलिए मुझे अपनी बेटी अथवा किसी और से यह सीख लेने की ज़रूरत नहीं है। मैं अपने भतीजे के लिए वही करूँगा जो उचित और सही समझूँगा। इससे तुम्हें कोई सरोकार नहीं, अतः तुम्हें इसमें दखल देने की भी ज़रूरत नहीं—और तुम योज़ेन !" उसने बेटी की ओर पलटते हुए कहा, "अगर तुमने इस सम्बन्ध में एक शब्द भी मुँह से निकाला तो मैं बिना किसी लिहाज़ के तुम्हें और नानों को निवाये के मठ में भेज दूँगा, यह तुम भली प्रकार समझ रखो। वह लड़का है कहाँ ? क्या वह अभी तक नीचे नहीं उतरा ?"

"नहीं, प्यारे !" मादाम ग्रांदे ने उत्तर दिया।

"क्यों, आखिर वह कर क्या रहा है ?"

"वह अपने पिता के ग़म में रो रहे हैं।"

ग्रांदे ने बेटी की ओर देखा; लेकिन कुछ कह न सका। कुछ भी हो, आखिर वह भी पिता था। उसने एक-दो चक्कर कमरे के लगाये और फिर सीधा ऊपर अपने एकांत वास में यह विचार करने चला गया कि वह सरकारी स्टाक में रुपया लगाये या नहीं। जंगल वाली दो हज़ार एकड़ जमीन से उसे छः लाख फ्रांक की आमदनी हुई थी। फिर पोपलर के पेड़ बेचकर जो रक़म मिली थी, वह भी उसके पास थी। विभिन्न साधनों से प्राप्त की हुई पिछले साल की आमदनी भी थी और इस साल की बचत का पैसा भी था। अभी-अभी जो सौदा हुआ था उसकी तो बात ही छोड़िये। इस दो लाख फ्रांक की रक़म के अतिरिक्त उसके पास इस समय नौ लाख लीवर नक़द थे। अपने लगाये हुए रुपये पर थोड़े से समय में बीस प्रतिशत लाभ प्राप्त करने का खयाल उसे ललचा रहा था। सरकारी कर्जे का एक तमस्सुक सत्तर फ्रांक का मिलता था। जिस अखबार में उसके भाई की मृत्यु का समाचार छपा था, उसके हाशिये पर

उसने अपना हिसाब जोड़ा। भतीजे की आहें उसके कानों में गूँज रही थीं; लेकिन वह सुनी-अनसुनी करके अपने काम में व्यस्त रहा, यहाँ तक कि नांनों ने मोटी-सी दीवार को थपथपाकर अपने स्वामी को भोजन तैयार हो जाने की सूचना दी। वह मेहराब के नीचे जीने की अन्तिम सीढ़ी पर रुककर सोचने लगा—"आठ फीसदी मुनाफे के अलावा सूद भी है—मैं अवश्य खरीदूंगा। दो साल के अरसे में पन्द्रह लाख फ्रांक और फिर पेरिस से खालिस सोने की शक्ल में मिलेंगे। यह तो बड़े मज़े की बात है...."

"अच्छा, वह मेरे भतीजे का क्या हुआ ?" उसने नौकरानी से पूछा।

"उन्होंने कहा है कि मैं कुछ नहीं खाऊँगा।" नांनों ने उत्तर दिया और कहा, "उन्हें कुछ खाना चाहिये, वरना बीमार हो जायेंगे।"

"चलो, कुछ बचत ही होती है।" मालिक ने अपना मत प्रकट किया।

"तोबा !....हाँ सच तो है।" उसने उत्तर दिया।

"वह सदा रोता तो रहेगा नहीं। भूख तो भेड़िये को भी जंगल से खरीद लाती है।"

भोजन एक विचित्र प्रकार की निस्तब्धता में हुआ। जब दस्तरखान हटा लिया गया तो मादाम ग्रांदे ने अपने पति से कहा :

"हमें शोक-वस्त्र पहनना चाहिये ?"

"बहुत खूब, मादाम ग्रांदे, शायद तुम्हें पैसे से छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं सूझता। शोक तो दिल में मनाया जाता है, कपड़ों से प्रकट नहीं किया जाता।"

"लेकिन भाई के शोक में तो शोक वस्त्र पहनना आवश्यक होता है और धर्म भी हमें आदेश देता है कि...."

"तो फिर तुम यह वस्त्र अपने छः लूई में खरीद लो। मेरे लिए तो एक स्याह पट्टी ही काफी रहेगी वह तुम मुझे ले देना।"

योजेन कुछ न बोली; आकाश की ओर देखने लगी। उसने जीवन

में पहली बार देखा कि उसकी उदार प्रवृत्तियाँ जो चिरकाल से दबी और स्थिर पड़ी थीं, सहसा जाग उठी थीं; लेकिन उन्हें उत्पन्न होते ही निष्ठुरता से कुचल डाला गया था। देखने को तो यह संध्या भी उनके एकरस जीवन की हज़ारों संध्याओं की भाँति व्यतीत हुई; लेकिन दोनों स्त्रियों के लिए तो उनके जीवन की यह सबसे भयानक संध्या थी। योज़ेन बिना सिर उठाये सिलाई करती रही। उसने उस मुलम्मा किये हुये डिब्बे की ओर भी कोई ध्यान न दिया, जिसे कल शाम शारल ने इस क़दर उपेक्षा से देखा था। मादाम ग्रांदे अपने आस्तीनबंद बुनती रही। ग्रांदे बैठा अपने अँगूठे नचा रहा था और ऐसी योजनाओं पर विचार कर रहा था, जिनके परिणामस्वरूप वह एक दिन सोमूर भर में तहलका मचा देना चाहता था।

चार घंटे बीत गये। कोई उनसे मिलने भी न आया। असल में बात यह थी कि शहर उसके भाई के दीवालिये भतीजे के आगमन और ग्रांदे की चालबाज़ियों की खबरों से गूंज रहा था। सोमूर वाले इन सब घटनाओं की भली प्रकार जांच-पड़ताल की ऐसी जरूरत महसूस कर रहे थे कि सब छोटे-बड़े कृषक दे ग्रासीं के गिर्द जमा हो गये थे और अपने भूतपूर्व मेयर को कोस रहे थे, घृणित से घृणित गालियां दे रहे थे!

नांनों चर्खा कात रही थी और भूरे रंग वाले शहतीरों के नीचे बड़े कमरे में बस चर्खे की रूँ-रूँ ही सुनाई दे रही थी।

"हममें से कोई बात ही नहीं कर रहा है?" नांनों ने अपने बड़े-बड़े दांतों का प्रदर्शन करते हुए कहा जो छिले हुए बादाम की तरह सफ़ेद थे।

"इसकी कोई ज़रूरत भी नहीं है।" ग्रांदे ने अपने हिसाब-किताब से चेतकर उत्तर दिया।

वह भविष्य का कोई मधुर स्वप्न देख रहा था—उसे तीन साल के अरसे में अस्सी लाख कमाने का खयाल आ रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी गहरे समुद्र की लम्बी यात्रा पर रवाना हो गया है।

"चलो, अब सो जायें। मैं ऊपर जाकर तुम सबकी ओर से अपने

भतीजे का हाल पूछ आता हूँ। और यह भी मालूम कर लूँगा कि उसे किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है।"

मादाम ग्रांदे यह सुनने के लिये कि उसका सुयोग्य पति शारल से क्या कहता है अपने कमरे के बाहर दहलीज़ पर ठहरी रही। योज़ेन में अपनी मां से अधिक साहस था, वह ज़ीने पर एक दो कदम आगे बढ़ गई।

"अच्छा बेटे, तुम्हें बहुत दुख हो रहा है? हाँ, खूब रोओ, यह तो स्वाभाविक बात है। बाप आखिर बाप ही होता है। लेकिन आदमी को विपत्ति में धैर्य से काम लेना चाहिये। तुम तो रोते रहे हो; लेकिन मैं इतनी देर तुम्हारे ही बारे में सोचता रहा हूँ। तुम्हारा चचा बड़ा ही सहृदय व्यक्ति है। देखो, शाबाश, हिम्मत न हारो। क्या तुम थोड़ी-सी शराब पियोगे? सोमूर में शराब बड़ी ही सस्ती है क्योंकि यहाँ बहुत मिलती है। यहाँ के लोग शराब ऐसे पेश करते हैं जैसे इंडीज़ में लोग तुम्हें चाय देंगे। मगर तुम्हें तो अभी इसका कुछ पता ही नहीं।" ग्रांदे बोलता चला गया।

"यह बुरी बात है, बहुत बुरी बात है। इंसान को हमेशा देखना चाहिये कि वह क्या कर रहा है?" ग्रांदे आतिशदान के करीब गया।

"अरे!" वह चिल्लाया, "इन कम्बख्तों को यह कहाँ से मिली? मेरे खयाल में ये चुडैलें तो इस लड़के की खातिर अंडे उबालने के लिए मेरे घर की छत तक उखाड़ डालेंगी।"

माँ और बेटी ने जब ये शब्द सुने तो वे अपने कमरों की ओर भागीं और चूहों के सदृश डरते-डरते बिस्तरों में दुबक गईं।

"मादाम ग्रांदे, मालूम होता है तुम्हारे पास कहीं छिपा हुआ खज़ाना पड़ा है, क्यों है न?" कृषक ने अपनी पत्नी के कमरे में आते हुए कहा।

"प्यारे, मैं प्रार्थना कर रही हूँ. ज़रा ठहरो।" पत्नी ने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा।

"भाड़ में जाये तुम्हारी प्रार्थना।" ग्रांदे गुर्राया।

कंजूसों का भावी जीवन में विश्वास नहीं होता, उनके लिये तो

वर्तमान ही सब कुछ है। आज जो हम अधार्मिक जीवन बिता रहे हैं, इस विचार से उसपर स्वच्छ और निष्ठुर प्रकाश पड़ता है क्योंकि सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से कानून के पीछे आज पैसा जितनी बड़ी शक्ति है इतनी पहले किसी युग में नहीं थी। पुस्तकें और संस्थाएं, मनुष्यों के कृत्य और उनके सिद्धान्त—सब मिलकर भावी जीवन में विश्वास की जड़ें खोद रहे हैं, जिस पर पिछले अठारह सौ साल में हमारी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ है। कब्र के दुख और भय अब हमें ज़रा भी आतंकित नहीं करते। वह भविष्य जो मृत्यु के उपरांत हमारी प्रतीक्षा किया करता था, आज वर्तमान में परिणत कर दिया गया है। इस समय हमारी एक—और सिर्फ एक ही अभिलाषा रह गई है कि किसी प्रकार इस भू-लोक में ऐश्वर्य, विडम्बना और सुख के स्वर्ग को प्राप्त करें और उसे प्राप्त करने के लिए हम अपनी आत्मा और शरीर दोनों का इसी प्रकार बलिदान कर डालते हैं, जैसे पूर्वकाल में अनन्त आनन्द प्राप्त करने के लिए अपने प्राण खुशी-खुशी न्योछावर कर डालते थे और अमर पद प्राप्त करने के लिए अधीर रहते थे। यही सबकी अभिलाषा है। हमारे युग पर तो इसका ठप्पा लग गया है, हर जगह यही कुछ दिखाई देता है, यहाँ तक कि कानून बनाने के लिए जो लोग चुनकर भेजे जाते हैं, उनकी योग्यता नहीं देखी जाती, पैसा देखा जाता है। 'तुम क्या सोचते हो?' के बजाय आज उससे 'तुम क्या दे सकते हो?' पूछा जाता है। जब यह सिद्धान्त धनी वर्ग से जनसाधारण तक पहुँचेगा तो हमारे देश का क्या बनेगा?

"मादाम ग्रांदे, तुम्हारी प्रार्थना खत्म हुई?" टीनसाज़ ने पूछा।

"प्यारे, अब मैं तुम्हारे लिए दुआ मांग रही हूँ।"

"अच्छी बात है। रात का प्रणाम, मैं तुम से कल सुबह बात करूंगा।"

बेचारी औरत, सोते समय उसकी दशा स्कूल के उस विद्यार्थी की-सी थी जिसने पाठ याद न किया हो और आँख खुलते ही अध्यापक का

भयानक चेहरा नज़रों में फिरने लगे। इसी भय के कारण उसने अपने सिर के गिर्द चादरें लपेट लीं ताकि किसी प्रकार की आवाज़ न सुन सके। लेकिन ठीक उसी समय किसी ने उसके माथे का चुम्बन किया। यह योज़ेन थी, जो अँधेरे में इस कमरे की ओर सरक आई थी। और रात के लिबास में नंगे पांव उसके सिरहाने खड़ी थी।

"आह, माँ!" वह बोली, "प्यारी माँ! मैं कल उनसे कहूँगी कि यह सब कुछ मैंने किया है।"

"नहीं-नहीं। ऐसा न करना वरना वह तुम्हें निवाये भेज देंगे। यह सब मेरे ऊपर छोड़ दो। आखिर वे मुझे खा तो नहीं जायेंगे।"

"आह माँ! क्या आप सुन रही हैं?"

"क्या?"

"वह अब तक रो रहे हैं।"

"प्यारी बेटी, तुम अपने बिस्तर पर जाओ। फर्श सीला हुआ है, तुम्हें सर्दी लग जायगी।"

यों इस गम्भीर दिन का अंत हुआ, जो ग्रांदे की धनी लेकिन दरिद्र अधिकारिणी के लिए जीवन भर का रोग साथ लाया था। योज़ेन जो गहरी और इत्मीनान की नींद सोती थी, आज के बाद कभी न सो सकेगी। अक्सर ऐसा होता है कि मनुष्य अपने जीवन में कोई ऐसा काम करते हैं कि लोग कहने लगते हैं, यह उसे शोभा नहीं देता था लेकिन वह सर्वथा उसके स्वभाव के अनुसार होता है। वास्तव में हम मनोविज्ञान की सहायता लिये बिना उतावलेपन से मनमाने निष्कर्ष निकाल लेते हैं वरना अगर हम प्रयत्न करें तो उन कारणों का जिन्होंने इन अप्रत्याशित परिणामों को अनिवार्य बना दिया, पता लगाना कुछ कठिन नहीं है। योज़ेन की यह भावना भी उसके स्वभाव की गहराइयों से उत्पन्न हुई थी और उसका विश्लेषण कुछ इस प्रकार करना चाहिए, जैसे यह कोई सुकोमल, सूक्ष्म और सप्राण वस्तु हो, तब जाकर उसके विकास का रहस्य समझ में आयगा। यह भावना ऐसी थी, जो भविष्य

में उसके समस्त जीवन को प्रभावित करेगी और लोग व्यंग भाव से उसे रोग की संज्ञा देंगे। बहुत से लोग किसी कृत्य को अविश्वसनीय घोषित कर देते हैं, लेकिन उनसे यह नहीं होता कि उन घटनाओं के क्रम पर विचार करें जो इस परिणाम का कारण बने अथवा सोचें कि जंजीर की एक-एक कड़ी पात्र के मस्तिष्क में किस प्रकार उत्पन्न हुई। इस मामले में मानव-स्वभाव-शास्त्रियों को योज़ेन के गतजीवन को समझ लेना ही काफी होगा। जिम निरीहता और भावुकता से उसने अपने उद्गारों को प्रकट किया इसमें ताज्जुब की कुछ भी बातें नहीं हैं। ठीक इसी बात के कारण कि अब तक उसका जीवन निष्कंटक और नीरस बीता था, स्त्री-सुलभ सहानुभूति ने एक हठी भावना का रूप धारण कर लिया और वह उसके समस्त अस्तित्व पर छा गई।

और दिन भर की उत्तेजना और चिंता ने उसे रात को भी चैन से न सोने दिया। वह बार-बार जाग उठती और अपने भाई के कमरे की ओर कान लगाती कि शायद कोई आवाज़ सुनाई दे। उसे ऐसा लग रहा था कि दिन भर जो आहें उसके दिल में गूँजती रही हैं, उनकी आवाज़ वह अब भी सुन रही है। कई बार उसे यों महसूस होता जैसे वह उसे कमरे में लेटा देख रही है और वह शोक से मरा जा रहा है और किसी समय स्वप्न देखती कि वह भूख से तड़प रहा है। सुबह के करीब तो उसे ऐसा लगा कि उसने सचमुच एक भयानक चीख सुनी है। उसने तुरन्त कपड़े तब्दील किये और प्रभात के मद्धम उजाले में दबे पाँव जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ चढ़कर भाई के कमरे में पहुँच गई। दरवाज़ा खुला था। मोमबत्ती जलकर खत्म हो चुकी थी। इंसान आखिर इंसान है। शारल सुबह वाली पोशाक पहने आरामकुर्सी पर बैठा सो रहा था। और उसका सिर सामने पलंग पर टिका हुआ था। वह ऐसे स्वप्न देख रहा था, जैसे भूखे लोग देखा करते हैं। योज़ेन अब उसे जी भरकर देख सकती और रो सकती थी और उसके सुन्दर नौजवान चेहरे को सराह सकती थी जिस पर विषाद की रेखायें अंकित थीं। बन्द आँखें

रोते-रोते सूज गई थीं और ऐसा लगता था जैसे उनसे नींद में भी आँसू बह रहे हों। शारल को नींद ही में योज़ेन की उपस्थिति का आभास हो गया। उसने आँखें खोल दीं और योज़ेन को करुणाभाव से अपनी ओर देखते पाया।

"बहन, मैं क्षमा चाहता हूँ।" उसने ऊँघते हुए कहा।

जाहिर है कि उसे समय का कोई ज्ञान नहीं था और न वह यह जानता था कि इस समय वह कहाँ है।

"भाई, यहां भी ऐसे लोग हैं, जिन्हें आप से पूर्ण सहानुभूति है। हमने सोचा कि शायद आपको किसी चीज की जरूरत हो। आप बिस्तर पर लेट जाइये। इस प्रकार सोने से आप थक जायेंगे।"

"हाँ।" वह बोला, "यह तो ठीक है।"

"अच्छा, नमस्ते।" वह यह कहकर भाग आई। उसे अपने वहाँ जाने की प्रसन्नता भी थी और घबराहट भी। सिर्फ निरीहता ही ऐसी साहसी होती है। नेकी और बदी दोनों बशर्ते कि उनमें कुछ ज्ञान हो अपने कृत्य की सावधानी से जाँच करती हैं।

योज़ेन अपने भाई के कमरे में जरा भी नहीं कांपी थी लेकिन ज्योंही वह अपने कमरे में पहुँची उससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। उसके जीवन की अविचार स्वच्छन्दता सहसा खत्म हो चुकी थी। वह बार-बार झुंझला रही थी और अपने आप को दोषी ठहरा रही थी।

"वह मेरे बारे में क्या सोचेंगे? वह समझेंगे कि मैं उनसे प्रेम करती हूँ।"

और वास्तव में उसकी हार्दिक इच्छा यही थी कि वह शारल को इस बात का विश्वास दिलाये। प्रेम सीधे-सादे ढंग से उसे सब कुछ बता रहा था और वह सहज स्वभाव से समझ चुकी थी कि दिल को दिल से राहत होती है। वह क्षण जब उसने दबे पांव अपने भाई के कमरे में प्रवेश किया था इस लड़की के जीवन की एक अतिस्मरणीय घटना बन गई। क्या प्रेम में कुछ विचार और घटनाएं ऐसी नहीं, जो कुछ लोगों के

लिए सगाई की पवित्र रस्म का महत्व रखते हैं।

एक घंटा बाद वह अपनी माँ को कपड़े बदलने में सहायता करने के लिए उसके कमरे में गई। यह उसकी सदा की आदत थी। फिर दोनों नीचे उतरीं और खिड़की के निकट अपने-अपने स्थान पर बैठ गईं। और ग्रांदे के आने की ऐसी अधीरता से प्रतीक्षा करने लगीं, जिससे मनुष्य या तो तड़पने लगता या फिर बिलकुल जड़ हो जाता है। भय की यह भावना स्वाभाविक है, जिसे पालतू पशु तक महसूस करते हैं। दंड के तौर पर जब उनके स्वामी उन्हें पीटते हैं तो खूब चिल्लाते हैं, चाहे उससे शारीरिक कष्ट बहुत ही मामूली हो लेकिन अगर संयोगवश इससे कहीं अधिक चोट भी आ जाये तो वे आवाज़ तक नहीं निकालते।

टीनसाज़ नीचे उतरा, पत्नी के प्रति कुछ उदासीनता प्रकट कर, उसने योज़ेन को प्यार किया और मेज़ के निकट बैठ गया, ऐसा लगता था कि वह रात की धमकियाँ भूल चुका है।

"मेरे भतीजे का क्या हाल है? यह लड़का हमें अधिक तंग नहीं करता!"

"मोसियो, वह सो रहे हैं।"

"यह भी अच्छा है। अब उसे मोमबत्ती की तो जरूरत न होगी।" ग्रांदे ने व्यंग-प्रहार किया।

उसका यह असाधारण और व्यंग्यभाव मादाम ग्रांदे के लिए आश्चर्यजनक था। उसने बड़ी गम्भीरता से पति की ओर देखा। 'भला आदमी' यहां यह बता देना उचित होगा कि तोरेन, आँजो, बुआतो और बरेती के इलाके में यह उपाधि जो ग्रांदे के लिए अक्सर इस्तेमाल होती थी, उनके किसी गुण को प्रकट नहीं करती थी बल्कि दुष्ट स्वभाव वालों से लेकर विनोदप्रिय मूर्खों तक के लिए बराबर इस्तेमाल होती है और बिना किसी भेदभाव के एक खास उम्र के लोगों के साथ चस्पां करदी जाती है। अतः भले आदमी ने अपना हैट और दस्ताने उठाये और बोला :

"मैं बाजार का हालचाल देखना चाहता हूँ, मैं क्रोशो लोगों से भी मिलना चाहता हूँ।"

"योज़ेन, तुम्हारे पिता अवश्य किसी चिन्ता में हैं।"

बात यह है कि ग्रांदे हमेशा बहुत कम सोता था। आधीरात तक वह अपनी योजनाओं की उधेड़-बुन में लगा रहता था। इस प्रकार उसके विचारों और अनुमानों में एक आश्चर्यजनक दुरुस्ती और सफाई आ जाती थी। ग्रांदे की स्थायी सफलता सोमूर भर में विख्यात थी और उसका यही कारण था। समय और धैर्य ये दो बातें जमा हो जायें तो परिणाम अच्छा निकलता है और वही व्यक्ति अधिक सफल रहता है, जो दृढ़-संकल्प और धैर्यवान हो। कंजूस का तो जीवन ही यह है कि वह प्रत्येक मानव गुण को हमेशा अपने व्यक्तित्व के लिए इस्तेमाल करता रहता है। सिर्फ दो भावनायें उसके सम्मुख रहती हैं—दंभ और स्वार्थ। इन दोनों भावनाओं के अतिरिक्त और किसी बात पर उसका विश्वास नहीं होता। लेकिन अपने हित की चिन्ता में रहने का अर्थ भी तो यही है कि मनुष्य अपने आप से प्रेम करता है क्योंकि हित की पूर्ति से उसके अहं को ठोस सहारा मिलता है। और वास्तविक रूप से उसकी पुष्टि होती है। यों दंभ और स्वार्थ-रक्षा एक ही भावना—अहं के दो पहलू हैं। शायद यही कारण है कि जब रंगमंच पर किसी कंजूस का चरित्र निपुणता और कुशलता से प्रस्तुत किया जाता है तो लोगों की उसमें बड़ी दिलचस्पी होती है। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में कंजूस वास करता है जो मानव भावनाओं की अवहेलना भी करता है और उन्हें मूर्तिमान भी करता है। वह कौन-सा व्यक्ति है, जो महत्त्वाकांक्षी नहीं और हमारे इस समाज में पैसे के बिना कौन-सी आकांक्षा पूरी होती है ?

जैसा कि उसकी पत्नी ने कहा था ग्रांदे वाक़ई किसी चिन्ता में था। कंजूस की भांति उसे भी अपना खेल खेलने में बड़ा आनन्द मिलता था। उसे हर वक्त यही धुन सवार रहती थी कि अपने हित के लिए एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध इस्तेमाल किया जाये।

फिर जब कोई शिकार उसके पंजे में आ फंसता था तो क्या इससे उसके अहं भाव की पुष्टि न होती थी और जो दुर्बल व्यक्ति सहज में उसके स्वार्थ का ग्रास बन जाते थे क्या उनके प्रति उसे घृणा अनुभव न होती थी ? भगवान के चरणों में जो भेड़ इत्मीनान से लेटी रहती है, उसे समझने का प्रयत्न किसने किया है ? यह भेड़ उन विनम्र और विवश व्यक्तियों का प्रतीक है जो संसार में दुख झेलने के लिए ही उत्पन्न हुए हैं लेकिन जिनको परलोक में सुख और स्वर्ग का प्रलोभन दिया जाता है। लेकिन इस लोक में उनकी दशा बड़ी दीन-हीन है। यहाँ तो भेड़ का शिकार कंजूस के लिए बिल्कुल उचित है। पहले वह भेड़ को खूब मोटी होने देता है, तब उसे पकड़ता है, मारता, पकाता, खाता और घृणा करता है। कंजूस का जीवन धन और घृणा पर निर्भर है।

रात इस व्यक्ति को कोई नई बात सूझी थी, यही कारण है कि आज वह असाधारण रूप से विनम्र था। पेरिस वालों को फांसने के लिए वह रात भर एक जाल बुनता रहा था। उसे विश्वास था कि वे लोग आसानी से इस जाल में फंस जायेंगे और फिर उनका जीवन उसकी दया पर निर्भर होगा। था तो वह सोमूर का बूढ़ा टीनसाज़ जो पुराने-धुराने मकान में एक दीमक लगे ज़ीने के ऊपर एक गंदे-से कमरे में रहता था; लेकिन वह पेरिस वालों को अपनी अंगुलियों पर नचायेगा, वह उनकी आशा-निराशा का विधाता होगा, वे उसके इशारों पर चलेंगे, उसके मनोरंजन के लिये खून-पसीना बहायेंगे और वह उन्हें देख-देखकर बैठा हँसा करेगा।

वह अपने भतीजे के बारे में सोचता रहा था। वह चाहता था कि उसके स्वर्गीय भाई की बदनामी न हो और उसे अथवा उसके भतीजे को एक पाई खर्च भी न करनी पड़े। वह तीन साल के लिए अपना रुपया लगा देने का निश्चय कर चुका था; और अब अपनी जागीर के प्रबन्ध के अतिरिक्त उसके पास और कोई काम न था। इसलिए उसे एक ऐसा क्षेत्र दरकार था, जिसमें वह अपनी द्रोही शक्ति लगा सके।

और भाई का दीवाला निकल जाने से यह अवसर हाथ आ गया। उसके पंजे जो सदा किसी न किसी को दबोचने के लिए अधीर रहते थे आज-कल बेकार थे। अतः वह शारल को लाभ पहुँचाने के लिए पेरिस वालों को दबोचना चाहता था और इस प्रकार बिना कुछ खर्च किये ही वह अपने आपको अच्छा भाई भी सिद्ध कर सकता था। परिवार की इज्जत को बचाने की उसे कोई विशेष चिन्ता न थी। इस मामले में उसकी स्थिति उस जुवारी की-सी थी, जो चाहे खेल में भाग न ले रहा हो, लेकिन चाहता यह है कि बाज़ी शानदार ढंग से खिले और मज़ा आ जाये। उसे क्रोशो लोगों की सहायता दरकार थी, लेकिन सहायता मांगने उनके पास जाना मंजूर न था, बल्कि चाहता था कि वे लोग खुद ही उसके पास आयें और जिस दिलचस्प नाटक की रूप-रेखा उसने तैयार की थी, वह आज शाम ही को शुरू हो जाना चाहिए। कल-तक शहर भर में उसकी उदारता की चर्चा होने लगेगी और इस पर उसकी एक पाई भी खर्च न होगी।

अपने पिता की अनुपस्थिति में योज़ेन बड़ी स्वछंदता से अपने भाई के कामों में व्यस्त रह सकती थी और अपनी सहानुभूति का धन निर्भय होकर उसपर न्योछावर कर सकती थी। निष्ठा ही तो है, जिसमें स्त्रियाँ पुरुष से कहीं श्रेष्ठ हैं। इसी श्रेष्ठता को वह पुरुष से मनवाना चाहती हैं और इसके अतिरिक्त और किसी बात में वह उससे बढ़ना नहीं चाहतीं।

योज़ेन तीन-चार मर्तबा अपने भाई के सांस लेने की आवाज़ सुनने के लिए कमरे तक गई ताकि उसे पता चल सके कि वह सो रहा है अथवा जाग गया है। और आखिर जब उसे विश्वास हो गया कि वह जाग उठा है तो नाश्ता लगाने में व्यस्त हो गई। गिलास, प्लेटें, अंडे, फल, कॉफी और मलाई—ये सब चीज़ें उसने बड़ी सावधानी से सजाईं। फिर वह धीरे से जर्जर सीढ़ियों पर चढ़ी और आवाज़ पर कान लगाये, क्या वह कपड़े बदल रहा है? अथवा अभी तक रो रहा है? आखिर वह दरवाज़े पर पहुँची और बोली :

"भैया !"

"क्यों बहन ?"

"क्या आप नाश्ता करने नीचे आयेंगे या आप के कमरे में पहुँचा दिया जाय ?"

"जैसी आपकी इच्छा।"

"अब आपकी तबीयत कैसी है ?"

"मुझे यह कहते ही लज्जा आती है कि मुझे भूख लगी है।"

बन्द किवाड़ों के पीछे से यह वार्तालाप योज़ेन के लिए किसी रोमांस-सम्बन्धी उपन्यास की घटना से कम न था।

"बहुत अच्छा, हम आपका नाश्ता आप के कमरे ही में ले आते हैं ताकि पापा के क्रुद्ध होने की गुंजायश ही न रहे।" वह तेज़ी से नीचे उतर गई और चिड़िया की-सी फुर्ती के साथ रसोई की ओर भागी।

"नाँनों, ज़रा जाकर तुम उनका कमरा ठीक-ठाक कर दो।"

वह परिचित जीना जिस पर वह हज़ारों बार उतरी चढ़ी थी और जिस पर हर आवाज़ गूंज उठती थी, अब योज़ेन की दृष्टि में पुराना नहीं रहा था। उसमें एक नई आभा आ गई थी। वह एक भाषा बोलता मालूम हो रहा था। जिसे वह खूब समझती थी। वह फिर जवान हो गया था जैसे योज़ेन और उसके हृदय का प्रेम जवान था। उसकी सहृदय और दयाशील माता भी हर बात में बेटी का साथ देने को तैयार थी। अतः जब शारल का कमरा साफ होगया तो ये दोनों भी उसके पास बैठने को चली गईं। क्या धर्म हमें शोकग्रस्त प्राणियों को सांत्वना देना नहीं सिखाता ? वे ऐसी छोटी-छोटी धार्मिक उक्तियों द्वारा अपने मन को समझा रही थीं।

और इस प्रकार शम्रल ग्रांदे के प्रति स्नेह और सांत्वना प्रगट की गई। उसके व्यथित हृदय को इस सच्ची सहानुभूति ने अत्यन्त प्रभावित किया और दोनों स्त्रियों को भी ऐसा लगा कि उनके बंदी जीवन में यह एक ऐसा क्षण आया है जब वह स्वतंत्रता की सांस ले रही हैं। उन्हें यह

विषाद युक्त वातावरण बहुत अच्छा मालूम हुआ और इस विपित्त में वे शारल की साथी बन गई। एक सम्बन्धी के नाते योज़ेन ने अपना यह अधिकार समझा कि उसके कपड़े ढंग से रखे और सिंगार-मेज़ पर रखी हुई छोटी-बड़ी चीज़ों को सजा दे। अब इन विचित्र वस्तुओं को वह बड़े इत्मीनान से उलट-पलट कर देख सकती थी। वह सोने-चांदी की बनी हुई इन वस्तुओं को और ऐश्वर्य और विलासिता की समस्त सामग्री को अपने हाथों से ठीक-ठाक करके रखने लगी और उन पर बने हुए बेल-बूटों को निकट से देखने के बहाने देर तक उन पर अंगुलियाँ फेरती रही।

शारल अपनी चची और बहिन के इस सहृदय बर्ताव से बहुत ही प्रभावित हुआ। वह पेरिस के जीवन से भली भांति परिचित था और जानता था कि वर्तमान स्थिति में उसके सब मित्र और परिचित उससे मुंह मोड़ जाते और अवज्ञा तथा उपेक्षा का बर्ताव करते। उसने देखा कि अपने विशेष ढंग से योज़ेन कितनी सुन्दर और आकर्षक है। उसकी जिस सादगी और सरलता का कल वह मज़ाक उड़ा रहा था अब उसके मन को भा गई। और जब योज़ेन ने अपने भाई को खुद परोसने के निःसंकोच भाव से नाँनों के हाथ से काफी और मलाई का प्याला लिया तो सहसा दोनों की नज़रें एक दूसरे से मिल गई। शारल की आँखों में आँसू उमड़ आये और उसने योज़ेन का हाथ अपने हाथ में लेकर चूम लिया।

"अरे, आपको क्या होगया है?" योज़ेन ने पूछा।

"कुछ भी नहीं, यह तो कृतज्ञता के आँसू हैं।" उसने उत्तर दिया।

योज़ेन ने तत्क्षण मुंह दूसरी ओर फेर लिया और आतिशदान से मोमबत्तियाँ उठाकर नाँनों को देती हुए बोली:

"यह लो, उन्हें यहाँ से ले जाओ।"

जब उसने साहस करके चचेरे भाई की ओर दुबारा देखा, तब भी उसका चेहरा तमतमा रहा था; लेकिन कम से कम आँखों ने उस असीम प्रसन्नता को प्रगट नहीं होने दिया, जो उसके मन में उमड़ी पड़ रही थी।

लेकिन दोनों के मन में एक ही विचार उत्पन्न हो रहा था और दोनों की आँखों से झलक रहा था। वे समझ चुके थे कि अब भविष्य हमारा है। इस गहरे विषाद में हर्ष की यह लहर और मधुर मालुम हुई क्योंकि इसकी उसे कदाचित् आशा न थी।

दरवाज़े पर दस्तक हुई और दोनों स्त्रियाँ जल्दी-जल्दी नीचे उतर कर खिड़की के पास अपने-अपने स्थान पर जा बैठीं। यह उनका सौभाग्य था कि वे तेज़ी से सीढ़ियाँ उतर आईं और ग्रांदे के भीतर आने तक काम में व्यस्त होगईं वरना अगर वे उसे ड्योढ़ी में मिल जातीं तो उसके मन में तुरंत शकाएं उत्पन्न हो जातीं। दोपहर का भोजन उसने खड़े-खड़े ही किया। इतने में फरवानों से चौकीदार आ पहुँचा, जिसे अभी तक वह ईनाम नहीं मिला था, जिसका ग्रांदे ने रखवाली के लिए देने का वादा किया था। वह अपने साथ एक खरगोश, बगीचे में शिकार किये हुए कुछ तीतर और कुछ मछलियाँ लाया था।

"लो बूढ़ा कोरनिवाये आगया। ठीक उसी समय जब उसकी ज़रूरत थी, जैसे व्रत के दिनों में नमकीन मछली। ये सारी चीज़ें ताजी हैं न ?"

"जी हाँ, परसों ही इनका शिकार किया है।"

"देखो नाँनों, जरा चुस्ती से काम लो। इन्हें ले जाओ। खाने का काम तो आज इनसे चल जायगा। दो क्रोशो लोग भी आ रहे हैं।"

नाँनों की आँखें विस्मय से खुली की खुली रह गई और वह बारी-बारी सबके चेहरों की ओर तकने लगी।

"लेकिन मोसियो", वह बोली, "सब्जी और सुअर का नमकीन गोश्त कहाँ से आयेगा ?"

"बीवी", ग्रांदे ने कहा, "नाँनों को छः फ्रांक दे देना और मुझे याद दिलाना कि मैं तहखाने में से छांटकर शराब की अच्छी-सी बोतल निकाल लाऊं।"

"अच्छा, तो मोसियो ग्रांदे" चौकीदार ने कहना शुरू किया। वह अपनी तनख्वाह का कतई फैसला करना चाहता था और पूरा भाषण

तैयार करके लाया था, "मोसियो ग्रांदे ।"

"त त, त त, त त ।" ग्रांदे ने कहा, "मैं जानता हूँ तुम क्या कहना चाहते हो। तुम बहुत अच्छे आदमी हो। हम इसके बारे में कल बात करेंगे। आज मैं बहुत व्यस्त हूँ। बीवी, इसे पाँच फ्रांक दे दो।" उसने मादाम ग्रांदे की ओर देखकर यह वाक्य कहा और कमरे से खिसक गया।

बेचारी स्त्री इसी में प्रसन्न थी कि ग्यारह फ्रांक के बदले सुलह सफाई तो होगई। वह अनभव से जानती थी कि जब ग्रांदे थोड़ा-थोड़ा करके अपनी दी हुई रकम वापस ले लेता है तो दस पन्द्रह दिन कुछ अच्छे बीत जाते हैं।

"यह लो कोरनिवाये", उसने उसके हाथ में दस फ्रांक देते हुए कहा, "हम तुम्हारी सेवाओं को कभी नहीं भूल सकते, शीघ्र ही उनका उचित पुरस्कार देंगे।"

कोरनिवाये के पास इसका कोई उत्तर तैयार नहीं था, इसलिए वह चुपचाप चला गया।

"मादाम," नाँनों ने कहा, जो इस वक्त अपनी काली टोपी पहने और टोकरी हाथ में लिए बाज़ार जाने को तैयार थी, "तीन फ्रांक ही काफी होंगे। बाकी आप रखिये, मैं तीन ही में काम चला लूंगी।"

"खाना नाँनों, ज़रा अच्छा पकाना। भाई भी नीचे आकर खायेंगे।"

"मुझे विश्वास है कि कोई बड़ी असाधारण बात हो रही है।" मादाम ग्रांदे ने कहा, "क्योंकि जब से हमारा विवाह हुआ है, यह तीसरी वार है कि तुम्हारे पापा ने किसी को भोजन पर आमन्त्रित किया है।"

शाम के कोई चार बजे होंगे, योज़ेन और उसकी माँ ने कपड़ा बिछा कर छः आदमियों के लिए भोजन लगा दिया। घर का मालिक दो-तीन बोतलें उस बढ़िया शराब की लाया था, जो अंगूरों की काश्त करने वाले कस्बे में कोठरियों में छिपाकर रखी जाती हैं।

शारल भोजन के कमरे में आया तो बड़ा उदास और परेशान दिखाई

दे रहा था। उसकी गतिविधि में एक विचित्र ढंग का विषादयुक्त आकर्षण उत्पन्न हो गया था। उसके चेहरे, आवाज़ और आँखों में अवसाद की ऐसी झलक थी, जो स्त्रियों को बहुत पसंद आती है। योज़ेन ने उसका मुंह ग़म से उतरा देखा, तो उसका प्रेम और भी बढ़ गया। शायद विपत्ति ने उन्हें कई और ढंग से भी एक-दूसरे के निकट कर दिया था। अब शारल वह धनी और सुन्दर नौजवान न रहा था जो योज़ेन की दुनिया से बहुत दूर बसता था। वह उसका एक पीड़ित सम्बन्धी था और दुःख किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रहने देता। स्त्रियों और देवताओं की एक विशेषता यह है कि सब पीड़ित व्यक्ति उनके संरक्षण में होते हैं। अतएव शारल और योज़ेन एक शब्द कहे बिना एक-दूसरे को भली प्रकार समझते थे। बेचारा कल का रंगीला पदच्युत होकर आज केवल एक अनाथ रह गया था, जो कमरे के एक कोने में अवाक्, शान्त और गम्भीर बना बैठा था। लेकिन कभी-कभी उसकी नज़रें अपनी चचेरी बहन की नज़रों से जा टकरातीं, जो बड़ी सहानुभूति और प्रेम से उसकी ओर तके जा रही थी और जैसे कह रही थी कि शोक और विषाद के यह विचार छोड़ो, आशा-मय भविष्य की बात सोचो, ऐसे भविष्य की जिसमें वह भी उसकी संगिनी बनने की इच्छुक थी।

सोमूर भर में ग्रांदे की दावत के समाचार ने उसकी शराब बेचने की बात से भी अधिक खलबली मचा दी, यद्यपि वह एक अपराध और अंगूर के दूसरे कृषकों से गद्दारी थी। अगर ग्रांदे ने यह दावत इस विचार से दी होती कि एक अवसर पर एलसीबायड के कुत्ते की दुम खर्च हुई थी तो शायद वह कंजूस इतिहास का महान् व्यक्ति होता। लेकिन सोमूर के जनमत का उसे तनिक भी परवाह नहीं थी। वह अपने आप को कस्बे के वासियों से बहुत श्रेष्ठ समझता था और वह सदा उनका शोषण करता था।

दे ग्रासीं लोगों को भी शीघ्र ही ग्योम ग्रांदे के दीवालिया हो जाने और आत्महत्या कर लेने की खबर मिल गई। उन्होंने फैसला किया कि

शाम को अपने मुवक्कल के घर जायेंगे। एक तो उसके भाई की मृत्यु पर शोक प्रकट करके हमदर्दी जतायेंगे और दूसरे वे यह मालूम कर सकेंगे कि उसने इन परिस्थितियों में क्रोशो लोगों को दावत क्यों दी।

ठीक पाँच बजे मजिस्ट्रेट दे बोनफोन और उसका चचा अर्थात् सरकारी वकील दोनों आ पहुँचे। इस बार वे बड़े अच्छे कपड़े पहनकर आये थे। अतिथि मेज के गिर्द बैठ गये और भोजन पर टूट पड़े। ग्रांदे बड़ा गम्भीर बना हुआ था, शारल चुप बैठा था और योज़ेन ने भी कोई बात न की। मादाम ग्रांदे ने भी नित्य से अधिक कुछ नहीं कहा। अगर यह शोक की दावत होती तो भी वातावरण इससे गम्भीर न होता। जब वे खाना समाप्त करके उठे तो शारल ने अपनी चची और बहन से कहा :

"मुझे तो अब अपने कमरे में जाने की आज्ञा दीजिये क्योंकि मुझे कई लम्बे-लम्बे मुश्किल खत लिखने हैं।"

"हाँ, बेटे जाओ।"

जब शारल चला गया और उसके चचा को विश्वास हो गया कि अब वह अपने पत्र लिखने में व्यस्त होगा और मेरी बात न सुन सकेगा तो उसने अपनी पत्नी की ओर धूर्तता से देखा और कहा :

"मादाम ग्रांदे, हम जो बातें करने वाले हैं; वे तुम्हारी समझ में बिल्कुल न आयेंगी। साढ़े सात बज गये हैं। इस समय तक तो तुम्हें सो जाना चाहिए। बेटी रात का प्रणाम।" उसने योज़ेन को प्यार किया और मां-बेटी दोनों कमरे से निकल गईं।

तब वह नाटक आरम्भ हुआ। ग्रांदे को इन्सानों का और व्यापार का बड़ा अनुभव था। जो लोग उसके हाथों क्षति उठा चुके थे, वे उसे 'बूढ़ा भेड़िया' कहकर पुकारते थे। आज उसने अपनी सारी चालबाजी का प्रयोग किया। अगर सोमूर के इस भूतपूर्व मेयर के उद्देश्य कुछ महान् होते, अगर वह सौभाग्य से सामाजिक पद में ऊंचा उठ जाता, जहाँ से वह उन समितियों का सदस्य चुना जाता जो अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का निर्णय

करती हैं और वहाँ वह अपनी इस प्रतिभा का प्रयोग करता, जो उसने स्वार्थसिद्धि द्वारा प्राप्त की थी, तो निस्संदेह वह फ्रांस की बड़ी शानदार सेवायें करता। फिर यह भी सम्भव है कि सोमूर से बाहर यह सुयोग्य टीनसाज़ बिल्कुल ही असफल रहता क्योंकि यह सच है कि कुछ पशुओं और पक्षियों की भाँति मानव मस्तिष्क को भी अगर अजनबी देश और अजनबी जलवायु में भेज दिया जाये तो वह अपनी उपयोगिता खो बैठता है।

"म⋯म⋯मजिस्ट्रेट साहब, आप क⋯कह रहे थे कि द⋯द⋯ दीवाला⋯"

यह हकलाहट का पाखंड अंगूरों का कृषक चिरकाल से करता आ रहा था, यहाँ तक कि लोग इसे स्वाभाविक दोष समझने लगे थे। इसी प्रकार वह बरसात के दिनों में बहरेपन का बहाना किया करता था। इस समय ग्रांदे का हकलाना क्रोशो लोगों को अत्यन्त अप्रिय और असह्य लग रहा था। टीनसाज़ जब चाहता किसी शब्द पर अटक जाता और उन्हें भी उलझा लेता। वे उसके शब्द समझने का प्रयत्न करते हुए विचित्र ढंग से मुंह बना रहे थे और यों होंठ हिला रहे थे जैसे ग्रांदे के बजाय खुद ही वह शब्द पूरा कर देना चाहते हों।

शायद यह उचित हो कि यहाँ ग्रांदे के बहरेपन और अटक-अटककर बोलने का इतिहास वर्णन कर दिया जाये। आँजो के इलाके में किसी की श्रवण-शक्ति उससे अच्छी न थी और न कोई इस भू-भाग की बोली इस चालाक कृषक से अधिक सफाई और रवानी के साफ बोल सकता था। लेकिन यह सब उसकी इच्छा पर निर्भर था। एक बार ऐसा हुआ था कि उसकी धूर्तता के बावजूद एक यहूदी उसे गच्चा दे गया। जब व्यापारिक बातचीत शुरू हुई तो उसने कान पर ऐसे हाथ रख लिया जैसे ग्रांदे की बातें साफ-साफ सुनना चाहता हो। फिर जब उसके बोलने की बारी आती तो किसी शब्द की खोज में इस बुरी तरह हकलाता कि ग्रांदे अपनी मानवता से विवश होकर उस मक्कार यहूदी को वे शब्द और विचार सुझा देता,

जिनकी उसे तलाश थी, बल्कि यहूदी की ओर से खुद ही युक्तियाँ जुटा लाता और इस कपटी की ओर से वह बातें कह डालता, जो खुद उसे कहनी चाहिए थीं। परिणाम यह हुआ कि वह यहूदी की ओर से बोलने लगा और यहूदी उसकी ओर से।

इस विचित्र सौदेबाजी में अंगूरों का कृषक विजयी न हो सका। जीवन में यह पहली और अन्तिम घटना थी कि उसने बुरा सौदा किया। लेकिन आर्थिक दृष्टि से चाहे वह घाटे ही में रहा हो; लेकिन उसे एक बहुत बड़ी सीख मिली थी। बाद में ग्रांदे ने उससे बड़ा लाभ उठाया। अतः वह यहूदी का कृतज्ञ था कि उसने उसे वह उपाय बताया, जिससे विरोधी झुंझला उठे और जिसके कारण वह दूसरे व्यक्ति के विचार मालूम करने में इतना व्यस्त रहे कि अपनी बात सर्वथा भूल जाये। बहरा बनना, हकलाना और असंगत बातों में उलझ जाना—यह अब ग्रांदे का स्वभाव बन चुका था लेकिन अपने व्यापारिक जीवन में उसे इन बातों की इतनी जरूरत कभी न पड़ी थी, जितनी आज पड़ रही थी। क्योंकि सबसे पहली बात तो यह थी कि वह चाहता था कि अपने विचारों की जिम्मेदारी किसी और पर डाल दे। उसकी इच्छा थी कि उसकी योजनायें खुद उसके सामने कोई दूसरा रखे। उसकी बात उसके मन में रहे और उसके वास्तविक उद्देश्य की किसी को हवा तक न लग पाये।

"मोसियो दे ब···ब···बोनफोन" तीन साल के अरसे में यह तीसरी बार ऐसा हो रहा था कि उसने नौजवान क्रोशो को दे बोनफोन कहा हो। मजिस्ट्रेट इस बात से सहज में यह नतीजा निकाल सकता था कि चालाक टीनसाज़ ने मुझे लगभग अपना दामाद स्वीकार कर लिया है।

"आप ब···ब···बता रहे थे कि बाज द···द···दीवाले के मुकदमों में क···क···कार्रवाई इस प्रकार भी रोकी जा सकती है कि क··· क···"

"हाँ, व्यापारी अदालत के हुक्म से आये दिन ऐसा होता ही रहता है।" मोसियो दे बोनफोन ने बूढ़े ग्रांदे के विचारों का अनुमान लगाते हुए

जल्दी से कहा और खुद भी उसी भाव में बह गया। "सुनिये !" वह वोला और बड़ी उत्सुकता से सारी बात की व्याख्या करने को तैयार हो गया।

"मैं स·· सुन रहा हूँ।" बूढ़े ने बड़ी नम्रता से कहा और उसकी मुखमुद्रा अत्यन्त गम्भीर हो गई। उसकी दशा उस छोटे लड़के जैसी थी, जो देखने में अध्यापक की बात बड़े ध्यान से सुन रहा है; लेकिन दरअसल मन ही मन में उस पर हँस रहा है।

"जब कोई बड़ा व्यापारी और बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति, जैसा कि आपके स्वर्गीय भाई थे····"

"मेरे भ···भ····भाई। हां फिर।"

"···दीवालिया बन जाता है····"

"द····द····दीवालिया ? क···क···आप यही क····कह रहे थे ?"

"हाँ, अगर दीवाला निकालना अनिवार्य हो जाये तो वह जिस व्यापारी अदालत के मातहत हो, वह कुछ ऋण चुकाने वाले नियुक्त कर देती है। आप मेरा मतलब समझ रहे हैं न ? इस प्रकार कारोबार बंद करने का अर्थ दीवाला नहीं है। आप समझ रहे हैं न ? दीवालिया हो जाना तो अपमान की बात है; लेकिन कारोबार बंद करने में कोई बदनामी नहीं है।"

"हाँ, यह तो बिल्कुल अ····अ····अलग बात ह···हो जाती है। बशर्ते कि इसमें अ···अ···अधिक खर्च न ह····हो।" ग्रांदे ने कहा।

"और हाँ, इस प्रकार कारोबार बंद करने की व्यवस्था व्यापारी अदालत की सहायता के बिना ही निजी तौर पर भी हो सकती है।" मजिस्ट्रेट ने नस्वार की चुटकी लेते हुए कहा, "अच्छा, अब सुनिये कि किसी के दीवालिया होने की किस प्रकार घोषणा होती है।"

"हाँ, किस प्रकार ?" ग्रांदे ने दरियाफ्त किया, "मैंने तो क···क··· कभी इस पर व····विचार नहीं किया।"

"अव्वल तो यह हो सकता है कि वह व्यक्ति उन लोगों की एक

सूची तैयार करे, जिनका उसे कर्ज़ देना है। यह काम वह खुद करता है अथवा किसी और को अधिकार दे देता है। फिर यह सूची बाकायदा रजिस्ट्री हो जाती है। दूसरी स्थिति यह हो सकती है कि कर्ज़ लेने वाले उसे दीवालिया घोषित कर दें। लेकिन यह भी हो सकता है कि न तो कर्ज़दार कोई अर्जी देता है और न ही कर्ज़ लेने वाले उसके दीवालिया होने की अदालत में कोई दरख्वास्त दर्ज कराते हैं तो देखना चाहिए कि ऐसी स्थिति में क्या हो सकता है ?"

"अच्छा तो ब···ब····बताइये।"

"ऐसी स्थिति में मरने वाले का परिवार अथवा उसके प्रतिनिधि या वकील या खुद वह व्यक्ति अगर वह मर न गया हो, या फिर उसके मित्र अगर वह भाग गया हो, उसका कारोबार बंद कर देते हैं। आप अपने भाई के मामले में शायद यही बात करना चाहते होंगे ?" मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"अरे ग्रांदे !" सरकारी वकील बोल उठा, "यह तो बड़ी अच्छी बात होगी। इज्ज़त के बारे में हम कस्बाती लोगों के अपने ही विचार होते हैं। अगर तुम अपने नाम को बदनामी से बचा लो। आखिर यह तुम्हारा ही तो नाम है···"

"यह तो बड़ी योग्यता की बात होगी।" मजिस्ट्रेट ने अपने चचा की बात काटते हुए कहा।

"निस्संदेह मेरे भ···भ····भाई का नाम ग्रांदे था। यह तो सही है और मुझे इससे इन···न····कार नहीं और फिर अगर यह उ···उ···· उपाय मेरे भतीजे के लिए उ····उ····उपयोगी सिद्ध हो। मुझे उससे ब··· ब···बड़ी मुहब्बत है। लेकिन खैर सोचेंगे। म····म···मुझे पेरिस के धोखाबाजों और उनके छ····छ···छल-कपटों की ज़रा भी तो जानकारी नहीं। और तुम जानते हो कि मैं स····स···सोमूर में पड़ा हूँ। मेरी अंगूर की फसल कटने को है, न····न····नालियों की खुदाई का काम है। गरज मेरे अपने म····म···मामलात ऐसे ही हैं जिनका मुझे द····ध्यान रखना

पड़ता है। मैंने क····क····कभी तमस्सुक स्वीकार नहीं किया। तमस्सुक ह · होता क्या है। मैंने बहुत से ल····ल·· लिये तो हैं लेकिन अपना न····न····नाम क····कभी कागज़ के पुर्जे पर नहीं लिखा। तमस्सुक ल···· ल····लेकर ब···ब····भुनाया जा सकता है। बस मैं तो इतना ही ज··· जानता हूँ। मैंने लोगों को यह क···क···कहते सुना है कि तमस्सुक ख··· ख···खरीदे जा सकते हैं।"

"हाँ।" मजिस्ट्रेट बोला, "आप बाजार से सस्ती कीमत पर उन्हें खरीद सकते हैं। समझते हैं न आप ?"

ग्रांदे ने न सुनने का बहाना करते हुए कान पर हाथ रख लिया। मजिस्ट्रेट ने फिर अपना वाक्य दोहराया।

"लेकिन ऐसा म···म····मालूम होता है कि उसके द···द···दो रुख हैं।" टीनसाज़ ने उत्तर दिया, "इस उम्र में मैं इ····इस प····प्रकार की बातों के बारे में क····क····कुछ भी न····नहीं जानता। मुझे अ···अंगूरों का द···द···ध्यान रखने के लिए यहाँ र···र···रहना ही पड़ेगा। फिर यह फसल सदा एक सी तो र····र····रहती नहीं। इस पर तो हमारी त····त····तमाम आमदनी निर्भर है। इसलिए सब से प···पहले अंगूर की फसल का ही द···द···ध्यान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त फरवाफोन में मेरा ब···ब···बहुत सा क····क····काम पड़ा है, जो मैं किसी और पर नहीं च····च····छोड़ सकता। फिर यह म···मामला मेरी स···समझ से बिल्कुल ब···बाहर है। अजब ग···ग···गड़बड़झाला है। भाड़ में जाये मैं घर च····च····छोड़कर इसके पीछे नहीं फिर सकता। आप क···क···कहते हैं कि इसका फैसला क···करने के लिए मुझे पेरिस में र····रहना होगा। अब मनुष्य प····प····पक्षी तो है नहीं कि एक समय में द···दो स्थान पर रह सके।"

"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया हूँ। देखो, तुम्हारे बहुत से पुराने परिचित और मित्र ऐसे है, जो तुम्हारे लिए बहुत कुछ करने को तैयार हैं।"

"अरे बहुत खूब।" कृषक ने अपने मन में कहा, "तो मानो तुम लोग भी कुछ इरादा कर रहे हो। है न?"

"और अगर कोई पेरिस जाये और तुम्हारे भाई के सबसे बड़े लेनदार को ढूँढ़ निकाले और उससे कहे कि...."

"हाँ, तनिक म....मेरी बात भी स...सुनो।" टीनसाज़ बीच में बोल उठा। "इससे क.......क.......कुछ इस तरह कहो। सोमूर क...के मोसियो ग्रांदे ऐ...ऐसे हैं, वे...वैसे हैं। वह अपने ब....भाई से अत्यन्त प....प...प्रेम करते हैं। उन्हें अपने भतीजे क...का भी वहुत ख...ख... ख्याल है। ग्रांदे को अपना क...कुल भी बहुत प्रिय है। वह सब क...क ...की सेवा करना चाहते हैं। उन्होंने अ...अभी अपनी अंगूरों की फ... फसल बड़े अच्छे दामों बेची है। यह मामला द...द...दीवाले तक न पहुँचना चाहिए। ल...लेनदारों की एक म....म...मीटिंग की जाये और मुख्तार नि ..नि...नियुक्त कर दिये जायें। फिर द...द....देखना ग्रांदे क....क्या करते हैं और आपके लिए भी यह ब...ब...बहुत ब... ब....बेहतर होगा कि आप ही क....कोई निर्णय कर लें। इसके बजाय कि व...वकील लोग इसमें द...द....दखल दें। क्...क्यों ऐसा ही होना चाहिए न?"

"हाँ, बिल्कुल।" मजिस्ट्रेट बोला।

"बात यह है मोसियो दे ब...बोनफोन कि मनुष्य को क....क... काम करने से पहले ब...व...भली प्रकार सोच लेना चाहिए और फिर इन्सान ज....जिस योग्य होगा उतना ह... ही तो काम करेगा। इस प्रकार का म...म....मामला तो बहुत व....विचारणीय है। वरना त....तबाही का सामना ब...ब...भी हो सकता है। क्यों, मैं स...सच कहता हूँ न?"

"निस्संदेह।" मजिस्ट्रेट ने कहा, "मेरी भी यही राय है कि कुछ महीनों तक आप यह कर्ज़ निश्चित रक़म पर खरीद सकेंगे, जो किस्तों में अदा हो जायेगी। आह! एक ज़रा से गोश्त के टुकड़े के सहारे आप

बहुत दूर तक कुत्ते को अपने पीछे लगाये रख सकते हैं। अगर आदमी के दीवालिया होने का एलान न हुआ हो तो तमस्सुक हाथ में आते ही वह व्यक्ति सब जिम्मेदारी से बरी हो जाता है।"

"जिम्मेदारी से ब···ब····बरी ?" ग्रांदे ने कान पर हाथ रखते हुए कहा, "ब···ब···बरी ! मेरी कुछ स···स····समझ में नहीं आया।"

"और, मैं आपको अभी वताये देता हूँ। आप ज़रा ध्यान से सुनिये।" मजिस्ट्रेट ज़ोर से बोला।

"मैं सु·······सुन रहा हूं।"

"तमस्सुक एक ऐसी चीज़ है, जिसकी कीमत घटती-बढ़ती रहती है। यह नतीजा जेरी बैंटम के सूद के सिद्धांत से निकाला गया है। वह एक दार्शनिक था, जिसने पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिखाया कि साहूकार के विरुद्ध जो द्वेष फैला हुआ है, वह सब निराधार है।"

"व···बहुत खूब।" ग्रांदे बोल उठा।

"और यह सब देखते हुए बैंटम के सिद्धान्त के अनुसार पैसा एक वस्तु है और उससे जो कुछ खरीदा जाता है, वह भी एक वस्तु है।" मजिस्ट्रेट कहता गया, "इससे यह सिद्ध हुआ कि तमस्सुक भी एक वस्तु है, जो इस कानून के मातहत आता है कि जितनी मांग होगी उतनी ही पैदावार होगी। अतएव दूसरी वस्तुओं के सदृश तमस्सुक भी कभी बाजार में अधिक संख्या में मिलता है कभी कम। कभी उसके दाम बढ़ जाते हैं, कभी कम हो जाते हैं। अतएव अदालत का फैसला·······अरे ! मैं भी कितना मूर्ख हूँ। क्षमा कीजियेगा। मेरा मतलब यह है कि मेरे विचार में आप बड़ी आसानी से अपने भाई के कर्जे उनकी कीमत से पच्चीस प्रतिशत कम पर खरीद सकेंगे।"

"आप ने ज···ज··जैरी बैंटम का न····नाम लिया था।"

"बैंटम अंग्रेज था।"

"वह तो पैगम्बर की भांति है जो व्यापारिक मामलों में हमारी बहुत

सी तकलीफें दूर कर सकता है।" सरकारी वकील ने हँसते हुए कहा।

"अंग्रेज क···क···कई बार बहुत अ···अक्ल की बात कह जाते हैं।" ग्रांदे ने कहा, "लेकिन अगर बैंटम के निकट मेरे ब···ब···भाई के तमस्सुक ब····ब····बेकार निकले तो? अगर मेरा अनुमान ठ···ठ···· ठीक है तो मुझे ऐसा म···मालूम होता है कि लेनदार यह करेंगे न···· न····नहीं, यह नहीं करेंगे। मैं स····स···समझ गया।"

"लीजिये, मैं आपको विस्तार से बताता हूँ।" मैजिस्ट्रेट ने कहा, "अगर ग्रांदे की फर्म के तमाम तमस्सुक आपके कब्जे में हों तो कानून की दृष्टि से आपके भाई या उनके उत्तराधिकारी किसी के एक पाई के भी क़र्ज़दार नहीं माने जा सकते। यहाँ तक तो सब ठीक-ठाक है।"

"ठीक।" ग्रांदे ने दोहराया।

"अब एक और बात सुनिये। फर्ज़ कीजिये आपके भाई के तमस्सुक कुछ नुकसान के साथ बाज़ार में बेचे जायें और फर्ज़ कीजिये आप ही का कोई मित्र उधर से गुजरते हुए तमस्सुक खरीदे तो ऐसी स्थिति में लेनदारों पर शारीरिक आतंक का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। क्योंकि यह तमस्सुक तो उन्होंने स्वेच्छा से दिये हैं। और इस प्रकार पेरिस के स्वर्गीय ग्रांदे की जायदाद पर कानून की दृष्टि से कोई कर्ज़ा बाकी नहीं रहेगा।"

"स···सच है।" टीनसाज़ हकलाते हुए बोला। "ब····ब···व्यापार तो व्यापार ही है। सो इसका तो फ···फ···फैसला हो गया। लेकिन फिर भी यह त····त····तो तुम समझते हो कि यह सब कितना क··· क···कठिन काम है। मेरे पास प···प····पैसा नहीं और न व···व···· वक्त है और फिर न···"

"हाँ, हाँ। आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। अगर आप चाहें तो आपके बदले मैं पेरिस जाने को तैयार हूँ। सफर का खर्च आप को सहन करना होगा जो कुछ बहुत अधिक नहीं होगा। मैं लेनदारों

से बातचीत करके उन्हें टाल दूंगा। यह सब तय हो जायेगा। कारोबार बन्द करने से आपको जो रुपया मिलेगा, उसमें थोड़ा-सा और मिलाना होगा ताकि तमस्सुक आपके हाथ आ जायें। इसके लिये तैयार रहियेगा।"

"वह तो हम द···देखेंगे। मैं कोई न···न···निश्चय नहीं क····कर सकता, जब तक कि मुझे पता न हो। आप ज···ज···जानते हैं मैं अपनी हैसियत से अ···अ···अधिक तो कुछ कर नहीं सकता।"

"हाँ, यह तो आप ठीक कहते हैं।"

"और आपकी व···ब···बातें भी सिर चकरा द····द····देने वाली हैं। मैं तो सुनके ब··· ब···भौंचक्का रह गया। यह मेरे ज····जीवन में पहला अवसर है कि म····म···मुझे ऐसी बातों के बारे में स···स··· सोचना पड़ा है।"

"हाँ, बेशक आप कोई बैरिस्टर तो है नहीं।"

"मैं तो एक ग़····ग़····ग़रीब अंगूरों का क····क····कृषक हूँ और जो कुछ अभी आपने व···ब····बताया है उसके बारे में भी तो क···क···· कुछ नहीं जानता। मुझे इसके बारे मे स···सोचना पड़ेगा।"

"अच्छा, तो फिर ··" मैजिस्ट्रेट ने कहा जैसे वह फिर बहस शुरू करना चाहता हो।

"बेटे!" सरकारी वकील ने विनम्र स्वर में उसे टोका।

'क्यों? प्यारे चचा।" मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया।

"देखो, मोसियो ग्रांदे को भली प्रकार समझ लेने दो कि वह क्या चाहते हैं। यह बड़ी महत्त्वपूर्ण समस्या है और इसके लिये तुम्हें उनसे आदेश ले लेने चाहिये। अब बेहतर होगा कि हमारे प्रिय मित्र सावधानी के साथ अपनी बात··· "

उसी समय दरवाज़े पर दस्तक हुई और दे ग्रांसी लोग आ पहुँचे। उनके अकस्मात् आने के कारण वूढ़ा क्रोशो अपना वाक्य भी पूरा न कर सका। फिर भी यह बाधा उसे बुरी न लगी। क्योंकि ग्रांदे उसकी ओर

कुछ संदिग्ध भाव से देख रहा था, और टीनसाज़ के मस्से से लगता था कि उसके भीतर तूफान उठ रहा है। तनिक गम्भीरता से विचार करने पर सतर्क सरकारी वकील को पता चला कि मैजिस्ट्रेट जैसे व्यक्ति को पेरिस भेजना कदाचित उचित न होगा। फिर लेनदारों से बातचीत करना और इस प्रकार के संदिग्ध मामले में पड़ना जिसमें ईमानदारी का लेश-मात्र तक न था, उसके लिए हानिकर सिद्ध हो सकता है। सीधे यही नहीं बल्कि उसने यह भी महसूस किया कि ग्रांदे कुछ भी खर्च करने को तैयार नहीं। इसलिये वह अपने भतीजे के ऐसे काम में उलझने के विचार ही से कांप उठा। अतएव उसने दे ग्रासीं लोगों के आगमन से लाभ उठाया और अपने भतीजे को बांह से पकड़कर खिड़की के निकट ले गया।

"देखो, अब इससे अधिक बढ़ने की जरूरत नहीं है।" वह बोला, "इतना जोश ही काफी है। तुम तो लड़की से शादी करने की व्यग्रता में बहुत ही आगे बढ़ गये। लानत भेजो। तुम्हें इस मामले में ऐसी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये, जैसे कि कौवा मुंह खोलकर अखरोट की ओर लपकता है। तुम थोड़ी देर के लिए अपनी नौका मुझे भी खेने दो और बादबान बस हवा के रुख लगा दो। तुम्हें क्या यह शोभा देता है कि मजिस्ट्रेट के प्रतिष्ठित पद पर होकर तुम एक ऐसे······"

उसने जल्दी से बात यहीं समाप्त कर दी क्योंकि मोसियो दे ग्रासीं अपना हाथ बढ़ाते हुए बूढ़े टीनसाज़ से कह रहा था :

"ग्रांदे, हमने आपके परिवार की इस शोकप्रद विपत्ति का हाल सुना है। ग्योम ग्रांदे फर्म की तबाही और आपके भाई की मृत्यु का पता चला तो हम इस दुख में आपसे सहानुभूति प्रकट करने आये हैं।"

"दुर्भाग्य की बात यह है।" सरकारी वकील ने उसी समय बात काटते हुए कहा, "कि छोटे ग्रांदे का देहान्त हो गया। अगर उन्हें अपने भाई से सहायता मांगने का खयाल आ जाता तो कदाचित आत्महत्या न करते। यह हमारे पुराने और प्रिय मित्र जो सौजन्य की मूर्ति हैं, पेरिस

में ग्रांदे फर्म के तमाम कर्ज़े चुका देने को तैयार हैं। हम अपने मित्र को इस परेशानी से बचाने का यथासम्भव प्रयत्न कर रहे हैं, क्योंकि आखिर यह सब काम वकील ही के करने का है। मेरे भतीजे ने जिम्मा लिया है कि वह तुरन्त पेरिस पहुँचकर लेनदारों से फैसला करके उनकी माँगें पूरी कर दे।"

यह शब्द सुनकर तीनों ग्रासीं लोग भौचक्के-से रह गये। ग्रांदे ने ऐसा भाव बनाया जैसे उसने विवश होकर यह प्रस्ताव स्वीकार किया हो क्योंकि विचार-विमग्न वह अपनी ठोड़ी थपथपा रहा था। ग्रासीं लोग यहाँ आते हुए ग्रांदे की कंजूसी की बात कर रहे थे, और उसे भाई का हत्यारा तक कहने की हद तक पहुँच गये थे।

"आह, वही हुआ जिसकी मुझे आशा थी।" साहूकार अपनी पत्नी की ओर देखते हुए बोला, "मादाम दे ग्रासीं अभी यहाँ आते हुए मैं तुमसे भला क्या कह रहा था? मैंने कहा था न कि ग्रांदे तो ऐसे व्यक्ति हैं कि इज्जत बनाये रखने के लिए वह सिर-धड़ की बाजी लगा देंगे। अपने नाम पर वह किसी प्रकार का धब्बा लगने के विचार तक को सहन नहीं करेंगे। इज्जत के बिना पैसा तो एक रोगमात्र है। ओह, हम कस्बाती लोग इज्जत के मामले में बहुत ही भावुक हैं। बहुत खूब, ग्रांदे वाकई तुम बेहद शरीफ हो। मैं पुराना सिपाही हूँ और मुझे लगी-लिपटी बातें नहीं करनी आतीं। जो कुछ मेरे मन में आता है, स्पष्ट कह देता हूँ। मैं कसम खा कर कहता हूँ आपने यह बहुत ही महत्वपूर्ण काम किया है।"

"लेकिन यह क····क····काम बहुत म···म···मँहगा सौदा है।" साहूकार का जोश देखकर टीनसाज़ ने हकलाते हुए कहा।

"मगर मेरे अच्छे ग्रांदे (मैजिस्ट्रेट साहब, आप खफा न हों) यह तो एक व्यापारिक मामला है।" दे ग्रासीं ने कहा, "और इसका फैसला करने के लिए एक अनुभवी व्यापारी की जरूरत है। आय-व्यय का पूरा हिसाब रखना पड़ेगा, फिर सूद के दर आपको कंठस्थ होने चाहिये। मुझे

अपने व्यापार के सम्बन्ध में पेरिस जाना होगा। और इसके साथ ही मैं आपका काम····"

"फिर हम द···द···देखेंगे और क···क···कोशिश करेंगे कि ऐसा प···प····प्रबन्ध हो जाये ज···जिससे मैं आप हर म····म····मामला आपस ही में तय कर लें। लेकिन यह मैं न···न···नहीं चाहता कि मैं कोई ऐसा काम करने पर मजबूर हो जाऊँ जो म···म····मुझे नहीं करना चाहिये।" ग्रांदे ने बात जारी रखी, "क्यों आपको मालूम होना चाहिये कि मैजिस्ट्रेट साहब चाहते हैं कि खर्च मैं अदा करूँ और बात भी माकूल है।" ग्रांदे इन अन्तिम शब्दों पर तनिक भी न हकलाया।

"अरे!" मादाम ग्रासीं बोलीं, "भला यह क्यों? पेरिस में रहना तो बड़ी खुशी की बात है। मैं तो वहाँ बिना खर्चे के भी जाने को तैयार हूँ।"

उसने अपने पति को संकेत से उकसाया कि वह इस अवसर से लाभ उठाये ताकि उनके प्रतिद्वन्द्वियों को झेंपना पड़े और उनकी सारी योजनायें धरी रह जायें। फिर उसने पराजित क्रोशो लोगों पर एक ऐसी दृष्टि डाली कि उन पर घड़ों पानी पड़ गया। ग्रांदे साहूकार का कोट पकड़कर उसे एक तरफ ले गया।

"मुझे मैजिस्ट्रेट से कहीं अधिक आप पर भरोसा होगा" उसने कहा, "और इसके अतिरिक्त," उसका मस्सा तनिक कसमसाया, "मुझे वहाँ और भी काम करना है। मैं किसी कारोबार में रुपया लगाना चाहता हूँ। मेरे पास कुछ हजार फ्रांक हैं, जो मैं सरकारी कर्ज़े के तौर पर देना चाहता हूँ और उनके लिए इससे अधिक खर्च करने का मेरा विचार नहीं है। अब जहाँ तक मुझे जानकारी है हर महीने के अन्त में दाम गिर जाते हैं। मुझे उम्मीद है आप ये सारी बातें अच्छी तरह जानते होंगे।"

"बहुत खूब! हाँ, खयाल तो है कि मुझे कुछ आता है। अच्छा तो फिर आपके लिए मुझे हजारों लीवर के कर्ज़े खरीदने होंगे?"

"हाँ, शुरू में तो इतना ही पैसा लगाऊँगा। लेकिन आप किसीसे इसका जिक्र न कीजियेगा। मैं यह खेल बिना किसीको बताये ही खेलना

चाहता हूँ। आप हर महीने के अन्त में मेरे लिये खरीद लीजियेगा। लेकिन क्रोशो लोगों को बिलकुल इसका पता न चले क्योंकि इससे वे चिढ़ जायेंगे। अब आप पेरिस तो जा ही रहे हैं, लगे हाथों यह भी देख लें कि मेरे भतीजे के लिए क्या दांव खेला जा सकता है।"

"वह तो स्पष्ट बात है। मैं कल ही पेरिस रवाना हो जाऊँगा" दे ग्रासीं उच्च स्वर में बोला, "और फिर आपसे सलाह करने मैं किसी और समय चला आऊँगा, कौनसा समय अधिक उचित होगा ?"

"खाने से पहले, कोई पांच बजे।" अंगूर के कृषक ने हाथों को मलते हुए कहा।

कुछ देर तक दोनों विरोधी गिरोह एक दूसरे को ताकते रहे। आख़िर दे ग्रासीं ने निस्तब्धता भंग की। वह ग्रांदे के कंधे पर हाथ मारते हुए बोला, "आप जैसा अच्छा चचा मिलना भी कितने सौभाग्य की····"

"ह····हाँ हाँ···हाँ।" ग्रांदे ने फ़िर हकलाते हुए कहा, "किसी प्रकार का द···द···दिखावा किये ब···ब···बिना मैं एक अच्छा ही च···चचा हूँ। मुझे अपने ब····ब···भाई से म···म····मुहब्बत थी। मैं इसका प्रमाण भी द··दूंगा अगर···अगर···अगर मैं अ····अ···अधिक ख··· खर्च····"

सौभाग्यवश इस वाक्य पर साहूकार ने उसे टोक दिया।

"अच्छा, ग्रांदे, अब मुझे चलना चाहिये। मैंने जो दिन निश्चित किया था अगर उससे पहले ही रवाना होना है तो कुछ मामले ऐसे हैं जिन्हें जाने से पहले मुझे देखना होगा।"

"अच्छा ठ·· ठ····ठीक है। मुझे भी मैजिस्ट्रेट क्रोशो के क····क··· कहने के अनुसार इस विषय में कुछ व····व···विचार करना है।"

"लानत हो इस सारे किस्से पर ! मुझे तो दे बोनफोन भी नहीं कहा गया।" मैजिस्ट्रेट ने जलकर सोचा और उसका चेहरा उदास पड़ गया। वह ऐसे जज की भाँति दिखाई दे रहा था, जो मुकदमे से ऊब गया हो।

दोनों दलों के सरदार एक साथ बाहर निकले। दोनों के दोनों ग्रांदे

का सुबह वाला छल-कपट भुला चुके थे और उसका विश्वासघात उनके मस्तिष्क से निकल चुका था। उन्होंने एक दूसरे की टोह लेनी चाही; लेकिन कोई नतीजा न निकला। परिस्थितियों ने जो यह नया पलटा खाया था इसमें ग्रांदे का वास्तविक उद्देश्य (अगर उसका कोई उद्देश्य था तो) कोई भी न जान सका।

"क्या आप हमारे साथ मादाम दोरसों बाल के यहाँ चलेंगे ?" ग्रासीं ने सरकारी वकील से पूछा।

"हम उनके यहाँ बाद में जायेंगे।" मैजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया।

"अगर मेरे चचा सहमत हों तो पहले हम मादमुआजेल ग्रेबोकोर के पास जायेंगे। मैंने उन्हें बचन दिया था कि रात को थोड़ी देर के लिए अवश्य आऊँगा।"

"अच्छा तो हम फिर मिलेंगे।" मादाम दे ग्रासीं ने मुस्कराते हुए कहा।

जब दे ग्रासीं लोग क्रोशो लोगों से कुछ दूर निकल आये तो ओदल्फ ने अपने पिता से कहा, "ये लोग अजब दुबिधा में पड़ गये हैं न ?"

"तुम।" उसकी माँ ने उत्तर दिया, "सम्भव है कि वे हमारी बातें सुन लें। इसके अतिरिक्त ऐसी बात मुँह से निकालना अशिष्टता है। यह तो कालेज के लड़कों की-सी बातें हैं।"

"क्यों चचा ?" मैजिस्टेट ने अब देख लिया कि ग्रासीं लोग दूर निकल गये हैं तो ज़ोर से कहा, "मुझे शुरू में तो मैजिस्ट्रेट दे बोनफोन समझा गया और अन्त में महज़ क्रोशो ही रह गया।"

"मैंने भी महसूस किया था कि तुम्हें यह बात बहुत बुरी लगी और फिर ग्रासीं लोगों ने तो हमारा बेड़ा ही गर्क कर दिया। तुम समझदार तो अवश्य हो लेकिन साथ ही मूर्ख भी हो। ग्रांदे ने कहा है अच्छा देखेंगे। इस बात से उन्हें उम्मीद बँध गई है। मगर ज़रा देखते जाओ। तुम धैर्य रखो बेटे, योज़ेन आखिर तुम्हीं से शादी करेगी।"

कुछ क्षणों में ग्रांदे के उदार निर्णय की खबर एकदम तीन परिवारों

में पहुँच गई और सारे शहर में उसके भ्रातृ-प्रेम की चर्चा होने लगी। अंगूर के कृषकों से की गई प्रतिज्ञा को भंग करके अपनी फसल का सौदा कर लेने की बात अब सभी भूल चुके थे। प्रत्येक व्यक्ति उसकी उदारता और सम्मान-रक्षा के भाव की प्रशंसा कर रहा था क्योंकि उसमें उन्हें इन गुणों के विद्यमान होने की सम्भावना न थी। फ्रांसीसी चरित्र की विशेषता है कि जब उनके क्षितिज पर कोई नक्षत्र उभरता है तो उनकी भावनायें उत्तेजित हो जाती हैं और वे या तो जोश में आ जाते हैं या बिगड़ उठते हैं। किसी बात में तनिक अतिशयोक्ति हो सही, बस वे मस्त हो जाते हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रों और जनसाधारण में स्मरणशक्ति नहीं होती ?

ग्रांदे ने अपने घर का दरवाजा बंद करते हुए नाँनों को आवाज़ दी।

"देखो, सो न जाना।" वह बोला, "और कुत्ते को भी अभी मत खोलना। एक काम है, जो तुझे और मुझे मिलकर करना है। कोरनिवाये ग्यारह बजे फरवाफों से गाड़ी लेकर आयेगा तुम बैठकर उसका इन्तजार करो और चुपचाप उसे भीतर बुला लेना। खयाल रखना वह दरवाज़ा न खटखटाये और बता देना कि वह शोर न मचाये। अगर रात को कोई गड़बड़ करे तो पुलिस वाले पीछे पड़ जाते हैं। इसके अलावा मेरे बाहर जाने की सूचना सारे मुहल्ले को देना जरूरी नहीं।"

यह आदेश देकर ग्रांदे ऊपर अपने कमरे में चला गया। नाँनों को उसके चलने-फिरने और बड़-बड़ करने की आवाज़ मिल रही थी। लगता था कि वह बड़ी सावधानी से कमरे का कोना-कोना छान रहा है। यह स्पष्ट था कि वह अपनी पत्नी और बेटी को जगाना नहीं चाहता। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह अपने भतीजे के मन में किसी प्रकार का संदेह उत्पन्न होने देना नहीं चाहता था। इसलिए जब उसने नौजवान के कमरे में बत्ती जलती देखी तो मन ही मन में उसे कोसने लगा।

आधी रात के लगभग योज़ेन को ऐसी आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई मरने वाला कराह रहा हो। उसके विचारों में प्रतिक्षण अपना चचेरा

भाई बसा रहता था इसलिए यह मरने वाला भी उसे शारल ही जान पड़ा। सम्भव है कि उसने आत्म-हत्या कर ली हो। उसने शीघ्रता से एक कम्बल अपने गिर्द लपेटा, जिसके साथ टोपी भी थी और उसे देखने चल दी। शुरू में तो झरोखों में से आता हुआ प्रकाश देखकर वह डर-सी गई कि कहीं घर में आग न लग गई हो। लेकिन जल्द ही उसका डर दूर हो गया। बाहर उसे नाँनों के भारी कदमों की चाप सुनाई दे रही थी। और घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ों के साथ-साथ नौकर की भी आवाज़ आ रही थी।

"क्या पापा शारल को कहीं ले जा रहे हैं ?" उसने अपने मन में सोचा। फिर उसने बहुत ही धीरे-धीरे किवाड़ खोले ताकि कब्जों में से चर-चराहट की ध्वनि उत्पन्न न हो और बाहर देखने लगी।

सहसा उसकी आंखें पिता की आंखों से मिलीं और भय के मारे उसका रक्त जम-सा गया यद्यपि वे आँखें सूनी-सूनी थीं और पिता की दृष्टि किसी विशेष वस्तु पर नहीं पड़ रही थीं। नाँनों और टीनसाज़ कोई चीज उठाये बाहर जा रहे थे, जो जंजीर द्वारा एक मोटे डंडे से लटकी हुई थी। डंडे का एक सिरा ग्रांदे के कंधे पर था और दूसरा नाँनों के। यह चीज ऐसे लम्बे से कनस्तर की शक्ल की थी जैसे ग्रांदे अवकाश के क्षणों में रसोई में बैठकर अक्सर बनाया करता था।

"बीवी मरियम की कसम ! साहब, यह तो बहुत ही भारी है।" नाँनों ने धीरे से कहा।

"बात यह है कि इसमें सिर्फ पैसे भरे हुए हैं।" टीनसाज़ ने उत्तर दिया, "जरा ध्यान से चलो वरना तुम मोमबत्ती गिरा दोगी।"

जंगले के दर्म्यान प्रकाश के लिए सिर्फ एक बत्ती जल रही थी।

"कोरनिवाये !" ग्रांदे ने चौकीदार से बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से पूछा, "क्या तुम अपना पिस्तौल साथ लाये हो ?"

"नहीं साहब, भगवान् की कृपा चाहिए। पैसों के एक पीपे के लिए डर किस बात का है ?"

"हां, खैर कोई बात नहीं।" ग्रांदे ने कहा।

"फिर हम शीघ्र ही रास्ता तय कर लेंगे।" चौकीदार ने बात जारी रखी, "आपके किरायेदारों ने अपने बढ़िया घोड़े चुनकर भेजे हैं।"

"बहुत खूब! तुमने उन्हें यह तो नहीं बताया कि मैं कहाँ जा रहा हूँ?"

"यह तो मुझे खुद भी पता न था।"

"अच्छा, गाड़ी खूब मज़बूत है न?"

"जी हाँ, बहुत मजबूत है। इन छोटे-छोटे पीपों का तो वज़न ही क्या है? यह गाड़ी तो ऐसे दो तीन हज़ार डिब्बे ले जा सकती है।"

"अच्छा" नाँनों बोली, "इन सबका वज़न कम से कम अठारह बीस मन तो अवश्य होगा!"

"नाँनों, तुम अपनी बकवास बन्द करो। मेरी पत्नी से कह देना मैं ज़रा गांव जा रहा हूँ और रात के भोजन के समय तक लौट आऊंगा। जल्दी करो, कोरनिवाये हमें नौ बजे से पहले आँजे पहुँच जाना चाहिए।"

गाड़ी रवाना हो गई। नाँनों ने फाटक की कुंडी चढ़ा दी। कुत्ते को खोल दिया और फिर कंधे पर चोट लग जाने के बावजूद लेटते ही सो गई। मुहल्ले भर में किसी को ग्रांदे की यात्रा अथवा उसके उद्देश्य की खबर तक न हुई। टीनसाज़ बड़ा ही सावधान था। इस सोने से भरे घर में कभी किसी ने एक पैसा भी इधर-उधर पड़ा न देखा था। आज सुबह उसने घाट पर लोगों को कहते सुना था कि नाँत में कुछ जहाज़ तैयार किये जा रहे हैं, जिसके कारण सोना इतना अलभ्य हो गया है कि वहां साधारण दर से दुगने दामों पर बिकता है और इसलिए लाभ की आशा से आँज़े में बहुत से लोग सोना खरीद रहे हैं। बूढ़े टीनसाज़ ने यह सुनते ही अपने किरायेदारों के घोड़े मांगे और आँज़े जाकर सोना बेंचने की तैयारी कर ली। इसके बदले में उसे हुंडी मिल सकती थी, जिससे सरकारी कर्ज़ के कागज़ खरीदे जा सकते थे और सोना बेंचने से जो लाभ होगा, वह अलग।

"मेरे पापा कहीं बाहर जा रहे हैं।" योज़ेन ने अपने मन में सोचा। उसने सीढ़ियों पर खड़े-खड़े सारी बातें सुन ली थीं।

घर में एक बार फिर निस्तब्धता छा गई। सोमूर की गलियों में गाड़ी के पहियों की खड़खड़ाहट दूर तक होती चली गई और अंत में सुनाई देना बन्द हो गई। इतने में योज़ेन को वह आवाज़ सुनाई दी, जो उसके कानों तक पहुंचने से पहले ही दिल में उतर गई थी। यह आवाज़ उसके ऊपर की दीवारों में गूँज रही थी और उसके चचेरे भाई के कमरे से आ रही थी। उसके दरवाज़े के नीचे प्रकाश की एक महीन सी लकीर नज़र आ रही थी। यह लकीर अंधेरे में से गुजरती हुई पुराने ज़ीने पर पड़ रही थी, जहाँ प्रकाश की एक धारी-सी बन गई थी।

"वह कष्ट में है।" यह कहते हुए वह कई सीढ़ियां ऊपर चढ़ गई।

दूसरी आह सुनते ही वह ऊपर दहलीज़ तक पहुँच गई। सामने दर-वाज़ा खुला पड़ा था। योज़ेन ने उसे धक्का देकर चौपट खोल दिया। शारल टूटी-फूटी पुरानी सी आराम-कुर्सी पर पड़ा सो रहा था। उसका सिर एक ओर को लुढ़का हुआ था और उसका लटका हुआ हाथ लगभग फर्स को छू रहा था। कलम उसके हाथ से गिरकर नीचे उसकी अंगुलियों के पास पड़ी थी। इस स्थिति में लेटे हुए उसकी सांस तेज़ झटकों के साथ आ रही थी। जिससे योज़ेन डर गई और जल्दी से कमरे में चली गई।

"वह बहुत थक गये होंगे।" उसने मेज़ पर बंद किये हुए दस-बारह पत्रों को पड़े देखकर मन में सोचा। उसने पते पढ़े। मेसर्ज़ फेरी ब्रायल-मान एंड को० गाड़ीसाज़। मोसियो लाईको बजाज़ आदि आदि।

"मालूम होता है यह अपना हिसाब चुकता कर रहे है ताकि जितनी जल्दी हो सके फ्रांस से बाहर चले जाएं।" उसने सोचा।

उसकी दृष्टि दो खुले पत्रों पर जा पड़ी। उनमें से एक पर लिखा था—"मेरी प्यारी आनेत।"

वह चकित-सी रह गई और एक क्षण तक और कुछ भी न देख सकी। उसका हृदय तीव्र गति से धड़कने लगा और उसे ऐसा लगा जैसे उसके पांव फर्श पर चिपक कर रह गये हों।

"उनकी प्यारी आनेत! वह किसी से प्रेम करते हैं। कोई उनको चाहता है।........फिर तो तनिक भी किसी प्रकार की आशा नहीं की जा सकती......देखूं तो उन्होंने उसे लिखा क्या है।" ये विचार उसके मन-मस्तिष्क में कौंद गये। उसे ये अक्षर दीवारों पर, फर्श पर, हर जगह लिखे हुए नज़र आने लगे, जैसे इन शब्दों में आग की सी दमक हो।

"क्या मुझे अभी से उनकी ओर से निराश हो जाना चाहिए.......लेकिन अगर मैं इसे पढ़ लूँ तो!"

उसने शारल की ओर देखा। उसका सिर धीरे से हाथों में लिया और कुर्सी की पुश्त से लगा दिया। शारल बिलकुल बच्चे के सदृश उसके हाथों में आ गया जो सोते हुए भी यह जानता है कि उसकी मां उस पर झुकी हुई है और विना जागे ही अपनी मां के चुम्बन को महसूस कर लेता है। योज़ेन ने भी मां के सदृश उसका लटकता हुआ हाथ उठाकर सीधा किया और माँ के सदृश ही उसके बालों को नर्मी से चूम लिया। "प्यारी आनेत!" कोई भूत प्रेत चीख चीख कर यह शब्द उसके कानों में कह रहा था।

"मैं जानती हूँ कि यह बात है तो खराब। लेकिन मैं यह पत्र अवश्य पढूंगी।" वह बोली।

उसने गर्दन घुमाली। स्वाभिमान उसे धिक्कार रहा था। जीवन में पहली बार उसके हृदय में नेकी और बदी में द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। इससे पहले उसने कभी कोई ऐसी बात न की थी, जिसके कारण उसे लज्जित होना पड़े। आखिर प्रेम और उत्सुकता की जीत हुई। पत्र के एक-एक वाक्य पर उसके दिल की धड़कनें बढ़ती गई और नाड़ी की तीव्र गति ने उसके शरीर में आग-सी भरदी और प्रथम प्रेम की कोमलतम भावनायें उत्तेजित हो उठीं।

"मेरी प्यारी आनेत !

संसार की कोई शक्ति हमें अलग न कर सकती थी सिवाय इस दुर्भाग्य के। यह ऐसा दुर्भाग्य है जिसकी मनुष्य कल्पना तक नहीं कर सकता। मेरे पिता ने अपने हाथों अपनी जान ले ली है। मेरी और उनकी जायदाद ऐसी लुटी है कि उसके फिर प्राप्त होने की आशा भी नहीं की जा सकती। मैं ऐसी उम्र में अनाथ हुआ हूँ जब मुझ जैसा लालन-पालन पाने वाला नौजवान सिर्फ बच्चा समझा जाता है। लेकिन अब मुझे प्रयत्न करके उस अन्धेरे गढ़े से निकलना है, जिसमें मुझे भाग्य ने ढकेल दिया है। आज की रात मैंने भविष्य की योजनाएं बनाने में व्यतीत की है। मैं एक बहुत ही ईमानदार व्यक्ति की हैसियत से फ्रांस छोड़कर चला जाना चाहता हूँ। लेकिन इस समय मेरे पास सौ फ्रांक भी तो नहीं हैं, जिन्हें मैं अपना कह सकूं और जिनसे मैं अमरीका अथवा इंडीज़ जाकर अपनी किस्मत आज़मा सकूँ। हाँ मेरी प्यारी आनेत, मैं धन की खोज में बहुत दूर भयानक स्थानों में जा रहा हूँ। ऐसे स्थानों में सुना है कि बिगड़ी शीघ्र और अवश्य बन जाती है। जहाँ तक पेरिस में रहने की बात है तो ऐसा करने को मेरा जी नहीं मानता। एक दीवालिये के बेटे को जिस अवज्ञा, उपेक्षा और अपमान का सामना करना पड़ता है, वह मुझसे सहन न हो सकेगा। हे भगवान, मैं बीस लाख का ऋणी हूँ!...मैं तो एक सप्ताह के भीतर ही किसी से अवश्य भिड़ पड़ूँगा। इसलिए मैं पेरिस नहीं लौटूंगा। वह सूक्ष्मतम भाव, वह निस्वार्थ लगाव जो मनुष्य के मन को मोह लेता है अर्थात् तुम्हारा प्रेम भी मुझे वापस न बुला सकेगा। अफसोस ! मेरी प्यारी मेरे पास इतने पैसे नहीं कि तुम तक पहुँच सकूँ और आखिरी बार तुम्हें प्यार कर सकूँ। वह प्यार जो मुझे भावी कार्यों के लिए शक्ति पहुँचाता रहे...."

"बेचारा शारल ! मैंने अच्छा ही किया जो यह पत्र पढ़ लिया। मेरे पास पैसे हैं। वह मैं इन्हें दे दूँगी।" योज़ेन ने कहा और जब उसके आँसू थमे तो उसने फिर पत्र पढ़ना शुरू किया।

"मैंने तो अभी दरिद्रता की कठोरताओं पर विचार भी नहीं किया है। अगर मेरे पास सौ लूई भी निकल आएं तो वे किराये में चले जायेंगे, फिर मेरे पास व्यापार के लिए तो एक पाई भी न बचेगी। लेकिन नहीं मेरे पास सौ लूई तो क्या सौ पैसे भी न निकलेंगे। मुझे तो कुछ अंदाज़ा ही नहीं कि पेरिस में कर्ज़ा चुकाने के उपरांत मेरे पास कुछ बचेगा या नहीं। अगर कुछ न बचा तो मैं नाँत पहुँचकर मेहनत-मज़दूरी से किराया जमा करूँगा। मैं सबसे निचली सीढ़ी से चढ़ना शुरू करूँगा, जैसा कि अकसर इंडीज़ जाने वाले साहसी लोगों ने किया है और वहाँ से धनी बनकर लौटे हैं। आज मैंने बड़ी गम्भीरता से अपने भविष्य पर विचार किया। मेरे लिए यह काम दूसरों की अपेक्षा अधिक कठिन है क्योंकि मैं ऐसी माँ का लाडला हूँ, जो मुझे देवता की तरह पूजती थी और पिता ने मेरे चाव-चोंचलों में कोई कसर उठा नहीं रखी थी और फिर मुझे इस दुनिया में आते ही आनेत का प्रेम प्राप्त हुआ। मैंने अभी तक जीवन के सुख ही देखे हैं और ऐसी प्रसन्नता कभी स्थिर नहीं हो सकती। फिर भी प्यारी आनेत, मुझ में इतना धैर्य और दृढ़ निश्चय है कि जिसकी मुझ जैसे प्रमादी युवक से आशा नहीं हो सकती। विशेषकर ऐसे युवक से जिसने बचपन से खुशियों के अतिरिक्त कुछ देखा ही न हो, जिसकी आदतें पेरिस की सुन्दरतम महिला ने बिगाड़ दी हों, धन जिसकी लौंडी हो और जिसकी इच्छाएं उसके पिता के लिए कानून का दर्जा रखती हों। वह पिता जो···आह! मेरे पिता····आनेत वह मर चुके हैं। अच्छा तो मैंने गम्भीरता से अपनी और तुम्हारी स्थिति के बारे में सोचा है। पिछले चौबीस घंटे में मैं बहुत बड़ा हो गया हूँ। प्यारी आना अगर मुझे साथ रखने के लिए तुम अपनी विलासिता, थियेटर का वह बाक्स और अपने सिंगार की वस्तुएं सभी कुछ त्याग दो, तब भी तुम मेरे विलासी जीवन की आवश्यक वस्तुएं जुटा न सकोगी। और इसके अतिरिक्त मैं तुम्हें अपने लिए ऐसा त्याग करने की आज्ञा भी नहीं दे सकता। इसलिए आज हम हमेशा के लिए अलग होते हैं।"

"अच्छा तो पत्र उससे विदा लेने के लिए लिखा गया है। क्वांरी मरियम की कसम! कितनी खुशी की बात है।"

योज़ेन खुशी से कांप रही थी। शारल कुर्सी पर तनिक हिला और योज़ेन के भीतर भय की तरंग दौड़ गई। सौभाग्य से वह जागा नहीं। उसने फिर पढ़ना शुरू किया।

"मैं वापस कब आऊंगा ? मैं कुछ नहीं कह सकता, उन गर्म देशों में योरप के रहने वाले अपने समय से पहले बूढ़े हो जाते हैं। विशेषतः वे लोग जिन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता है। आओ हम भविष्य के बारे में सोचें और प्रयत्न करें कि अपने आपको दस साल बाद के जमाने में देखें। उस दस साल के अरसे में तुम्हारी नन्हीं लड़की अठारह साल की हो चुकी होगी और सदा तुम्हारे साथ रहा करेगी। जिसका मतलब यह है कि वह जासूसी का काम किया करेगी। अगर यह दुनिया तुम्हें निष्ठुरता से जाँचेगी तो सम्भव है तुम्हारी बेटी इससे भी अधिक निष्ठुरता से काम ले और इस प्रकार की कृतघ्नता जवान लड़की का स्वभाव है और हम जानते हैं कि यह दुनिया ऐसी बातों के बारे में क्या राय रखती है। आओ हम इससे सीखलें और बुद्धिमता से काम लें। तुम सिर्फ इतना करना कि हर्ष और उन्माद के इन चार सालों की स्मृति अपने हृदय-प्रदेश में सुरक्षित रखना, जैसे मैं उसे अपने हृदय में सम्भालकर रखूंगा। और अगर सम्भव हो सके तो अपने इस अभागे मित्र से वफादारी करना। प्यारी आनेत! मैं तुम से अधिक नहीं मागूँगा क्योंकि तुम जानती हो कि मुझे अपने आप को बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप बनाना है। मैं विवश हूँ कि जिन्दगी को एक व्यापारी की दृष्टि से देखूं और अपनी योजनायें कठोर वस्तुस्थिति के आधार पर बनाऊँ। इसलिए जीवन के इस नये मार्ग में विवाह को आवश्यक समझता हूँ और मैं तुम्हारे सामने स्वीकार करता हूँ कि सोमूर शहर में मेरी एक चचेरी बहन है, जिसके रंग-रूप, स्वभाव और शिष्टता को तुम जरूर पसन्द करोगी और फिर मालूम होता है कि उसके पास…"

"पत्र लिखते हुए वह बहुत ही थक गये होंगे तभी तो यों बीच में छोड़ दिया।" योज़ेन ने पत्र को यों अधूरा छूटा देखकर मन में सोचा।

यह सम्भव नहीं था कि एक निरीह लड़की इस पत्र की स्वार्थ-परता और निष्ठुरता को भांप लेती। नौजवान लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा धार्मिक ढंग से हो, जैसे कि योज़ेन की हुई थी तो वे सदा निरीह और भोली-भाली रहती हैं और उन्हें दुनिया का कोई ज्ञान नहीं होता। जब वे प्रेम-नगर में कदम रखती हैं तो उन्हें प्रेम के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। उन्हें अपनी आत्माएं स्वर्गीय आलोक से परिपूर्ण जान पड़ती हैं, जिसका प्रकाश उनके प्रेमियों पर पड़ता है और वे उन्हें अपनी ही भावनाओं की आग में चमकता-दमकता देखती हैं। नेकी में विश्वास और सचाई में भरोसा ही एक स्त्री की भूलों का कारण होता है। "मेरी प्यारी आनेत—मेरी डार्लिंग।" के शब्द योजेन के हृदय में प्रेम की रागिनी के सदृश गूंज रहे थे। इन शब्दों ने किसी वाद्य के संगीत की भांति उसकी आत्मा में हलचल मचा दी और वे उसके कानों को इतने भले लग रहे थे, जितने कभी गिर्जे के धार्मिक गीत लगा करते थे।

वे आँसू भी, शारल की आँखों के गिर्द जिनके स्पष्ट चिह्न थे, उसके हृदय की पवित्रता और स्निग्धता का प्रमाण थे, जो नौजवान लड़कियों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। वह कैसे जान लेती कि अगर शारल अपने पिता के लिये इतना दुखी और शोकातुर है तो इसका कारण यह नहीं कि वह पिता से प्यार करता है, कारण बल्कि यह है कि पिता उसे प्यार करता था।

मोसियो और मादाम ग्योम ग्रांदे ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला था। धन से जो खुशी भी खरीदी जा सकती है, वे उसे जुटा देते थे। इसलिये कोई कारण न था कि वह अपने मन में द्वेष पाले, जो पेरिस के धनी परिवारों के नौजवान अक्सर पालते हैं। जब वे पेरिस की खुशियों को अपने गिर्द फैली देखते हैं जो ऐसी वस्तुओं की इच्छा करने लगते हैं

जो उस समय उनकी पहुँच से बाहर होती है। योजनायें बनाते हैं जो पूरी नहीं होतीं। तब वे सोचने लगते हैं कि जब तक हमारे माता-पिता जीवित हैं, हमें यह खुशियाँ मयस्सर नहीं आयेंगी।

पिता की इस उदारता के फलस्वरूप शारल के हृदय में पिता के प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया था और यह प्रेम असीम था, इसमें किसी दूसरे विचार को दखल न था। लेकिन इसके बावजूद शारल पक्का पेरिस ज़ादा था। वह बिल्कुल पेरिस वालों के ढंग से सोचता था। खुद आनेत ने उसे यह शिक्षा दी थी कि कोई कदम उठाने से पहले उसके परिणाम सोचे। देखने में वह अवश्य नौजवान था, मगर उसका मन-मस्तिष्क नौजवानों जैसा न था। उसने इस दुनिया की घृणित शिक्षा प्राप्त की थी, जहाँ कम से कम विचार और शब्द में एक शाम को इतने अपराध किये जाते हैं, जितने अदालत के पूरे सेशन में पेश नहीं होते। जहाँ बड़े-बड़े आदर्श महज़ एक तीक्ष्ण वाक्य से झुठला दिये जाते हैं। और जहाँ उसी मनुष्य को दृढ़ और सबल समझा जाता है जो चीज़ों को उनके वास्तविक रूप में देखता है। चीज़ों को उनके वास्तविक रूप में देखने का अर्थ यह है कि किसी भी चीज़ में आस्था न रखना—किसी भी व्यक्ति और उसके प्रेम और मित्रता पर भरोसा न करना, यहाँ तक कि घटनाओं पर भी विश्वास न करना क्योंकि घटनायें झुठलाई जा सकती है अथवा गढ़ी जा सकती हैं। चीज़ों को उनके वास्तविक रूप में देखने के लिये तुम्हें सुबह-शाम अपने मित्र के धन को आँकते रहना चाहिये और तुम्हें अपने आप उचित अवसर का पता चल जाना चाहिये कि अब किसी बात में दखल देने अथवा उसे तोड़ने-मरोड़ने से तुम्हारा अपना स्वार्थ सिद्ध हो सकता है। अपना मत स्थगित करते रहो। किसी कलाकृति अथवा भले काम की प्रशंसा करने में उतावलेपन से काम न लो। अलबत्ता जब अपना लाभ दिखाई दे तो हर काम की प्रशंसा करो।

बहुत-सी मूर्खताओं के बाद इस प्रतिष्ठित रमणी अर्थात् सुन्दर

ग्रानेत ने शारल को गम्भीरता से विचार करने पर विवश किया। उसने अपने सुगन्धित हाथ से शारल के बालों में कंघी करते हुये उसे अपने भविष्य के प्रति सचेत किया था और उसकी एक लट को अपनी अंगुली पर लपेटते हुये उसे दुनिया में तरक्की करने के गुर सिखाये थे। ग्रानेत ने उसे विनम्र भी बनाया था और जड़वादी भी बनाया था, निस्संदेह यह दोहरी भ्रष्टता थी; लेकिन ऊँचे समाज के नियमों, आचार-व्यवहार और सभ्यता के अनुरूप थी।

"शारल तुम बड़े ही मूर्ख हो।" वह उससे कहा करती थी, "मुझे मालूम है कि तुम्हें इस दुनिया के तौर-तरीके सिखाना सहज नहीं है। तुमने मोसियो दे लो पोल के साथ बड़ी उद्दंडता का व्यवहार किया। मैं मानती हूँ वह ऐसा व्यक्ति नहीं जिसका सम्मान किया जाये; लेकिन तुम्हें उसकी कुर्सी छिन जाने का इन्तजार करना चाहिये, तब तुम्हारा जितना जी चाहे उससे घृणा करना। तुम्हें मालूम है मादाम कान्नमाँ हम से क्या कहा करती थीं? 'मेरे बच्चो! जब तक कोई आदमी मंत्री हो उसकी पूजा करो। अगर वह अपने इस पद से गिर जाये तो उसे घसीट-कर नाली में फेंक दो। क्योंकि जब तक वह इस उच्च पद पर है, उसकी हैसियत देवता की है; लेकिन जब यह पद छिन जाये तो वह मारात से भी बुरा व्यक्ति बन जाता है क्योंकि मारात तो मर मरा गया है और वह नज़रों से ओझल है; लेकिन यह जीवित है। ज़िन्दगी जोड़-तोड़ का एक सिलसिला है, अगर तुम अपने पद को बनाये रखना चाहते हो तो तुम्हें इस समाज के विभिन्न ग्रुपों और उनकी बदलती हुई प्रवृत्तियों का ध्यान से अध्ययन करते और उनके अनुसार चलते रहना चाहिये'।"

शारल इस दुनिया का एक साधारण व्यक्ति था। माँ-बाप के अधिक प्यार ने और समाज की चापलूसी ने उसे इस हद तक बिगाड़ दिया था कि वह बहुत महत्त्वाकांक्षी हो ही नही सकता था। मां की उच्च-शिक्षा के कारण इस मिट्टी के ढेर में थोड़ा-सा सोना ज़रूर था। लेकिन पेरिस की आंच में तपने के बाद वह ऊपर-ऊपर एक मुलम्मा-सा बनकर

रह गया था और वह भी दुनियाँ की रगड़-घिस में शीघ्र ही मिट जाने वाला था। इस समय शारल की उम्र सिर्फ इक्कीस साल थी। इस उम्र में ऐसा लगता है कि जो ताज़गी नौजवान के चेहरे पर है, वह उसके हृदय में भी होगी। यह असम्भव जान पड़ता है कि उसका नौजवान-हृदय, नौजवान चेहरे, नौजवान आवाज़ और निरीह दृष्टि के अनुरूप नहीं होगा। एक कठोर से कठोर जज, एक सशंक से सशंक वकील और निष्ठुर से निष्ठुर महाजन यह विश्वास करते हुए संकोच करेगा कि जिस व्यक्ति का माथा इतना विशाल है, और जिसकी आंखों में तुरन्त आँसू उमड़ आते हैं, उसका हृदय इतना नीरस और स्वभाव इतना नीच है।

आज तक शारल को पेरिस की सभ्यता के सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूप देने का अवसर न मिला था। वह नेक इसलिए था कि उसकी आज़मायश न हुई थी। अवचेतन रूप से व्यक्ति-पूजा के सारे सिद्धान्त उसने आत्मसात कर लिये थे। पेरिस वालों के विषैले अर्थशास्त्र के बीज उसके हृदय में बोये जा चुके थे। अब तो सिर्फ इतनी बात थी कि जैसे ही वह तमाशबीन की हैसियत से हटकर वास्तविक जीवन के नाटक का अभिनेता बने, वैसे ही यह निश्चित रूप से उग आयेंगे।

लगभग सभी लड़कियाँ बाहरी रंग-रूप पर बिना सोचे ही विश्वास कर लेती हैं। लेकिन अगर योज़ेन कुछ देहाती लड़कियों की भांति सतर्क और सचेत भी होती तो भी अपने चचेरे भाई पर कैसे संदेह कर सकती थी, विशेषकर जब कि उसकी हर बात और हर गति-विधि उसके सौजन्य का प्रमाण थी? योज़ेन का यह दुर्भाग्य कहा जा सकता है कि उसने शारल को ऐसे क्षणों में देखा था, जबकि उसके नौजवान हृदय की वास्तविक भावनाएं अन्तिम बार व्यक्त हो रही थीं और उसकी आत्मा से अन्तिम कराह निकल रही थी और बेचारी लड़की के मन में उसके प्रति सच्ची सहानुभूति उत्पन्न हो गई थी।

योज़ेन ने वह पत्र, जो उसे प्रेम से परिपूर्ण मालूम हो रहा था, मेज़ पर रख दिया और अपने सोते हुए भाई को देख कर प्रसन्न होने लगी। जवानी

के मधुर स्वप्न और अभिलाषायें उसके चेहरे में प्रतिविम्बित हो रही थीं। योज़ेन ने वहीं और तुरन्त प्रतिज्ञा की कि मैं इसे हमेशा प्रेम करूंगी। अब उसने दूसरे पत्र पर नज़र डाली और सोचा कि इसके पढ़ लेने में भी कोई हर्ज नहीं। स्त्री-सुलभ स्वभाव से वह इस व्यक्ति को देवता मान चुकी थी और इस पत्र में वह उसके श्रेष्ठ गुणों के कुछ अधिक प्रमाण पाने की आशा रखती थी।

"मेरे प्यारे अलफ़ोंस,

जब यह पत्र तुम्हारे हाथों में होगा, मेरे तमाम मित्र मुझे छोड़ चुके होंगे। मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि यद्यपि मुझे अपने उन फैशनेबल परिचितों पर जो इस शब्द का बड़ी स्वच्छन्दता से इस्तेमाल करते हैं, तनिक भी विश्वास नहीं; लेकिन मैंने तुम्हारी मित्रता पर कभी संदेह नहीं किया। इसलिए मैं अपने लेन-देन सम्बन्धी कुछ काम तुम्हें सौंपता हूँ और समझता हूँ कि तुम उन्हें पूरा करने का भरसक प्रयत्न करोगे क्योंकि मेरे पास जो भी दो-चार पैसे हैं, वे इसी में फंसे हुए हैं।

"इस समय तक तुम्हें मेरी स्थिति का पता तो लग ही गया होगा। मैं बिलकुल कंगाल हूं और मैंने इंडीज़ जाने का निश्चय कर लिया है। जिन लोगों का मुझ पर कर्ज़ था, मैंने अभी-अभी उन्हें सूचना भेज दी है। उनकी एक सूची तुम्हें भी भेज रहा हूँ, अपनी समझ में मैंने इसे ठीक ही बनाया है। मेरा ख्याल है कि मेरी किताबों, गाड़ियों और घोड़ों के बिकने से काफी रकम मिल जायगी, जिससे मेरा कर्ज़ अदा हो जायेगा। मैं अपने पास कुछ छोटी-मोटी चीज़ें रखना चाहता हूँ, जो मेरे व्यापार में काम आयेंगी। अपनी चीजों के बेचने का अधिकार देने के लिये मैं तुम्हें नियमित रूप से मुख्तारनामा लिखवा कर भेज दूंगा। ताकि किसी प्रकार की अड़चन न रहे। तुम मेरी बंदूकें और इसी प्रकार की दूसरी चीज़ें मुझे यहाँ भिजवा दो। कुत्ता तुम ले लेना। इस शानदार जानवर का वास्तविक मूल्य मुझे कोई भी नहीं दे सकता। मेरा ख्याल है मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूं तो बेहतर है। जिस प्रकार एक मरता हुआ व्यक्ति

अपनी वसीयत में अंगूठी अपने [illegible] को सौंप जाता है, उसी प्रकार तुम इस कुत्ते को समझना । फेरी ब्रायलमान एंड को० मेरे लिए एक बहुत ही आरामदेह गाड़ी बना रहे हैं; लेकिन उन्होंने अभी वह घर नहीं भेजी । कोशिश करना कि किसी तरह वे उसे अपने पास ही रख लें। और अगर वे ऐसा करने से इन्कार करें तो जैसे भी सम्भव हो वर्तमान् स्थिति में मेरी लाज रखने का उपाय सोचो । मैं उस अंग्रेज़ के साथ ताश खेलते हुए छः लूई हार गया हूँ । ध्यान रखना कि वह······"

"मेरे प्रिय भाई !" योजेन ने धीरे से कहा। कागज़ उसके हाथ से गिर पड़े और वह जलती हुई मोमबत्ती लिए जल्दी से पंजों के बल अपने कमरे में चली गई ।

वहाँ पहुँचते ही उसने पुराने शाह बलूत की लकड़ी के संदूक का एक दराज़ खोला । यह पुनरुत्थान काल की कारीगरी का एक सुन्दर नमूना था । संदूक के ऊपर शाही निशान अधमिटा-सा अब भी दिखाई दे रहा था । इस दराज़ से उसने एक बड़ी-सी मखमली थैली निकाली, जिसमें सुनहरी फुंदने लगे हुए थे । और थोड़ी-थोड़ी सुनहरी किनारी भी बाकी थी । यह उसकी दादी के वैभव की एक बची-खुची निशानी थी । उसका वज़न महसूस करके योज़ेन का हृदय गर्व से भर गया । और वह जल्दी-जल्दी विभिन्न सिक्के अलग करके अपनी पूंजी का हिसाब लगाने लगी; उसके पास बीस पुर्तगाली सिक्के थे, जिनका मूल्य उसके पिता के कथनानुसार एक सौ अड़सठ फ्रांक प्रति सिक्का था; लेकिन वास्तव में उनका मूल्य एक सौ अस्सी फ्रांक प्रति सिक्का था क्योंकि यह सिक्के अलभ्य और बहुत ही सुन्दर थे । और वे सूरज के सदृश चमकते थे । फिर जनेवा के पांच सिक्के थे जिनका मूल्य यों तो अस्सी फ्रांक था, लेकिन पुराने सिक्के जमा करने वाले सौ भी दे देते थे । ये उसे बूढ़े मोसियो ला बरतेलियर से विरसे में मिले थे । और फिर सम्राट् फिलिप पांचवें के ज़माने के तीन सुनहरी सिक्के थे, जिन पर १७२९ का सन् अंकित था । ये मादाम जाँतिये ने उसे दिये थे और देने से पहले वह

हमेशा यही कहा करती थी—'यह लो तुम्हें एक सुनहरी चिड़िया देनी हूँ। इसका मूल्य अट्ठानवे लीवर है ! इसको सम्भाल कर रखना बेटी। तुम्हारे खज़ाने में इसके बराबर एक सिक्का न होगा।' फिर सौ सिक्के हालैंड के थे, जिनमें प्रत्येक का मूल्य लगभग तेरह फ्रांक था। इन सिक्कों का उसके पिता को बहुत ख्याल रहता था क्योंकि उनमें काफी सोना था। और फिर इनके अतिरिक्त सोने के कुछ और सिक्के थे, जिनमें से तीन पर तराज़ू बनी हुई थी। और पाँच पर कुंवारी मरियम का चित्र था। ये सब खालिस सोने के थे और महान् मुगल के ज़माने के थे। ये अलभ्य सिक्के कंजूस को अत्यन्त प्रिय थे। उनमें जो धातु थी, उसीका मूल्य सैंतीस फ्रांक था; लेकिन कुछ शौकीन लोग पचास फ्रांक भी देने को तैयार थे। फिर एक सिक्का उसके पिता ने उसे परसों ही दिया था, जो उसने बड़े प्रमाद से अपनी लाल मखमली थैली में डाल दिया था।

उसके खज़ाने में कुछ नए सोने के सिक्के भी थे जो टकसाल से अभी-अभी निकले थे और जो सुन्दर कलाकृति थे। ग्रांदे उनके बारे में अक्सर पूछता रहता था और दिखाने को कहता था और अपनी बेटी को उनका मूल्य, उनकी बनावट, उनका कला-सौंदर्य और उन पर अंकित शब्दों की कोमलता और महानता समझाया करता था। लेकिन इस समय योजेन को उनकी सुन्दरता और अलभ्यता का तनिक भी ध्यान न आया। अपने पिता का उन्माद और जो खज़ाना उसके पिता के निकट इतना कीमती था उसे खो बैठने का भय—उस समय ये दोनों बातें वह कदाचित भूल चुकी थी। उस समय उसे सिर्फ अपने चचेरे भाई का ख्याल था और बहुत कुछ हिसाब-किताब के बाद उसे अंदाज़ा हुआ कि इस समय वह लगभग पाँच हज़ार आठ सौ फ्राँक की मालिक है और पुराने सिक्के जमा करने वालों के हाथ वह दो हज़ार क्राउन को बिक सकते हैं।

अपनी पूँजी देखकर वह खुशी से तालियाँ बजाने लगी। उसकी दशा ऐसी ही थी जैसे कोई बच्चा असीम प्रसन्नता में नाचने लगे। उस

रात बाप-बेटी दोनों ने अपने धन का अंदाज़ा लगाया था। बाप ने सोना बेचने के ख्याल से और बेटी ने अपना पैसा प्रेम के मार्ग में लगाने के लिए। उसने पैसे पुराने बटुवे में डाले और उसे उठाकर निस्संकोच ऊपर जा चढ़ी। उसके जेहन में अगर कोई ख्याल था तो बस अपने चचेरे भाई की विपत्ति का। उसे यह भी ध्यान न था कि यह रात का समय है। रीति-रिवाज वह बिल्कुल भुला चुकी थी। उसकी आत्मा भी उसे रोक नहीं रही थी। प्रेम और प्रसन्नता ने उसमें साहस उत्पन्न कर दिया था। वह एक हाथ में मखमल की थैली और दूसरे में मोमबत्ती थामे दहलीज़ पर पहुँची ही थी कि शारल जाग उठा। अपनी चचेरी बहन को देखकर वह आश्चर्य-चकित रह गया। योज़ेन ने आगे बढ़कर बत्ती को मेज़ पर रखा और कम्पित स्वर में कहा :—

"शारल भाई, मैंने एक ऐसा काम किया है, जिसके लिए मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ। मैंने बहुत बुरा किया। लेकिन अगर आप इसका बुरा न मानें तो भगवान भी मुझे क्षमा कर देगा।"

"वह ऐसा क्या काम हो सकता है?" शारल ने अपनी आँखें मलते हुए कहा।

"मैंने वे पत्र पढ़ लिये हैं।"

शारल का चेहरा लज्जा से लाल हो गया।

"अब आप पूछेंगे कि मैं यहाँ क्यों आई और यह पत्र कैसे पढ़े?" वह कहती गई, "यह अब मैं भी ठीक से नहीं बता सकती। लेकिन फिर भी मुझे खुशी है कि मैंने यह पत्र पढ़ लिये क्योंकि इन्हें पढ़कर मुझे आपकी मनोदशा का अंदाज़ा हो गया और······"

"और क्या?" शारल ने पूछा।

"और आपके इरादों का भी—और यह भी कि आपके पास पैसे न होने के कारण बड़ी कठिनाइयों का सामना·······"

"मेरी प्यारी बहन।"

"शश! शश! इतने ज़ोर से न बोलिए। ऐसा न हो कोई जाग

जाये । यह एक लड़की की सारी जमापूंजी है, जिसकी उसे कोई जरूरत नहीं है ।" उसने बटुवा खोल दिया और बोलती गई, "शारल भाई, आपको यह पैसे लेने पड़ेंगे । आज सुबह तक मुझे पता नहीं था कि पैसा क्या चीज़ है । यह आपने मुझे सिखाया है कि पैसा तो उद्देश्य प्राप्ति का साधन मात्र है । इससे अधिक कुछ भी नहीं । चचेरे भाई आखिर सगे भाई के सदृश होते हैं । आप अपनी बहन से तो क़र्ज़ ले सकते हैं ।"

योज़ेन को जो एक साथ लड़की भी थी और स्त्री भी, इन्कार की आशा ही न थी । लेकिन शारल चुप रहा ।

"क्यों ? क्या आप इन्कार कर देंगे ?" योज़ेन ने पूछा । खामोशी इतनी गहरी थी कि उसके दिल की धड़कन तक सुनाई दे रही थी। अपने भाई के संकोच से उसके स्वाभिमान को ठेस लगी थी । लेकिन शारल की विवशता का विचार आते ही वह घुटनों के बल उसके सामने झुक गई । "मैं तब तक नहीं उठूंगी ।" वह बोली, "जब तक कि आप यह पैसे न ले लेंगे । ओह ! भैया भगवान के लिए कुछ तो बोलिए ।.... ताकि मैं यह समझ सकूं कि आप मेरा आदर करते हैं और आप नेक दिल हैं और........"

जब उसने यह आर्तनाद सुना जो लड़की के पवित्र हृदय से निकला था तो शारल की आँखों से आंसू निकल आये और जब यह गर्म-गर्म आँसू योज़ेन के हाथों पर गिरे तो वह उछलकर उठी और बटुवे को मेज़ पर खाली कर दिया—"अच्छा तो आपने स्वीकार कर लिया न ?" उसने खुशी से चीखते हुए कहा, "इसे लेते हुए आप किसी चिन्ता में न पड़िये भाई । आप बहुत जल्द अमीर हो जायेंगे । आपको मालूम होना चाहिए कि इस रुपये में बड़ी बरकत होगी । आप जब चाहें रुपया लौटा दीजियेगा और अगर आप पसंद करें तो हम दोनों कारोबार में साझी बन जायेंगे । मैं आपकी हर तरह की शर्तें मानने को तैयार रहूंगी । लेकिन आप इस उपहार को बड़ी चीज़ न समझियेगा ।"

आखिर शारल की तबियत ज़रा सम्भली और वह बोला : "हाँ योज़ेन, अगर मैं इस उपहार को ठुकरा दूं तो मैं इंसान नहीं। लेकिन अगर तुम्हें मुझपर भरोसा है तो मुझे भी तुम पर भरोसा होना चाहिए।"

"क्या मतलब है आपका ?" उसने चौंककर पूछा।

"सुनो। मेरी प्यारी बहिन, मेरे पास वह······"

उसने उठकर खानों वाली मेज़ पर से एक चमड़े के थैले में से एक चौकोर डिब्बा निकाल कर योज़ेन को दिखाया।

"यह एक ऐसी वस्तु है जो मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। यह डिब्बा मुझे मेरी मां ने उपहार में दिया था। आज सुबह से मैं यह सोच रहा हूं कि अगर वह फिर जीवित हो सकतीं तो वह खुद इस सोने को बेच देतीं जो उन्होंने बड़े प्यार से सिगार केस के रूप में दिया था। लेकिन मैं यह काम नहीं कर सकता। मुझे तो ऐसा लगेगा जैसे मैं कोई पाप कर रहा हूं।"

योज़ेन ने यह अंतिम शब्द सुनकर अपने चचेरे भाई का हाथ बड़े जोर से भींच लिया।

"नहीं" वे कुछ देर आँसू भरी आँखों से एक दूसरे को तकते रहे और फिर वह बोला, "मैं इस पर से सोना नहीं उतारना चाहता। और न इसे अपनी यात्रा में साथ ले जाने का खतरा मोल लूंगा। प्यारी योज़ेन मैं इसे तुम्हें सौंप जाऊँगा। कभी किसी मित्र ने दूसरे के पास इतनी पवित्र अमानत न छोड़ी होगी। लेकिन तुम्हें खुद ही इसका अंदाजा हो जायगा।"

उसने चमड़े के केस से डिबिया निकाली और अपनी बहन की आश्चर्य चकित आँखों के सामने सोने का यह बक्स खोलकर रख दिया। कारीगर के कौशल ने धातु का मूल्य और भी बढ़ा दिया था।

"तुम जिसे सराह रही हो यह कुछ भी नहीं है।" उसने एक गुप्त खाने का बटन दबाते हुए कहा, "इसमें एक ऐसी वस्तु है जो मुझे तमाम

दुनिया से अधिक प्यारी है ।" उसने बड़े दुःख से कहा ।

उसने दो चित्र निकाले । ये दोनों मादाम दे मीरवेल के गाहकार थे और इनमें बड़ी सफाई से हीरे जड़े हुए थे ।

"यह कितना सुन्दर है ! क्या यह वही महिला नहीं हैं, जिन्हें आप पत्र लिख रहे थे ?"

"नहीं ।" शारल ने तनिक मुस्कराते हुए कहा, "वह मेरी माता हैं और यह मेरे पिता—तुम्हारी चर्ची और चचा । योज़ेन, मैं तुम्हारे चरणों पर गिरकर प्रार्थना करता हूं कि तुम मेरी अमानत जो बहुत कीमती है सम्भाल कर रखना । अगर मैं मर गया और तुम्हारी ज़मा-पूंजी गवाँ बैठा तो यह सोना तुम्हारी क्षति की पूर्ति कर देगा । दोनों चित्र मैं सिर्फ तुम्हीं को सौंप सकता हूं । तुम्हीं इनकी हिफाजत कर सकती हो । इन्हें किसी और के हाथ में न देना । इससे तो बेहतर होगा कि तुम इन्हें फाड़ डालो……"

योज़ेन चुप रही ।

"अच्छा, अब तो मैने तुम्हारी बात मान ली न ?" शारल ने कहा और उसके अन्दाज़ में एक विचित्र आकर्षण था ।

इन शब्दों पर योज़ेन ने पहली बार ऐसी दृष्टि से देखा, जिससे एक प्रेम करने वाली स्त्री ही देख सकती है । इस दृष्टि में ऐसी चमक थी, जो उसके हृदय के सब भेद कहे दे रही थी ।

शारल ने उसका हाथ पकड़ कर चूम लिया ।

"योज़ेन, तुम तो अप्सराओं की भांति मासूम हो । हम दोनों के बीच पैसा क्या चीज़ है ? इसका कोई महत्त्व नहीं । ठीक है न ? असल चीज तो वह भावना है, जिसके कारण रुपया इतनी कीमती चीज़ बन गया है ।"

"तुम बिलकुल अपनी माँ से मिलते-जुलते हो । मालूम नहीं, क्या उनकी आवाज़ भी इतनी ही सुरीली थी ?"

"अरे, इससे भी अधिक……"

"हाँ, तुम्हारे लिए", उसने अपनी आँखें झुकाते हुए कहा, "अच्छा, शारल अब मेरा ख्याल है तुम्हें सो जाना चाहिए। तुम बहुत थक गये हो। प्रणाम।"

चचेरे भाई ने उसका हाथ दोनों हाथों में थाम रखा था, जो उसने धीरे से खींच लिया और अपने कमरे की ओर चल दी। चचेरा भाई मोमबत्ती लिए उसे रास्ता दिखा रहा था। कमरे के दरवाज़े पर पहुंचकर दोनों रुक गए।

"उफ! मैं बरबाद क्यों होगया?" वह बोला।

"अब यह बातें जाने भी दो। मुझे विश्वास है मेरे पापा के पास बहुत रुपया है।" योज़ेन ने कहा।

"भोली बच्ची!" शारल ने एक कदम उसके कमरे में रखकर दीवार से टेक लगाते हुए कहा, "अगर तुम्हारे पिता अमीर होते तो मेरे पिता को कभी मरने न देते और तुम भी इस प्रकार के गंदे से मकान में न रहा करतीं। तब तो उनके रहन-सहन के और ही ढंग होते।"

"लेकिन उनके पास फरवाफों भी तो हैं।"

"फरवाफों का मूल्य आखिर क्या होगा?"

"मुझे यह तो पता नहीं। लेकिन एक निवाये भी तो है।"

"कोई घटिया सी ज़मीन होगी?"

"फिर उनके पास चरागाहें और अंगूरों के खेत भी तो हैं।"

"इनका तो जिक्र ही नहीं करना चाहिए।" शारल ने घृणा से कहा, "अगर तुम्हारे पिता की आमदनी चालीस हज़ार लीवर वार्षिक भी होती तो क्या तुम ऐसे ही ठंडे और बिना आग के कमरे में सोतीं?"

यह कहते हुए वह एक कदम और आगे बढ़ गया "अच्छा वह जगह कौन-सी होगी जहाँ यह मेरी कीमती अमानत रखी जाएगी?" वह जो सोच रहा था, उसे छिपाने का प्रयत्न करते हुए उसने एक पुराने बक्स की ओर देखना जारी रखा।

"जाओ।" वह बोली, "और सोने का प्रयत्न करो।" और इस

प्रकार योज़ेन ने उसे गंदे कमरे में आने से रोक दिया। शारल पीछे को मुड़ा और दोनों ने मुस्कराते हुए एक दूसरे को प्रणाम किया।

वे दोनों सो गए और एक ही स्वप्न देखने लगे। शारल को ऐसा महसूस हुआ कि रंज के बावजूद उसके लिए दुनिया में खुशी मौजूद है। सुबह को नाश्ते से पहले मादाम ग्रांदे ने अपनी बेटी को शारल के साथ टहलते देखा। वह अभी तक खामोश और उदास था और फिर आखिर उसे दुख कैसे न होता? उसकी तबाही कोई साधारण घटना नहीं थी। उसे धीरे-धीरे पता चल रहा था कि वह कितने गहरे गढ़े में गिर पड़ा है और भविष्य का विचार उसे बुरी तरह सता रहा था।

"पापा भोजन से पहले वापस नहीं आयेंगे।" योज़ेन ने अपनी मां की आँखों में चिंता झलकते देखकर बताया।

योज़ेन के आचरण से, उसके चमकते हुए चेहरे से और आवाज़ के विचित्र माधुर्य से भांप लेना सहज था कि चचेरे बहिन भाई में परस्पर सहानुभूति है। उनके हृदय एक दूसरे में समा गए थे यद्यपि उन्होंने अभी तक भावना की उस शक्ति को महसूस नहीं किया था जो उन्हें एक दूसरे से बांध रही थी।

शारल खाने के कमरे में बैठा रहा! किसी ने भी उसके एकांत में बाधा नहीं डाली। तीनों स्त्रियों का खुद अपना काफी काम था। ग्रांदे बिना किसी को सूचित किए चला गया था। इसलिये उसके सारे काम रुक गये थे। मज़दूर, बढ़ई, किसान और अंगूर के खेतों में काम करने वाले सभी बारी-बारी चले आ रहे थे। कुछ लोग रकम चुकाने आए थे और कुछ वसूल करने आए थे और कुछ लोग मरम्मत के काम का ठेका लेना चाहते थे। गरज़ कि मादाम ग्रांदे और योज़ेन को बार-बार बाहर-भीतर जाना पड़ता था, जहां उन्हें मज़दूरों और दूसरे लोगों की लम्बी-चौड़ी बातें सुननी पड़ रही थीं।

जो चीज़ें घर में आ रही थीं नाँनों उन्हें हिफाजत से रसोई में रखती जा रही थी। वह सदा अपने मालिक के आदेश का इंतजार करती थी कि

कौन-सी चीज़ घर में रखनी है और कौन-सी बाज़ार में बेच देनी है। हमारा टीनसाज़ देहात के और छोटे-छोटे जागीरदारों की भांति अपनी सबसे घटिया शराब इस्तेमाल करता था और गिरे-पड़े बेकार फल घर में खर्च के लिए रखता था।

शाम को पाँच बजे के करीब ग्रांदे ग्राँजे से लौट आया। उसने सोना बेचकर चौदह हज़ार फ्रांक कमाये थे और साथ सरकारी सार्टीफ़िकेट लाया था, जिस पर मुद्दत तक सूद मिलने वाला था। वह कोरनिवाये को ग्राँजे में छोड़ आया था ताकि वह घोड़ों का ख्याल रखे जो रात भर के सफ़र से अधमरा होकर रह गये थे। वह चौकीदार को यह कहकर आ गया था कि जब घोड़े आराम करलें तो उन्हें धीरे-धीरे वापस ले आये।

"बीवी, मैं आँजे से होकर आ रहा हूं।" वह बोला, "और मुझे बड़ी भूख लगी है।"

"क्या कल से आपने कुछ भी नहीं खाया?" नाँनों ने रसोई से पुकार कर पूछा।

"नहीं, कुछ भी नहीं।" ग्रांदे ने कहा।

नाँनों शोरबा भीतर ले आई। दे ग्रांसी लोग ठीक उसी समय सलाह लेने आये, जब यह सब भोजन करने बैठ गये थे। ग्रांदे ने अब तक अपने भतीजे का कुछ ध्यान नहीं किया था।

"ग्रांदे आप खाना खाइये।" साहूकार ने कहा, "हम इतने में बातें करेंगे। क्या आपने सुना है कि आँजे में सोना किस भाव बिक रहा है और नाँत के लोग धड़ाधड़ खरीद रहे हैं? मैं भी कुछ सोना भेजने वाला हूँ।"

"आप भेजने का कष्ट न कीजिये।" उसके मवक्कल ने उत्तर दिया, "इस समय तक तो उन्हें बहुत सोना मिल चुका है। मैं नहीं चाहता कि आपकी मेहनत व्यर्थ जाये। मैं जो मशविरा देने को तैयार हूं। आखिर हम दोनों घनिष्ट मित्र हैं।"

"लेकिन सोना तो तेरह फ्रांक पचास सेंट के हिसाब से बिक रहा है।"

''यह कहिये कि इस भाव बिक रहा था।''

''आपको कैसे मालूम हुआ कि उन्हें सोना मिल चुका है ?''

''मैं रात खुद आँजे गया था।''

साहूकार चौंक गया। फिर दोनों में धीरे-धीरे बात होने लगीं। बातें करते हुए ग्रासीं और ग्रांदे ने कई बार शारल की ओर देखा। जब ग्रांदे ने एक लाख लीवर लाभ वाला सरकारी कर्ज़े का टिकट खरीद देने को कहा तो साहूकार एक बार फिर चौंका।

''मोसियो ग्रांदे !'' दे ग्रासीं ने शारल की ओर पलट कर कहा, ''मैं पेरिस जा रहा हूं। अगर वहाँ मैं आपकी कोई सेवा कर सकूं तो...''

''मोसियो, आपका धन्यवाद। मेरा कोई काम नहीं है।'' शारल ने उत्तर दिया।

''बेटे, तुम्हें इनका अधिक ज़ोर से धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि यह तुम्हारे पिता के लेनदारों से फ़ैसला करने जा रहे हैं।''

''क्या इसकी कुछ आशा है ?''

''क्यों, क्या तुम मेरे भतीजे नहीं हो ?'' टीनसाज़ ने बड़े गर्व से कहा, ''यह हमारी मान-प्रतिष्ठा का सवाल है। क्या तुम्हारा नाम भी ग्रांदे नहीं है ?''

शारल कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और हठात बाहें चचा के गले में डाल दीं। उसका रंग पीला पड़ गया और वह कमरे से बाहर निकल गया। योज़ेन ने अपने पिता की ओर प्रेम और गर्व से देखा।

''हाँ, तो मेरे अच्छे मित्र ! अब हम रुखसत होते हैं।'' ग्रांदे ने कहा, ''मैं हर वक्त आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ। यत्न कीजिएगा कि लेनदार ठीक रास्ते पर आजायें।''

दोनों चतुर मित्रों ने हाथ मिलाया और टीनसाज़ अपने पड़ौसी को दरवाज़े तक छोड़ने गया। दे ग्रासीं को विदा करके उसने दरवाज़ा बन्द किया और आराम कुर्सी पर आकर लेट गया। नानों से कहा, ''कुछ पीसने के लिये लाओ।''

लेकिन खुशी से वह इतना विह्वल हो रहा था कि आराम से न बैठ सका। और उठकर बूढ़े मोसियो दे ला बारतेलियर का चित्र देखने लगा। फिर नाचना शुरू कर दिया और साथ ही गाना शुरू किया—

गार्दे फ्राँके से में

मेरा परदादा रहता है····

नाँनों, मादाम ग्रांदे और योज़ेन चुपचाप एक दूसरे की ओर देखने लगीं। अंगूरों के कृषक का हर्षोत्साह उन्हें सदा भयातुर कर देता था।

संध्या शीघ्र ही समाप्त हो गई। बूढ़ा ग्रांदे सवेरे ही सोने चला गया और उसके बाद किसी को वहाँ ठहरने की आज्ञा न होती थी। जब वह सो जाता तो सबको ही सो जाना पड़ता था। यह कुछ ऐसी ही बात थी जैसे कि पोलैंड का सम्राट अगस्टस जब शराब पीता तो वफादारी जताने के लिए सारी प्रजा ही को नशे में बदमस्त होना पड़ता। वैसे नांनों, योज़ेन और शारल भी घर के स्वामी से कुछ कम थके हुए नहीं थे। और जहाँ तक मादाम ग्रांदे का सम्बन्ध है उसका तो खाना-पीना और सोना-जागना सभी पति के इशारों पर होता था। मगर टीनसाज़ ने आज जो दो घंटे भोजन पचाने में व्यतीत किये उनमें वह इतना प्रसन्न था कि जिन्दगी में पहले कभी न था। वह गा रहा था और साथ ही साथ अपने बहुत से कथन दोहराये जा रहा था। टीनसाज़ के दिमाग की गहराइयों का अन्दाज़ा एक ही उदाहरण से हो सकता है। जब उसने शरबत खत्म कर लिया तो उसने विचारशीलता से गिलास की ओर देखा और यों बोला :

"गिलास को होंठों से लगाया और वह खाली हुआ। जीवन भी कुछ इसी ढंग से चलता है। चुपड़ी और दो वाला मामला तो कभी हो ही नहीं सकता। तुम पैसे खर्च करते रहो और बटुआ भी भरा रहे, यह असंभव है। अगर ऐसा हो सकता तो जिन्दगी बड़ी शानदार होती।"

वह सिर्फ विनोदप्रिय ही नहीं बल्कि नेक-दिल भी हो गया था। अतएव जब नांनों अपना चर्खा लेकर भीतर आई तो उसने कहा :

"तुम बहुत थक चुकी होगी अब यह रुई कातना छोड़ो।"

"अगर मैं नहीं कातूंगी तो मुझे बेकार बैठना पड़ेगा।" नौकरानी ने उत्तर दिया।

"बेचारी नाँनों, क्या तुम शरबत पियोगी ?"

"शरबत ? अरे ! मैं ना तो नहीं करूंगी। मादाम तो अत्तारों से कहीं अच्छा शरबत बनाती हैं। जो बाज़ार में बिकता है वह तो बिल्कुल दवा मालूम होता है।"

"वे लोग तो अधिक चीनी डालकर उसका स्वाद ही बिगाड़ देते है।" ग्रांदे ने कहा।

अगले दिन सुबह आठ बजे नाश्ते के वक्त पहली बार सब लोग एक परिवार के व्यक्ति मालूम हो रहे थे। मादाम ग्रांदे, योज़ेन और शारल को इन विपत्तियों ने एक दूसरे के निकट कर दिया था और नांनों भी सहज स्वभाव से उनके दुख में शामिल थी। रहा बूढ़ा टीनसाज़, तो उसे घर में अपने भतीजे की उपस्थिति का बहुत ही कम एहसास था। उसकी रुपये की हवस पूरी हो चुकी थी और वह नांत तक का किराया देकर शीघ्र ही और सहज में छुटकारा हासिल करने वाला था।

इस बीच में शारल और योज़ेन आज़ाद थे कि जो जी चाहे करें, वे मादाम ग्रांदे की देखभाल में थे और धर्म अथवा रख-रखाव के मामले में ग्रांदे को अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास था। इसके अतिरिक्त उसे और बहुत सी बातों का ख़याल करना था। चरागाहों में से पानी निकलवाना था। नदी के किनारे पोपलर के पेड़ लगवाने थे और फिर नियम के अनुसार फरवाफों और दूसरी जगहों पर सर्दियों का काम भी बाकी था। सारांश यह कि वह अत्यन्त व्यस्त था।

और अब योज़ेन के लिए प्रेम के वसन्त का सूत्रपात हो चुका था। रात के जिस क्षण उसने अपना रुपया चचेरे भाई के हवाले किया था, उस समय से उसका हृदय भी शारल की भेंट हो गया था। उन दोनों के

बीच एक रहस्य था और जब कभी वे एक दूसरे को देखते तो उन्हें तुरंत अपना यह समझौता स्मरण हो आता। इस रहस्य ने उन्हें एक दूसरे के निकट कर दिया था और यही इस घटना को प्रतिक्षण असाधारण रूप प्रदान कर रहा था। इसके कारण दैनिक जीवन की एकरसता से वे बहुत ऊंचे उठ गये थे। और क्या यह सम्बन्ध उनकी बातों से टपकते हुए प्यार और आँखों से झलकती हुई कोमलता के औचित्य को सिद्ध नहीं करता था ? योज़ेन इस बात से प्रसन्न होती थी कि उसका चचेरा भाई प्रेम-प्रभात की निरीह प्रसन्नता में अपने दुख को भूल रहा है।

प्रेम की शुरुआत और जीवन की शुरुआत में एक सुखमय सादृश्य है। क्या बच्चा मुस्कराहटों, लोरियों और भविष्य के सुनहरी स्वप्नों की कहानियों से नहीं बहल जाता ? उसके ऊपर आशा के सुनहरे पंख सदा फैले रहते हैं। वह छोटी-छोटी बातों पर प्रसन्न होता और आँसू बहाता है। कंकरों और रेत के बनाये हुए महल के ढह जाने पर लड़ने-झगड़ने लगता है। और चुने हुये फूलों के बिखर जाने पर भी आपे से बाहर हो जाता है, हालांकि थोड़ी देर बाद उसे यह बात याद भी नहीं रहती। क्या वह भी वर्तमान को भूल कर भविष्य में रहने का इच्छुक नहीं होता ? प्रेम आत्मा का ही एक दूसरा रूप है।

प्रेम और बचपन शारल और योज़ेन के लिए एक ही चीज़ थे। दुख और विषाद ने इस प्रेम-प्रभात को और भी आकर्षक बना दिया था। और यह प्रेम जिसका आरम्भ ही शोक से हुआ था, इस उदास और टूटे-फूटे मकान के घरेलू वातावरण के सर्वथा अनुरूप था। कभी तो यह दोनों खाली सेहन में कुएं के पास खड़े होकर एक दूसरे से दो-चार शब्द कह लेते। कभी सूर्यास्त होते समय छोटे-से बगीचे में बाहर निकल कर बैठते और प्रेम की प्यारी-प्यारी बातों में खो जाते। कभी ऐसा होता कि फसील और मकान के दर्म्यान जो खामोशी छाई रहती थी, उसके मजे लेते। गरज़ इन सब बातों ने शारल को यह सिखाया कि प्रेम एक पवित्र भावना है। अब तक तो उसे प्रतिष्ठित महिला अर्थात् 'प्यारी

आनेत' के साथ उसे प्रेम के खतरों और तूफानों को ही देखना मिला था। लेकिन पेरिस का यह प्रेम अपने समस्त हाव-भाव, विडम्बना और खोखलेपन के समेत खत्म हो चुका था। और अब वह प्रेम की पवित्रता और सत्यता की ओर आकर्षित हुआ था।

इस पुराने घर के प्रति उसके मन में एक लगाव-सा उत्पन्न हो गया था और इन लोगों का रहन-सहन भी अब उसे अखरता नहीं था। वह बूढ़े के रसद निकालने से पहले-पहले सुबह-सवेरे ही योज़ेन से दो-एक बातें कर लेने को नीचे उतर आता और ज्योंही ग्रांदे के भारी कदमों की चाप सुनाई देती, भागकर बाग की ओर चला जाता। इन गुप्त मुला-कातों का योज़ेन की माँ को भी ज्ञान न था और नाँनों भी यह ज़ाहिर करती, जैसे वह कुछ देख ही न रही हो। चोरी का गुड़ मीठा होता है। उनकी यह तनिक-सी निर्भीकता उनके निरीह प्रेम को और भी आनन्दमय बना देती। फिर जब नाश्ता खत्म होता और ग्रांदे अपने काम-धंधे से बाहर चला जाता तो शारल माँ बेटी के दर्म्यान उस मटियाले से स्थान पर बैठा रहता। वे धागा लपेटतीं और शारल लच्छियाँ पकड़े रखता, उनकी बातें सुना करता और उन्हें सीते देखता रहता। और इन सब बातों में उसे ऐसा आनन्द आता कि जीवन में पहले कभी नहीं आया था। इन लोगों के साधु-संतों जैसे सरल जीवन में उसे विचित्र आकर्षण महसूस होता और इन दुनिया से विरक्त-सी स्त्रियों में सच्ची शराफत की चमक नज़र आती। उसे कभी यह ख्याल भी न आया था कि इस प्रकार के प्राणी फ्रांस में भी मिल सकते हैं। जर्मनी में तो उसे मालूम था कि पुरानी दुनिया के रीति-रिवाज अब भी प्रचलित हैं। लेकिन फ्रांस में तो वे सिर्फ अगस्त लाफोंतेन के उपन्यासों ही में दिखाई देते थे। थोड़े ही दिन में यह दशा हुई कि शारल को अपने स्वप्न योज़ेन के रूप में नज़र आने लगे। वह उसके लिए बिलकुल गेटे की मार्ग्रेट बन गई लेकिन इसमें किसी प्रकार की त्रुटि न थी।

और इसी प्रकार उसकी आँखें, उसकी बात-चीत दिन-दिन बेचारी

लड़की को अभिभूत करती जा रही थीं। वह मुहब्बत की रौ में दूर तक बह चली। वह हर खुशी पर इस प्रकार झपटती थी जैसे कोई तैराक किनारे पर उगे हुए पेड़ की टहनी को थाम लेता है ताकि वह किनारे पर पहुँचकर कुछ देर आराम करले। क्या वियोग का दुख अभी से अपनी परछाई प्रसन्नता के इन क्षणों पर नहीं डाल रहा था, जो तेज़ी से भागे जा रहे थे। प्रत्येक दिन कोई न कोई बात ऐसी हो जाती थी जो उसे निकट आ रहे वियोग को स्मरण करा देती थी।

उदाहरण के लिए दे ग्रासीं लोगों के पेरिस चले जाने के बाद ग्रांदे शारल को एक मजिस्ट्रेट के पास ले गया और देहाती लोगों की शोकयुक्त गम्भीरता के साथ इस अफसर के सामने शारल से एक बयान पर हस्ताक्षर करा दिये कि मैं अपने पिता की समस्त सम्पत्ति के अधिकारों का त्याग करता हूँ। यह कितनी भयानक बात थी? इसमें उसके पिता का कितना अपमान था। फिर शारल योसिनो क्रोशो के पास गया और दो मुख्तारनामे लिखवाये। एक दे ग्रासीं के लिए और दूसरा उस मित्र के लिए जिसे उसने अपनी निजी वस्तुएं बेचने को लिखा था। इसके अतिरिक्त उसे अपने पासपोर्ट के सिलसिले में कुछ आवश्यक काम करने थे। और फिर पेरिस से जो सादे-शोक-वस्त्र मंगवाये थे वे आगये तो उसने सोमूर के बजाज़ को बुलाकर उसके हाथ अपने वे सब कपड़े बेच दिये, जो उसके लिए अब बेकार थे। यह कार्रवाई बूढ़े ग्रांदे को खास तौर पर पसंद आई।

"आह! अब तुम ऐसे आदमी लगते हो, जो सफर पर जाने को तैयार और दुनिया में उन्नति करने के लिये दृढ़ संकल्प हो।" उसने अपने भतीजे को सादे खुरदरे से कपड़े का काला ओवरकोट पहने हुए देखकर कहा—"खूब, बहुत खूब!"

"मोसियो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं" शारल ने उत्तर दिया, "कि मैं बड़ी हिम्मत से हालात का मुकाबिला करूँगा।"

"यह क्या है?" उसके चचा ने पूछा। शारल ने मुट्ठी भर सोना

उसकी ओर बढ़ा दिया, जिसे देख इस महापुरुष की आँखें सहसा चमक उठीं ।

"मैंने अपने बटन, अंगूठियाँ और जो चीज़ें जरा-भी कीमती हैं, उन्हें इकट्ठा कर लिया है । मुझे तो शायद अब उनकी कोई ज़रूरत न पड़े । लेकिन मैं सोमूर में किसी को नहीं जानता और आज सुबह मैंने सोचा कि आपसे कहूँगा कि······"

"कि इन्हें खरीद लूँ ।" ग्रांदे बीच ही में बोल उठा ।

"नहीं, प्यारे चचा । मैं आपसे किसी ईमानदार आदमी का नाम पूछना चाहता था जो—"

"बेटे यह मुझे दे दो । मैं ऊपर जाकर पता चलाता हूँ कि इसकी कीमत क्या होगी और फिर मैं तुम्हें इसके सही दाम भी बता दूंगा । यह जौहरी से लिया हुआ सोना है ।" उसने एक लम्बी-सी जंजीर का निरीक्षण करते हुए कहा, "मेरे ख्याल में कोई अठारह-उन्नीस केरात का होगा ।"

ग्रांदे ने अपना लम्बा-सा हाथ आगे बढ़ाया और सब चीज़ें लेकर चल दिया ।

"योज़ेन बहन, मुझसे ये दो बकसुए उपहार में ले लो । ये तुम्हारी कलाइयों के गिर्द रिबन बांधने के काम आयेंगे । इस प्रकार के कंगनों का आजकल बहुत फैशन है ।"

"भैया, मुझे इन्हें लेने में कोई संकोच नहीं है ।" उसने बड़ी सहृदयता से कहा ।

"प्यारी चची, यह मेरी माँ की अंगूठी है । अब तक मैंने इसे अपने सिंगारदान में बड़ी सावधानी से रख छोड़ा था ।" और उसने सोने की एक सुन्दर अंगूठी मादाम ग्रांदे को दी, जिसके लिए वह पिछले दस साल से तरस रही थी ।

"प्यारे बेटे, शब्दों में तो तुम्हें धन्यवाद दिया नहीं जा सकता ।" बूढ़ी चाची बोली और यह कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू भर आये ।

लेकिन मैं सुबह-शाम यात्रियों वाली संध्या पढ़ा करूंगी और विशेष रूप से तुम्हारे लिए प्रार्थना किया करूँगी । अगर मैं मर गई तो योज़ेन इस बात का ध्यान रखेगी ।"

"बेटे, इसकी कीमत नौ सौ नवासी फ्रांक और पचहत्तर सेंट होती है ।" ग्रांदे ने दरवाज़े में से दाखिल होते हुए कहा, लेकिन तुम्हें बेचने का कष्ट न करना पड़े, इसलिए मैं खुद ही इसके दाम लीवर में अदा कर दूंगा ।"

लीवर का मतलब लवार के इलाके में यह लिया जाता था कि छः लीवर का एक क्राऊन बिना किसी कमी के छः फ्रांक के बराबर होता है ।

"मेरी हिम्मत न पड़ी कि आपसे ऐसी बात कहूँ ।" शारल ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं नहीं चाहता कि इस शहर में ऐसी छोटी-मोटी चीज़ों का सौदा चुकाता फिरूं, जहां आप रहते हैं और जैसे नेपोलियन कहा करता था, 'घर की गन्दगी घर ही में रहनी चाहिए ।' इसके लिए मैं आप का बड़ा ही कृतज्ञ हूँ ।"

ग्रांदे ने अपना कान खुजाया और कमरे में एक क्षरण मौन रहा ।

"और प्यारे चचा !" शारल घबराहट के से स्वर में बोला, जैसे डरता हो कि कहीं चचा की भावनाओं के ठेस न लगे, "मेरी चची और बहन ने तो मेरे छोटे-छोटे उपहार स्वीकार कर लिये हैं । अब आप भी मुझसे निशानी के तौर पर कफों के ये बटन ले लीजिये, जो मेरे लिये तो अब बेकार हैं । इन्हें देखकर सम्भव है आपको कभी एक गरीब लड़के का ध्यान आ जाये जो परदेश जा चुका होगा । उसे प्रायः आप सब लोग याद आया करेंगे, क्योंकि उसके परिवार में बस आप ही लोग तो रह गये हैं ।

"ओह ! बच्चे, मेरे बेटे ! तुम्हें अपना सब कुछ इस प्रकार हमें न दे डालना चाहिए ।"

"बीवी, तुम्हें क्या मिला है ?" टीनसाज़ ने बड़ी अधीरता से उसकी ओर बढ़ते हुए कहा, "ओहो, सोने की अंगूठी ! और तुम्हारे पास क्या

है बेटी ? हीरे के बकसुए ! बहुत खूब ! लाओ मेरे बेटे, मैं यह बटन लिये लेता हूं।" उसने शारल का हाथ दबाते हुए बात जारी रखी, "लेकिन तुम मुझे अपने रास्ते का खर्च......हाँ इंडीज तक का किराया अदा करने देना। हां, मेरा इरादा है कि तुम्हारा रास्ते का किराया मैं भरूँगा। इसके अलावा मेरे बेटे, जब मैंने तुम्हारे गहनों का अनुमान किया था तो मैंने सिर्फ सोने के दाम लगाये थे। लेकिन उनकी बनावट और मीनाकारी के कारण उनके दाम कुछ और अधिक होंगे। बस इस बात का तो फैसला हो गया मैं तुम्हें पंद्रह सौ फ्रांक दूँगा लीवर की शक्ल में। यह रक़म मैं क्रोशो से कर्ज़ लूँगा क्योंकि इस समय घर में तो मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। या शायद पैरोके जिस पर बहुत लगान चढ़ गया है, मुझे कुछ पैसे दे दे। हाँ, यह ठीक है। मैं अभी जाकर इसकी व्यवस्था करता हूँ।" उसने अपना हैट उठाया, दस्ताने पहने और बाहर निकल गया।

"अच्छा तुम जा रहे हो ?" योज़ेन ने प्रेम भरी उदास नज़रों से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"मैं मजबूर हूँ, योज़ेन।" उसने सिर झुकाये हुए उत्तर दिया।

बहुत दिनों तक शारल की शक्ल, बात-चीत और गति-विधि से यह लगता रहा जैसे कोई आदमी घोर विपत्ति में हो, लेकिन जिसे अपने उत्तरदायित्व का एहसास हो, और जिसके दुर्भाग्य ने उसे अधिक से अधिक प्रयत्नशील बना दिया हो। उसने अपने आप पर तरस खाना छोड़ दिया था और अब वह एक बहादुर इन्सान बन गया था। जिस दिन शारल अपना सादा काला मातमी सूट पहनकर नीचे आया उस दिन योज़ेन उसके चरित्र से इतनी प्रभावित हुई कि इससे पहले कभी न हुई थी। इन कपड़ों में उसका उदास और पीला चेहरा बहुत अच्छा लग रहा था। इन दोनों स्त्रियों ने भी शोक-वस्त्र धारण कर लिये थे और ग्योम ग्रांदे की आत्मा की शांति के लिए गिरजा में जो प्रार्थनाएं हुई थीं उनमें वे शारल के साथ गई थीं।

दोपहर के भोजन के उपरांत शारल को पेरिस से पत्र मिले। उसने उन्हें खोलकर पढ़ा।

"क्यों भैया," योज़ेन ने धीरे से पूछा, "सब बातें ठीक से तय हो गई है न ?"

"मेरी बेटी, इस प्रकार के सवाल कभी नहीं पूछने चाहिए।" ग्रांदे ने कहा, "मैं अपनी बातें तुम्हें कभी नहीं बताता। फिर भला तुम्हें अपने चचेरे भाई की बातों में उलझने की क्या पड़ी है ? तुम उसे अपने हाल पर छोड़ दो।"

"जी, ऐसी कोई गुप्त बात तो है नहीं।" शारल ने कहा।

"तत, तत, तत। बेटे तुम्हें पता चलेगा कि व्यापार के मामले में तुम्हें अपनी जबान काबू में रखनी चाहिए।"

जब दोनों चाहने वाले बाग में अकेले रह गये तो शारल योज़ेन को अखरोट के पेड़ के नीचे पुराने बेंच की ओर खींच ले गया, जहाँ वे अकसर बैठा करते थे। "मुझे अलफोंस पर भरोसा था और मेरी बात ठीक ही निकली।" वह बोला, "उसने बड़ी सफाई, चतुरता और ईमानदारी से मेरा काम कर दिया है। उसने पेरिस में मेरा सब कर्ज़ चुका दिया है। मेरा फर्नीचर अच्छे दामों बेच दिया है और उसने लिखा है कि उसने एक बूढ़े कप्तान की राय पर जो इंडीज़ हो आया है, मेरे रुपये से जवाहरात और बहुत-सी छोटी-छोटी चीजें खरीद ली हैं, जिनकी इंडीज़ में बहुत मांग है। उसने मेरी यह चीज़ें नाँत पहुँचा दी हैं, जहाँ से ईस्ट इंडिया कम्पनी का एक जहाज़ जावा को सामान ले जा रहा है और इसका मतलब यह है योज़ेन कि हमें पांच दिन के बाद एक दूसरे से अलग होना पड़ेगा। यह वियोग चिरकाल के लिए होगा और सम्भव है कि हम एक दूसरे से सदा के लिए बिछुड़ जायें। मेरा व्यापार का सामान और दस हज़ार फ्रांक की रकम जो मेरे दो मित्रों ने मुझे भेजी है, इससे मैं कोई अच्छा व्यापार नहीं कर सकता और इस प्रकार मुझे कई साल तक लौट आने की आशा नहीं। प्यारी बहन, हमें एक दूसरे से अधिक आशाएं नहीं लगानी

चाहिए। हो सकता है कि मैं मर खप जाऊँ और यह भी सम्भव है कि तुम्हें विवाह के लिए कोई बेहतर……"

"तुम्हें, मुझसे प्रेम है ?" योज़ेन ने पूछा।

"हाँ, अवश्य !" उसने ऐसे दृढ़ स्वर में उत्तर दिया कि मालूम होता था कि उसकी भावनाओं का सारा सत्य इन शब्दों में शामिल है।

"शारल, फिर मैं तुम्हारा इंतजार करूँगी। भगवान् के लिए ! पापा खिड़की से बाहर झांक रहे हैं।" उसने शारल से बचते हुए कहा, जो उसे चिमटाने के लिए करीब सरक आया था।

वह ड्योढी की ओर भागी और यह देखकर कि शारल भी उसके पीछे आ रहा है वह और दूर गई। फिर बिना किसी विशेष विचार के वह ड्योढ़ी के सबसे अंधेरे कोने की ओर भाग गई जहाँ नाँनों के सोने की कोठरी थी। वहां शारल ने जो बिलकुल करीब पहुँच चुका था उसके दोनों हाथ अपने हाथों में पकड़ कर उसे अपने सीने में चिपटा लिया। शारल की बाहें योज़ेन की कमर के गिर्द लिपट गईं। योज़ेन ने अब किसी प्रकार की बाधा न डाली और अपने प्रिय की छाती से लग गई। यहाँ खड़े होकर उन्होंने एक अत्यन्त पवित्र और मधुर चुम्बन किया।

"प्यारी बहन, चचेरा भाई सगे भाई से बेहतर होता है क्योंकि वह तुमसे शादी कर सकता है।" शारल ने कहा।

"भगवान् ऐसा ही करे।" नाँनों ने पीछे से दरवाज़ा खोलते हुए ऊँचे स्वर में कहा। उसकी आवाज़ ने दोनों दीवानों को चौंका दिया और वे खाने के कमरे की ओर भाग गये। वहां पहुँच कर योज़ेन ने अपनी सिलाई सम्भाल ली और शारल ने मादाम ग्रांदे की प्रार्थना-पुस्तक उठाकर क्वांरी मरियम की प्रार्थनाओं का हिस्सा खोला और तन्मयता से पढ़ना शुरू कर दिया।

"अच्छा !" नाँनों बोली, "तो हम सब प्रार्थना कर रहे हैं।"

ज्योंही शारल ने अपने जाने का दिन निश्चित किया, ग्रांदे दौड़-धूप में लग गया और इस काम में बड़ी दिलचस्पी प्रकट करने लगा। वह बड़ी

उदारता से सलाह-मश्विरे देता और वह काम खुशी से करने को तैयार होता जिसमें उसका पैसा खर्च न होता हो। पहले उसने शारल का सामान बांधने के लिए आदमी की व्यवस्था की; लेकिन फिर यह कहकर कि वह बहुत पैसे मांगता है खुद ही पुराने तख्ते लेकर इस काम में जुट गया। वह हर सुबह समय से पहले ही बिस्तर से उठ जाता और तख्तों को जोड़ने-तोड़ने और कीलें ठोकने में लग जाता और उसने वाकई कई संदूक बना लिये, जिनमें शारल की सारी चीज़ें बन्द कर दीं और खुद ही पानी के जहाज़ से नांत पहुँचाने का प्रबन्ध भी कर दिया। फिर सफर के बीच में उनका बीमा कराने की ज़िम्मेदारी भी अपने ऊपर ले ली।

ड्योढ़ी में चुम्बन के उपरांत का ज़माना योज़ेन को बहुत शीघ्र बीतता हुआ जान पड़ा। कई बार वह सोचती कि शारल के साथ ही चली जाये क्योंकि जो बंधन एक मनुष्य को दूसरे से बाँध देते हैं उनमें प्रेम की भावना सबसे दृढ़तम होती है और जो लोग इस भावना से परिचित हैं, वे जानते हैं कि उम्र किस तरह हर रोज कम होती चली जाती है। और सिर्फ समय ही नहीं बल्कि हर तरह की अप्रत्याशित घटनायें, प्राणघातक रोग और ज़माना मिलजुलकर इसे नष्ट कर देने पर तुल जाते हैं। ऐसे ही लोग योज़ेन की मानसिक पीड़ा को समझ सकते हैं। उसने बगीचे में इधर-उधर टहलते हुए ढेरों आँसू बहा डाले। यह बगीचा, सेहन, पुराना घर और शहर सबके सब उसके लिये अत्यन्त सीमित होकर रह गये थे और उसके विचार अभी से समुद्र के असीम विस्तार में भटकने लगे थे।

शारल के रवाना होने से एक दिन पहले की बात है। उस दिन सुबह को ग्रांदे और नाँनों घर से बाहर गये हुए थे। शारल ने वह कीमती संदूकचा जिसमें वे चित्र रखे हुए थे, योज़ेन के संदूक में रख दिया। यह उसी खाने में रखा गया था, जिसमें अब मखमल की थैली पड़ी थी। संदूक में सिर्फ इसी एक खाने को ताला लगाया जा सकता था। यह संदूकचा रखवाते हुए शारल ने उसे बार-बार चूमा था और बहुत से आँसू बहाये थे। जब योज़ेन ने खाने में ताला लगाकर चाभी अपनी अंगिया में

छिपा ली तो शारल ने वहीं प्रेम की छाप लगा दी। और योज़ेन को भी इनकार का साहस न हुआ।

"प्यारे, यह चाभी सदा यहीं सुरक्षित रहेगी।"

"अच्छा ! तो मेरा दिल भी इसी में अटका रहेगा।"

"शारल, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।" उसने तनिक भर्त्सना के साथ कहा।

"क्यों, क्या हमारी शादी नहीं हो चुकी है ?" शारल ने उत्तर दिया, "तुमने मुझे वचन दिया है और मैं भी तुम्हें वचन देता हूँ।"

"हम सदा एक दूसरे के रहेंगे।" उन्होंने एक साथ कहा, और एक बार फिर यही वाक्य दोहराया। इससे पवित्र प्रतिज्ञा दुनिया में आज तक न की गई होगी क्योंकि शारल का प्रेम भी एक क्षण के लिये योज़ेन की सीधी-सादी सहृदयता के सामने पवित्र बन गया था।

दूसरी सुबह नाश्ते के समय मेज़ पर बड़ी उदासी रही। नाँनों को शारल ने एक नया गाऊन और एक मुलम्मे वाली सलीब दी थी। लेकिन इन उपहारों के बावजूद उसकी आँखों में आँसू भर आये। क्योंकि वह अपनी भावनाओं को स्वच्छंदता से व्यक्त कर सकती थी, इसलिये वह रो रही थी।

"हाय, बेचारा धान-पान-सा लड़का समुद्र पार जा रहा है।" वह बार-बार अपनी बातों में इसीका जिक्र कर रही थी।

साढ़े दस बजे सारा परिवार शारल को नाँत जाने के लिये डाक गाड़ी में सवार कराके निकला। नाँनों ने कुत्ते को खुला छोड़ दिया; दरवाज़े में ताला लगाया और शारल का हैंडबेग उठाकर चल दी। पुरानी गली का प्रत्येक दुकानदार दरवाज़े में खड़ा हो कर इस मुख्तसर-से जुलूस को गुज़रता हुआ देखने लगा। मोसियो क्रोशो भी बाजार में उनसे आ मिला।

"योज़ेन !" उसकी मां ने कान में कहा, "देखो ! तुम कहीं रोने न लगना।"

सराय के फाटक पर पहुँचकर ग्रांदे ने शारल के दोनों गालों को चूमा ।

"अच्छे बेटा," वह बोला, "गरीब बनकर जा रहे हो, अमीर बनकर आना । तुम्हारे माता-पिता की इज्जत बिलकुल सुरक्षित रहेगी । इसकी जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ । बस अब तुम अपना काम करो ।"

"आह ! प्यारे चचा इस वचन से तो वियोग की कटुता में माधुर्य उत्पन्न हो गया है । आप इससे बड़ा और कोई उपहार तो मुझे दे ही नहीं सकते थे ।"

शारल ने बूढ़े टीनसाज़ के शब्दों का पूरी तरह मतलब समझने से पहले ही उसकी बात काट दी थी । उसने अपनी बाहें अपने चचा के गले में डाल दीं और कृषक के झुलसे हुए गालों पर कृतज्ञता के आँसू बहा डाले ।

योज़ेन ने एक हाथ में शारल का हाथ ले लिया और दूसरे में पिता का और दोनों को ज़ोर से दबाया । सरकारी वकील मन ही मन में हँस रहा था क्योंकि सिर्फ वही ग्रांदे को भली भाँति समझता था । वह उसकी चालाकी और मक्कारी की दाद दिये बिना न रह सका । सोमूर के चार शहरी और कुछ तमाशाई देर तक गाड़ी को जाता देखते रहे, यहाँ तक कि गाड़ी पुल से परे जाकर नज़रों से ओझल हो गई । और पहियों की आवाज़ शनैः-शनैः मद्धम पड़ती गई ।

"चलो सस्ते ही छूटे ।" टीनसाज़ ने कहा ।

सौभाग्य से मोसियो क्रोशो के सिवाय और किसीने यह वाक्य न सुना । योज़ेन और उसकी माँ घाट के उस सिरे पर पहुँच गई थीं, जहाँ से वे अब तक शारल की गाड़ी को देख सकती थीं । वहाँ खड़ी-खड़ी वे शारल की ओर अपने रूमाल हिलाती रहीं । और वह भी उत्तर में गाड़ी में से हाथ हिलाता रहा, यहाँ तक कि वह नज़रों से ओझल हो गया । तब योज़ेन माँ की ओर मुड़ी ।

"आह ! माँ, माँ । अगर सिर्फ एक क्षण के लिए मुझे भगवान की

शक्ति प्राप्त हो जाती।" वह बोली।

•

कहानी का सिलसिला बार-बार नहीं टूटना चाहिए। इसलिये यह आवश्यक जान पड़ता है कि संक्षेप में पेरिस की स्थिति का विश्लेषण किया जाये और देखा जाये कि ग्रांदे ने क्या-क्या तिगड़में कीं और उसके सुयोग्य सहायक अर्थात् साहूकार ने ग्योम ग्रांदे के मामले को किस प्रकार सुलझाया।

दे ग्रासीं के जाने के एक महीने बाद ग्रांदे को एक लाख लीवर वार्षिक का एक सर्टीफिकेट मिला, जो अस्सी फ्रांक में खरीदा गया था। इसकी कोई सूचना ही न आई थी कि असल रकम कब अदा की गई। और कब रसीद बनी जिसे कुछ अर्से बाद सर्टीफिकेट में तब्दील कराया गया। इस भेद का कंजूस की मृत्यु के उपरांत जायदाद की सूची और उसके दूसरे कागज़ात से भी कुछ पता न चल सका। क्रोशो का खयाल यह था कि नाँनों को बिना कुछ बताये किसी न किसी ढंग से साधन बनाया गया होगा। क्योंकि इसी जमाने में यह वफादार नौकरानी चार-पाँच दिन के लिये घर से बाहर गई थी। जाहिर यह किया गया था कि वह फरवाफों में कुछ देखने-भालने गई है, मानो उसका चतुर स्वामी किसी बात से अनभिज्ञ भी रह सकता था। जहाँ तक ग्योम ग्रांदे के लेन-दारों का ताल्लुक था सारा मामला टीनसाज की आशा और योजना के अनुसार तय हो गया।

फ्रांस के राष्ट्रीय बैंक में, जैसा कि सबको मालूम है, पेरिस और प्रांतों की बड़ी-बड़ी जायदादों की सूची रखी रहती है। वहाँ दे ग्रासीं और सोमूर के फैलक्स दे ग्रांदे के नाम भी मौजूद थे और व्यापारी हल्कों में उनके नामों का काफी महत्व था। क्योकि ये लोग न सिर्फ बहुत-सी दौलत के मालिक थे बल्कि उनके पास ऐसी जमीनें थीं, जिन्हें गिरवी रखने की कभी नौबत न आई थी। और अब यह बात मशहूर थी कि सोमूर से दे ग्रासीं इस इरादे से पेरिस आया है कि ग्योम ग्रांदे फर्म के लेनदारों

को बुलाकर उनसे बातचीत करे। गोया अब स्वर्गीय व्यापारी की आत्मा अपमानित होने से बच गई थी। मुहरें लेनदारों की उपस्थिति में तोड़ी गईं और पारिवारिक वकील नियमित रूप से जायदाद की सूची बनाता चला गया।

दरअसल थोड़े ही अर्से बाद दे ग्रासीं ने लेनदारों की मीटिंग की और उन्होंने सर्वसम्मति से सोमूर के साहूकार और फ्राकोई केलर को जो बहुत बड़ी व्यापारी कोठी का मालिक और लेनदारों में सबसे बड़ा था, स्वर्गीय ग्योम ग्रांदे की जायदाद का अमानतदार नियुक्त कर लिया और उन्हें अधिकार दिया कि जो चाहें करें ताकि कुल का नाम भी बदनामी से बच जाये और रुपया भी अदा हो जाये। दे ग्रासीं के मुख्तार होने ही से लेनदारों को उम्मीद बँध गई और सारी बातें सहज में तय हो गईं। क्योंकि किसी ने भी तो उसका विरोध नहीं किया और किसी को भी इस बात का खयाल न आया कि वह अपने लाभ या हानि का अन्दाज़ा लगाये। हर एक अपने आप से यही कहता रहा कि :

"सोमूर वाला ग्रांदे सब कुछ अदा कर देगा।"

छः महीने बीत गये। पेरिस के व्यापारियों ने अपने बिलों को वापस लेकर विज्ञापित होने से रोक दिया और उन्हें उठाकर अलमारी में डाल दिया। टीनसाज़ को अपने पहले उद्देश्य में सफलता प्राप्त हो गई थी। पहली मीटिंग के बाद दोनों अमानतदारों ने सैंतालीस फी सदी के हिसाब से लेनदारों में रकम बाँट दी। यह रकम स्वर्गीय ग्योम ग्रांदे की जायदाद, निजी सामान और कुछ इधर-उधर की चीज़ें बेचकर इकट्ठी की गई थी। ये सब कुछ बड़ी समझदारी और ईमानदारी से किया गया और लेनदारों ने प्रसन्न होकर ग्रांदे की अद्वितीय दयानतदारी और साहस को बहुत सराहा। जब यह तारीफें काफी दिनों चलती रहीं तो फिर लेनदारों ने यह सोचना शुरू किया कि अब हमारा बाकी रुपया कब वसूल होगा। और फिर इन सबने मिलकर एक पत्र ग्रांदे को लिख दिया।

"अच्छा, तो यह मामला है !" बूढ़े टीनसाज़ ने इतना कहा और पत्र आग में झोंक दिया।

"मेरे प्यारे मित्रो, तनिक धैर्य से काम लो।"

इस पत्र में लिखी हुई बातों के उत्तर में सोमूर वाले ग्रांदे ने उन्हें कहलवा भेजा कि आप सब लोग मेरे स्वर्गीय भाई के नाम के तमाम बिल और इस्तगासे के कागज़ात सरकारी वकील के पास जमा करा दें। और साथ ही वसूल शुदा रकम की रसीदें भी चस्पां कर दे ताकि सारे हिसाब की जाँच पड़ताल करके वास्तविक स्थिति का पता चलाया जा सके। कागज़ात जमा कराने की योजना से बहुत-सी कठिनाइयों का स्पष्टीकरण हो गया।

दरअसल लेनदारों की हालत दीवाने की-सी होती है। निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि वे क्या कर बैठें। अगर वह एक दिन जल्दी से सब किस्सा निपटा देने की धुन में हैं, तो दूसरे दिन लड़ने-मरने के लिए तत्पर। और अगर कुछ देर बाद उसे देखिये तो वह शिष्टाचार और शालीनता की मूर्ति मालूम होगा। सम्भव है कि आज उसकी पत्नी तनिक तरंग में हो। सबसे छोटे बच्चे के दाँत निकल आये हों और घर में सब प्रकार कुशल हो तो वह अपनी माँग में ज़रा भी कमी करने को तैयार न होगा। लेकिन फर्ज़ कीजिये दूसरे दिन वह वर्षा होने के कारण घर से बाहर न निकल सके तो वह उदास हो जाता है और जल्दी से मामला चुका लेने की धुन में हर प्रकार की शर्त मानने को तैयार हो जाता है। सुबह तक उसे अक्ल आ जाती है और वह जमानत तलब करने लगता है। और महीने के अन्त पर नौबत यहाँ तक आती है कि वह दुष्ट और निष्ठुर व्यक्ति कर्जदार को फाँसी दिलवाने की बातें करने लगता है। लेनदार की मिसाल आम घरेलू चिड़िया की-सी होती है, जिसकी दुम पर छोटे बच्चों से नमक की डली रखने का प्रयत्न करने के लिए कहा जाता है। यह बहुत ही बढ़िया उपमा है जिसे तोड़-मरोड़कर लेनदार अपने बिलों के सिलसिले में भी इस्तेमाल कर सकता

है, क्योंकि आखिर वह इनसे लाभ की बहुत-सी उम्मीदें रखता है। ग्रांदे को लेनदारों की इन मौसमी तब्दीलियों का खूब अन्दाज़ा था। और वर्तमान परिस्थितियों में उसकी सारी भविष्य-वाणियाँ सत्य सिद्ध हो रही थीं। उसके भाई के लेनदार ठीक उसकी इच्छा के अनुसार कार्र-वाई कर रहे थे। कई तो ऐसे बिफर गये कि उन्होंने कागज़ात दाखिल कराने से साफ इनकार कर दिया।

"खूब, यह तो अच्छा ही है।" ग्रासीं ने इस सिलसिले में जो पत्र लिखे थे उन्हें पढ़ते हुये ग्रांदे ने कहा।

इनके अतिरिक्त कुछ लोगों ने यह कहा कि जब तक उनकी हैसियत को स्पष्ट नहीं कर दिया जायगा, वे अपने कागज़ात जमा कराने को तैयार नहीं। फिर वे चाहते थे कि उन पर कोई जिम्मेदारी न आये और उनका यह अधिकार भी अक्षुण्ण रहे कि वे जब उचित समझें जायदाद को दिवालिया घोषित कर दें।

अब पत्र व्यवहार का नया सिलसिला शुरू हो गया और देर में देर होती चली गई। अन्त में ग्रांदे ने सारी शर्तें स्वीकार कर लीं। इसके फलस्वरूप सुलह-सफाई चाहने वाले लेनदारों ने हठी लोगों को उचित बात सुनने पर आमादा कर लिया और तनिक संकोच के बाद काग-ज़ात दाखिल हो गये।

"वह बूढ़ा दिल ही दिल में हमारा और आपका मज़ाक उड़ा रहा है।" लेनदारों ने दे ग्रासीं से कहा।

ग्योम ग्रांदे को मरे तेईस महीने गुज़र चुके थे। इस बीच में पेरिस के व्यापारी जीवन की गहमा-गहमी में बहुत-से लेनदार अपने दावे भुला चुके थे। अब तो महज़ उन्हें किसी समय एक खयाल-सा लग जाता था और वे यह कहकर चुप हो जाते :

"ऐसा मालूम होता है कि सैंतालीस प्रतिशत के अतिरिक्त अब और कुछ नहीं मिलेगा।"

टीनसाज़ को समय पर बड़ा भरोसा रहता था और इस मामले में

भी उसने समय ही से मदद चाही थी। तीसरे साल के आने पर ड्रे ग्रासीं ने उसे एक पत्र में लिखा कि मैंने बहुत-से लेनदारों को सहमत कर लिया है कि वे अपने दावे वापस ले लें। और अब चौबीस लाख कर्ज़ का सिर्फ दस फी सदी बाकी रह गया है। इस पत्र के उत्तर में ग्रांदे ने लिखा कि सरकारी वकील और दलाल जिनके दिवाला निकलने के कारण मेरे भाई की मृत्यु हुई थी, वे अभी तक जीवित हैं। इस समय तक उनका नुकसान पूरा हो चुका होगा और अब कार्रवाई उनके विरुद्ध होनी चाहिये। इस प्रकार सम्भव है कुछ रकम उनसे वसूल हो जाये फिर कर्ज़ की रक़म और भी कम हो जायेगी।

चौथे साल में यह रकम सिर्फ बारह लाख रह गयी और लगता था कि बस अब और कम न हो सकेगी। इसके बाद लेनदारों और अमानतदार में बातचीत होती रही। ग्रांदे और अमानतदारों के दर्म्यान सुलह-सफाई की बात में छः महीने और बीत गये। सारांश यह कि जब सोमूर वाले ग्रांदे पर बहुत दबाव डाला गया तो कहीं उस साल के नये महीने में जाकर उसने ऐलान किया कि ईस्ट इंडीज़ में मेरे भतीजे ने बहुत सा धन कमाया है और उसने इरादा ज़ाहिर किया है कि वह अपने पिता का कर्ज़ पूरा-पूरा चुका देगा। अतएव इस बीच में मैं अपने आप कोई कार्रवाई नहीं कर सकता। और न जल्दी से फैसला करके लेन-दारों को धोखा देना चाहता हूँ। मैं इस बारे में अपने भतीजे को खत लिख चुका हूँ और उसकी राय की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

पाँचवाँ साल भी लगभग आधा बीत गया; लेकिन लेनदार अब भी खामोशी से इन्तज़ार कर रहे थे, क्योंकि हमारा महान टीनसाज़ बड़ी चतुरता से कभी-कभी पत्र लिखता था और पूरे-पूरे दाम चुका देने के लोभ से उन्हें रोके जा रहा था। वैसे वह विद्रूप भाव से उनकी सरलता पर हंस रहा था। "अरे यह पेरिस के रहने वाले क्या समझें।" वह मन ही मन में प्रसन्न होकर कहता और एक धूर्ततापूर्ण मुस्कराहट उसके होठों पर बिखर जाती।

दरअसल इन लेनदारों के भाग्य में ऐसी शहादत लिखी थी, जो व्यापारी हलकों में आज तक सुनने में भी न आई थी और इस कहानी में जब उनका दुबारा उल्लेख होगा तो उनकी दशा कदाचित यही होगी जिस पर इस समय ग्रांदे ने उन्हें पहुँचा दिया था। सरकारी कर्ज़ों का भाव अब एक सौ पंद्रह तक चढ़ गया था। बूढ़े ग्रांदे ने उन्हें बेच डाला और उनके एवज़ पेरिस से उसे चौबीस लाख फ्रांक सोने के रूप में पहुँच चुके थे। ये सब उसने सूद में मिली हुई छः लाख फ्रांक रकम के साथ ही लकड़ी के डिब्बों में डाल दिये।

दे ग्रासीं कुछ कारणों से पेरिस ही में ठहरा रहा। पहली बात तो यह थी कि वह वहाँ पार्लियामेंट का मेम्बर हो गया था। दूसरे वह बच्चों का पिता होने के बावजूद सोमूर के नीरस जीवन से ऊब गया था और पेरिस के थियेटर की सुन्दरतम एक्ट्रेस मादमुआज़ेल फ्लोरीन को दिल दे बैठा था। और साहूकार की तबीयत में कुछ आवारगी आ चली थी। यहां उसकी आचरण की आलोचना करना तो व्यर्थ है, सोमूर भर में वह भ्रष्टाचार के कारण बदनाम था। यह तो उसकी पत्नी का सौभाग्य था कि उसने समझ से काम लिया और सोमूर का कारोबार अपने नाम पर चलाती रही और इस प्रकार कुछ थोड़ी-बहुत जायदाद बच रही वरना मोसियो दे ग्रासीं की हिमाकतों और फिज़ूलखर्चियों से तो सब कुछ खत्म हो गया होता। मादाम ग्रासीं की दशा दयनीय थी। उसकी स्थिति लगभग एक विधवा की सी होकर रह गयी थी। ऊपर से क्रोशो लोगों ने उसकी स्थिति और बिगाड़ने में कोई कसर उठा न रखी। यहाँ तक कि अपने बेटे से योज़ेन ग्रांदे के सम्बंध की तो उसे आशा ही न रही और उसने अपनी बेटी की भी बहुत बुरी जगह शादी कर दी। रोदल्फ दे ग्रासीं अपने पिता के पास पेरिस चला गया और कहते हैं कि वहाँ बाप-दादे का नाम खूब रोशन किया। अतएव क्रोशो लोग अब पूरी तरह सफल हो चुके थे।

"आपके पति तो बिल्कुल अक्ल से हाथ धो बैठे हैं।" ग्रांदे ने यह

वाक्य ऐसे समय कहा, जब वह मादाम दे ग्रासीं को कुछ कर्ज़ा माकूल जमानत पर दे रहा था। "मुझे आपसे बड़ी हमदर्दी है। आप तो बड़ी अच्छी हैं।"

"हाय!" बेचारी स्त्री ने आह खींचते हुए कहा, "जिस दिन वह आपके काम के सिलसिले में पेरिस रवाना हुए तो कौन कह सकता था कि वह अपने आपको तबाह करने जा रहे हैं।"

"मादाम, भगवान साक्षी है कि मैंने अन्त समय तक उन्हें रोकने का प्रयत्न किया और मजिस्ट्रेट साहब भी जाने के लिए बड़ी खुशी से तैयार थे। लेकिन अब हमें पता चला कि आपके पति ने इतना आग्रह क्यों किया।"

इसका मतलब है कि ग्रांदे पर मादाम दे ग्रासीं का कोई एहसान नहीं था।

•

औरत को हर हालत में ऐसी मुसीबतों से दोचार होना पड़ता है, जिनसे मर्द को कभी साबका नहीं पड़ता। और फिर औरत को अपने कष्टों का एहसास भी मर्द से कहीं अधिक होता है क्योंकि मर्द की शक्ति और साहस का सदा प्रदर्शन होता रहता है, वह अमल भी करता है और सोचता भी है। इधर-उधर आता-जाता है, वर्तमान में व्यस्त रहकर भविष्य के सपनों से संतोष प्राप्त कर लेता है। कुछ ऐसी ही हालत शारल की थी। लेकिन औरत सब प्रकार से विवश है। उसे सब कुछ चुपचाप सहन करना पड़ता है। अपनी विपत्तियों का मुकाबला करना होता है और उसका मस्तिष्क किसी समय भी चिंताओं से मुक्त नहीं होता। वह दुख की अथाह गहराइयों में डूब जाती है और आँसुओं और प्रार्थनाओं के अतिरिक्त उसका कोई सहारा नहीं होता। यही स्थिति योज़ेन की थी। उसे अब अन्दाज़ा हो रहा था कि स्त्री के जीवन का ताना-बाना प्रेम, ग़म, आशा, भय और त्याग के तारों से बुना हुआ है। उसके भाग्य में वही कुछ लिखा था जिसके लिए स्त्री को विधाता ने रचा है। लेकिन

स्त्री के जीवन में सुख और शांति के जो क्षण आते हैं, वह उनसे वंचित थी। बोसोये की विचित्र उपमा के अनुसार उसकी प्रसन्नता के क्षणों का कुछ ऐसा हिसाब था जैसे दीवार पर विभिन्न स्थानों पर कीलें गड़ी हों, लेकिन जब उन सब को एक जगह जमा किया जाये तो मुट्ठी भर भी न निकलें। कष्ट हमें कभी प्रतीक्षा में नहीं रखते और योज़ेन के लिए तो वे तुरन्त आ रहे थे।

शारल के जाने के बाद ग्राँदे का घर फिर अपने नियमित रूप से चलने लगा। योज़ेन के अतिरिक्त किसी के लिए भी कोई परिवर्तन न आया था; लेकिन उसे अब वह खाली-खाली लग रहा था। उसने शारल का कमरा वैसा ही सजा रहने दिया जैसा वह छोड़कर गया था। मादाम ग्रांदे और नाँनों ने भी इस काम में उसका साथ दिया और जान-बूझकर उसके पिता से छिपाए रखा। "क्या मालूम ?" योज़ेन कहती, "हमने जितने दिन का अनुमान लगाया है, वह उससे पहले ही हमारे पास वापस आ जायें।"

"अरे, काश मैं उन्हें फिर यहाँ देख पाऊँ!" नाँनों उत्तर देती, "मैं बड़ी अच्छी तरह उनका काम कर सकती हूँ। वह बहुत अच्छे और भले आदमी हैं और उनके लड़कियों के सदृश बने हुए घुंघराले बाल बड़े सुन्दर लगते हैं।"

योज़ेन नाँनों की ओर टकटकी बांधकर देखने लगी।

"पवित्र मरियम की कसम, बीबी। आपकी दृष्टि तो एक दीवाने की-सी है। आप लोगों को इस प्रकार न देखा करें।"

उसके बाद मादमुआज़ेल ग्रांदे की सुन्दरता ने नया ही रूप धारण कर लिया। प्रेम के वे गम्भीर विचार जिन्होंने धीरे-धीरे उसकी आत्मा को भर दिया था और उस औरत का स्वाभिमान जिससे प्रेम किया जा रहा हो, इन दोनों ने मिलकर उसके चेहरे में ऐसी चमक पैदा कर दी थी जिसे प्रकट करने के लिए चित्रकार प्रकाश-मंडल बनाया करते थे। जब तक योज़ेन का चचेरा भाई उसके जीवन में न आया

था, उसकी तुलना कंवारी मरियम से की जा सकती थी, जो अपने भाग्य से अनभिज्ञ थी। लेकिन अब जब कि वह उसके जीवन से दूर जा चुका था वह माँ मरियम जैसी हो गई थी। वह प्रेम-रूपी बच्चे को हृदय से लगाये रहती थी। स्पेनिश चित्रकारों ने बीबी मरियम की इन दोनों स्थितियों को प्रस्तुत किया है, जो एक दूसरी से सर्वथा भिन्न हैं। ईसाई धर्म में बहुत से शानदार प्रतीक हैं, लेकिन यह उन सब में अद्वितीय है।

शारल की रवानगी के दूसरे ही दिन योज़ेन गिर्जे में प्रार्थना के लिए गयी (अब उसने नित्य गिरजे में प्रार्थना के लिए जाने का निश्चय कर लिया था।) वहाँ से लौटकर उसने किताबों की दुकान से दुनिया का नक्शा खरीदा। इस नक्शे को उसने अपने आइने के पास एक कील में टांग दिया ताकि वह अपने चचेरे भाई के इंडीज़ जाने का मार्ग देख सके और कल्पना की सहायता से उस दूर जाते हुए जहाज़ पर अपने दिन-रात का कुछ भाग शारल के सम्पर्क में बिता सके और उससे मिलकर अपने मन में उत्पन्न होने वाले अनगिनत प्रश्नों के उत्तर पूछ सके।

"सुनाओ तुम ठीक हो न? उदास तो नहीं हो गये। और वह नक्षत्र जिसके बारे में तुमने मुझे बताया था, देखकर तुम्हें मेरा ख्याल आया है न? तुमने मुझे इस नक्षत्र की सुन्दरता का एहसास दिलाया था।"

सुबह के समय वह अखरोट के पेड़ तले बिछे हुए दीमक लगे पुराने काई जमे हुए बैंच पर इस प्रकार बैठी रहती जैसे कोई स्वप्न देख रही हो। यहीं बैठकर इन दोनों ने मीठी-मीठी मूर्खतापूर्ण बातें की थीं और अपने भविष्य के लिये सुन्दर हवाई किले बनाये थे। वह चारों ओर की ऊँची दीवारों में से झलकते हुए आकाश पर नजर डालती और अपने भविष्य के बारे में सोचती रहती। फिर उसकी निगाहें पुरानी दीवार और छत की ढलान पर से होती हुई शारल के कमरे पर जा रुकतीं, जो ठीक उस छत के नीचे था, सारांश यह कि उसका एकांत, असहाय और सच्चा प्रेम उसके प्रत्येक विचार में ओतप्रोत था और पूर्वजों के कथनानुसार उसके जीवन का अविच्छेद्य अंग बन चुका था।

शाम को जब ग्रांदे के तथाकथित मित्र ताश खेलने आ जाते तो वह काफी प्रसन्न नज़र आती, लेकिन उसकी यह प्रसन्नता बनावटी होती। सुबह को वह सारा समय नाँनों और अपनी माँ के साथ शारल के बारे में बातें करते बिता देती। नाँनों ने यह समझ लिया था कि अपने मालिक की सेवा में किसी प्रकार का अन्तर आये बिना ही वह अपनी छोटी बीबी के कष्टों में उसकी सहायता कर सकती है। अतएव उसने कहा :

"अगर मेरा कोई चाहने वाला होता तो''''तो मैं उसके साथ नरक में भी जाने को तैयार हो जाती और मैं''''मैं तो उस पर अपने प्राण तक न्योछावर कर देती। लेकिन '''लेकिन मेरे लिए तो ऐसा अवसर आयेगा ही नहीं। मैं तो यह जाने बिना ही कि जीना किसे कहते हैं एक दिन मर जाऊँगी। आप विश्वास न करेंगी बीबी, वह जो अपना कोरनिवाये है न ? अच्छा आदमी है बेचारा। मेरी जमा-पूंजी के लोभ में मेरे पीछे लगा फिरता है। वह भी कुछ उन्हीं लोगों के सदृश है जो मालिक के धन के लोभ में आपसे प्रेम जताने आया करते हैं। मैं सब कुछ समझती हूँ। मैं सूखी घास के ढेर की भाँति बेडौल सही, मेरा दिमाग अभी बहुत तेज़ है और फिर बीबी ! हो सकता है कि उसे मुझसे प्रेम न हो, लेकिन मुझे उसकी यह बात बहुत अच्छी लगती है।"

इसी प्रकार दो महीने बीत गये और जिस भेद ने इन तीनों औरतों को एक-दूसरे के इतना निकट कर दिया था, इससे घर में कुछ नई दिलचस्पी पैदा हो गई थी, वरना इससे पहले शुष्कता और नीरसता के अतिरिक्त वहाँ कुछ भी न था। उनके लिए शारल अब भी इस घर में रहता था और बैठक के मटियाले शहतीरों तले आया-जाया करता था। नित्य सुबह-शाम योज़ेन सिंगार-मेज़ का खाना खोलकर अपनी चची का चित्र देखा करती थी। एक दिन इतवार की सुबह को उसकी माँ सहसा कमरे में आ गई। उस समय योज़ेन बड़ी तन्मयता से चची के चित्र में शारल की सदृश्यता खोजने में लीन थी, तब मादाम ग्रांदे को इस भयानक

रहस्य का पता चला कि योज़ेन ने अपना खजाना इस शृंगार-बक्स के एवज़ दे दिया है।

"क्या तुमने सभी कुछ उसे दे दिया ?" भयभीत माँ ने चौंककर पूछा, "नये साल पर जब तुम्हारे पापा तुम्हारा सोना देखना चाहेंगे तो तुम उन्हें क्या उत्तर दोगी ?"

योज़ेन की आँखें खुली की खुली रह गईं। इस विचार से दोनों स्त्रियाँ इतनी आतंकित हुईं कि सुबह का आधा समय इसी में बीत गया और सुबह की प्रार्थना का समय भी निकल गया और आखिर जब वे गिरजा पहुँचीं तो फौजियों की प्रार्थना हो रही थी। १८१९ का साल तीन दिन में खत्म होने वाला था। तीन दिन के बाद एक भयानक नाटक का आरम्भ होगा। जिसमें विष, खंजर और मार-काट के भयानक दृश्य तो नहीं होंगे, लेकिन एट्रयोस के शाही परिवार के लोगों ने भी इतने अत्याचार सहन न किये होंगे, जो इस बुर्जुवा परिवार को सहन करने पड़ेंगे।

"अब हमारा क्या बनेगा ?" मादाम ग्रांदे ने अपनी बुनाई घुटने पर रखते हुए बेटी से कहा।

बेचारी माँ ! पिछले दो महीने की घटनाओं ने उसकी बुनाई में बड़ी बाधा डाली थी। सर्दियों के लिए वह अपने आस्तीनबंद अभी तक खत्म न कर पाई थी। यद्यपि यह एक साधारण बात थी, लेकिन आगे चलकर इसी के कारण उसे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा क्योंकि एक बार अपने पति के प्रचंड क्रोध पर उसे बहुत पसीना आया और उस समय गर्म आस्तीनबंद न होने से उसे सर्दी लग गई।

"मेरी प्यारी बेटी, मैं यह सोच रही हूँ कि अगर तुम मुझे इसके बारे में पहले बता देतीं तो काफी समय था। हम पेरिस में मोसियो दे ग्रासीं को पत्र लिखते और संभव था कि वह तुम्हारे उन सिक्कों जैसे ही कुछ सिक्के हमें भिजवा देता। यद्यपि ग्रांदे को तुम्हारे सिक्कों की बहुत पहचान है फिर भी शायद...."

"लेकिन हम इतना पैसा कहाँ से लाते ?"

"यह मैं अपनी जायदाद बेचकर भी जुटा सकती थी। फिर इसके अलावा मोसियो दे ग्रासीं मित्रता ही में शायद हमें···"

"अब तो इसका समय ही नहीं रहा।" योज़ेन ने कम्पित स्वर में उत्तर दिया। "कल सुबह तो हमें उनके कमरे में नये साल की बधाई देने जाना होगा। है न ?"

"अरी योज़ेन, क्यों न हम इस सिलसिले में क्रोशो लोगों से बात करें ?"

"नहीं, नहीं। इस प्रकार तो हम बिल्कुल उनके कब्जे में होकर रह जायेंगे। मैं तो बिल्कुल उनकी ज़रखरीद बन जाऊँगी। जो कुछ मैंने किया है, ठीक था; इसलिए मुझे इसका ज़रा भी अफसोस नहीं। मैंने अपना दिल मजबूत कर लिया है। अब भगवान् ही मेरी रक्षा करेगा, उसकी जो इच्छा होगी, वही होगा। आह, माँ! अगर आपने वह पत्र पढ़ा होता तो उस समय अवश्य आपको भी शारल के अतिरिक्त और किसी बात का खयाल न आता।"

दूसरी सुबह नए साल सन् १८२० का आरम्भ था। जनवरी की पहली तारीख थी। माँ-बेटी दोनों इतनी चिंतित थीं कि सहम छिपाये न छिपता था। भय ने उन्हें एक सरल उपाय यह सुझा दिया कि सुबह को ग्रांदे के कमरे में जाकर नए साल की बधाई देने के पवित्र कर्त्तव्य का पालन ही न करें। सख्त सर्दी का बहाना भी हाथ आगया क्योंकि इस साल इतना जाड़ा पड़ा कि कई साल से नहीं पड़ा था। छतों पर बर्फ की गहरी तहें चढ़ गई थीं।

मादाम ग्रांदे ने जब अपने पति के चलने-फिरने की आहट सुनी तो पुकार कर कहा—"ग्रांदे, नाँनों से कहो कि मेरे कमरे में आग जलादे। हवा इतनी सर्द है कि मैं बिस्तर में पड़ी ठिठुरी जा रही हूं और इस उम्र में मुझे सावधानी बरतनी चाहिये।" तनिक रुक कर वह फिर बोली—"योज़ेन यहाँ आकर कपड़े बदलेगी वरना इतनी सर्दी में अगर उसने अपने

कमरे में लिबास बदला तो कहीं उसे सर्दी न लग जाये। हम नीचे बैठक में आजायेंगी। और वहीं आग के पास बैठी आपको नए साल की बधाई भी दगी।"

"तत, तत, तत क्या जबान है तुम्हारी भी, मादाम ग्रांदे! नया साल शुरू करने का यह कौनसा तरीका है? तुम ने तो इससे पहले उम्र भरमें कभी एक वक्त में इतनी बातें नहीं की। मेरे खयाल में तुमने अभी शराब में डबल रोटी का टुकड़ा भिगो कर खाया है।"

एक क्षण मौन का बीता। लगता था कि वह अपनी पत्नी से सहमत है क्योंकि उसने कहा, "बहुत अच्छा मादाम ग्रांदे, जो कुछ तुमने कहा है वह मैं अभी करवाता हूं। तुम बड़ी अच्छी औरत हो। अगर तुम समय से पहले खत्म होगई तो बहुत बुरा होगा। हालांकि नियम के अनुसार बारतेलियर परिवार के प्राणियों की उम्र बहुत लम्बी हुआ करती हैं; है न?" कुछ रुक कर वह फिर जोर से बोला, "खैर उनका रुपया तो मिल ही गया। इसिलए मैं उन्हें क्षमा करता हूं।" और वह खांसा।

"आज तो आप बड़े प्रसन्न जान पड़ते हैं।" बेचारी पत्नी ने कहा।

"कौन, मैं? मैं तो सदा प्रसन्न रहता हूं.......

प्रसन्न, प्रसन्न, प्रसन्न, तुम्हारा सदा का धंदा
टीनसाज़ खुशी से अपने कनस्तर बनाओ!"

उसने अपने बिस्तर बदल लिये थे और वह अपनी पत्नी के कमरे में आया—"तोबा, आज तो बहुत ही सख्त धुन्ध छाई हुई है। आज नाश्ता ज़रा अच्छा-सा करेंगे। दे ग्रासीं ने मुझे कुछ मिठाई भेजा है। मैं उसी का पता करने गाड़ियों के दफ्तर जा रहा हूं। उसे चाहिये था कि साथ योज़ेन के लिए दो सुनहरी सिक्के भी भेजता।" टीनसाज़ ने निकट आकर धीरे से कहा, "मेरे पास सोना बिलकुल नहीं रहा। कुछ सिक्के बचे हुए थे; लेकिन वे मैंने कारोबार के सिलसिले में खर्च कर दिये हैं। यह भेद की बात है। मैंने तुम पर भरोसा करके बतादी है।" और फिर नए साल की खुशी में उसने अपनी पत्नी का माथा चूम लिया।

"योज़ेन !" ग्रांदे के जाते ही माँ ने उसे पुकारा, "जाने क्या कारण है आज तो तुम्हारे पापा बड़े ही प्रसन्न हैं।"

"चलो अच्छा हुआ, तब तो हम अपनी बात टाल जायेंगे।"

"आज तो मालिक बड़े बदले हुए हैं।" नाँनों ने कमरे में आग जलाने के लिये आते हुए कहा, "सबसे पहले तो वह बोले—'मूर्ख, सुबह का प्रणाम ! नए साल की बधाई ! ऊपर जाकर मेरी पत्नी के कमरे में आग जलाओ, उन्हें सर्दी लग रही है"। जब मैंने पूरे छः फ्रांक का सिक्का उन्हें अपनी ओर बढ़ाते हुए देखा, तो पहले मैं समझी शायद मेरा दिमाग खराब हो गया है। यह देखिये मादाम, यह रहा यह सिक्का। अजी वह बहुत ही अच्छे आदमी हैं। इसमें कोई संदेह कर ही नहीं सकता। कई लोग ज्यों-ज्यों बुड्ढे होते जाते हैं उनका हृदय पत्थर की भांति कठोर होता जाता है; लेकिन यह तो और अच्छे स्वभाव के बनते जा रहे हैं। जिस प्रकार आपका बनाया हुआ शरबत जितना पुराना हो उतना ही स्वादिष्ट हो जाता है। मालिक बहुत ही भले आदमी है......"

ग्रांदे की योजनायें पूर्णरूप से सफल हो गईं थीं और यही उसकी प्रसन्नता का कारण था। उसके जिम्मे मोसियो दे ग्रासीं की कुछ रकम तो हालैंड के बिलों के सिलसिले में थी जो एक लाख पचास हज़ार की लागत के थे और एक लाख लीवर की मालियत के सरकारी कर्ज़े खरीदने में भी उसने कुछ रकम पेशगी खर्च की थी। अतएव मोसियो दे ग्रासीं ने अपने पैसे काटकर बाकी दस हज़ार फ्रांक गाड़ी द्वारा उसे भिजवाये थे। यह अंगूरों के कृषक के हिस्से की छः महीने की रकम थी और साथ ही उसने लिखा था कि सरकारी कर्ज़ों की कीमत धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। इस समय वे नवासी फ्रांक में बिक रहे हैं और बड़े पूँजीपति जनवरी के अंत में इन्हीं को बानवे फ्रांक के हिसाब से खरीदेंगे। ग्रांदे को अपनी पूंजी पर दो महीने में बारह प्रतिशत का लाभ हुआ। अब उसने सब हिसाब-किताब साफ कर लिया था। इसलिये आगे हर छः महीने बाद उसे पचास हजार फ्रांक की रकम मिला करेगी जिस पर न टैक्स देना होगा और

न कोई खर्च पड़ेगा। सारांश यह कि सरकारी कर्जे का सारा मामला उसकी समझ में अच्छी तरह आगया था। रकम लगाने का यह ढंग ऐसा था जिसमें कस्बाती लोग कुछ संकोच करते थे। ग्रांदे जब भविष्य के बारे में सोचता तो पांच साल के अर्से में वह अपने आपको साठ लाख फ्रांक का मालिक बना हुआ पाता—साठ लाख जो उसके हाथ पैर हिलाये बिना बढ़ते ही चले जाने वाले थे—साठ लाख फ्रांक! फिर इसके अति-रिक्त उसकी जागीर की भी आमदनी थी। अतएव उसने देखा कि अपार धन कमाने का रास्ता खुल गया और वास्तव में छः फ्रांक की रकम जो उसने नाँनों को दी वह शायद उस सेवा का पुरस्कार था, जो उसने अनजाने में की।

"ओहो यह बुड्ढा ग्रांदे किस धुन में है? यह तो सुबह-सुबह ऐसे भागा जा रहा है। जैसे कहीं आग लग गई हो?" दुकानदारों ने अपनी दुकानें खोलते हुए एक दूसरे से कहा।

थोड़ी देर बाद उन्होंने ग्रांदे को घाट की ओर से आते हुए देखा। उसके पीछे-पीछे गाड़ियों के दफ्तर का एक कुली ठेला लिये चला आ रहा था, जिसमें छोटे-छोटे थैलों में कुछ भरा था।

"अरे" एक दुकानदार बोला, "धनवालों को ही माया मिलती है। बूढ़ा यह पैसे लेने ही लपका जा रहा था।"

"अजी पैसे तो उसके पास पेरिस, फिरवाफों और हालैण्ड हर तरफ से चले आ रहे हैं।" दूसरे ने कहा।

"मरने से पहले सोमूर भरको खरीद लेगा।" तीसरे ने ज़ोर से कहा।

"उसे अपने कारोबार का इतना ध्यान रहता है कि वह सर्दी की भी तनिक परवा नहीं करता।" एक औरत ने अपने पति से कहा।

"हे, मोसियो ग्रांदे, अगर आपकी समझ में न आता हो कि इतने सारे पैसों का क्या करें तो इस बारे में मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।" उसके पड़ोसी बज़ाज़ ने कहा।

"ओह, इनमें तो सिर्फ तांबे के सिक्के भरे हुए हैं।" अंगूरों का कृषक बोला।

"इनका मतलब है चांदी के।" कुली ने धीरे से कहा।

"अगर मुझसे अधिक मज़दूरी चाहते हो तो अपनी जबान जरा वश में रखो।" ग्रांदे ने दरवाज़ा खोलते हुये उसे डांटा।

"बूढ़ा लोमड़! मैं समझता था यह बहरा है।" मज़दूर ने मन में सोचा, "लेकिन लगता है कि सर्दियों में भी उसे अच्छा-खासा सुनाई देता है।"

"यह तो एक फ्रांक तुम्हारे नये साल का उपहार और इसका जिक्र किसी से न करना। अब भाग जाओ। ठेला तुम्हें नाँनों वापस दे आयेगी। नाँनों!" ग्रांदे ने आवाज़ दी, "क्या औरतें गिरजे गई हैं?"

"जी हाँ।"

"आओ! ज़रा फुरती दिखाओ और मेरा हाथ बटाओ।" वह बोला और थैलियाँ उस पर लाद दीं। दो ही मिनट में सारे क्राउन सावधानी से उसके कमरे में पहुँच गये और उसने भीतर से दरवाज़े की कुंडी लगाई।

"जब नाश्ता तैयार होजाये तो दीवार थपथपा कर मुझे सूचित कर देना।" उसने दरवाज़े में से पुकार कर कहा।

"और यह ठेला गाड़ियों के दफ्तर पहुँचा आना।"

कहीं दस बजे सब नाश्ते पर जमा हुए।

"अब तुम्हारे पापा तुमसे सोने के सिक्के दिखाने को न कहेंगे।" मादाम ग्रांदे ने गिरजे से लौटते हुये कहा, "और अगर वह कहें भी तो तुम ठिठुरते हुये कह देना कि अब इतनी सर्दी में कौन उन्हें लेने ऊपर जाये फिर तुम्हारी वर्ष-गाँठ तक तो काफी समय मिलेगा कि हम फिर इतनी रकम जमा……"

ग्रांदे नीचे आया। वह इन पेरिस से आये हुए पाँच फ्रांक के सिक्कों को खालिस सोने के सिक्कों में तब्दील करा लेने पर विचार कर रहा

था। वह चाहता था कि वह सुनहरी सिक्के न हल्के हों और न तराशे हुए। वह ठीक उचित समय पर सरकारी कर्जे में अपनी रकम लगा देने के विचार से प्रसन्न हो रहा था और अब उसने निश्चय कर लिया था कि वह इसी प्रकार सरकारी कर्जे के कागजात खरीदता रहा करेगा यहाँ तक कि उसकी कीमत सौ फ्रांक तक पहुँच जाये। इस प्रकार के विचार योज़ेन के लिये अत्यन्त अशुभ सिद्ध हुए। ज्योंही उसने कमरे में प्रवेश किया, माँ बेटी दोनों ने अपने-अपने ढंग से उसे नये साल की बधाई दी। मादाम ग्रांदे का ढंग तो बड़ा ही गम्भीर और संयत था। लेकिन बेटी ने अपनी बाहें पिता के गले में डाल दीं और प्यार किया।

"आहा, मेरी बच्ची!" उसने योज़ेन के दोनों गालों का चुम्बन करते हुए कहा, "तुम्हें मालूम है मैं जो कुछ सोचता और जो कुछ करता हूँ वह सब तुम्हारे लिये! मैं चाहता हूँ कि तुम प्रसन्न रहो और प्रसन्न रहने के लिये तुम्हारे पास पैसा होना चाहिए क्योंकि इसके बिना तुम्हें कुछ भी नहीं मिल सकता। यह देखो! यह बिल्कुल नया सुनहरी सिक्का है और मैंने ख़ास तौर पर इसे पेरिस से मंगवाया है। भगवान की कसम! घर भर में सिवाय तुम्हारे कहीं सोने का छल्ला तक नहीं है। सिर्फ एक तुम्हारे पास सोना है। लाओ बेटी, मुझे अपना सोना दिखाओ।"

"ऊफ! बड़ी सर्दी है। आइये नाश्ता करें।" योज़ेन ने उत्तर दिया।

"अच्छा नाश्ते के बाद देखेंगे, है न? हाज़मे के लिये भी ठीक रहेगा। उस महान दे ग्रासीं ने हमारे लिए मिठाई भी भेजी है।" वह कहता गया। "चलो बच्चो, नाश्ता करो। हमारा इसमें कुछ खर्च नहीं होना। दे ग्रासीं बहुत अच्छा चल रहा है। मैं उससे बहुत खुश हूं। बूढ़ा शारल का काम भी कर रहा है और सब कुछ मुफ्त में हो रहा है। वाकई वह बेचारे ग्रांदे के मामलों को बड़ी चतुरता से सुलझा रहा है। हुम, हुम।" वह खाते-खाते बोल रहा था। "बड़ी अच्छी मिठाई है, खाओ बीबी!

खूब खाओ। यह तो बहुत कुछ है। हमारे कम से कम दो दिन इसी से निकल जायेंगे।"

"मुझे भूख नहीं। आप जानते ही हैं कि मैं अधिक नहीं खा सकती।"

"अरे, हाँ! लेकिन तुम्हारा शरीर बड़ी मज़बूत हड्डी का बना है। तुम बारतेलीयर परिवार की हो! इसलिये कम खाने से भी तुम्हें कोई नुकसान पहुँचने का खतरा नहीं है। तुम तनिक पीली पड़ रही हो। लेकिन मुझे खुद पीलापन पसंद है।"

फांसी पाने वाला एक कैदी लोगों के सामने बदनामी की मौत मरते हुये भी इतना दुख और कष्ट महसूस न करता होगा जितना योज़ेन और मादाम ग्रांदे को उस घटना से महसूस हो रहा था, जो नाश्ते के बाद घटित होने वाली थी। टीनसाज़ खाने और बातचीत में जितना विनोदशील होता जा रहा था उनकी परेशानी उतनी ही बढ़ती जा रही थी। लेकिन लड़की को इस संकट काल में भी एक सहारा नज़र आ रहा था। प्रेम उसे शक्ति प्रदान कर रहा था।

"शारल के लिये मैं हजारों मुसीबतें सहन कर सकती हूँ।"

उसने अपनी मां की ओर देखा। उसकी आँखों में अब साहस और संघर्ष की चमक उत्पन्न हो गई थी। "सब कुछ उठा लो।" जब दस बजे के करीब नाश्ता समाप्त हुआ तो ग्रांदे ने नाँनों से कहा, "लेकिन मेज़ हमारे पास छोड़ दो। इस पर तुम्हारा छोटा-सा खज़ाना आसानी से देख सकेंगे।" उसने योज़ेन की ओर पलट कर कहा। "क्या मैंने छोटा-सा खज़ाना कहा था? लेकिन वह छोटा तो नहीं है। तुम्हारे सब सिक्के मिलाकर कोई पाँच हज़ार नौ-सौ उनसठ फ्रांक के होते हैं और आज सुबह के मिलाकर एक कम छः हज़ार फ्रांक हुए। अच्छा मैं पूरे छः हज़ार करने के लिये तुम्हें एक फ्रांक और दे दूंगा क्योंकि नन्हीं बच्ची तुम जानती हो·······अच्छा अब तुम हमारी बातें क्या सुन रही हो? नाँनों अब तुम भागो यहाँ से और जाकर अपना काम करो।"

नाँनों चली गयी।

"सुनो योजेन ! तुम अपना सोना मुझे दे दो। तुम अपने पापा को अपने सिक्के देने से इन्कार तो न करोगी ? क्यों बेटी ?"

दोनों औरतों में से किसी ने भी कोई उत्तर नहीं दिया। "मेरे पास तो बिलकुल सोना नहीं रहा। एक ज़माने में मेरे पास थोड़ा-सा था। लेकिन अब जरा भी नहीं है। मैं तुम्हारे सोने के बदले तुम्हें चाँदी के रूप में छः हज़ार फ्रांक दे दूंगा। ये तुम जमा कर देना, जिसकी तरकीब मैं तुम्हें बताये देता हूँ। तुम्हे अपने दहेज़ की चिन्ता करने की कोई ऐसी जरूरत नहीं। जब तुम्हारा विवाह होगा, जिसमें अब अधिक देर नहीं, तो मैं तुम्हारे लिए ऐसा पति ढूंढ़ निकालूंगा. जो ऐसा दहेज़ लाये कि पास-पड़ोस वालों ने कभी स्वप्न में भी न देखा हो। इस समय तो बड़ा सुनहरी अवसर है। तुम अपने छः हज़ार फ्रांक सरकारी कर्जे में लगा सकती हो, जहाँ से हर छः महीने के बाद तुम्हारे हिस्से के लगभग दो सौ फ्रांक आजाया करेंगे। और फिर मज़ा यह कि इस पर किसी प्रकार का टैक्स भी नहीं देना पड़ेगा। और मरम्मत, फसल की खराबी, पाला, ओला, बाढ़ इस प्रकार के झंझटों में भी न पड़ना होगा, जो ज़मीन में रुपया लगा देने के बाद पेश आते रहते हैं। तुम अपना सोना देना नहीं चाहती हो, हुम् ? क्यों बेटी, यही बात है न ? खैर कोई बात नहीं जो कुछ भी हो तुम दे ही डालो। मैं तुम्हारे लिए और सुनहरी सिक्के जमा करने का प्रयत्न करूंगा। हालैंड, पुर्तगाल, जनेवा और भारत के सिक्के मंगवाऊंगा और मुगल सम्राटों के रुपये भी। और फिर मैं तुम्हारी वर्षगाँठ पर भी तो तुम्हें पैसे दूँगा। इस प्रकार तीन साल की मुद्दत में तुम्हारे पास आधी रकम तो जमा हो ही जायगी। इसके अतिरिक्त तुम्हारे छः हजार फ्राँक जमा होंगे। क्या विचार है, मेरी बच्ची ? जरा देखो तो ! शाबाश ! यहाँ ले आओ मेरी प्यारी। तुम्हें तो मेरा कृतज्ञ होना चाहिए कि मैंने पाँच हज़ार सिक्कों के बहुत से व्यापारिक रहस्य बता दिये हैं। पाँच हज़ार फ्राँक के सिक्के ! हाँ ये सिक्के भी

मनुष्य की भाँति डावांडोल होते रहते हैं। इनका भी आना-जाना, कम होना और साथ बढ़ना भी चलता रहता है।"

योज़ेन उठ खड़ी हुई और दो-चार कदम दरवाज़े की ओर बढ़ी। फिर तुरन्त पलट कर उसने अपने पिता के मुख पर दृष्टि डाली और बोली :

"मेरा तमाम सोना खत्म हो गया है। कुछ भी नहीं बचा।"

"तुम्हारा तमाम सोना खत्म हो गया !" ग्राँदे ने दोहराया और ऐसे चौंक उठा जैसे घोड़ा दस कदम के फासले पर तोप की आवाज़ सुन-कर बिदक जाता है।

"हाँ, सब खत्म हो गया।"

"योज़ेन, तुम स्वप्न देख रही हो ?"

"नहीं।"

"मुझे अपने पिता के चरणों की कसम !"

जब ग्राँदे यह कसम खाता तो मकान की दीवारें तक हिल जातीं।

"भगवान दया कर !" नाँनों चिल्लाई, "मादाम कितना पीली पड़ गई हैं।"

"ग्राँदे, तुम्हारे यह क्रोध के दौरे तो मेरी जान लेकर छोड़ेंगे।" बेचारी पत्नी ने कहा।

"तत, तत, तत ! तुम्हारे परिवार के लोग कभी नहीं मरते। योज़ेन मुझे बताओ तुमने अपने पैसों का क्या किया ?" उसने क्रोध से योज़ेन की ओर पलटते हुए कहा।

लड़की घुटने टेके मादाम के पास बैठी थी। "देखिये पापा, माँ की तबीयत बहुत खराब है·······आप उन्हें मार न डालियेगा।"

ग्राँदे भी चिन्तित हो उठा। उसकी पत्नी की पीली और काली-सी रंगत सफेद पड़ गई थी।

"नाँनों, आकर मुझे तनिक बिस्तर तक पहुँचा आओ।" वह अत्यन्त क्षीण स्वर में बोली, "मेरी तो जान निकली जा रही है······"

नाँनों ने एक ओर से मादाम को सहारा दिया और दूसरी ओर से योज़ेन ने थामा। लेकिन वह बड़ी मुश्किल से उसके कमरे तक पहुँचीं क्योंकि माँ की शक्ति बिल्कुल जवाब दे चुकी थी। वह हर कदम पर गिरी जा रही थी। ग्राँदे बैठक में अकेला रह गया। कुछ देर बाद वह थोड़ी सी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आया और ऊंचे स्वर में बोला :

"योज़ेन, अपनी माँ को बिस्तर पर लिटाकर तुम नीचे आओ।"

"अच्छा, पापा।"

थोड़ी देर बाद वह अपनी माँ को खूब तसल्ली दे-दिला कर नीचे आ पहुँची।

"अच्छा, मेरी बच्ची !" ग्रांदे बोला, "अब मुझे बतादो कि तुम्हारे पैसे कहाँ हैं ?"

"पापा ! अगर मैं आपके दिए हुए उपहारों के इस्तेमाल में स्वच्छंद नहीं हूँ तो कृपया आप उन्हें वापस ले लीजिये।" वह आतिशदान के पास गई और वहाँ से वह सुनहरी सिक्का उठाकर उसने पिता को दे दिया।

ग्राँदे ने झट उसे ले लिया और अपनी वास्केट की जेब में डाल लिया।

"यह तो मुझे पता है कि मैं अब कभी तुम्हें कुछ न दूंगा।" उसने अपना अंगूठा बेटी की ओर घुमाते हुए कहा, "तुम अपने पिता की इज्ज़त नहीं करती हो, है न ? तुम्हें उस पर भरोसा नहीं है ? तुम्हें मालूम है पिता की क्या हैसियत होती है ? तुम्हें उसे अपना बड़ा मानना पड़ेगा, वरना उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। अब बोलो, तुम्हारा सोना कहाँ गया ?"

"पापा ! आपके क्रोध के बावजूद मैं आपसे मुहब्बत करती हूँ और आपकी इज्ज़त भी। लेकिन साथ ही साथ अत्यन्त नम्रता से मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि अब मैं बाईस साल की हो चुकी हूँ। और आपने भी तो मुझे कई बार कहा है कि अब मैं बड़ी हो गई हूँ। मैंने अपने पैसे का जैसे उचित समझा प्रयोग किया है और मैं आपको विश्वास

दिलाती हूँ कि वह किसी अच्छे आदमी के पास है।"

"किसके ?"

"यह एक गहरा भेद है।" वह बोली, "आपके भी तो बहुत से भेद हैं।"

"तो क्या मैं परिवार का बड़ा नहीं हूँ ? मुझे अपने व्यापार के मामलों में इसकी आज्ञा न होनी चाहिए।"

"फिर यह भी तो मेरा अपना मामला है।"

"मादमुआजेल ग्राँदे, फिर तो यह अवश्य कोई असंतोषजनक बात होगी, जिसका तुम अपने पिता से भी ज़िक्र नहीं कर सकतीं।"

"बिल्कुल संतोषजनक बात है और मैं अपने पापा को इस सम्बन्ध में कुछ नहीं बता सकती।"

"खैर, मुझे इतना तो बताओ कि सोना कब से तुम्हारे पास नहीं है ?"

योजेन ने सिर्फ सिर हिला दिया।

"वर्षगाँठ के समय तक तो तुम्हारे पास ही था न ? हुम् ?"

अगर लोभ ने ग्राँदे को धूर्त्त बना दिया था तो योज़ेन को भी प्रेम ने सतर्क रहना सिखा दिया था। उसने फिर सिर हिला दिया।

"क्या कभी किसी ने ऐसी डाकाज़नी और ढिठाई की बात सुनी है ?" ग्रांदे चीखा। उसकी आवाज़ धीरे-धीरे इतनी ऊँची हो गई कि सारे घर में गूंजने लगी, "क्या, यहाँ मेरे घर में है ? इस घर में से कोई तुम्हारा सोना ले गया ! वह तमाम सोना जो तुम्हारे पास था ! और मुझे यह भी पता न हो कि ले जाने वाला कौन है ? सोना बड़ी कीमती चीज़ है। अच्छी से अच्छी लड़कियाँ गलती कर जाती हैं। बहुत-से लोगों में ऐसा होता है। सभ्य शहरियों से भी ऐसी गलतियाँ हो जाती हैं। लेकिन जरा ख्याल तो करो सोने जैसी चीज़ को गँवा देना ! तुमने ज़रूर किसी को दे दिया है। क्यों मेरा ख्याल ठीक है न ?"

योज़ेन इस बार भी चुप रही।

"क्या कभी किसी ने ऐसी बेटी देखी है ? क्या तुम मेरी बच्ची हो ? अगर तुमने अपना पैसा किसी को दिया है तो उसकी रसीद तो तुम्हारे पास होनी चाहिए......"

"अच्छा यह बताइये क्या मैं उसे अपनी इच्छा के अनुसार इस्तेमाल नहीं कर सकती थी ? वह रुपया मेरा ही था न ?"

"लेकिन तुम अभी बच्ची हो !"

"मैं अब समझदार हूं ।"

अपनी बेटी में तर्क-वितर्क का यह साहस देखकर ग्रांदे आश्चर्य-चकित रह गया, और साहस भी इतना अधिक । वह पीला पड़ गया । पैरों को ज़ोर-ज़ोर से धरती पर मारने लगा । आखिर शब्द मिलने पर चिल्लाकर बोला—"दुष्ट डायन, अभागी लड़की ! आह, तू भली प्रकार जानती है कि मुझे तुझसे कितना प्रेम है और तू इसका अनुचित लाभ उठाती है । तू कृतघ्न है और अपने पिता को लूटकर उसकी हत्या भी कर डालेगी ! भगवान की कसम, तेरा बस चलता तो तू हमारा सब कुछ उस आवारा कुत्ते के कदमों पर डाल देती । मुझे अपने बाप की कसम, मैं तुझे त्याग तो नहीं सकता । लेकिन मुझे अपने कनस्तरों की कसम ! मैं तुझे, तेरे चचेरे भाई और तुम्हारे बच्चों को शाप देता हूँ । तेरे लिए इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा, तू सुन रही है न ? अगर वह शारल था जिसको तुमने.......लेकिन नहीं यह असम्भव है । वह कुत्ते का बच्चा क्या मुझे लूटने का साहस कर सकता है ?"

उसने अपनी बेटी की ओर घूरकर देखा जो अब तक शांत और स्थिर खड़ी थी ।

"इस पर ज़रा असर नहीं होता ! यह तो टस से मस नहीं होती ! इसमें मुझसे कहीं अधिक ग्रांदे परिवार का अंश है । खैर, तुमने अपना सोना यों ही तो न दे दिया होगा । देखो, अब मुझे सारी बात बता दो ।"

योज़ेन ने पिता की ओर देखा । उसकी आँखों में विद्रूप भाव था, जिससे ग्रांदे और भी भड़क उठा :

"योज़ेन, यह घर मेरा है और जब तक तू अपने पिता के घर में है तुझे उसके कहने पर चलना होगा। पादरी भी तुझे मेरा कहा मानने के आदेश देते हैं।"

योज़ेन ने फिर अपना सिर झुका लिया।

"तूने मेरी सबने प्रिय भावनाओं को ठेस लगाई है। जब तक तू मेरा कहा मानने के लिए तैयार न हो जाये तब तक के लिए मेरी आँखों से दूर हो जा। चल अपने कमरे में जा और जब तक कि मैं तुझे बाहर निकलने की आज्ञा न दूँ वहीं रह। नाँनों तुझे रोटी और पानी पहुँचा दिया करेगी। जो मैं कहता हूं वह सुन रही है न ? चल दूर हो !"

योज़ेन फूट-फूटकर रोने लगी और अपनी मां के कमरे की ओर भाग गई। ग्रांदे ने बर्फ और सर्दी का ख्याल किये बिना बाग के कई चक्कर लगाये। फिर उसे ख्याल आया कि उसकी बेटी अपनी मां के कमरे ही में होगी और उन दोनों पर आज्ञा उल्लंघन का आरोप लगाने के विचार से उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह बिल्ली की तरह चोरी-चोरी सीढ़ियाँ चढ़ा और सहसा मादाम ग्रांदे के कमरे में जा पहुंचा। उसका अनुमान ठीक था। मां योज़ेन के बाल थपथपा रही थी और लड़की अपनी मां की छाती में मुँह छिपाये लेटी थी।

"बेचारी बच्ची ! घबराओ नहीं। तुम्हारे पापा तुम्हें क्षमा कर देंगे।"

"अब इसका कोई पापा नहीं है !" टीनसाज़ ने कहा, "क्या यह ठीक है मादाम ग्रांदे कि हमने ऐसी उद्दंड बेटी को जन्म दिया है ? क्या खूब शिक्षा है और धार्मिक कितनी है ! अच्छा, तुम अब तक अपने कमरे में क्यों नहीं गई हो ? चलो अपने क़ैदखाने में। चली जाओ यहाँ से।"

"क्या आप मेरी बेटी को मुझसे अलग कर देंगे ?" मादाम ग्रांदे ने अपना चमकता हुआ चेहरा और ज्वर से चमकती हुई आँखों को ऊपर उठाते हुए कहा।

"अगर तुम इसे अपने साथ रखना चाहती हो तो इसी के साथ बन्द

हो जाओ। घर को तुम दोनों से एक साथ छुटकारा मिल जायेगा···
कसम खुदा की सोना कहां है ? सोना कौन ले गया ?"

योज़ेन उठकर खड़ी हो गई, सगर्व पिता की ओर देखा और अपने कमरे में चली गई। उस भले आदमी ने दरवाजे में ताला लगा दिया।

"नाँनों !" वह चिल्लाया, "तुम बैठक की आग बुझा दो।" फिर वह अपनी पत्नी के पलंग और आतिशदान के बीच में रखी हुई कुर्सी पर आकर बैठ गया और कहने लगा, "निश्चय ही उसने सोना उस अभागे लफंगे शारल को दिया है, जिसे बस हमारे पैसे ही का लालच था।"

मादाम ग्रांदे को बेटी के प्रेम ने इस भय का मुकाबला करने का साहस प्रदान किया था। वह ग्रांदे की बातचीत के अभिप्राय से जान-बूझकर अनजान बन रही थी। उसने बिस्तर पर करवट बदल ली ताकि अपने पति की क्रुद्ध दृष्टि से बची रहे।

"मुझे तो इसके बारे में कुछ भी पता न था।" वह बोली, "आपके क्रोध ने मेरी दशा ऐसी ख़राब कर दी है कि अगर मेरा अनुमान गलत नहीं तो लगता है कि अब इस कमरे से मेरी अर्थी ही उठेगी। आपने मुझे इस समय तो यह कष्ट न दिया होता। कम से कम मेरा यह विश्वास है कि मेरे कारण आपको कभी कोई दुख नहीं पहुंचा। आपकी बेटी आपसे प्रेम करती है। और मुझे विश्वास है कि वह एक नवजात शिशु के सदृश निरीह है। इसलिए उसे दंड मत दीजिए। अपना निर्णय बदल डालिये। बड़ी सख्त सर्दी पड़ रही है। सम्भव है वह ठंड से बीमार पड़ जाये।"

"मैं न उसकी शक्ल देखूंगा और न उससे बात करूंगा। वह अपने कमरे में बन्द रहेगी, जब तक कि पिता का कहना मानना न सीख जाय। कैसा गज़ब है! घर के मालिक को इतना तो मालूम होना चाहिए कि सोना अगर घर से बाहर जाता तो कहाँ जाता है। मेरा ख्याल है कि फ्रांस भर में रुपये सिर्फ वही थे जो उसके पास थे और

उसके अलावा जनेवा के सिक्के और हालैंड के डकेट भी।"

"योज़ेन हमारी इकलौती बच्ची है, अगर उसने उन्हें पानी में बहा दिया हो तो·······"

"पानी में !" टीनसाज़ चीखा, "पानी में ! मादाम ग्रांदे तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। तुम्हें पता है जब मैं कोई बात कहता हूँ तो उसे पूरा करता हूं। अगर तुम घर में शांति चाहती हो तो उससे कहो कि वह तुम्हें अपना भेद बतादे। औरतें एक दूसरे को भली प्रकार समझती हैं और ऐसे कामों को हमसे बेहतर कर सकती हैं। वह जो कुछ कर चुकी है, अब मैं उसे खा थोड़ा ही जाऊँगा। क्या वह मुझसे डरती है ? अगर उसने अपने चचेरे भाई को सोने से लाद दिया है तो इस समय वह दूर समुद्र पार जा चुका है और हम उसके पीछे तो भाग नहीं सकते हैं कि·······"

"अच्छा, तो·······"

मादाम ग्रांदे कहते-कहते रुक गयीं। उसने अपने पति के मस्से को क्रोध से कसमसाते देख लिया था। अपनी बेटी की आपत्ति के दिनों में उसकी सहज बुद्धि बढ़ी थी, वह बात को शीघ्र भांप जाती थी और सतर्क और सावधान रहने लगी थी। इसलिए जो कहना चाहती थी, वह उसने नहीं कहा और अपना स्वर बदले बिना ही बात बदल दी।

"अच्छा तो मेरा उस पर आपसे कुछ अधिक जोर थोड़े है ? उसने इस बारे में मुझ से एक शब्द भी नहीं कहा। वह बिलकुल आप पर गयी है।"

"हे भगवान् ! आज सुबह से तो तुम्हारी जबान काबू में नहीं है ! तत, तत, तत ! मेरे खयाल में तुम मेरी आंखों में धूल झोंकना चाहती हो। मालूम होता है तुम दोनों मिली हुई हो।"

उसने पत्नी की ओर घूर कर देखा। "वाकई मोसियो ग्रांदे ! अगर आप मुझे मार डालना चाहते हैं तो बस यही व्यवहार जारी रखिये। मैं आप से एक बात कहे बिना नहीं रह सकती। चाहे उसमें मेरी जान ही चली जाये और वह यह कि·······आप अपनी बेटी के साथ बहुत सख्ती

कर रहे हैं उसमें आपसे अधिक बुद्धि है । पैसे उसी के थे और उसने उन्हें अच्छी तरह ही इस्तेमाल किया होगा और भगवान् ही बेहतर जानता है कि हमारे अच्छे काम कौन से हैं ! मैं आपसे मिन्नत करती हूँ कि आप योज़ेन को क्षमा कर दीजिए । इसी से आपके क्रोध से मुझे जो आघात पहुँचा है, वह भी कम हो जायेगा और शायद मेरी जान भी बच जायेगी । मेरी बेटी, मेरी बच्ची, मुझे वापस दे दीजिये !"

"मैं जा रहा हूँ ।" वह बोला, "इस घर में रहना तो अब असह्य हो रहा है । मां बेटी इस प्रकार बातें और बहसें करती हैं जैसे ...... ऊफ ! तौबा है ! योज़ेन, तुम ने मुझे नए साल का अच्छा उपहार दिया है !" उसने ज़ोर से कहा, "हां, हां, जी भर के रो । तुझे पछताना पड़ेगा सुन रही है न ? गिरजे जाकर प्रार्थना करने का भला क्या लाभ होगा, जब तूने अपने बाप का सोना चुपके से एक ऐसे निकम्मे बदमाश के हवाले कर दिया, जो तेरा पैसा खत्म करने के बाद तेरा दिल तोड़ कर चल देगा ! तुझे पता चल जायेगा कि वह तेरा बेहतरीन बूट पहनने वाला शारल किस प्रकार का व्यक्ति है । जो व्यक्ति एक गरीब लड़की की सारी पूंजी इस प्रकार उसके माता-पिता की आज्ञा के बिना लेकर चला जाये उसमें सहृदयता और आत्मसम्मान की भावना तो हो ही नहीं सकती ।"

ज्योंही गली का दरवाज़ा बन्द हुआ योज़ेन चुपके से अपने कमरे से निकल कर अपनी माँ के पास आ गयी ।

"आपने अपनी बेटी की खातिर बड़ी हिम्मत दिखाई ।" वह बोली ।

"तुमने देखा बेटी बुराई का क्या परिणाम होता है । तुम्हारे कारण मुझे झूठ बोलना पड़ा ।"

"अरे, मां । मैं भगवान् से प्रार्थना करूंगी कि इसका सारा पाप मुझे लगे ।"

"क्या यह सच है," नाँनों ने ऊपर आते हुए तनिक दुख से कहा, "कि बीबी को उम्र भर रोटी और पानी के सिवा और कुछ न मिलेगा ?"

"फिर क्या हुआ, नाँनो ?" योज़ेन ने बड़े इत्मीनान से कहा ।

"वाह जब घर की बेटी रूखी रोटी खा रही हो तो मैं अच्छा खाना कैसे खा सकती हूं ! मैं भी·· नहीं नहीं····यह हो ही नहीं सकता।"

"अब तुम इसकी बात ही न करो, नाँनों।" योज़ेन ने कहा।

"मैं अपना मुँह बन्द रखूंगी; लेकिन आप देख लेंगी।"

ग्रांदे ने चौबीस साल में पहली बार अकेले बैठकर भोजन किया।

"साहब, आप तो रंडवे हो गये हैं।" नाँनों ने कहा।

"यह तो बड़े अफसोस की बात है कि बीवी और बेटी घर में होते हुए आप रंडवे रहें।"

"मैंने तुमसे कोई बात नहीं की थी। नहीं की थी न ? जबान को गुद्दी में सम्भाल कर रखो वरना तुम्हें निकल जाना पड़ेगा। तुमने कड़ाही में क्या रखा है ? मुझे अंगीठी पर कुछ उबलने की आवाज़ मिल रही है।"

"थोड़ी सी चरबी थी, जिसे मैंने पिघलने के लिए रखा है।"

"आज शाम कुछ लोग हमारे यहाँ आयेंगे। तुम आग जला देना।"

क्रोशो लोग, उनके मित्र, मादाम दे ग्रासीं और उसका बेटा सब कोई आठ बजे आये और मादाम ग्रांदे और उसकी बेटी को वहां न पाकर बड़े हैरान हुए।

"आज मेरी पत्नी की तबियत ठीक नहीं है और योज़ेन भी ऊपर मां के पास है।" बूढ़े टीनसाज़ ने उत्तर दिया। उसके चेहरे पर किसी प्रकार की घबराहट के चिह्न न थे।

एक घण्टा इधर-उधर की साधारण बातों में बीत गया। मादाम दे ग्रांसी ऊपर मादाम ग्रांदे को देखने गयी। और जब वह बैठक में वापस आई तो हर एक ने पूछा :—

"मादाम ग्रांदे कैसी हैं ?"

"उनकी तबियत काफी खराब है।" उसने उत्तर दिया, "मुझे तो उनकी दशा चिंताजनक मालूम होती है। मोसियो ग्रांदे, इस उम्र में आपको उनका अधिक ध्यान रखना चाहिए।"

"हाँ, रखेंगे।" ग्रांदे ने अनमने भाव से कहा।

सब लोग विदा हो गये।

क्रोशो लोग सड़क पर निकले और घर का दरवाज़ा बन्द हो गया तो मादाम दे ग्रांसी उनकी ओर पलट कर बोली—"ग्रांदे लोगों में कुछ गड़बड़ मालूम होती है। मां सख्त बीमार है। उसका खुद अंदाज़ा नहीं कि उसकी तबियत कितनी खराब है और बेटी की आंखें भी लाल हो रही थीं, जैसे वह बहुत देर तक रोती रही है। क्या वे उसकी इच्छा के विरुद्ध कहीं उसकी शादी तो नहीं कर रहे ?"

उस रात जब टीनसाज़ सोने चला गया तो नाँनों कपड़े के सलीपर पहने, चुपके से योज़ेन के कमरे में जा पहुंची और भुने हुए गोश्त की प्लेट आगे बढ़ा दी, जो उसने कड़ाही में पकाया था।

"यह लीजिये बीबी।" दयामयी नौकरानी बोली, "कोरनिवाये मेरे लिए एक खरगोश लाया था। आप तो इतना कम खाती हैं कि आप से यह हफ्ते भर खत्म न होगा और फिर इतनी सर्दी में इसके खराब हो जाने का भी डर नहीं है। खैर, जो कुछ भी है आप सिर्फ रूखी रोटी पर तो नही रहेंगी न ! वह आपके लिए ठीक नहीं है।"

"बेचारी नांनों !" योज़ेन ने नौकरानी का हाथ दबाते हुए कहा।

"मैंने गोश्त बड़ा मज़ेदार पकाया है और मालिक को इसका पता तक नहीं चला। घी और मसाला मैंने अपने छः फ्रांक में से खरीद लिया था। मैं अपने पैसे को जिस प्रकार चाहूँ खर्च कर सकती हूँ।" और पुरानी नौकरानी भाग खड़ी हुई क्योंकि उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे ग्रांदे अभी जाग रहा है।

कई महीने बीत गये। टीनसाज़ दिन में कई बार अपनी पत्नी को देखने जाता। लेकिन उसने कभी अपनी बेटी का नाम तक न लिया—न कभी उससे मिला और न उसका जिक्र छेड़ा।

मादाम ग्रांदे का स्वास्थ्य दिन-दिन बिगड़ता ही गया। जनवरी की उस भयानक सुबह के बाद से वह फिर कभी अपने कमरे से बाहर नहीं

निकली। लेकिन टीनसाज़ के निर्णय पर किसी बात का असर न पड़ता था। वह पथरीली चट्टान के सदृश कठोर और ठंडा था। वह उसी प्रकार आता-जाता रहा और उसके रहन-सहन में किसी प्रकार का अंतर न आया था। लेकिन अब वह हकलाता नहीं था और बातें भी कम करने लगा था। अपने कारोबार में वह पहले से अधिक निष्ठुर हो गया था। अलबत्ता अब उसके हिसाब-किताब में गलतियां होने लगी थीं।

क्रोशो और दे ग्रांसी लोग इस बात पर सहमत थे कि ग्रांदे परिवार में कुछ गड़बड़ अवश्य है।

"ग्रांदे लोगों को हुआ क्या है ?" सोमूर में जहां कहीं लोग जमा होते यह सवाल वहां अवश्य पूछा जाता।

योज़ेन नांनों के साथ बराबर गिरजे जाया करती थी। अगर ड्योढ़ी में मादाम दे ग्रासीं उससे कोई बात करती तो वह योंही टाल जाती और स्त्री की उद्विग्नता बनी रहती। लेकिन दो महीने इसी प्रकार बीत जाने के बाद मादाम दे ग्रासीं और क्रोशो लोगों से वास्तविक परिस्थिति को छिपाये रखना असम्भव हो गया था। एक समय ऐसा आया कि कोई बहाना ऐसा नहीं रह गया, जिससे योज़ेन की स्थायी अनुपस्थिति की व्याख्या हो सके। आखिर कुछ दिन बाद यह भेद, भेद नहीं रह गया। न जाने कब और किसने इसे बताया। लेकिन अब सब को मालूम हो चुका था कि नए साल के पहले ही दिन से मादमुआज़ेल ग्रांदे को पिता के हुक्म से कमरे में क़ैद कर दिया गया है, जहाँ वह रूखी रोटी और पानी पर गुज़र करती है और उसके कमरे में आग भी नहीं जलाई जाती। यह भी मशहूर था कि नाँनों अच्छे खाने पका कर चोरी-छिपे उसके कमरे में पहुंचा देती है। इसके अतिरिक्त लोगों को और भी सारी बातें मालूम थीं जैसे ग्रांदे जब घर से बाहर होता है सिर्फ उसी समय लड़की अपनी माँ की तीमारदारी कर सकती है। वैसे तो वह मिल भी नहीं सकती।

लोग ग्रांदे को सख्त बुरा-भला कहते। वह शहर भर में बदनाम हो

गया था। उसकी निष्ठुरता और धूर्तता को याद करके प्रत्येक व्यक्ति उससे घृणा करने लगा था। जब वह गुज़रता तो लोग उसकी ओर संकेत करके काना-फूसी करने लगते और जब उसकी बेटी नाँनों के साथ गिरजे में प्रार्थना के लिए जाती हुई गली के नुक्कड़ पर मुड़ती तो लोग दौड़कर खिड़कियों में आ जाते और इस धनी उत्तराधिकारिणी का चेहरा देखने लगते—उसका चेहरा बहुत उदास होता और उसमें एक दैवी आकर्षण पाया जाता था।

उसके पिता की भांति योज़ेन के कानों में भी शहरवालों की यह बातें देर में पहुँचीं। यह कैद और पिता का क्रोध उसके लिये कोई महत्त्व न रखते थे क्योंकि उसके पास दुनिया का नक्शा मौजूद था और फिर वह खिड़की से छोटा बेंच, पुरानी दीवार और बगीचे के मार्ग सब कुछ तो देख सकती थी। क्या गत चुम्बन का माधुर्य अब तक उसके होंठों में मौजूद न था? अतएव भगवान की दृष्टि में अपनी निरीहता के भाव और प्रेम ने उसे पिता के क्रोध और एकांत को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान कर दिया था। लेकिन एक और कठोर आघात जिसके सामने बाकी सब आघात फीके पड़ गये थे, उसके लिए असह्य हो रहा था। उसकी विनम्र, नेक माँ धीरे धीरे घुलती जा रही थी। ऐसा लगता था कि जैसे उसके मरने के दिन निकट आते जा रहे हैं, उसकी आत्मा का सौन्दर्य अधिक प्रकट होता जा रहा है। और विषाद के इन अंधेरे दिनों को आलोकित कर रहा है। योज़ेन प्रायः अपने आप को माँ के इस घातक रोग का कारण समझती थी। और यद्यपि माँ उसे हर तरह सांत्वना देने का प्रयत्न करती, मगर उसकी यह आत्म-ग्लानि मातृ स्नेह के और निकट लिये जा रही थी, जिसे वह शीघ्र ही खो देने वाली थी। हर सुबह ज्यों ही उसका पिता घर से निकलता, वह अपनी माँ के पास आ बैठती। नाँनों वहीं उसका नाश्ता दिया करती। लेकिन बेचारी योज़ेन के लिये अपनी परेशानी के साथ-साथ यह दुख असह्य होता जा रहा था। वह आँसू भरी आँखों से कभी माँ को और कभी नाँनों को देखती और चुप रहती। अब वह अपने चचेरे भाई

का भी ज़िक्र न करती थी। हमेशा मादाम ग्रांदे उसकी बात छेड़ती और कहती : "शारल है कहां ? वह पत्र क्यों नहीं लिखता ?"

माँ और बेटी दोनों में से किसी को भी फासले का अंदाजा न था।

"माँ, हम उनकी बातें किये बिना ही बस उनको याद कर लिया करें।" योज़ेन उत्तर देती : "आप बीमार हैं और आप सबसे पहले हैं।" सबसे उसका अभिप्राय अपने चचेरे भाई से था।

"बेटी, मुझे जीने की अब कोई अभिलाषा नहीं।" मादाम ग्रांदे कहा करती, "भगवान ने अपनी दया से मुझे विश्वास दिला दिया है कि मैं मृत्यु को अपने समस्त दुखों का अंत समझूं।"

वह जो कुछ भी कहती उसमें उसकी धर्मपरायणता की झलक होती। साल के कुछ शुरू महीनों में उसका पति उसके कमरे में नाश्ता करता रहा और जब वह व्यग्र होकर कमरे में इधर से उधर टहलता तो वह यही शब्द सुना करता, जो वह एक देवी की कोमलता लेकिन तनिक कठोरता के साथ कहा करती। मृत्यु के सामीप्य ने उसमें ऐसा साहस उत्पन्न कर दिया था, जो उसमें सारी उम्र पैदा न हो सका था।

"आपको मेरे स्वास्थ्य का बड़ा ख्याल रहता है। इसका बहुत-बहुत धन्यवाद।" वह तबियत का हाल पूछने के उत्तर में कहा करती, "लेकिन अगर आप वाकई मेरे जीवन के अन्तिम क्षणों की कटुता को मिटाना और मेरे कष्ट को कम करना चाहते हैं, तो अपनी बेटी को क्षमा कर दीजिये। और इस प्रकार एक ईसाई, एक पिता और एक पति के कर्तव्य का पालन कीजिये।"

ये शब्द सुनकर ग्रांदे पत्नी के पलंग पर आकर बैठ जाता। उसकी दशा एक ऐसे व्यक्ति की-सी होती थी, जो वर्षा के भय से विवश किसी निकटतम मकान में पहुँच जाये। वह खुद कुछ न बोलता और उसकी पत्नी का जो जी चाहता वह कहती रहती। अत्यन्त अनुनय-विनय, स्नेह और अंतर्वेदना के साथ वह जो कुछ कहती उसे सुनने के बाद यह उत्तर में सिर्फ इतना कहता—"मेरी प्यारी बीवी, आज तुम्हारा

रंग कुछ पीला पड़ गया है।"

ऐसा लगता था कि उसकी बेटी तो बिलकुल उसके ध्यान से निकल चुकी है। उसका नाम सुनकर उसके कठोर चेहरे और सख्ती से बन्द किये हुए होठों में तनिक अन्तर न पड़ता था। वह पत्नी के अनुनय-विनय का अस्पष्ट-सा उत्तर देता और सदा एक ही से शब्द प्रयोग करता। अपनी पत्नी के सफेद चेहरे और गालों पर ढलकते हुए आँसुओं की उसने कभी परवा नहीं की।

"जिस प्रकार मैं आपको क्षमा कर रही हूँ उसी प्रकार भगवान भी आपको क्षमा कर दे।" वह कहती, "किसी दिन आपको भी भगवान की दया की ज़रूरत पड़ेगी।"

जब से उसकी पत्नी बीमार पड़ी थी, उसने अपने उन भयानक शब्दों 'तत, तत, तत' का प्रयोग बिलकुल छोड़ दिया था। लेकिन अपनी पत्नी की देवताओं जैसी विनम्रता का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ था।

मादाम ग्रांदे का सीधा-सादा चेहरा अब काफी सुन्दर दिखाई देने लगा था। यह सौन्दर्य उस आध्यात्मिकता का प्रतिविम्ब था जो उसके हृदय में चमक रही थी। शरीर में उसकी आत्मा चमक रही थी और इससे मुखमुद्रा भी चमक उठी थी। साधु प्रकृति के लोगों के चेहरों को इस प्रकार बदलते हमने अकसर देखा है। जिस आत्मा में सदा उच्च और पवित्र विचार उठते हैं, वह अन्त में साधारण और भद्दे चेहरों को भी निखार देती है।

कौन ऐसा व्यक्ति है जिसने इस प्रकार के चेहरे और अन्तिम समय उनमें जर्बदस्त परिवर्तन न देखा हो? मादाम ग्रांदे में जो असाधारण और दैवी तत्व था, शारीरिक कष्ट ने उसे बाहर निकाल दिया और उसके चेहरे पर एक अनूठी आभा आ गई। टीनसाज़ कितना भी निष्ठुर सही, लेकिन यह परिवर्तन देखकर वह भी थोड़ा-बहुत प्रभावित हुए बिना न रह सका। पहले तो उसका व्यवहार अवज्ञापूर्ण होता था; लेकिन अब वह चुप रहने लगा। इस व्यवहार का कारण यह था कि अपने परिवार

के बुजुर्ग की हैसियत से उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे।

वफादार नाँनों ज्योंही बाज़ार पहुँचती, लोग उसे बुरा-भला कहना शुरू कर देते और उसका मज़ाक उड़ाते। लेकिन लोग जितने जोश से ग्रांदे की निन्दा करते नौकरानी उतने ही अधिक उत्साह से पारिवारिक प्रतिष्ठा की रक्षा करती।

"क्यों ?" वह अपने स्वामी को बुरा कहने वालों से कहती, "तुम सभी उम्र के साथ-साथ चिड़चिड़े हो जाते हैं। फिर तुम मेरे स्वामी के पीछे क्यों पड़े रहते हो ? बेकार में उलटी-सीधी बातें न किया करो। बीबी बिलकुल रानी की तरह रहती हैं। माना कि वह अकेली होती हैं; लेकिन उन्हें अकेले रहना पसंद है। और मेरे मालिक और मालकिन जो कुछ भी करते हैं, सोच-समझकर करते हैं।"

आखिर एक दिन जबकि बसंत का मौसम खत्म हो रहा था, मादाम ग्रांदे को लगा कि रोग से अधिक योज़ेन की कैद का कष्ट मुझे मृत्यु के निकट लिये जा रहा है। और वह यह भी जानती थी कि बेटी को क्षमा दिलाने के सब प्रयत्न बेकार जायेंगे। अतएव उसने यह सारा किस्सा क्रोशो लोगों को सुना डाला।

"अरे, एक तेईस साल की लड़की को सिर्फ रोटी और पानी पर छोड़ रखा है!...." मैजिस्ट्रेट दे वोनफोन चिल्लाया "और फिर कोई उचित कारण भी तो नहीं है ! कानून इस प्रकार के जुल्म की इज़ाज़त नहीं देता। वह नालिश कर सकती है कि ..."

"अच्छा बेटे !" सरकारी वकील बोला, "अब तुम अपनी कानूनदानी तो यहीं रहने दो। मादाम ! आप निश्चिन्त रहें। मैं कल तक इस कैद को खत्म करा दूँगा।"

योज़ेन ने सब कुछ सुन लिया। वह कमरे से बाहर निकल आई।

"सज्जनो !" वह स्वाभिमान के साथ आगे आती हुई बोली, "मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप इस मामले में कोई दखल न दें। मेरे पिता अपने घर के स्वामी हैं और जब तक मैं इस छत के नीचे रहती हूँ,

मुझे उनका हुक्म मानना ही चाहिए। वह क्या करते हैं और क्या नहीं करते दूसरे लोगों को इससे कोई सरोकार नहीं, उन्हें भगवान और सिर्फ भगवान को इसका उत्तर देना है। अगर मेरे लिए आपके हृदय में तनिक भी मित्रता की भावना है तो मैं आपकी मिन्नत करती हूँ कि आप इस सम्बन्ध में कुछ भी न कहें। मेरे पिता की आलोचना करने का मतलब यह है कि हमें सारी दुनिया की दृष्टि में अपमानित किया जाये। आप लोगों ने मुझमें इतनी दिलचस्पी ली, इसके लिए मैं आपकी कृतज्ञ हूँ; लेकिन मैं आपकी और भी कृतज्ञ हूँगी अगर आप शहर में उड़ती हुई अफवाहों को किसी प्रकार खत्म करा दें। संयोग से मैंने भी वे सुनली हैं।"

"यह ठीक कहती है।" मादाम ग्रांदे ने कहा।

"मादमुआज़ेल, लोगों की जबान बंद कराने का सबसे अच्छा ढंग तो यही है कि आपको रिहाई दिलाई जाये।" बूढ़े सरकारी वकील ने सविनय कहा। योज़ेन के चेहरे पर उदासी, एकान्तवास और प्रेम के कारण जो आभा उत्पन्न हो गई थी, वह उसे देखकर स्तम्भित रह गया।

"अच्छा योज़ेन, तुम यह मामला मोसियो क्रोशो पर छोड़ दो। यह तुम्हारे पिता को भलीभाँति जानते हैं, और उन्हें यह भी मालूम है कि इस बात को तुम्हारे पिता के सम्मुख कैसे रखा जाये। मेरा जीवन जो थोड़ा-बहुत शेष है अगर तुम मुझे प्रसन्न देखना चाहती हो तो जैसे भी सम्भव हो तुम्हारे पिता से तुम्हारी सुलह हो जानी चाहिये।"

दूसरे दिन सुबह को ग्रांदे बगीचे में दो-चार चक्कर लगाने गया। योज़ेन की कैद के दिनों में उसका यह स्वभाव-सा बन गया था। उसने सोचा जब तक योजेन कपड़े बदले ज़रा ताज़ी हवा ही खाई जाये। जब वह अखरोट के पेड़ के पास पहुँचा तो कुछ क्षण उसके पीछे खड़ा होकर बेटी की खिड़की की ओर देखने लगा। वह योज़ेन को अपने लम्बे बालों में कंघी करते हुए देख रहा था। और उसके हठी स्वभाव और बेटी को गले लगाकर चूम लेने की इच्छा में ज़बर्दस्त द्वन्द्व चल रहा था।

वह अकसर जाकर उस छोटे से दीमक-लगे बैंच पर बैठ जाया करता,

जहाँ शारल और योज़ेन ने एक दूसरे से प्रेम करते रहने का संकल्प ग्रहण किया था। उसकी बेटी अकसर चोरी-छिपे उसे वहाँ बैठे देख लिया करती थी या आईने ही में बाग़ और बैंच पर बैठे हुए पिता की झलक नज़र आ जाती। अगर वह उठकर फिर टहलना शुरू कर देता तो योज़ेन खिड़की में बैठ जाती। उसे वहाँ बैठने में बड़ा आनन्द आता था। वह बाग़ की पुरानी-सी दीवार के एक टुकड़े पर दृष्टि जमाये रहती, जहाँ दरारों में जंगली फूलों की कोमल टहनियाँ थीं। इसके अतिरिक्त वहाँ भांति-भांति के सुन्दर फूल थे। एक छोटा-सा मोटे पत्तों वाला पौधा था, जिसपर सफेद और पीले फूल खिलते थे। यह पौधा पथरीले इलाके की पैदावार है। सोमूर और तोर में अंगूर की बेलों के साथ-साथ उगता है।

जून की एक चमकीली सुबह को, सवेरे ही बूढ़ा क्रोशो ग्रांदे के यहाँ आया, जो उस समय छोटे बैंच पर बैठा दीवार से टेक लगाये अपनी बेटी को देखने में व्यस्त था।

"मोसियो क्रोशो क्या तुम्हें मुझसे काम है ?" उसने सरकारी वकील की उपस्थिति को अनुभव करते ही पूछा।

"मैं ज़रा कारोबार के सिलसिले में हाज़िर हुआ था।"

"क्या तुम्हारे पास कुछ सोना है, जो तुम क्राऊन में बदलवाना चाहते हो ?"

"नहीं, नहीं। इस बार पैसे का मामला नहीं है बल्कि तुम्हारी बेटी योज़ेन का किस्सा है। हरएक की ज़बान पर तुम्हारा और उसका ज़िक्र है।"

"लोगों को इस मामले में बोलने का क्या अधिकार है ? आदमी अपने घर में जो चाहे करने में स्वतन्त्र है।"

"यह ठीक है और अगर आदमी चाहे तो अपने प्राण ले सकता है और इससे भी बुरा काम वह यह कर सकता है कि अपना पैसा खिड़की में से बाहर फेंक दे।"

"क्या ?"

"हुम् ! तुम्हारी पत्नी बहुत बीमार है, मेरे मित्र । तुम्हें मोसियो अजेरिन को बुलाना चाहिए । उनकी ज़िन्दगी खतरे में है । अगर इलाज ठीक न होने से उन्हें कुछ हो गया तो मुझे विश्वास है कि तुम्हें बातें सुननी पड़ेंगी ।"

"तत, तत, तत ! तुम्हें तो पता ही है कि उन्हें क्या कष्ट है । अगर कोई डाक्टर एक बार घर में कदम रख लेगा तो वह दिन में छः चक्कर लगाया करेगा ।"

"खैर ग्रांदे, जो तुम उचित समझो वही करो । हम दोनों पुराने मित्र हैं । सोमूर भर में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं, जिसे तुम्हारे साथ मुझसे बढ़कर लगाव हो, इसीलिए मैंने अपना कर्त्तव्य जाना कि इस ओर तुम्हारा ध्यान दिलाऊँ । जो कुछ होगा, उसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी । तुम अपनी स्थिति को खुद बेहतर समझते हो । इसलिए बात खत्म हुई । इसके अतिरिक्त इस बारे में मैं कुछ कहने नहीं आया था । तुम्हारे लिए एक और बात इससे भी अधिक महत्व की है क्योंकि तुम अपनी पत्नी को जान से तो मार देना नहीं चाहते । वह तो तुम्हारे लिए बहुत ही उपयोगी है । तनिक सोचो तो सही कि अगर मादाम ग्रांदे को कुछ हो गया तो तुम्हारी हैसियत क्या होगी ? तुम्हारा अपनी बेटी से साबक़ा पड़ेगा । तुम्हें अपनी सम्मिलित सम्पत्ति में से उसकी माँ के भाग का पूरा हिसाब योज़ेन को देना होगा और अगर वह चाहे तो अपनी माँ का भाग तुमसे मांग सकती है । क्योंकि उसकी मालिक वह होगी, तुम नहीं । फिर ऐसी स्थिति में तुम्हें फिरवाफो ही बेच डालना पड़ेगा ।"

क्रोशो के इन शब्दों ने भाले का काम किया क्योंकि टीनसाज़ को व्यापार का तो बहुत ज्ञान था लेकिन कानून के बारे में उसकी जानकारी बहुत कम थी । सम्पत्ति को विवश होकर बेच देने का उसे कभी खयाल तक न आया था ।

"इसलिए मेरे ख्याल में तो तुम्हें उसके साथ बड़ी शिष्टता का

व्यवहार करना चाहिए।" सरकारी वकील ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा।

"लेकिन क्रोशो तुम्हें पता है कि उसने क्या किया है?"

"नहीं, क्या हुआ था?" सरकारी वकील ने पूछा। उसे झगड़े का कारण जानने की बड़ी उत्सुकता थी और ग्रांदे की ओर से इतना विश्वास एक रोचक और अनोखा नाटक था।

"उसने अपना सब सोना दे डाला है।"

"अरे! अच्छा। वह था तो उसी का न?"

"सब यही कहते हैं!" ग्रांदे ने अत्यन्त खेद में भरकर अपने कन्धे झटकते हुए कहा।

"और इतनी-सी बात के लिए तुम अपने आपको योज़ेन के प्रेम से वंचित कर लोगे क्योंकि अगर उसकी माँ मर गई तो अवश्य तुम्हें उसकी सहायता दरकार होगी।"

"आह! छः हज़ार फ्रांक के सोने को तुम ज़रा-सी बात कह रहे हो!"

"मेरे प्यारे मित्र! यह कितने दुख की बात होगी कि योज़ेन चाहे तो तुम्हें सारी जायदाद की जांच-पड़ताल करने के बाद बटवारे के लिए मजबूर करदे। मालूम है उसमें खर्च कितना होगा?"

"कितना खर्च होगा?"

"दो तीन अथवा सम्भव है चार हज़ार फ्रांक तक खर्च हो जायें। और फिर जब तक तुम जायदाद नीलाम न करोगे तब तक तुम्हें सही कीमत का अन्दाज़ा भी न हो सकेगा। लेकिन अगर योज़ेन से सुलह सफाई की···"

"मुझे अपने बाप की कसम!" अंगूरों का कृषक पीछे टेक लगाकर चीखा। उसकी रंगत पीली पड़ गई थी। "क्रोशो हम ज़रूर इस बात पर विचार करेंगे।"

कुछ क्षण स्तम्भित, व्यग्र और मौन रहने के बाद ग्रांदे ने अपने पड़ोसी

के चेहरे पर नज़रें गाड़ते हुए कहा: "जीवन बड़ा ही कठिन है। इसमें मुसीबतें ही मुसीबतें हैं क्रोशो !" वह अत्यन्त गम्भीरता से बोले जा रहा था, "तुम निश्चय ही मुझे धोखा नहीं दे सकते। अच्छा कसम खाओ कि जो कुछ तुमने अभी कहा है, वह सच है। लाओ मुझे ज़रा कानून की किताब दिखाओ। मैं किताब देखना चाहता हूं।"

"मेरे अच्छे मित्र," सरकारी वकील ने कहा, "मैं अपने कारोबार को खूब समझता हूँ।"

"तो क्या यह बिलकुल सही है ? मैं अपनी बेटी ही के हाथों तबाह और बरबाद हो जाऊँगा।"

"वह अपनी मां की जायदाद की उत्तराधिकारिणी है।"

"फिर सन्तान का लाभ ही क्या है ? आह, मेरी पत्नी ! मुझे अपनी पत्नी से प्रेम है। सौभाग्य से उसका शरीर खूब मज़बूत है। वह ला वारतेलियर परिवार की है।"

"वह तो महीना भर भी मुश्किल से जिन्दा रह सकेगी।"

टीनसाज़ ने अपना सिर पीट लिया। थोड़ा-सा टहला और फिर पलट आया।

"अब क्या किया जाय ?" उसने एक भयानक दृष्टि क्रोशो पर डालते हुए पूछा।

"भई, सम्भव है कि योज़ेन मां की जायदाद पर अपने अधिकार को त्याग ही दे। और तुम भी तो उसे अपनी सम्पत्ति से वंचित नहीं करोगे, क्या तुम करोगे ? लेकिन अगर तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ रियायत करे तो तुम भी उसके साथ कठोरता का व्यवहार मत करो। मेरे मित्र, मैं खुद अपने ही लाभ के विरुद्ध बोल रहा हूँ। आखिर मैं अपनी आजीविका कैसे कमाता हूँ। इसी प्रकार की जायदादों के लेनदेन और जागीरों की दस्तावेजें ही तो तैयार करता हूँ।"

"अच्छा, देखेंगे। हम ज़रूर इस बारे में कुछ फैसला करेंगे। हाँ, क्रोशो, अब हम इस बारे में कोई बात न करेंगे। तुमने मेरी आत्मा तक

को झंझोड़ कर रख दिया है। क्या तुमने इन्हीं दिनों सोना खरीदा है?"

"नहीं, लेकिन मेरे पास नौ-दस पुराने लूई शायद पड़े हों। वह मैं तुम्हें दे दूंगा। देखो, मेरे अच्छे मित्र, योजेन से सुलह करलो। सोमूर में हर कोई तुम पर अंगुली उठाता है।"

"वे सब बदमाश हैं।"

"अरे हाँ। इन सरकारी कर्जों के कागज़ात की कीमत अब निन्यानवे तक हो गई है। इसलिए तुम्हें तो अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिए।"

"ओशो, निन्यानवे तक ?"

"हाँ।"

"अहा, निन्यानवे तक !" वह सरकारी वकील को गली के दरवाज़े तक छोड़ने के लिए जाते हुए बोला।

इस समाचार ने उसे इतना उत्तेजित कर दिया कि उसके लिए घर में बैठे अथवा ठहरे रहना असम्भव हो गया। वह तुरन्त अपनी पत्नी के कमरे में गया और बोला—"लो बीवी, तुम बेटी के साथ दिन बिताओ, मैं ज़रा फिरवाफों जा रहा हूँ। जब तक मैं बाहर रहूँ तुम दोनो ठीक-ठाक रहना। आज हमारे विवाह की वर्षगांठ है, प्यारी पत्नी हाँ देखो, यह रहे तुम्हारे दस क्राऊन तुम कब से यह दान में देना चाह रही थीं। आज छुट्टी मनाओ ! खूब हँसो बोलो और तन्दुरुस्त हो जाओ।"

उसने छः फ्रांक के सिक्कों की शक्ल में दस क्राऊन बिस्तर पर डाल दिये और मादाम ग्रांदे का चेहरा अपने हाथों में थामकर उसके माथे को चूमा।

"प्यारी पत्नी, आज तुम कुछ बेहतर मालूम हो रही हो न ?"

"लेकिन भगवान जो इतना दयालु है आपके घर में उसकी कृपा कैसे हो सकती है, जबकि आपने बेटी की ओर से अपना हृदय इतना कठोर बना लिया है ?" वह बोली। भावना के अतिरेक से उसका स्वर अवरुद्ध था।

"तत, तत, तत !" ग्रांदे तसल्ली देते हुए बोला, "हम इसका भी शीघ्र ही फैसला कर देंगे।"

"भगवान बड़ा दयालु है, योज़ेन !" माँ ने पुकार कर कहा। उसका चेहरा प्रसन्नता से दमक उठा।

"योज़ेन आओ ! अपने पापा को प्यार करो। उन्होंने तुम्हें क्षमा कर दिया है।"

लेकिन ग्रांदे जा चुका था। जितनी जल्दी हो सका वह अपने अंगूरों के खेतों की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर वह अपने औंधे-सीधे विचारों से एक नई दुनिया निर्माण करने में व्यस्त हो गया। ग्रांदे का हाल ही में सत्तरवाँ साल शुरू हुआ था। पिछले दो साल में उसका लालच और भी बढ़ गया था। तमाम स्थिर भावनायें उम्र के साथ-साथ उन्नति करती जाती हैं। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि जो लोग किसी एक विशेष विचार के लिये अपना जीवन अर्पित कर देते हैं, चाहे वह कंजूस हों अथवा किसी और ढंग से महत्वाकांक्षी हों, वे अपनी समस्त कल्पना-शक्ति से अपनी आकांक्षा के एक ही प्रतीक से चिमटे रहते हैं। ग्रांदे के मामलों में सोना-सोना, बस सोना ही सब कुछ था। वह चाहता था कि सोना उसके पास हो और वह उसे देखता और छूता रहे। इस आकांक्षा ने उसके भीतर उन्माद का रूप धारण कर लिया था। पैसे के प्रेम के साथ-साथ जुल्म ढाने की भावना भी दृढ़ होती चली गई थी। और यह विचार उसे प्रकृति के विरुद्ध जान पड़ता था कि अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात् उसे अपनी सम्पत्ति के एक छोटे-से भाग को छोड़ देना पड़ेगा। और उसे बेटी को अपने पैसे का हिसाब-किताब बताना होगा। फिर उसे एक-एक चीज़ की जो उसकी मिलकियत में है दस्तावेज़ें तैयार करानी होंगी। इसमें भूमि और निजी वस्तुयें सभी शामिल होंगी और फिर उन्हें नीलाम करना होगा……

"यह तो मेरा गला काटने जैसी बात है !" उसने अपने मन में

सोचा । उस समय वह अंगूर की बेलों के डंठलों का निरीक्षण कर रहा था ।

आखिर उसने फैसला किया और निश्चित मन के साथ खाने के [illegible] । उसने सोचा कि मैं योज़ेन को प्यार करके बहलाऊँगा, फुसलाऊँगा ताकि मैं राजसी ठाठ से मरूँ और जीवन के अन्तिम क्षणों तक मेरे ही कब्जे में रहे ।

संयोग से उसकी बड़ी चाभी उसके पास थी, जिसे घुमाकर दरवाज़ा खोलकर और दबे पांव सीढ़ियाँ चढ़कर वह अपनी पत्नी के कमरे में जा पहुँचा । वह ठीक उसी समय अन्दर दाखिल हुआ, जब योज़ेन ने सिंगार-दान माँ के पलंग पर लाकर रखा ही था । दोनों स्त्रियाँ ग्रांदे की अनुपस्थिति में खुशी महसूस कर रही थीं । वे चित्रों को देख-देखकर शारल और उसकी माँ के चेहरों में सादृश्यता ढूंढ़ रही थीं ।

"मुँह और माथा तो बिलकुल शारल जैसा है ।" जब योज़ेन ये शब्द कह रही थी, तभी ग्रांदे ने दरवाज़ा खोला ।

मादाम ग्रांदे ने देखा कि पति की दृष्टि सोने पर लपक पड़ी है तो वह चिल्लाई—"भगवान्, हम पर दया करो ।"

अंगूरों का कृषक सिंगारदान पर कुछ इस प्रकार झपटा जैसे शेर सोये हुये बच्चे पर लपकता है—"यह सब क्या है ?" वह ख़ज़ाने को छीन-कर खिड़की की ओर ले जाते हुये बोला ।

"सोना, ठोस सोना, और इतनी अधिक मात्रा में । इसका वज़न तो चार-छः पौंड होगा, आहा ! तो यह चीज़ है, जो शारल ने तुम्हारे सिक्कों के बदले तुम्हें दी थी ! तुमने मुझे बता क्यों न दिया ? यह तो मेरी बच्ची बड़ा अच्छा सौदा है । अब मुझे मालूम हुआ, तुम बिलकुल अपने बाप पर गई हो । यह शारल की मिलकियत है न ?"

योज़ेन सिर से पाँव तक काँप रही थी ।

"हाँ पापा । यह मेरा नहीं है, यह तो मेरे पास अमानत है ।"

"तत, तत, तत ! वह तुम्हारे पैसे ले गया है । अब तुम उसे अपने

छोटे-से खज़ाने के बदले में रख सकती हो।"

"ओह, पापा..."

बूढ़े ने अपनी जेब से चाकू निकाला ताकि इस कीमती धातु का कुछ भाग तोड़कर निकाल ले और ऐसा करने के लिये उसे सिगारदान थोड़ी देर के लिये पास की कुर्सी पर रख देना पड़ा। योज़ेन अपना खज़ाना वापस लेने के लिये झपटी। लेकिन टीनसाज़ की नज़र संदूकचे के साथ-साथ बेटी पर भी थी। अतएव डिब्बा बचाने के लिए उसने योज़ेन को इस बुरी तरह धक्का दिया कि वह पलंग पर जा गिरी।

"अरे यह क्या कर रहे हो?" माँ उठकर पलंग पर सीधी हो बैठी और चीखी।

ग्रांदे ने चाकू खोल लिया था और फल से सोना उखाड़ने ही वाला था।

"पापा!" योज़ेन ज़ोर से चिल्लाई। वह घुटनों के बल झुक गई और घिसटती हुई पिता के निकट जा पहुँची।

"पापा, आपको पवित्र मरियम और तमाम सन्तों की कसम, हज़रत ईसा की कसम जिन्होंने सूली पर प्राण दे दिये। अगर आप अपनी आत्मा की मुक्ति चाहते हैं, पापा! अगर आपको मेरी ज़िन्दगी का जरा भी खयाल है तो इसे न छेड़िये! यह सिगारदान न आपका है न मेरा। यह हमारे एक अभागे बंधु का है, जिसने इसे मुझे सौंपा था और यह मुझे इसी प्रकार उसके हवाले कर देना चाहिये।"

"अगर यह अमानत है तो फिर तुम्हें इसे देखने का क्या अधिकार है? इसे देखना तो छेड़ने से भी बुरा है।"

"इसके टुकड़े-टुकड़े न कीजिये, पापा! इसके लिये मुझे कितना लज्जित होना पड़ेगा, पापा। आप सुनते क्यों नहीं?"

"भगवान के लिये सुनिये तो?" माँ ने प्रार्थना की।

"पापा!—"

एक तेज़ चीख घर में गूँज उठी, जिसे सुनकर नाँनों डरती हुई

ऊपर आ गई। योज़ेन ने करीब पड़ा हुआ एक चाकू उठा लिया।

"अच्छा !" ग्रांदे बड़े शान्त स्वर में बोला। उसके होंठों पर सर्द मुस्कराहट बिखरी हुई थी।

"आप तो मुझे मारे डाल रहे हैं।" पत्नी ने कहा।

"पापा ! अगर आपने ज़रा-सा भी सोना निकाला तो मैं यह चाकू अपने मार लूंगी। आप ही के कारण माँ मर रही है और आप ही के कारण मेरी मृत्यु होगी। जैसा आपने किया है, वैसा ही आपके सामने आयेगा।"

ग्रांदे का चाकू वाला हाथ सिंगारदान पर उठकर उठा रह गया। उसने अपनी बेटी की ओर देखा और ठिठक गया।

"योज़ेन, क्या तुम सचमुच चाकू घोंप लोगी ?" उसने पूछा।

"जी हां।" मां बोल उठी।

"बीबी ने जो कहा है वह कर गुज़रेगी।" नांनों चिल्लाई। "भगवान के लिये मोसियो ज़िन्दगी में एक बार तो अक्ल से काम लीजिये।"

टीनसाज़ एक क्षण के लिये हिचकिचाया था। उसने पहले सोने की ओर देखा और फिर बेटी की ओर।

मादाम ग्रांदे बेहोश हो गईं।

"यह लीजिये साहब, आपने देखा। मालकिन मर रही हैं।" नांनों चीखी।

"लो, यह लो बेटी ! एक संदूकचे की खातिर हमें लड़ना नहीं चाहिये। लो, इसे वापस ले लो।" टीनसाज़ ने डिब्बे को जल्दी से पलंग पर फेंकते हुये कहा, "और नाँनों जाओ। मोसियो ब्रजेरिन को बुला लाओ। बीवी सुनो तो !" उसने अपनी पत्नी का हाथ चूमते हुये कहा।

"देखो हमने सुलह कर ली है, है न बेटी ? अब सूखी रोटी नहीं बल्कि जो तुम्हारा जी चाहे खाया करना...."

"अहा लो देखो, यह आँखें खोल रही है। हां, देखो प्यारी ! दिल बुरा न करो ! लो, मैं अपनी बेटी से प्यार किये लेता हूँ। इसे अपने

चचेरी भाई से प्यार है न ? अगर यह चाहे तो उससे शादी कर सकती है। यह छोटा संदूकचा भी योज़ेन सम्भाल कर रख सकती है। लेकिन बीवी, तुम्हें अभी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहना चाहिये। देखो, अपना सिर जरा इधर मोड़ लो। सुनो ! आने वाले त्यौहार पर तुम इतनी भेंट चढ़ाना कि सोमूर भर में किसी ने देखी न हो।"

"आह ! भगवान की कसम। आप अपनी पत्नी और बेटी के साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर कर सकते हैं ?" मादाम ग्रांदे ने कराहते हुये कहा।

"मैं फिर कभी ऐसा न करूँगा, कभी नहीं !" टीनसाज़ चीखा, "बीवी तुम देख लेना, मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

वह अपने कमरे में जाकर मुट्ठी में सोने के सिक्के भर लाया और उन्हें उसकी चादर पर बिखेर दिया।

"देखो, योज़ेन ! यह लो बीवी, ये सब तुम्हारे लिये हैं।" उसने सुनहरी सिक्कों की ओर संकेत करते हुये कहा : "लो, अब तो खुश हो। बस अब जल्दी से तन्दुरुस्त हो जाओ। अब तुम्हें और योज़ेन को किसी प्रकार का कष्ट न होगा। योज़ेन ! ये सौ लूई तुम्हारे लिये हैं। तुम उन्हें किसी को दे तो नहीं डालोगी ?"

मादाम ग्रांदे और योज़ेन ने विस्मय से एक दूसरे की ओर देखा।

"पापा, पैसे वापस ले लीजिये। हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हमें तो सिर्फ आपकी मुहब्बत चाहिये।"

"ओह, अच्छा ! जैसी तुम्हारी इच्छा।" उसने सिक्कों को जेब में डालते हुये कहा।

"अब हम सब मिलकर मित्रों की भांति रहेंगे। आओ सब नीचे खाने के कमरे में चलकर खाना खायें। अब हम हर शाम लुड्डो खेला करेंगे। और दो-दो सौ की बाज़ी लगायेंगे। अब हम चिड़ियों की भांति प्रसन्न रहा करेंगे। हुम्, क्यों बीवी ?"

"काश ! मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी कर सकती !" मरने वाली ने

कहा, "लेकिन मुझ में तो उठकर बैठने का भी सामर्थ्य नहीं है।"

"मेरी बेचारी बीवी!" टीनसाज़ बोला, "तुम नहीं जानतीं कि मुझे तुम से कितना प्रेम है और तुमसे भी योज़ेन!"

उसने बेटी को अपनी ओर खींच लिया और भींचकर गले से लगा लिया।

"ओह, बेटी। लड़ाई के बाद सुलह हो जाने पर प्यार करने में कितना मज़ा आता है! देखो बीवी, तुम देख रही हो न? अब हमें में पूरी सुलह-सफाई हो गई। जाओ, इसे जाकर सन्दूक में रखो और ताला लगा दो।" उसने सन्दूकचे की ओर संकेत करते हुए योज़ेन से कहा, "देखो सम्भलके, डरो नहीं। मैं इसके बारे में तुम से कभी एक शब्द भी नहीं कहूँगा।"

मोसियो ब्रजेरिन जल्द ही आ पहुँचा। वह सोमूर भर में सब से चतुर डाक्टर समझा जाता था। उसने निरीक्षण के उपरांत ग्रांदे से साफ-साफ कहा कि रोगिणी की हालत बहुत खराब है। ज़रा-सी परेशानी और चिन्ता उसके लिए घातक सिद्ध हो सकती है। हल्का भोजन, पूर्ण शांति और स्थायी देख-भाल से उसका जीवन पतझड़ के आखिर तक बढ़ाया जा सकता है।"

"क्या इस बीमारी पर बहुत खर्च आयगा?" घर के स्वामी ने पूछा, "क्या इन्हें बहुत-सी दवाइयों की ज़रूरत पड़ेगी?"

"दवा की तो अधिक ज़रूरत न होगी। अलबत्ता बड़ी सावधानी से तीमारदारी होनी चाहिए।" डाक्टर ने उत्तर दिया। वह उसके प्रश्न पर मुस्कराये बिना न रह सका।

"मोसियो ब्रजेरिन आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।" ग्रांदे ने तनिक व्यग्रता से कहा, "मैं आप पर पूरा भरोसा कर सकता हूँ। क्यों है न? अगर आप समझें कि देखने आना बहुत-ही ज़रूरी है तो आप जितनी दफा उचित समझें आकर इन्हें देख जाया कीजियेगा। इन्हें बचा लीजिये। मेरी अच्छी बीवी—मुझे इनसे बड़ा प्रेम है। मैं इसका प्रदर्शन

नहीं करता, मैं सब कुछ अपने दिल में रखता हूँ और हर बात मुझ पर बड़ी जल्दी असर करती है। मैं खुद मुसीबत में हूँ। यह सब मेरे भाई की मृत्यु के कारण हुआ। मैं पेरिस में उनकी खातिर ढेरों रुपया खर्च कर रहा हूँ। मेरा अपना दिवाला निकला जा रहा है। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि वहाँ का खर्च कभी खत्म ही न होगा। अच्छा मोसियो, प्रणाम! अगर आप मेरी बीवी को बचा सकें जो ज़रूर बचाइये। कोई डर नहीं अगर सौ दो सौ फ्रांक खर्च हो जायें।"

ग्रांदे की यह हार्दिक इच्छा थी कि उसकी पत्नी अच्छी हो जाये क्योंकि विरासत का सवाल उसके लिए अपनी मृत्यु से किसी तरह कम न था। वह अपनी पत्नी और बेटी की हर छोटी-बड़ी इच्छा पूरी करने के लिए तत्पर रहता था, और योज़ेन प्राण-पन से माँ की सेवा में लगी रहती थी। लेकिन इसके बावजूद मादाम ग्रांदे के जीवन का तेज़ी से अंत होता जा रहा था। वह दिन-दिन क्षीण होती जा रही थी। और जैसा कि वृद्धावस्था में हुआ करता है उसमें इतना सामर्थ्य नहीं रहा था कि इस प्राणघातक रोग का मुकाबला कर सके। उसका जीवन से अब सिर्फ इतना ही सम्बन्ध था, जितना टहनियों से लटक रहे पतझड़ के पीले पत्तों का पेड़ से होता है और जैसे पत्ते सूरज के प्रकाश से चमक उठते हैं, उसी प्रकार एक दैवी-प्रकाश से उसका मुखमंडल चमक रहा था। उसकी मृत्यु उसके जीवन के अनुरूप थी। यह एक धार्मिक मृत्यु थी—क्या ऐसी ही मृत्यु को लोग महान् नहीं कहते? उसके गुण, उसका देवताओं जैसा धैर्य और उसका बेटी का प्रेम कभी इतना उज्ज्वल और आलोकित न था, जितना कि अक्तूबर सन् १८२२ में, जब उसकी मृत्यु हो गई। बीमारी के दिनों में उसके मुख से शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकला और उसकी पवित्र आत्मा बिना किसी खेद और कष्ट के धरती से आकाश को चली गई। उसे मरते समय बस अपनी बेटी का ध्यान था, जिसकी प्रेम भरी मित्रता ने उसके शुष्क जीवन को माधुर्य प्रदान किया था। और जिसे अब वह सैकड़ों दुख और कष्ट सहन करने

के लिए छोड़े जा रहा थी वह इस भोली-भोली और अपनी ही भांति निरीह बच्ची को इस स्वार्थी संसार में अकेले छोड़ने के विचार ही से कांप उठती थी—वह जानती थी कि यह दुनिया धन के लिए उसका पीछा करेगी।

"मेरी बेटा ! एक दिन तुम्हें पता चल जायेगा कि परलोक के अतिरिक्त सच्चा आनन्द और कहीं नहीं है।" उसने मरने से पहले ये शब्द कहे।

माँ की मृत्यु के दूसरे ही दिन योज़ेन को ऐसा लगा कि इस पुराने घर से लगाव का एक और कारण उत्पन्न हो गया। यह घर जहाँ वह पैदा हुई थी और जहाँ अभी पिछले दिनों उसकी जिन्दगी एक मुसीबत बनकर रह गई थी, अब माँ के मरने से यह जगह पवित्र बन गई। वह आँसुओं से भरी आँखों के साथ खिड़की के पास छोटे-छोटे लकड़ी के तख्तों पर रखी हुई पुरानी कुर्सी को देखा करती जहाँ उसकी माँ बैठती थी। उसका पिता इतने प्रेम और स्नेह का बर्ताव करता और उसका इतना ध्यान रखता कि उसे ऐसा मालूम होने लगा था कि वह अब तक अपने पिता को समझी ही न थी। हर रोज सुबह आकर, उसे अपनी बाँह का सहारा देकर नाश्ते के लिये नीचे खाने के कमरे में ले जाता और घंटों बैठा, बड़े प्यार से उसकी ओर देखता रहता। उसकी आँखों में एक ऐसे चिन्तन की झलक होती जैसे सोना देखते समय उसकी आँखों में आ जाया करती थी। बूढ़ा टीनसाज़ अपनी बेटी के सामने जाते हुए कांपने लगता था और उसका समस्त आचरण ही इतना असाधारण होता कि नाँनों और क्रोशो लोग, उसकी इस कमज़ोरी पर आश्चर्य-चकित रह जाते थे। उनका खयाल था कि यह वृद्धावस्था के कारण है और कई बार तो उन्हें यह संदेह होने लगता कि उसका मानसिक संतुलन ठीक नहीं रहा। सिर्फ मोसियो क्रोशे ही एक व्यक्ति था, जिसे अपने मुवक्कल का पूर्णरूप से विश्वास प्राप्त था। अतएव जिस दिन उन लोगों ने शोक समाप्त किया, उसे रात को खाने पर निमंत्रित किया गया और उसे सब भेद बता दिये

गये। ग्रांदे मेज़ पर से चीज़ें उठाये जाने का इंतज़ार करता रहा और फिर बड़ी सावधानी से दरवाज़े बन्द करके बोला :

"मेरी प्यारी बच्ची ! तुम अपनी माँ की सारी सम्पत्ति की मालिक हो। और इस सिलसिले में हम दोनों को चंद छोटी-छोटी बातों का फैसला करना है। क्यों मोसियो क्रोशो ठीक है न ?"

"जी हाँ।"

"पापा, क्या यह इतना ज़रूरी है कि आज ही इसका फैसला होना चाहिए ?"

"हाँ, हाँ, बेटी। मैं अब अधिक देर तक कष्ट सहन नहीं कर सकता और मुझे विश्वास है कि तुम मेरे लिए किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न नहीं करोगी।"

"ओह, पापा !"

"अच्छा तो फिर आज रात ही इसका फैसला होजाना चाहिये।"

"बताइये, क्या करूं ?"

"बेटी, यह कुछ मेरे बताने की बात नहीं है। मोसियो क्रोशो, आप इसे बताइये।"

"मादमुआज़ेल, आपके पापा जायदाद को बेचना अथवा उसका बटवारा करना नहीं चाहते। और न मौजूदा रक़म पर आपकी विरासत के कारण किसी प्रकार का सख्त टैक्स अदा करना चाहते हैं। इसलिए इस प्रकार की पेचीदगियों से बचने का हल यह है कि कोई नई दस्तावेज़ तैयार न की जाये और फिलहाल सारी जायदाद एक ही जगह रहे।"

"क्रोशो, आशा है कि तुम सोच-समझ कर बात कर रहे हो। क्या एक बच्ची के लिए ये अजीब-सी बातें नहीं हैं ?"

"मोसियो ग्रांदे, मुझे जो कुछ कहना है, कह लेने दीजिये।"

"अच्छा, अच्छा, मेरे मित्र ! तुम और मेरी बेटी मिलकर मुझे तबाह तो करोगे नहीं। क्यों मेरी नन्हीं तुम मुझे बरबाद तो न करोगी ?"

"लेकिन मोसियो क्रोशो मुझे करना क्या है ?" योज़ेन ने अधीर होकर पूछा।

"अच्छा।" सरकारी वकील ने कहा, "आप इस इन्तकाल-जायदाद की दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दीजिये। जिसके अनुसार आप अपनी माता की जायदाद के अधिकार को त्याग देंगी। जायदाद आप के लिये सुरक्षित रहेगी। आप के पिता इसे जिन्दगी भर इस्तेमाल में ला सकेंगे। और इस तरह बटवारे की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"आप जो कुछ कह रहे हैं उसका एक शब्द भी मेरे पल्ले नहीं पड़ा।" योज़ेन ने उत्तर दिया, "आप मुझे दस्तावेज़ दीजिये और बताइये कि कहाँ हस्ताक्षर करने हैं।"

ग्रांदे कभी दस्तावेज़ की ओर देखता और कभी बेटी की ओर। वह इतना व्यग्र था कि उसने कई बार अपने माथे से पसीने की बूंदे पोंछीं। "मेरी बच्ची, बेहतर होता कि तुम अपनी प्यारी माँ की जायदाद से बिलकुल ही दस्तबरदार हो जातीं।" वह दर्म्यान में बोल उठा, "इस दस्तावेज़ को रजिस्टर करवाने में काफी खर्च होगा। अपना अधिकार छोड़ कर तुम आगे के लिये मुझ पर भरोसा कर सकती हो। मैं तुम्हें बहुत-सी रकम दे दिया करूँगा। सौ फ्रांक हर महीने तुम्हें मिल जाया करेंगे। और फिर तुम गिरजे में पैसे देकर प्रार्थनाएँ भी करवा सकती हो। तुम जिस किसी के लिये चाहो प्रार्थना करवा सकोगी। हुम् ! हर महीने एक सौ फ्रांक !"

"पापा, आप जैसा कहें मैं वैसा ही करने को तैयार हूँ।"

"मादमुआज़ेल।" सरकारी वकील ने कहा, "यह मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको सूचित करदूँ कि आप बिना किसी ज़मानत के अपने आपको लुटवा रही हैं।"

"उँह, खुदा मालिक है।" वह बोली। "इससे क्या फर्क पड़ता है ?"

"क्रोशो, तुम चुप रहो। चलो अब फैसला होगया, कतई फैसला।"

ग्रांदे अपनी बेटी का हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोला, "योज़ेन अब तुम अपनी ज़बान से फिर तो न जाओगी न ? तुम बड़ी अच्छी लड़की हो, है न ?"

"ओह, पापा !"

खुशी से ग्रांदे ने बेटी को अपने गले से लगा लिया और इस ज़ोर से मींचा कि योज़ेन की सांस घुटने लगी।

"देखो बेटी, तुमने अपने पापा को नया जीवन प्रदान किया है, लेकिन जो कुछ उसने तुम्हें दिया था, वही तुम उसे वापस दे रही हो। इसलिए हमारा तुम्हारा हिसाब बराबर हो गया। कारोबारी मामले इसी प्रकार तय होने चाहिए और जिंदगी भी तो एक कारोबारी सिलसिला है। जीती रहो ! तुम बड़ी अच्छी लड़की हो और वाकई अपने बाप से प्रेम करती हो। अब तुम्हारा जो जी चाहे करो। अच्छा, क्रोशो प्रणाम, कल फिर मिलेंगे।" उसने घबराये हुए सरकारी वकील की ओर पलटते हुए कहा, "अब तुम दस्तबरदारी की दस्तावेज़ को अदालत में दाखिल करने के लिए तैयार कर देना।"

दूसरे दिन दोपहर तक कागज़ात तैयार हो गये और योज़ेन अपने हाथ से हस्ताक्षर करके अपने सर्वाधिकार से दस्तबरदार हो गई। एक साल बीत गया। लेकिन टीनसाज़ ने अपना वादा पूरा न किया और योज़ेन को मासिक आय से जो सबकी सब उसकी होती, एक पैसा भी न मिला। और जब परिहास में एक दिन योज़ेन ने उससे उल्लेख किया तो वह काफी अप्रतिभ हुआ और तुरन्त अपने कमरे में चला गया। जब वह लौटा तो अपने भतीजे से खरीदे हुए आभूषणों का एक तिहाई भाग योज़ेन को दे दिया।

"यह लो ! बेटी !" उसके स्वर में व्यंग्य का मिश्रण था, "क्या तुम अपने बारह सौ फ्रांक के बदले में इन्हें स्वीकार कर लोगी ?"

"ओह पापा ! क्या आप वाकई ये मुझे दे देंगे ?"

"तुम्हें अगले साल फिर इतना ही और मिल जाएगा।" उसने जेवर

योज़ेन की गोद में फेंकते हुए कहा, "और थोड़े ही समय में उसके तमाम गहने तुम्हें मिल जायेंगे।" उसने अपने हाथ मलते हुए आश्वासन दिया। बेटी के इन आभूषणों से प्रेम का भला हो। ग्रांदे ने बड़ा अच्छा सौदा किया था; इसलिए बड़ा ही प्रसन्न था।

यद्यपि बूढ़ा अभी काफी स्वस्थ और मजबूत था, तो भी उसने महसूस किया कि उसे अपनी बेटी को अपने कारोबार और घर-गृहस्थी की व्यवस्था के गुर सिखा देने चाहिए। अतएव इसी दृष्टि से वह स्टोर से खाने-पीने की चीज़ें देते समय उसे अपने पास खड़ा कर लेता, और दो साल से जिन्स के रूप में अदा किये जाने वाले किराये भी वह वसूल कर रही थी। धीरे-धीरे उसे खेतों और अंगूरों के बागों के नाम भी याद हो गये। ग्रांदे जब अपने किसानों के पास जाता तो उसे भी अपने साथ ले जाता। अतएव तीसरे साल के अंत पर उसने महसूस किया कि योज़ेन की आरम्भिक शिक्षा पूरी हो चुकी है। वास्तव में वह पिता के सारे ढंग सीख गई थी और पिता के पदचिह्नों पर चलना तो अब उसका नियम हो गया था। अब ग्रांदे को उस पर किसी प्रकार की आशंका या अविश्वास न रहा था। इसलिए गोदाम की चाभियाँ उसके हवाले कर दीं और यों वह घर की मालकिन बन गई।

इस प्रकार पांच साल बीत गये और कोई घटना ऐसी घटित नहीं हुई जो उनके जीवन की एकरसता में विघ्न डालती। योज़ेन और उसका पिता हर काम घड़ी की सुइयों के सदृश निश्चित समय पर करते और इस प्रकार घंटे दिनों और सालों में परिणत होते चले गये। यह बात हर एक को मालूम थी कि मादमुआज़ेल ग्रांदे के जीवन में कोई गहरी वेदना निहित है। सोमूर के प्रत्येक वर्ग की योज़ेन की इस मानसिक दशा और इस गुप्त वेदना के बारे में अलग-अलग राय थी लेकिन खुद उसने इस बारे में कभी कोई ऐसा शब्द अपने मुख से नहीं निकाला, जिससे इसका बोध हो।

तीनों क्रोशो और उनके कुछ मित्र घर में आने-जाने लगे थे

उनके अतिरिक्त योज़ेन किसी से न मिलती थी। इन्हीसे सीखकर योज़ेन ने ताश खेलने में बड़ी निपुणता प्राप्त कर ली थी। और इस खेल के लिए वे लगभग हर शाम उसके घर आ पहुंचते थे।

सन् १८२७ में उसके पिता को बुढ़ापे की निर्बलता महसूस होने लगी। इसलिए ग्रांदे को उसे और भी विश्वास में लेना पड़ा। अब उसने अपने सारे कारोबारी भेद बेटी को बताने शुरू किये। अब उसे पूरी तरह मालूम हो गया था कि पिता के पास जायदाद कितनी है। जहाँ कोई कठिनाई आ पड़ती वह बाप के कहने पर सरकारी वकील क्रोशो से मश्विरा कर लेती क्योंकि उसकी दियानतदारी पर ग्रांदे को पूर्ण विश्वास था। इस समय ग्रांदे की अवस्था बयासी साल थी और इसी साल के अंत में उस पर फालिज का हमला हुआ, जिससे फिर वह सम्भल न सका। मोसियो ब्रजेरिन् ने भी उम्मीद छोड़ दी और योज़ेन ने महसूस किया कि वह शीघ्र ही इस दुनिया में अकेली रह जायगी। इस विचार ने उसे पिता के और निकट कर दिया। उसके जीवन में प्रेम की यह अन्तिम कड़ी थी, जो उसे एक दूसरे प्राणी से भी बांधे हुए थी। प्रेम उसका सर्वस्व था। जैसे हर एक प्रेम करने वाली स्त्री का होता है, और शारल तो उसकी दुनिया से दूर जा चुका था। वह पूरी लगन से पिता की तीमारदारी करती। बूढ़े की स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ चुकी थी; लेकिन रुपये की हविश दृढ़ होती जा रही थी जो और सब भावनाओं के मर जाने के उपरांत भी जीवित थी।

ग्रांदे की मृत्यु भी ऐसी ही हुई जैसा उसका जीवन था। मृत्यु धीरे-धीरे निकट आ रही थी। उन दिनों वह अपनी पहियों वाली कुर्सी घुमाता हुआ उसे नित्य आतिशदान के निकट ले जाता। जहाँ उसकी अलमारी का दरवाज़ा ठीक उसके सामने होता। दरवाज़े से दूसरी ओर उसका सोने का खज़ाना था। वह मौन, अचल और अचेत यों ही बैठा रहता। लेकिन अगर कोई कमरे में दाखिल होता तो वह बड़ी उद्विग्नता से आने वाले की ओर देखता और फिर दरवाजे पर चढ़ी हुई मोटी लोहे

की चादर पर उसकी नज़र जम जाती, चाहे आवाज़ कितनी मद्धम होती, ग्रांदे तुरन्त उसके बारे में पूछता। और जब बूढ़ा मकान के पिछले सेहन में भूंकते हुए कुत्ते की आवाज़ सुन लेता तो सरकारी वकील हैरान हुए बिना न रह सकता। जिन दिनों किराया वसूल करना या अंगूरों के किसानों से [illegible] चुकाना होता, या रसीदें देने का मौका आता तो ग्रांदे ठीक समय पर अपनी बेहोशी से चौंक पड़ता। वह अपनी पहियों वाली कुर्सी घुमाकर अलमारी के दरवाज़े की ओर मोड़ लेता। अपनी बेटी को बुलाकर उसे खुलवाता और पैसे की थैलियों को बड़ी सफाई के साथ उसमें रख देने को कहता। जब तक वे सब थैलियाँ अंदर रखके दरवाज़े में ताला न लगा लेती, ग्रांदे उसे देखता रहता। और जब योज़ेन चाभी उसके हाथ में दे देती तो वह फिर कुर्सी धीरे से मोड़ता और पुरानी जगह पर पहुंच जाता। वह चाभी को वास्केट की जेब में रखता और समय-समय उसे टटोलकर इत्मीनान कर लेता।

उसके मित्र सरकारी वकील का विश्वास था कि अब चंद दिन की बात है। फिर योज़ेन को विवश मेरे भतीजे मजिस्ट्रेट ही से शादी करनी पड़ेगी बशर्ते कि शारल ग्रांदे लौट न आये। अतएव उसने इधर अधिक से अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया। वह हर रोज ग्रांदे से हिदायत लेने आता और उसके कहने के अनुसार फिरवाफों, बाग और चरागाह के चक्कर लगाता। अंगूरों की फसल बेचता और जो रकम मिलती वह उसे सुनहरी सिक्कों में तब्दील करा के ला देता, जिनकी थैलियाँ बड़े गुप्त ढंग से अलमारी में लगी हुई थैलियों के ढेर पर जमा दी जातीं।

आखिर मृत्यु आ पहुँची और अंगूरों के कृषक का दृढ़ शरीर यमदूत के साथ संघर्ष में उलझकर रह गया। उन दिनों भी वह नियम के अनुसार आग के निकट अलमारी की ओर मुँह किये बैठा रहता, जो कम्बल उसके गिर्द लपेट दिये जाते थे, वह उन्हें खींचकर उतार लेता और उन्हें तह करने का प्रयत्न करते हुए नाँनों से कहता—"ताला लगाओ, ताला लगाओ। वरना लोग मुझे लूट लेंगे।"

जब तक उसमें आँखें खोलने का सामर्थ्य रहा, वह बार-बार निगाहें कमरे के दरवाज़े की ओर मोड़ता, जहाँ उसका खज़ाना रखा हुआ था। अभी उसकी आँखों में ज़िन्दगी की थोड़ी-सी चमक बाकी थी। वह अपनी बेटी से अत्यन्त डरी और कांपती हुई आवाज़ में कहता—"वे सब वहाँ हैं न ?"

"हां, पापा।"

"सोने का ध्यान रखना। लाओ मुझे सोना दिखाओ...."

योज़ेन उसके सामने मेज़ पर सुनहरी सिक्के बिखेर देती; और वह घंटों उन पर नज़रें गाड़े बैठा रहता। वह पलकें तक न झुकाता था और उसकी हालत ऐसे बच्चे की सी होती, जिसने पहली बार देखना शुरू किया हो। और कई बार एक हल्की-सी बालसुलभ मुस्कराहट उसके होठों पर फैल जाती, जिसे देखकर अत्यन्त दुःख होता था।

"अब मुझे तसल्ली हुई है।" वह कई बार बड़बड़ाता और फिर उसकी मुखमुद्रा शांत और गम्भीर हो जाती।

जब पादरी कुछ धार्मिक रस्में अदा करने आया तो कंजूस की आँखों में जीवन का कोई चिह्न शेष न रहा था; लेकिन जब मोमबत्तियों के प्रकाश में चाँदी के स्लेब और चांदी के प्याले में पवित्र जल उसके सामने रखा गया तो कई घंटों के बाद उसकी आँखों में फिर चमक आ गई। उसकी नज़रें कीमती धातु पर जमकर रह गईं और उसका मस्सा अंतिम बार कसमसाया।

ज्योंही पादरी ने मुलम्मा चढ़ी हुई स्लेब उसके ऊपर उठाई ताकि भगवान ईसा की मूर्ति उसके होठों से लग जाय तो ग्रांदे ने उसे पकड़ लेने का एक भयानक प्रयास किया। इस अंतिम प्रयास ने उसकी जान ली। उसने योज़ेन को आवाज़ दी, जो कुछ नहीं देख रही थी, बल्कि घुटनों के बल एक ओर झुकी उसके सर्द होते हुए हाथ को आँसुओं से भिगो रही थी।

"पापा, मुझे आशीर्वाद दीजिये।" वह गिड़गिड़ाई।

"बहुत ही सावधान रहना।" ग्रांदे ने कहा, "एक दिन तुम्हें मुझे इन सब चीजों का हिसाब देना होगा।"

अंतिम वाक्य से सिद्ध होता है कि कंजूस आदमी को ईसाई मत ही धारण करना चाहिये।

अतएव योज़ेन ग्रांदे अब संसार में अकेली थी और उसका घर वीरान होकर रह गया था। सिवाय नाँनों के कोई भी न था, जिसे वह अपना दुखड़ा सुनाती। किसी की निगाहों में उसे अपने प्रति सहानुभूति की झलक न दिखाई देती थी। सिर्फ एक नाँनों थी, जो उसे बिना किसी लालच के चाहती थी। योज़ेन के लिए नाँनों ही सब कुछ थी। वह नौकरानी नहीं रही थी बल्कि उसकी सच्ची दोस्त बन गई थी।

मोसियो क्रोशो ने योज़ेन को बताया कि सोमूर और उसके आस-पास की जायदाद की वार्षिक आय तीन लाख लीवर है। इसके अलावा साठ लाख की रकम तीन फीसदी के हिसाब से जमा की हुई थी। यह पैसा उस समय जमा कराया गया था, जब सरकारी कर्जे की कीमत साठ फ्रांक थी और आजकल उसकी कीमत सतत्तर थी। दो लाख सोने की शक्ल में मौजूद थे। और इसके अतिरिक्त एक लाख फ्रांक के लगभग चांदी थी। फिर जो लगान अभी तक वसूल न हुआ था, वह अलग रहा। अतएव सब मिल-मिलाकर उसकी जायदाद लगभग एक करोड़ सत्तर लाख फ्रांक की थी।

"न जाने मेरा चचेरा भाई कहाँ होगा?" वह मन में सोचा करती।

एक दिन मोसियो क्रोशो ने अपनी नई मुवक्कल के सामने सारा हिसाब पेश कर दिया और उसे बताया कि उसकी जायदाद पर किसी प्रकार का कर्जा नहीं है। उस दिन योज़ेन नाँनों समेत आतिशदान के पास बैठक में बैठी थी, जो उस समय रिक्त-रिक्ति और स्मृतियों से ओत-प्रोत जान पड़ रही थी। मां की लकड़ी के तख्तों पर रखी कुर्सी से लेकर शीशे के गिलास तक, जिसमें एक बार उसके चचेरे भाई ने पानी पिया था, प्रत्येक वस्तु बीती बातें याद दिला रही थी।

"नाँनों, मैं और तुम अब अकेली रह गई हैं।"

"हाँ, बीबी। अगर मुझे मालूम होता कि वह सुन्दर भाई कहाँ है तो पैदल चलकर उन्हें खोज लाती।"

"हमारे और उनके बीच समुद्र पड़ा है।" योज़ेन बोली।

जिस समय यह बेचारी अकेली उत्तराधिकारिणी अपनी पुरानी वफादार नौकरानी के साथ सर्द, वीरान, अँधेरे घर में, जो उसका सर्वस्व था, बैठी आँसू बहा रही थी, उस समय ओरलियाँ से लेकर नांत तक लोगों में मादमुआज़ेल ग्रांदे और उसके एक करोड़ सत्तर लाख फ्रांक ही की चर्चा हो रहा था। योज़ेन ने सबसे पहला काम यह किया कि नाँनों की बारह सौ फ्रांक पेंशन बाँध दी। नांनों के पास छः सौ फ्रांक अपने जमा किये हुए थे। अतएव अब तो लोग उससे शादी करने को टूट पड़े। महीने भर के अन्दर ही कोरनिवाये की मिन्नत-समाजत से पसीजकर नाँनों ने उससे शादी कर ली। मादमुआज़ेल ग्राँदे ने उसे तरक्की देकर अपना कारिंदा बना लिया। नाँनों कोरनिवाये को अपनी समवयस्क स्त्रियों से जवान दीख पड़ती थी। उसके भद्दे चेहरे पर समय का अधिक प्रभाव न पड़ा था। इसलिये बहुत सी सुन्दर स्त्रियों से अच्छी लगती थी। इस समय उसकी उम्र उनसठ साल के लगभग थी। लेकिन देखने में चालीस से अधिक की मालूम नहीं होती थी। और यह सब संयम और नियम से रहने के कारण था कि उसका स्वास्थ्य इतना अच्छा था। शायद वह ज़िन्दगी में पहले कभी इतनी सुन्दर दिखाई न दी थी; जितनी शादी के दिन लग रही थी। उसका कुरूप होना उसके लिए हितकर सिद्ध हुआ। वह लम्बी-तडंगी, स्वस्थ और खूब मज़बूत थी और उसके चेहरे से विनोद-शीलता झलक रही थी। बहुत से देखने वाले उस समय कोर-निवाये के भाग्य को सराह रहे थे।

"भई, बड़ी मजबूत चीज़ है।" बज़ाज़ बोला।

"उसके अब भी संतान हो सकती है।" नमकफरोश ने कहा।

"अभी तक खूब हट्टी-कट्टी है। ऐसा मालूम होता है जैसे नमक के

पानी में रखी गई हो।"

"यह बड़ी अमीर है। कोरनिवाये की तो किस्मत जाग उठी।" एक दूसरा पड़ौसी बोला।

जब नाँनों गिरजाघर जाते हुए पुराने मकान से निकलकर गली में गुज़री तो उसे रास्तेभर बधाई मिलती रही। नाँनों अपने पड़ोसियों में बड़ी लोकप्रिय थी। योज़ेन ने उसे शादी पर तीन दर्ज़न चमचे और काँटे उपहार के रूप में दिये। कोरनिवाये पर मालकिन की उदारता का इतना प्रभाव हुआ कि इसका उल्लेख करते समय उसकी आँखों में आँसू आ गये और उसने सोचा कि ऐसी मालकिन के लिए मैं प्राण तक न्यौछावर कर देने में भी संकोच न करूँगा। मादाम कोरनिवाये अब योज़ेन की विशेष विश्वस्त नौकरानी थी। सिर्फ यही नहीं कि उसका विवाह हो चुका था और वह अब पति वाली थी, बल्कि उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई थी और उसकी खुशी दुगुनी हो गई थी। आखिर अब वह गोदाम की देख-रेख करती थी और चाभियों का गुच्छा उसीके पास रहता था। वह खाने-पीने की सामग्री उसी प्रकार दिया करती जिस प्रकार उसका स्वर्गीय स्वामी निकलवाया करता था। इसके अतिरिक्त अब दो नौकर उसके मातहत काम करते थे—अर्थात् एक रसोइया और दूसरे एक नौकरानी, जो घर के कपड़ों का ध्यान रखती और मादमुआज़ेल ग्रांदे के लिबास तैयार किया करती। जहाँ तक कोरनिवाये का सम्बन्ध था वह जंगल का चौकीदार था। और साथ-साथ रसोईघर का दारोगा भी वही था। यह बताने की तो ज़रूरत नहीं कि जिन रसोइये और नौकरानी को नाँनों ने पसंद करके रखा था, वे बहुत अच्छे मुलाजिम थे। किसानों को अपने पिछले स्वामी के मरने का एहसास ही न हो सका क्योंकि उनकी कठोरतम शिक्षा हो चुकी थी और मोसियो और मादाम कोरनिवाये का युग पुराने युग से किसी प्रकार भी कम न था।

योज़ेन अब तीस वर्ष की स्त्री थी; लेकिन उसने अब तक जीवन में कोई खुशी न देखी थी। उसका बचपन भी विचित्र नीरसता और शुष्कता

में व्यतीत हुआ था। उसकी प्रतिक्षण की साथी उसकी माँ ही थी, जिसने अपनी भावुकता के कारण इस कठोर जीवन में कष्टों के अतिरिक्त और कुछ भी तो नहीं पाया था। उस माँ ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ मृत्यु का स्वागत किया था। और मरते समय उसे बेटी पर दया आ रही थी—कि उसे अभी इस दुनिया में रहना होगा। योजेन को माँ का अभाव प्रतिक्षण अखरता था। लेकिन माँ की स्मृति के साथ किसी प्रकार की ग्लानि अथवा प्रायश्चित का सम्मिश्रण न था।

प्रेम, जिसका उसके जीवन में प्रथम और अन्तिम बार प्रादुर्भाव हुआ था, उसके लिए दुख का कारण बन गया था। उसने अपने प्रेमी के साथ कुछ थोड़े-से क्षण बिताये थे। चोरी-छिपे के दो चुम्बनों के बदले उसने अपना हृदय उसे सौंप दिया था और उसके उपरान्त वह उससे अलग हो गई। और उनके बीच दुनिया भर के समुद्र और जमीनें आ पड़ीं। उसके पिता ने उसके प्रेम को अभिशापित किया था। और इसी प्रेम के कारण उसकी माँ की जान गई थी। और उसे विषाद, कष्ट और कुछ अस्पष्ट आशाओं के अतिरिक्त कुछ न मिला था। वह जीवन भर प्रसन्नता के लिए प्रयत्न करती रही; लेकिन उसे कहीं से भी सहारा न मिला।

हमारी आत्मा इस प्रकार जीवित रह सकती है कि हम औरों से कुछ लें और उन्हें कुछ दें। हमें एक दूसरी आत्मा की जरूरत पड़ती है। उससे हमें जो कुछ मिलता है, हम उसे अपना लेते हैं और उसे कहीं ज्यादा करके लौटाते हैं। हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए यह बात इतनी ही ज़रूरी है जितना भौतिक शरीर को जीवित रखने के लिए सांस का आना-जाना। इस चीज़ के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। हवा न हो तो दिल घुटने लगता है और इसकी धड़कन बन्द हो जाती है। योजेन भी इसी प्रकार की आपत्ति में थी।

अपने धन से उसे कोई सुख न मिला, धन उसके लिए कुछ भी तो न कर सकता था। उसके प्रेम, उसके धर्म और भविष्य के विश्वास में उसका सारा जीवन समा गया था। प्रेम उसे अमरत्व का अर्थ सिखा रहा था।

उसका अपना हृदय और धार्मिक जीवन उसे आगामी जीवन का संदेश सुनाता अर्थात् यह कि जीवन सदा अमर रहने वाला है और प्रेम भी कुछ कम अमर नहीं है। दिन-रात वह इन दो कभी न खत्म होने वाले सवालों में उलझी रहती। शायद ये दोनों सवाल उसकी दृष्टि में एक हो कर रह गये थे। वह अपने आप में लीन होती चली गई। वह प्रेम करती थी और उसे कुछ विश्वास-सा था कि उसे भी प्रेम किया जा रहा है।

सात साल तक वह अपने इस प्रगाढ़ प्रेम में खोई रही।

उसे अपने पिता की छोड़ी लाखों की जायदाद जो हर साल बढ़ती ही चल जा रही थी बिलकुल प्रिय न थी, बल्कि उसका सर्वस्व तो वे दो चित्र थे, जो उसके पलंग के निकट लटके हुए थे। फिर शारल का वह सिगारदान था और वे जवाहरात जो उसके पिता ने खरीदे थे, उन्हें उसने रूई में लपेटकर बड़े गर्व के साथ लकड़ी के संदूक में रख दिया था। इनके अतिरिक्त उसकी चची की वह अँगूठी थी, जिसे मादाम ग्रांदे ने इस्तेमाल किया था। योज़ेन नित्य कढ़ाई ले बैठती थी। यह काम वह महज़ इस लिए शुरू करती कि सोने का अंगुरवाना पहन सके, जो बहुत-सी स्मृतियाँ सम्बन्धित होने के कारण उसे बहुत प्यारा था।

मादमुआजेल ग्रांदे अभी तक शोक-वस्त्र पहनती थी। इसलिए उसके विवाह का तो प्रश्न ही न उठता था। उसकी सच्ची धर्मपरायणता सब पर विदित थी इसलिए क्रोशो लोग पादरी के कहने पर उत्तराधिकारिणी की सेवा में व्यस्त रहते। योज़ेन का खाने का कमरा हर शाम को इन श्रद्धालु क्रोशो लोगों से भर जाता, जो घर की मालकिन की प्रशंसा करते न अघाते। ये लोग सब तरह उसका आदेश मानने को तैयार रहते। साधारणतः अब उसे एक चिकित्सक, एक शिक्षा-अध्यक्ष, एक दारोगा, एक प्रधानमन्त्री और एक जासूस मिल गया था, जो उसे हर बात से सूचित करता रहता था। अगर वह इन लोगों से अपने जूते उठवाना चाहती तो वे इसके लिए भी तैयार थे। उसकी हैसियत एक मलिका की सी थी, बल्कि मलिका की भी किसीने इतनी खुशामद न की होगी।

महान व्यक्ति कभी किसीकी खुशामद नहीं करता, यह तो सिर्फ कमीनों का काम है कि बड़े लोगों को प्रसन्न करने के लिए अपने को इतना नीच बनालें। चापलूसी का अर्थ ही स्वार्थ-सिद्धि है। अतएव जो लोग हर शाम मादमुआज़ेल ग्रांदे की बैठक में आकर बैठते (वे आपस में उसे मादमुआजे फिरवाफों कहते) वे नए-नए अंदाज़ में अपनी मेज़बान की तारीफों के पुल बांध देते थे। यह प्रशंसा और चापलूसी योज़ेन को शुरू-शुरू में तो अवश्य नागवार मालूम हुई, लेकिन अब वह अपने सौंदर्य की प्रशंसा की आदी हो चुकी थी। अगर कोई नया आदमी उसे साधारण रंग-रूप की बताता तो यह आलोचना उसे इतनी खलती, जितनी आठ साल पहले भी न खली होती। अन्त में उसे उनकी यह प्रशंसायें पसंद आने लगीं। ये सब तारीफें वह अपने मन ही मन में अपने देवता को भेंट कर दिया करती और इस प्रकार धीरे-धीरे उसने अपने पद को स्वीकार कर लिया और वह यह भी मान गई कि उसे मलिका समझा जाय और हर शाम को उसका दरबार लगने लगा।

मोसियो दे वोनफ़ोन इन लोगों का हीरो था। वे उसकी प्रशंसा करते, उसके गुणों की सराहना करते और रंग-रूप की तारीफ करते। और इन तारीफों का सिलसिला कभी खत्म होने में न आता। फिर उनमें से कोई यह ज़िक्र छेड़ देता कि पिछले सात सालों में मजिस्ट्रेट ने अपनी जायदाद को बहुत बढ़ा लिया है। अब दे वोनफोन की वार्षिक आय लगभग दस हज़ार फ्रांक थी। और उसकी तमाम जायदाद क्रोशो परिवार की भूमि के सदृश उत्तराधिकारिणी की विस्तृत सम्पत्ति के निकट ही स्थित थी।

"मादमुआज़ेल, क्या आपको मालूम है?" एक दूसरा दरबारी बोल उठता, "क्रोशो लोगों को चालीस हज़ार लीवर सालाना मिलते हैं।"

"और फिर ये लोग रुपये जमा भी करते जा रहे हैं।" मादाम दे ग्रेबोकोर कहती जो क्रोशो लोगों की एक पुरानी मित्र थी, "पिछले दिनों एक आदमी पेरिस से उन्हें वकालत के सिलसिले में बुलाने आया था और

दो लाख फ्रांक देने को तैयार था। अगर उन्हें वहाँ जज का पद मिल जाय तो उन्हें ये दो लाख स्वीकार कर लेने चाहिए।"

"वह व्यक्ति मोसियो दे वोनफोन की जगह जज बनना चाहता है और इसीलिये वह ये सब यत्न कर रहा है।" मादाम दे विरसोंवाल बोली, "पहले यह कौंसिलर बनेंगे और फिर अदालत के प्रधान नियुक्त कर दिये जायेंगे। ये इतने सुयोग्य व्यक्ति हैं कि इनकी सफलता अनिवार्य है।"

"वाकई" किसी और ने कहा, "ये बड़े ग़ज़ब के आदमी हैं। क्यों मादमुआज़ेल, आपकी क्या राय है ?"

मजिस्ट्रेट भी अपना रोल ठीक-ठीक निबाहने का प्रयत्न कर रहा था। यद्यपि उसकी अवस्था अब चालीस साल थी, उसकी रंगत काली और चेहरा घृणास्पद था, जिसपर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और इस पेशे के लोगों की भाँति अप्रतिभ और शुष्क था, फिर भी वह अपने आपको युवक सिद्ध करता था। वह गहरे कत्थई रंग की छड़ी बग़ल में दबाये रखता। फिर मादमुआज़ेल ग्रांदे के घर में नस्वार भी न सूँघता। उसके यहाँ वह सदा सफेद गुलूबंद और सफेद जालीदार कमीज़ पहनकर जाता, जिससे वह अच्छा-खासा फीलमुर्ग मालूम होने लगता। वह मादमुआज़ेल ग्रांदे को 'हमारी प्यारी योज़ेन' कहकर पुकारता और ऐसी बातें करता जैसे इस परिवार का बड़ा ही घनिष्ठ मित्र हो। वास्तव में यह दृश्य कुछ उसी प्रकार का था, जिससे हमारी कहानी का आरम्भ हुआ था। अंतर सिर्फ इतना था कि लोगों की संख्या कुछ अधिक हो गई थी। लुडो का स्थान वेस्ट ने ले लिया था और मोसियो और मादाम ग्रांदे मौजूद न थे।

यह टोली अभी तक योज़ेन के धन के पीछे पड़ी हुई थी, अब इस टोली की संख्या बढ़ गई थी और अब वे शिकार को एक योजना के साथ फाँसने का प्रयत्न कर रहे थे। अगर शारल दूर इंडीज़ से लौट आता तो उन्हें वही पुराने लोग और वही पुरानी मनोवृत्तियाँ दिखाई देतीं। मादाम दे ग्रासीं के मन में योज़ेन के प्रति दया और सहानुभूति के अतिरिक्त और

कुछ न था। वह क्रोशो लोगों को परेशान करने के लिए अभी तक वहीं थी। इन गहरे बादलों के बीच में योज़ेन का चेहरा अब भी चमक उठता था और शारल दृष्टि से दूर सही; लेकिन उसके हृदय में विराजमान था।

फिर भी बात कुछ आगे अवश्य बढ़ी थी। योज़ेन की वर्षगाँठ पर फूलों का गुलदस्ता भेंट करना मजिस्ट्रेट को कभी न भूलता बल्कि वह अब तो हर शाम को फूलों का एक बहुत ही बढ़िया और सुन्दर गुलदस्ता लेकर मालकिन की सेवा में उपस्थित हुआ करता था। मादाम कोरनिवाये महज़ दिखावे के लिए उसे फूलदान में डाल लेती लेकिन ज्योंही मेहमान विदा होते, वह जल्दी से उन्हें निकालकर फेंक देती।

वसंत के आरम्भ में दे ग्रासीं ने एक नई चाल चली और क्रोशो लोगों की प्रसन्नता में विघ्न डालने का प्रयत्न किया। उसने योज़ेन से मार्कोई दे फिरवाफों का ज़िक्र छेड़ा, जिसकी स्थिति अब भी सुधर सकती थी बशर्ते की योज़ेन उससे विवाह करने का निश्चय करके उसकी जागीर उसके हवाले कर दे। मादाम दे ग्रासीं ने मार्कोई और उसकी उपाधि की प्रशंसा में कोई क़सर उठा न रखी और योज़ेन की मौन मुस्कान का अर्थ स्वीकृति में लेते हुए उसने इधर-उधर कहना शुरू कर दिया कि मोसियो क्रोशो की शादी वाली बात कुछ ऐसी पक्की नहीं है, जैसी लोगों ने मशहूर कर रखी है।

'मोसियो दे फिरवाफों की उम्र पचास साल होगी।" वह बोली, "लेकिन वे मोसियो क्रोशो की ही उम्र के मालूम होते हैं। इसमें संदेह नहीं कि उनकी पत्नी मर चुकी है और उनके बच्चे भी हैं। लेकिन वे मार्कोई हैं और फिर आजकल ही में उनकी गिनती फ्रांस के बड़े रईसों में होने लगेगी। इस दृष्टि से यह सम्बन्ध कुछ ऐसा बुरा न रहेगा। जहां तक मुझे जान पड़ता है, जब बूढ़े ग्रांदे ने अपनी जायदाद को फिरवाफों की ज़मीन में मिलाया तो उनका इरादा यही था कि तुम्हारा रिश्ता उन्हीं के साथ हो जाये! उन्होंने मुझ से भी इस बात का ज़िक्र किया था अजी, ग्रांदे बड़े ही बुद्धिमान और दूरदर्शी थे।"

"आह, नाँनों।" योज़ेन ने एक रात बिस्तर पर सोने के लिए लेटते हुए कहा, "सात साल बीत गये। उन्होंने मुझे एक बार भी पत्र नहीं लिखा। यह क्या बात है ?"

जब सोमूर में ये घटनाएं घट रही थीं, शारल ईस्ट इंडीज़ में धन कमा रहा था। उसका पहला ही प्रयत्न सफल रहा था, जिसमें उसने शीघ्र ही छः हज़ार डालर कमा लिये। अपने देश की सीमा पार करते ही उसके सब पुराने तास्सुब दूर हो गये थे। उसने देखा कि पैसा कमाने का ढंग इन देशों में भी वही है जो योरप में था—अर्थात् आदमी खरीदे और बेचे जांय। अतएव वह अफरीका के तटवर्ती इलाके में पहुँचा और वहां उसने हबशी और दूसरा सामान खरीदा जिसकी दूसरी मंडियों में मांग थी। उसने अपने इस व्यापार में तन-मन-धन की बाज़ी लगा दी और इसके अतिरिक्त और कोई विचार उसके मस्तिष्क में न रहा। उसका सिर्फ एक ही उद्देश्य था कि पेरिस में वह इस शान से दाखिल हो कि वहां के लोग उसका धन देख कर आश्चर्य-चकित रह जांय और जिस सामाजिक पद से वह गिरा था उससे भी अधिक ऊँचा उठ जाय।

विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलने, बहुत से देशों की यात्रा करने और भांति-भांति के रीतिरिवाज और धर्मों से दो चार होने पर उसके अपने विश्वास दुर्बल पड़ गये थे और वह नास्तिकता की ओर प्रवृत्त हो गया था। जब उसने देखा कि जिस कार्य को एक देश में अपराध और घृणित समझा जाता है, उसकी दूसरे देशवाले प्रशंसा करते हैं तो उसके नैतिक सिद्धान्त कमज़ोर पड़ गये और पुण्य और पाप के बारे में उसके मन में कोई निश्चित विचार न रह गया। सदा उन लोगों का संग होने के कारण जो सिर्फ अपने ही स्वार्थ का ध्यान रखते थे, वह भी स्वार्थी और संदिग्ध स्वभाव का होता चला गया और उसका हृदय नीरस, निष्ठुर और उदासीन होकर रह गया। ग्रांदे परिवार से जो कमज़ोरियाँ उसे विरासत में मिली थीं, वे अब विकसित होने लगीं। वह अब कठोर, बेई-

मान और लोभी हो गया। चीनी कुली, हबशी गुलाम, चिड़ियों के घोंसले, बच्चे और कलाकार—जिस चीज़ से भी पैसा बने, वह उसे बेच डालता। उसने सूद पर कर्ज़ देने का धंधा भी बड़े पैमाने पर शुरू कर दिया। बंदरगाह पर चुंगी लेने वालों के साथ सब प्रकार का छल और कपट करने में अभ्यस्त हो जाने के कारण वह मानव अधिकारों ही की उपेक्षा करने लगा। अब वह निस्संकोच सेंट थामस जाता और वहाँ समुद्री डाकुओं से चुराई हुई चीज़ें कौड़ियों के भाव खरीदता और उन्हें दूसरे बाजारों में बहुत ही ऊँचे दामों बेच देता।

उसकी पहली समुद्री यात्रा में योज़ेन का निरीह और सगर्व चेहरा यों उसके साथ-साथ रहा जैसे स्पेन के नाविक अपने जहाज़ों के सामने की ओर कुंवारी मरियम का चित्र लटका लिया करते हैं। शारल ने अपनी पहली सफलता का कारण योज़ेन की प्रार्थनाओं ही को समझा मगर ज्यों ज्यों वक्त गुज़रता गया दूसरे देशों की रंग-बिरंगी स्त्रियों और तरह-तरह की घटनाओं ने उसके मन से चचेरी बहन का ध्यान बिलकुल ही मिटा दिया। यहां तक कि सोमूर, पुराने घर और ड्योढ़ीके मधुर चुम्बन—ये सारी बातें उसे सर्वथा भूल गई। उसे सिर्फ इतना याद रहा कि उस छोटे से बाग में जो टूटी-फूटी दीवारों से घिरा हुआ था, उसे पहली बार अपने दुर्भाग्य का ज्ञान हुआ था। उसका अपने परिवार से अब और किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने का विचार न था। उसका चचा एक बूढ़ा धूर्त्त था जिसने उसके जवाहरात छल लिये थे। योज़ेन के लिए उसके हृदय में कोई स्थान न था। उसका तो उसे कभी ध्यान भी न आता था। अलबत्ता बहीखाते में छः हजार फ्रांक के लेनदार की हैसियत से एक पन्ने पर उसका नाम लिखा हुआ था।

अतएव इन विचारों और इस मनोवृत्ति से शारल ग्रांदे की खामोशी का स्पष्टीकरण हो जाता है। ईस्ट इंडीज, सेंट थामस, अफरीका के तटवर्त्ती देशों और अमरीका में व्यापारी शारल ग्रांदे को कार्लशेफर्ड के नाम से पुकारा जाता था। यह बनावटी नाम उसने इसलिए रख लिया

था कि वास्तविक नाम पर धब्बा न लगे। कार्लशेफर्ड को अपना आप छिपाने की ज़रूरत नहीं थी। वह बड़ा ही मेहनती और साहसी था और कोई भी उचित-अनुचित काम जिससे पैसा बने करने को तैयार रहता था। और फिर उसकी यह भी इच्छा थी कि जितनी जल्दी सम्भव हो सके इस मक्कारी से पीछा छुड़ाकर शेष जीवन आदर और प्रतिष्ठा के साथ व्यतीत करे।

व्यापार के इन तरीकों से वह जल्द ही बहुत-सा धन कमाने में सफल हो गया। अतएव सन् १८२७ में वह बोरदो लौट आया। उसने एक बहुत ही शानदार भारी कारोलेन नामी जहाज़ पर यात्रा की थी। यह जहाज़ किसी शाही कम्पनी की मिलकियत था। उसके पास उन्नीस लाख फ्रांक का सोने का बुरादा था, जो उसने लोहे के तीन मज़बूत कनस्तरों में बड़ी सावधानी से बंद कर रखा था और आशा थी कि इसे पेरिस की टकसाल में बेचकर सात या आठ प्रतिशत लाभ होगा। इसी जहाज़ पर एक दूसरा व्यक्ति दे ओब्रियों भी सफर कर रहा था जो चार्ल्स दसवें के दरबार में साधारण पदाधिकारी था। इस भले मानस ने बिना समझे सोचे एक बड़े ही शौकीन स्वभाव की स्त्री से विवाह कर लिया था। मादाम ओब्रियों की वेस्ट इंडीज़ में एक जागीर थी और इस स्त्री की फिज़ूलखर्ची ने उसे विवश कर दिया था कि वह इंडीज़ जाकर इस जागीर को बेच डाले।

मोसियो और मादाम दे ओब्रियों दे ओब्रियों दे बुश के परिवार से संबन्ध रखते थे। और सन् १७८९ की क्रांति से तनिक पहले उनकी जागीर और सैनिक पद छिन गया था। अब वे बड़ी ही तंगी में दिन बिता रहे थे। उनकी वार्षिक आय बीस हज़ार फ्रांक थी। और उनके एक साधारण रूप रंग की एक बेटी भी थी, जिसे उसकी मां ने बिना किसी दहेज के ब्याहने का निश्चय किया था क्योंकि पेरिस में खर्च बहुत था और उनके साधन सीमित थे। लेकिन यह एक चतुर और चालाक आदमी के लिए भी बहुत बड़ी समस्या भी और एक फैशनेबल मां के

लिए भी यह काम सहज न था। मादाम दे ओब्रियों भी जब बेटी की ओर देखती तो उससे छुटकारा पाने की आशा बहुत कम होती, क्योंकि ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो उच्च परिवार और व्यर्थ उपाधि के लोभ में आकर उससे ब्याह करेगा।

शारल मादाम दे ओब्रियों से बहुत हिल-मिल गया था और यह महिला भी एक विशेष उद्देश्य से उसे प्रोत्साहित कर रही थी। लोगों का कहना था कि समुद्री यात्रा के दिनों में मादाम ने शारल जैसे नौजवान को दामाद बनाने की कोशिश में सिर-धड़ की बाज़ी लगा दी थी। खैर इसमें तो कोई संदेह नहीं कि जब वे बोरदो पहुँचे तो शारल दे ओब्रियों लोगों के साथ एक ही होटल में ठहरा और फिर वे सब इकट्ठे ही पेरिस गये। दे ओब्रियों का खानदानी मकान मुद्दत से गिरवी पड़ा था। अतएव इस सिलसिले में शारल से सहायता पाने की आशा थी। मादाम ने तो यहाँ तक कह दिया था कि निचली मंज़िल वह अपने दामाद और बेटी को रहने के लिये दे देगी। मोसियो दे ओब्रियों की झूठी प्रतिष्ठा उसे एक आँख न भाती थी। उसने शारल ग्राँदे से यह भी वादा कर लिया कि वह सहज में प्रसन्न हो जाने वाले सम्राट चार्लस दसवें से आवश्यक कागज़ात हासिल करेगी, जिनके अनुसार शारल उनकी पारिवारिक उपाधि और प्रतिष्ठा का अधिकारी बन जायगा। महाजनों का कर्ज़ अदा करके वह दे ओब्रियों की जायदाद का भी मालिक बन सकता था, जिसकी आमदनी लगभग छत्तीस हज़ार लीवर वार्षिक थी। गर्ज़े कि इस प्रकार वे एक दूसरे के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अगर शारल को दरबार में कोई जगह अर्थात् नौकरी मिल जाय और दोनों परिवार एक जगह मिलकर रहने लगें तो कुल आमदनी एक लाख फ्राँक से भी अधिक हो सकती थी।

"और जब आदमी की सालाना आमदनी एक लाख फ्राँक हो, परिवार भी अच्छा हो और दरबार में उसे पद प्राप्त हो तो फिर कोई अड़चन रह ही नहीं जाती। मैं तुम्हें सम्राट के विशेष अधिकारियों में नियुक्त

कर सकती हूँ। तुम जो कुछ भी बनना चाहो, बन सकोगे।" वह शारल को आदेश दे रही थी। "तुम्हें धारासभा में कोई पद मिल सकता है। किसी दूतावास में सेक्रेटरी बन सकते हो। और अगर चाहूँ तो दूत भी नियुक्त हो सकते हो क्योंकि चार्लस दसवें को मोसियो दे ओब्रियों से बड़ा लगाव है। वे एक दूसरे को बचपन से जानते हैं।"

मादाम दे ओब्रियों ने यात्रा के दिनों में ऐसी चिकनी-चुपड़ी बातों से उसे मोह लिया था और उसके मन में महत्त्वाकांक्षायें भर दी थीं। उसे विश्वास था कि उसके चचा ने उसके पिता का सारा कर्ज़ अदा कर दिया होगा। वह अचानक फोबोरसें और ज़रमें के समाज में जा पहुँचा, जो सामाजिक उन्नति की उच्चतम मंजिल समझी जाती थी। फिर वह शीघ्र ही मादमुआज़ेल मायेलर के प्रभाव से काउंट दे ओब्रियों की उपाधि प्राप्त कर लेगा। ये सब बातें उसे जादू-सी जान पड़ रही थीं। बरबाद हो गये परिवार की प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त कर लेने की आशा ने उसकी आँख चौंधिया दी थी। हालांकि जब उसने पेरिस छोड़ा था, उस समय उसे यह महसूस हो रहा था कि अब कुल का नाम-निशान भी न रहेगा। अब वह बहुत से मधुर स्वप्न देख रहा था, जिनका सूत्रपात यात्रा के दिनों में हुआ था और पेरिस पहुँच कर भी उन्होंने उसका साथ न छोड़ा, उसने निश्चय कर लिया था कि ख्याति के उस शिखर पर पहुँच कर दम लूंगा, जिनकी ओर उसकी होने वाली आत्मसेवी सास ने संकेत किया था। उसकी चचेरी बहन अब बीते दिनों का एक धुंधला-सा चित्र बन कर रह गई थी। उसके लिये शारल के शानदार भविष्य में कोई स्थान नहीं था और न अब उसके स्वप्नों में योज़ेन का दखल था। अब तो वह आनेत से मिलने जाता था। वह चतुर और सांसारिक स्त्री अपने पुराने मित्र को उपदेश दिया करती कि वह इस रिश्ते को अपने हाथ से न जाने दे। उसने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि तरक्की की इस मंज़िल पर पहुँचने में वह हर प्रकार से शारल की सहायता करेगी। अपने मन में वह अत्यंत प्रसन्न थी कि शारल ऐसी साधारण और शुष्क लड़की से शादी कर रहा

है। इंडीज़ में रहकर वह और भी आकर्षक हो गया था, उसका रंग अब गंदमी हो गया था और उसमें साहस और आत्म-विश्वास उत्पन्न हो गया था, उसका बातें करने का ढंग एक ऐसे पूर्व निश्चित व्यक्ति का था जो अपने आप निर्णय करने, दूसरों से अपनी बात मनवाने और सफल होने का अभ्यस्त हो गया हो। जब उसे मालूम हो गया कि उसे पेरिस में एक खास मुहिम सर करनी है तो वह इसके लिये तैयार हो गया।

दे ग्रासीं को जब शारल की वापसी, उसके भावी विवाह और कमाये हुए असीम धन का पता चला तो वह उससे मिलने गया और उन तीन लाख फ्रांक का भी ज़िक्र किया, जो उसके पिता के लेनदारों को अदा करने थे। उस समय शारल एक सुनार के लाये हुए डिजाइन देख रहा था, जिसे उसने मादाम दे ओब्रियों के ज़ेवर बनाने का आर्डर दे रखा था। शारल खुद इंडीज़ से बहुत से मूल्यवान हीरे लेकर आया था; लेकिन उन्हें जेवरों में जुड़वाने की लागत दो लाख फ्रांक से भी अधिक होती थी। पहले तो उसने दे ग्रासीं को पहचाना ही नहीं और उसके साथ ऐसे फैशन-परस्त नौजवान के अभिमान और उपेक्षा का व्यवहार किया, जिसे यह भी गर्व हो कि मैं इंडीज़ में चार आदमियों की हत्या कर चुका हूँ क्योंकि मोसियो दे ग्रासीं पहले तीन-चार बार चक्कर लगा चुका था; इसलिए शिष्टाचार के नाते उससे मिलना स्वीकार किया। लेकिन साहूकार ने उससे जो कुछ कहा, उस पर शारल ने तनिक भी ध्यान न दिया।

"मैं अपने पिता के कर्ज़ का जिम्मेदार नहीं हूँ।" वह उपेक्षा भाव से बोला, "जनाब, मैं आपका कृतज्ञ हूँ कि आपने इतना कष्ट उठाया। लेकिन जहाँ तक मेरा ख्याल है मुझे इस मामले से कोई सरोकार नहीं है। मैंने अपना खून-पसीना एक करके यह धन कमाया है और इसे मैं अपने पिता के लेनदारों की जैबीं में नहीं भर सकता।"

"लेकिन फर्ज़ कीजिए अगर कुछ दिनों में आपके पिता के दिवालिया होने का ऐलान कर दिया गया तो क्या होगा ?"

"जनाब, चंद दिन बाद तो मैं काऊंट दे ओब्रियों बन चुका हूँगा।

इसलिए आपको मालूम होना चाहिये कि मेरा इन बातों से कोई सम्बन्ध नहीं। फिर इसके अलावा आप मुझसे बेहतर जांनते हैं कि जब आदमी की आमदनी एक लाख लीवर हो तो उसके पिता के दिवालिया होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।" और यह कहते हुए शारल ने अत्यन्त शिष्टता के साथ मोसियो दे ग्रासीं को दरवाज़े से बाहर कर दिया।

इसी साल बसन्त के आरम्भिक दिन थे। योज़ेन बाग में छोटे बैंच पर बैठी थी, जहाँ उसके चचेरे भाई ने सदा उससे प्रेम करते रहने की प्रतिज्ञा की थी। और जहाँ बैठकर वह गर्मियों के मौसम में अक्सर नाश्ता किया करती थी। बेचारी लड़की कुछ संक्षिप्त क्षणों के लिये काफी प्रसन्न हो जाया करती थी। वह इन दुखप्रद घटनाओं से पहले के प्रेम भरे क्षणों की हर छोटी-छोटी बात याद करती। सुबह बड़ी सुहानी और चमकीली थी; बाग में धूप फैली हुई थी। उसकी नज़रें काई और फूलों से ढंकी हुई दीवार पर मँडलाने लगीं। इस दीवार में अब बहुत से शिगाफ़ पड़ गये थे और वह लगभग खंडहर होकर रह गई थी। लेकिन किसी को इसे छूने की आज्ञा न थी। हालांकि कोरनिवाये कई बार अपनी पत्नी से कह चुका था कि एक दिन यह पूरी दीवार गिरकर एक-आध को कुचलकर रख देगी। डाकिये ने दरवाजे पर दस्तक दी और मादाम कोरनिवाये के हाथ में एक पत्र दे दिया, जो बाग में से दौड़ती हुई आकर चिल्लाई—"बीबी पत्र! क्या यह उन्हीं का पत्र है?" उसने अपनी मालकिन को पत्र देते हुए कहा।

बाग की दीवार और फसील में से गूँजते हुए ये शब्द योज़ेन के दिल के तारों पर बज उठे।

"पेरिस!·······यह उन्हीं की लिखावट है। इसका मतलब है कि वह वापस आ गये हैं।"

योज़ेन का चेहरा सफेद पड़ गया और कुछ क्षणों तक वह बिना खत खोले गुमसुम बैठी रही। उसका दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था कि

उसमें हिलने और देखने तक का सामर्थ्य न रहा था। लम्बी नाँनों अपने कुल्हों पर हाथ धरे इन्तज़ार में खड़ी थी और उसके गंदमी चेहरे की हर झुर्री से खुशी धुएं की भाँति उमड़ी पड़ रही थी।

"बीवी इसे पढ़िये तो !"

"ओह, भला वह पेरिस के रास्ते क्यों लौटे, नाँनों ? जाते हुए तो वह सोमूर की ओर से गये थे।"

"खत पढ़िये। इससे पता चलेगा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया।"

लिफाफा खोलते समय योज़ेन की अंगुलियाँ कांप रही थीं—"मादाम दे ग्रासीं एकोर सोमूर" की फर्म के नाम का एक चेक उसमें से फड़फड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा। नाँनों ने उसे उठा लिया।

"मेरी प्यारी बहन",

"तो मैं अब उनके लिए योज़ेन नहीं रही।" उसने सोचा और उसका दिल सहम कर रह गया।

"आप······"

"वह मुझे तुम कहकर पुकारा करते थे।" उसने अपने कंधे सुकेड़ लिये। आगे पढ़ने से वह घबरा रही थी। उसकी आँखों में मोटे-मोटे आँसू आगये।

"क्या हुआ ? क्या वह मर गये ?" नाँनों ने पूछा।

"अगर वह मर गये होते तो खत कैसे लिखते ?" योज़ेन ने कहा और पूरा खत पढ़ने लगी, जिसमें लिखा था :—

"मेरी प्यारी बहन,

मुझे आशा है कि मेरी यात्रा की सफलता का समाचार सुनकर आपको खुशी होगी। मैं फ्रांस में अमीर बनकर लौटा हूं, जैसी कि मेरे चचा की नसीहत थी। आपके पैसे में बड़ी बरकत थी। मोसियो दे ग्रासीं से अभी-अभी चचा और चची के स्वर्गवास की खबर मिली। प्रकृति का नियम ही यह है और फिर एक दिन हमारी भी बारी आयेगी। मुझे आशा है कि इस समय तक आप धैर्य प्राप्त कर चुकी होंगी। मैं अनुभव से

जानता हूं कि समय सब रंज भुला देता है। और हाँ, मेरी प्यारी बहन, अब मेरे लिए वे दिन खत्म हुए कि जब मैं स्वप्नों के संसार में खोया रहता था। इसका मुझे अफसोस है; लेकिन मैं मजबूर हूं। मैंने दुनिया भर की खाक छानी है और बहुत कुछ देखा है। इसलिये मैंने जिन्दगी पर बड़ी गम्भीरता से विचार करना सीख लिया है। अपनी रवानगी के समय मैं सिर्फ बच्चा था; लेकिन अब ज़िम्मेदार मर्द हूं, और मुझे उन बहुत-सी बातों पर सोच-विचार करना पड़ता है, जो पहले कभी मेरे स्वप्न में भी न आई थीं। मेरी बहन, आप भी अब तक स्वतन्त्र हैं और मैं भी। वैसे अपने लड़कपन की अभिलाषाओं और इच्छाओं को पूर्ण करने में ऐसी कोई रुकावट भी नहीं है। लेकिन मैं एक स्पष्टवादी मनुष्य हूं; इसलिए अपनी वर्तमान स्थिति को आपसे छिपाये रखना नहीं चाहता। मैं किसी क्षण भी आपसे अपने लगाव को भुला नहीं सका। देश-विदेश घूमते हुए भी वह मुझे छोटा-सा बैंच सदा याद रहा।"

योज़ेन ऐसे उछल पड़ी जैसे उसके नीचे कोयले सुलग रहे हों। फिर वह आंगन में पड़े हुए टूटे-फूटे पत्थरों में से एक पर बैठ गई। "वह छोटा सा लकड़ी का बैंच, जहाँ हमने एक दूसरे से सदा प्रेम करने की प्रतिज्ञा की थी। वह ड्योढ़ी, वह बैठने का स्थान, मेरा कमरा और वह रात भी जब आपने अपनी दूरदर्शिता और चतुरता से मेरे भविष्य को मेरे लिए इतना सुगम बना दिया था। हाँ, ये सब स्मृतियाँ मेरे लिए बड़ी उत्साहजनक रही हैं और उस समय की स्मृति को भी मैं नहीं भुला सका जब हमने एक दूसरे को याद करते रहने का प्रण किया था। मैं ठीक उसी समय अपने मन में सोचा करता था कि आप जरूर मुझे याद कर रही होंगी। आप ठीक नौ बजे बाहर अंधेरे में झांका करती थीं न? हाँ, मुझे विश्वास है कि आप अवश्य ऐसा ही करती रही होंगी। ऐसी पवित्र मित्रता के होते हुए मैं आपको धोखे में नहीं रखना चाहता। यह हो नहीं सकता कि आपके साथ पूर्ण रूप से सत्य का व्यवहार न करूँ।

"मेरे सामने विवाह का एक प्रस्ताव है जो सर्वथा उन विचारों के

अनुरूप है, जो मैंने विवाह के बारे में बना रखे हैं। विवाह के बारे में प्रेम बेकार-सी बात है। मैं अब जानता हूं और मैंने यह बात अनुभव से सीखी है कि शादी करते समय हमें सामाजिक कानून और रीति-रिवाज का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए। मेरी और आपकी उम्र में भी कुछ अंतर है, आगे चलकर जिसका असर आपके भविष्य पर पड़ सकता है। मेरी प्यारी बहिन और इसका ज़्यादा असर मुझ पर पड़ेगा; फिर और भी बहुत-सी बातें हैं, जिन के बारे में मुझे अधिक नहीं कहना। उदाहरण के लिए तुम्हारा लालन-पालन, तुम्हारा स्वभाव, तुम्हारी प्रवृत्तियाँ और तुम्हारे रहन-सहन का ढंग ऐसा है, जो पेरिस के जीवन से और उस जीवन से जो मैंने बिताने की योजना बनाई है तनिक भी मेल नहीं खाता। मेरा इरादा है कि मैं एक बहुत खुला और शानदार मकान लूं जिसके साथ जागीर भी हो और बहुत से नौकर-चाकर हों जिससे मैं पेरिस के ऊंचे समाज में घूम फिर सकूं। इसके विपरीत जहाँ तक मुझे याद है आप एक साधारण गृहस्थ की भांति चुप-चाप और शांतिमय जीवन बिताना पसंद करेंगी। नहीं, मैं और भी स्पष्ट शब्दों में आप से बात करता हूँ। फिर आप जो भी निर्णय करें, मैं उसे मानूंगा लेकिन इससे पहले कि आप कोई निर्णय करें मेरी वर्तमान स्थिति को भली प्रकार समझ लें।

"इस समय मेरी आमदनी अस्सी हज़ार लीवर है। इस आमदनी के कारण मेरे लिए सम्भव हो गया है कि मैं दे ओब्रयों परिवार में शादी कर सकूं। उनकी इकलौती लड़की से विवाह करके, जिसकी आयु इस समय उन्नीस साल है, तो मैं उनकी पारिवारिक उपाधि को भी अपना सकूंगा और इसके अतिरिक्त उच्च समाज में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी। फिर मुझे सम्राट् के विशेष दरबारी का पद भी मिल जायेगा। मेरी प्यारी बहिन, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मादमुआजेल दे ओब्रियों के लिए मेरे हृदय में तनिक भी स्थान नहीं है। लेकिन इस सम्बन्ध से मैं अपने बच्चों के लिए समाज में एक उच्च स्थान प्राप्त कर सकूंगा जो भविष्य में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। सम्राट्वादी सिद्धान्त दिन-

दिन लोकप्रिय होते जा रहे हैं और कुछ साल बाद मेरे बेटे मार्कोई दे ओब्रियों के पास बहुत बड़ी जायदाद और चालीस लाख लीवर वार्षिक आय होगी। दरअसल हमें अपनी संतान की भलाई ही के लिए जीवित रहना चाहिए।

"बहन, आप देखिये कि मैं अपनी मनोगत भावनाओं, अपनी आशाओं और भविष्य की योजनाओं को कितने स्पष्ट शब्दों में आपके सामने रख रहा हूं। सम्भव है कि सात साल के वियोग में आप भी अपने लड़कपन के प्रेम को भूल चुकी हों। लेकिन मैं आपके उपकार और अपनी प्रतिज्ञा को भुला नहीं सका। मुझे एक-एक शब्द याद है, वे भी जो सरसरे ढंग से कहे गये थे, कोई दूसरा नौजवान जो मेरी तरह भावुक और जिम्मेदार न हो, अपने आपको तनिक भी उनका पाबंद न समझता; लेकिन मेरे लिये मज़ाक में की गई प्रतिज्ञा का भी बहुत महत्त्व है। अतएव मेरा यह साफ-साफ बता देना कि यह शादी सिर्फ सामाजिक लाभ की दृष्टि से की जा रही है और यह कि मैं अपनी नौजवानी के प्रेम को भूला नहीं हूं, इससे यह तो सिद्ध ही हो जाता है, क्या यह नहीं हो जाता कि मैंने अपने आपको पूर्ण रूप से आपको सौंप दिया? मेरे भाग्य का निर्णय आपको करना है और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अगर मुझे अपनी सामाजिक महत्त्वाकांक्षाओं को त्यागना पड़ा तो मैं बड़ी खुशी के साथ अपने आपको उस सरल और शुद्ध प्रसन्नता से सन्तुष्ट कर लूँगा, जो आपका ध्यान आते ही मेरे हृदय में उत्पन्न हो जाती है.......

"तरा—ला—ला—ताँ—ता—ती।" शारल ग्रांदे ने गुनगुनाते हुये बड़ी बेपरवाही से हस्ताक्षर करके पत्र समाप्त किया।

आपका प्यारा भाई

शारल

"बदला लेने का यह अच्छा उपाय है!" उसने अपने मन में सोचा। तब उसने चेक को लिफाफे में डाल दिया और पुनश्च लिखा :

"मैं मादाम दे ग्रासीं के नाम एक चेक भेज रहा हूँ। ये आठ हज़ार

फ्रांक आपके आदेश पर आपको सोने की शक्ल में अदा कर दिये जायेंगे। यह रकम असल और सूद समेत सधन्यवाद आपको लौटा रहा हूँ, जो आपने बड़ी सहृदयता से मुझे उधार दी थी। मुझे बारदो से एक बक्स का इन्तज़ार है, जिसमें आपके लिये कुछ चीज़ें हैं, जो मैं अपनी कृतज्ञता जताने के लिये उपहार रूप आपको भेंट करना चाहता हूँ। आप मेरा सिगारदान मुसाफिर गाड़ी द्वारा होटल दे ओब्रियों के पते पर भेज दें।"

"मुसाफिर गाड़ी के द्वारा !" योज़ेन चिल्लाई, "इसकी खातिर मैंने तो जाने कितनें कष्ट सहन किये हैं।"

उसकी आशाओं की नौका टुकड़े-टुकड़े हो चुकी थी और डूब रही थी। इस विस्तृत गहरे सागर में तिनके का भी सहारा न था। कुछ स्त्रियां जब उनके साथ बेवफाई की जाती है, अपने प्रेमी को अपनी प्रतिद्वन्द्वी की गोद से छीनकर उसकी हत्या कर देती हैं, फिर बचने के लिये दुनिया के दूसरे छोर पर भाग जाती हैं, अथवा फांसी चढ़ जाती हैं या फिर कब्र में जा सोती हैं। निस्संदेह इसमें भी कुछ ऐसी बात होती है, जिसकी आदमी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। इस जुर्म के पीछे जो पवित्र क्रोध होता है उसके सम्मुख मानवीय न्याय भी खामोश हो जाता है। कुछ दूसरी स्त्रियाँ ऐसी होती है, जो परिस्थिति के आगे सिर झुका देती हैं और दुख सहती हैं। वे टूटे हुये दिल को लिये जीवित रहती हैं, रोते-धोते दिन बिताती हैं; लेकिन जिस प्रेमी ने उन्हें आहत किया होता है, उसके प्रति उनके मन में प्रतिशोध और प्रतिकार की भावना उत्पन्न ही नहीं होती। वे अपनी पुरानी यादों में मगन रहती हैं और अपने प्रेमी के लिये प्रार्थनायें करती हुई इस दुनिया से विदा हो जाती हैं। यह भी प्रेम है, सच्चा प्रेम, जिसे सिर्फ देवता ही समझ सकते हैं। यह वह प्रेम है जो सगर्व दुख सहन करता है और इसी दुख की आग में भस्म हो जाता है। उस भयानक पत्र को पढ़ लेने के बाद योज़ेन के मन में भी ऐसे ही भाव उत्पन्न हुये।

उसने आकाश की ओर दृष्टि उठाई और उसे अपनी माँ के वे शब्द

स्मरण हो आये जो उसने मरते समय कहे थे। शायद मरने वाले को भविष्य के बारे में सही मालूम हो जाता है। जब उसने अपनी माँ के जीवन और मृत्यु के बारे में सोचा तो उसे ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसी के भविष्य की कहानी कह दी है। अब उसके लिये इसके अतिरिक्त और कुछ भी तो उपाय न रहा था कि अपनी ज़िन्दगी के बाकी दिन भक्ति में बिताये और उस दिन का इन्तज़ार करे जब उसकी आत्मा स्वर्ग को जायेगी।

"मेरी मां ने ठीक कहा था कि मुसीबतें झेलो और मर जाओ।" उसने रोते हुये कहा।

वह बाग से उठकर धीरे-धीरे घर में चली आई और उसने ड्योढ़ी से बचकर निकलने का विशेष प्रयत्न किया; लेकिन जब वह सुरमई रंग की बैठक में पहुंची तो वहाँ अपने चचेरे भाई की स्मृतियां बिखरी मिलीं। आतिशदान के ऊपर चीनी की एक तश्तरी थी, जिसे वह हर सुबह इस्तेमाल करती थी और फिर शीशे का शक्करदान भी वहीं पड़ा था।

योज़ेन के लिये इस दिन का बड़ा महत्व था। नाँनों ने उसे इलाके के पादरी के पधारने की सूचना दी। वह क्रोशो लोगों का सम्बन्धी था; इसलिये मजिस्ट्रेट के मामलों में बड़ी दिलचस्पी लेता था। कुछ दिनों से बड़ा पादरी क्रोशो इस आदमी से अनुरोध कर रहा था कि वह मादमुआज़ेल ग्रांदे को संजीदगी से समझाये कि धार्मिक दृष्टि से उसके दर्जे की स्त्री के लिये विवाह करना अत्यावश्यक है। योज़ेन ने जब उसे देखा तो वह समझी कि शायद वह हज़ार फ्रांक लेने आया है, जो वह हर महीने गाँव के गरीबों के लिये दिया करती थी। उसने नाँनों को पैसे लेकर आने का आदेश दिया। लेकिन वह मुस्कराते हुये बोला—"मादमुआज़ेल, आज मैं आप से ऐसी गरीब लड़की के बारे में मश्विरा करने आया हूँ, जिससे सोमूर भर को दिलचस्पी है; लेकिन जो अपने प्रति इतना अन्याय करती है कि ईसाई धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करती।"

"पादरी साहब, भगवान की कसम इस समय तो मैं अपने अति-

रिक्त और किसी को इतना दुखी नहीं समझती। मेरे लिये सिवाय गिरजे के और कहीं आश्रम नहीं है। वह गिरजा, जिसकी उदारता समस्त मानवजाति के दुख और विषाद को अपने अन्दर समा लेने में समर्थ है और जिसके प्रेम का स्रोत कभी नहीं सूखता।"

"अच्छा तो मादमुआजेल, जब हम एक लड़की के बारे में बातें करें तो आप यही समझियेगा कि आपके बारे में बातें हो रही हैं। सुनिये अगर आपको मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा है तो इसके आपके सामने सिर्फ दो मार्ग हैं—या तो आप संसार को त्याग दीजिये या फिर इसमें रहिये और इसके नियमों का पालन कीजिये। आपको इन दोनों में से एक मार्ग अपनाना होगा।"

"आह, इस समय तो आपने मेरी दुखती रग पकड़ ली। आपको खुदा ही ने मेरे पास सहायता के लिये भेजा है और मैं उसके लिए संसार को त्याग कर उसकी भक्ति करते हुए एकान्त में जीवन बिता दूंगी।"

"लेकिन मेरी बेटी, यह निर्णय करने से पहले तुम्हें भली प्रकार सोच लेना चाहिये। शादी में ज़िन्दगी है और संसार को त्याग कर जीवन बिताना मौत के बराबर है।"

"हाँ, मुझे मौत चाहिए। आह पादरी साहब, काश मौत इतनी ही शीघ्र आ जाती।" उसने बड़ी व्यग्रता से कहा।

"मौत! लेकिन मादमुआज़ेल, तुम्हें तो अभी समाज की बहुत-सी जिम्मेदारियों को पूरा करना है। गरीबों का एक पूरा परिवार है, जिन्हें तुम गर्मियों में काम दिलाती हो और सर्दियों में उनके लिये कपड़ों और आग का प्रबन्ध करती हो। तुम्हारा यह असीम धन एक कर्ज़ा है, जिसका तुम्हें एक दिन हिसाब देना होगा। और तुमने सदा इसे पवित्र थाती समझा है। अगर तुम दुनिया छोड़कर खानकाह में चली गई तो यह तुम्हारा स्वार्थ होगा। और फिर तुम्हें इस दुनिया में अकेले नहीं रहना चाहिये। पहली बात तो यह है कि भला इतने धन का बोझ तुम अकेले कैसे सहन करोगी? सम्भव है तुम इसे नष्ट कर दो। तुम पर सदा मुक़दमे

"अच्छा, मादाम।" उसने अवज्ञा से कहा, "ऐसा लगता है कि मैंने तो अपनी अक्ल जरूर बेच खाई है क्योंकि मैं आपका ज़रा भी मतलब न समझ सकी। ज़रा खुलकर बात कीजिए। आप पादरी साहब के सामने निस्संकोच सब कुछ कह सकती हैं क्योंकि आप जानती हैं कि यह मेरे गुरु हैं।"

"अच्छा तो मादमुआज़ेल, आप खुद ही देख लीजिए कि मोसियो दे ग्रासीं क्या लिखते हैं। यह उनका पत्र है :

'मेरी प्यारी पत्नी,

शारल ग्रांदे इंडीज़ से लौट आया है और पेरिस में आये हुए उसे कोई दो महीने हो गये हैं···'

"दो महीने!" योज़ेन ने मन में सोचा और उसका हाथ नीचे गिर गया। एक क्षरण उपरांत वह फिर पढ़ने लगी।

'मुझे कई बार उसके घर जाना पड़ा, तब कहीं जाकर होने वाले काऊँट दे ओब्रियों ने मुझे मिलने का अवसर दिया। पेरिस भर में उसके विवाह की चर्चा है और ऐलान छप चुका है···'

"और उसके बाद उसने मुझे पत्र लिखा!" योज़ेन ने अपने मन में कहा। उसने पेरिस वालों की तरह यह वाक्य नहीं कहा कि "लानत हो उस पर!" बहरहाल चाहे उसने अपनी मनोगत भावना को व्यक्त न किया हो; लेकिन उसकी घृरणा उनसे कुछ कम न थी।

'लेकिन उसका विवाह होने में अभी कुछ समय लगेगा क्योंकि यह तो सम्भव नहीं कि मार्कीई दे ओब्रियों शराब के एक दिवालिये व्यापारी के बेटे से अपनी बेटी ब्याह दे। मैं जाकर शारल से मिला था और लेनदारों को अब तक खामोश रखने के लिए जिन चालाकियों से उसके चचा और मैंने काम लिया उनका भी मैंने जिक्र किया और यह भी बताया कि इस मामले में हमें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन जानती हो कि इस कमीने कुत्ते ने किस निर्लज्जता से मुझसे कहा—मुझसे, जो पांच साल से दिन-रात मेहनत करके उसकी इज्जत बचाने के प्रयत्न में मारा-मारा

फिरा। वह कहने लगा—"मैं अपने बाप के मामलों का जिम्मेदार नहीं।" अगर मेरी जगह कोई वकील होता तो पूरे कर्ज पर एक फीसदी के हिसाब से तीस चालीस फ्रांक फीस रखवा लेता। खैर कोई बात नहीं। उसे कर्ज़ा देना है। कानून उसे यह एक लाख बीस हज़ार का कर्ज़ा चुका देने पर विवश कर देगा और फिर मैं अपना बदला यों लूंगा कि उसके पिता के दिवालिया होने का ऐलान कर दूँगा। मैंने तो उस बूढ़े मक्कार ग्रांदे के कहने में आकर यह मुसीबत मोल ले ली। मैंने अपने परिवार की कसम खाकर उसे वचन दिया था। काऊंट दे ओब्रियों को सम्भव है अपनी प्रतिष्ठा का इतना ख्याल न हो, लेकिन मुझे तो अपनी इज्जत का बहुत ख्याल है। अतएव मैं लेनदारों को सारी परिस्थिति समझा दूंगा। बहरहाल मैं मादमुआज़ेल योज़ेन का अब भी आदर करता हूँ। जिनसे किसी समय, हम एक निकट सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे। और चाहता हूँ कि जब तक तुम इस बारे में उनसे बात न करलो मैं कोई कदम न उठाऊँ...'

यहाँ पहुँचकर योज़ेन रुक गई, उसने पत्र चुपचाप लौटा दिया।

"मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ।" वह मादाम दे ग्रासीं से, बोली, "हम देखेंगे कि..."

"तुम्हारा स्वर इस समय बिलकुल तुम्हारे पिता जैसा मालूम होता है।" मादाम दे ग्रासीं बोल उठी।

"मादाम !" नांनों ने शारल का चेक बढ़ाते हुए कहा, "आपसे आठ हज़ार फ्रांक हमें मिलने हैं।"

"अच्छा, मादाम कोरनिवाये तुम कृपया मेरे साथ चली चलो।"

"पादरी साहब !" योज़ेन को एक ऐसा उपाय सूझा, जिसके ख्याल ही ने उसके चेहरे को शांत बना दिया था। वह बोली, "अगर मैं शादी के बाद भी अपने कुँवारपन को सुरक्षित रखना चाहूँ तो इसमें पाप तो न होगा।"

"यह तो अपने ईमान पर निर्भर है। और इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं है। अलबत्ता अगर तुम चाहो तो कल मैं तुम्हें बता दूंगा कि

विश्वविख्यात साँशे ने अपनी पुस्तक 'विवाह' में क्या लिखा है ?"

पादरी चला गया। मादामुआज़ेल ग्रांदे ऊपर अपने पिता के कमरे में चली गई और तमाम दिन वहीं एकांत में बिता दिया। वह खाने के लिए भी नीचे न उतरी हालांकि नांनों ने बहुत मिन्नत-समाजत भी की और बुरा भला भी कहा। जब शाम को मित्रगण एकत्रित होना शुरू हुए तो ठीक उस समय वह नीचे आ गई। ग्रांदे की इस सुरमई बैठक में कभी इतने आदमी जमा न हुए थे, जितने आज रात को आए। शहर में हरएक ने शारल की वापसी, उसकी बेवफाई और कृतघ्नता का क़िस्सा सुन लिया था, लेकिन लोगों की उत्सुकता अभी कम न हुई थी। योज़ेन को आने में तनिक देर हो गई थी। लेकिन उसके चेहरे पर किसी प्रकार की व्यग्रता न थी। लोगों ने जब उसकी ओर बड़ी सहानुभूति से देखकर हाल पूछा तो उसने अत्यन्त विनम्र स्वर में उत्तर दिया। इस विनम्रता की आड़ में उसने अपना सारा दुख छिपा रखा था।

कोई नौ बजे के करीब ताश खेलने वालों ने बाज़ी खत्म की। पैसे अदा किये और खेल के विभिन्न पहलुओं पर बात करते रहे। जब सब लोग जाने के लिए तैयार हुए तो आशा के विपरीत एक ऐसी बात हुई, जिसका सोमूर और आस-पास के देहात में चिरकाल तक चर्चा रहा।

"मजिस्ट्रेट साहब, कृपया आप ज़रा ठहरिये।"

कमरे में कोई व्यक्ति ऐसा न था, जो ये शब्द सुनकर चौकन्ना न हो गया हो। मोसियो दे बोनफोन जो अपनी छड़ी सम्भालने ही वाला था, यह सुनकर उसकी रंगत सफेद पड़ गई और वह फिर बैठ गया।

"मजिस्ट्रेट साहब को अब लाखों की दौलत मिलने वाली है।" मादमुआज़ेल दे ग्रेबोकोर ने कहा।

"यह तो स्पष्ट है कि मैजिस्ट्रेट साहब की शादी मादमुआज़ेल ग्रांदे से होगी।" मादाम दे वरसोंवाल ज़ोर से बोली।

"इस खेल में यह चाल सबसे अच्छी रही।" पादरी ने अपना मत प्रकट किया।

"वाकई जोर की चाल है।" सरकारी वकील ने समर्थन किया।

प्रत्येक ने अपना मत प्रकट किया और जो समझ में आया कहा। यह लाखों की उत्तराधिकारिणी उन्हें कोई देवी मालूम हो रही थी और उनकी आँखों के सामने उस नाटक का अन्त हो रहा था, जो नौ साल पहले आरम्भ हुआ था। तमाम सोमूर वालों के सामने मजिस्ट्रेट को ठहरने के लिए कह देना निश्चय ही इस बात का प्रमाण था कि वह उससे बिवाह करना चाहती है। छोटे कस्बों में इन छोटी-छोटी बातों का बहुत ख्याल किया जाता है और फिर ऐसा संकेत तो बिलकुल शादी के वचन के बराबर था।

"मजिस्ट्रेट साहब।" जब वे दोनों अकेले रह गये तो योज़ेन कांपते हुए स्वर में बोली, "मै खूब जानती हूँ कि आपको मेरी कौनसी वस्तु प्यारी है। आप प्रतिज्ञा कीजिये कि मुझे आजीवन स्वतन्त्र रहने देंगे। और विवाह के उपरांत आपके मुझ पर जो अधिकार होंगे, उन्हें इस्तेमाल नहीं करेंगे। इन शर्तों पर मैं आप से विवाह करने को तैयार हूँ। ओह!" उसने मजिस्ट्रेट से घुटनों के बल झुकते हुए कहा, "अभी मैंने अपनी बात खत्म नहीं की। मैं आपको साफ-साफ बता देना चाहती हूँ कि मेरे मन पर कुछ ऐसी स्मृतियाँ अंकित हैं, जो मिटाई नहीं जा सकतीं और मेरे पास अपने पति को देने के लिए मित्रता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। मैं न उसे धोखा देना चाहती हूँ और न अपने हृदय से द्रोह करना चाहती हूँ। लेकिन आपको मुझे अपनाने, मेरी धन सम्पत्ति का स्वामी बनने के लिए एक बहुत बड़ा काम करना होगा।"

"मैं आपकी हर सेवा करने को तैयार हूँ।" मजिस्ट्रेट ने कहा।

"ये पन्द्रह लाख फ्रांक हैं, मजिस्ट्रेट साहब।" उसने बैंक आफ फ्रांक के सौ हिस्सों का एक सर्टीफिकेट अपनी अंगिया से निकालते हुए कहा—"आप पेरिस चले जायेंगे न? आपको सुबह होने का भी इंतजार न करना चाहिये। बल्कि तुरंत आज ही रात रवाना हो जाइये। आप सीधे मोसियो दे ग्रासीं के पास जाइये और उनसे मेरे के चचा लेनदारों की सूची

मांग लीजिये और फिर उन सबको बुलाकर ग्योम ग्रांदे का पूरा कर्ज़ चुका दीजिये। और जिस दिन कर्ज़ लिया गया था, उस दिन कर्ज़ से चुकाने के दिन तक पांच प्रतिशत के हिसाब से सूद भी अदा कर दीजिये। हर एक से आप बाकायदा रसीद लीजियेगा। आप मजिस्ट्रेट हैं और सिर्फ आप ही ऐसे आदमी हैं जिसे मैं यह काम सौंप सकती हूँ। आप भले और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने मुझसे प्रतिज्ञा करली है और आपके नाम का सहारा लेकर जीवन-यात्रा पूरी कर लूंगी। हम एक दूसरे का भली प्रकार ख्याल रख सकेंगे। क्योंकि हमारा परिचय इतना पुराना है कि लगता है कि हम एक दूसरे के सम्बन्धी हैं और मुझे विश्वास है कि आप मुझे परेशान नहीं करेंगे।"

मजिस्ट्रेट खुशी से पागल होकर इस धनी उत्तराधिकारिणी के चरणों पर झुक गया।

"मैं आपका दास बनकर रहूँगा।" वह बोला।

"जनाब, जब आपको सब रसीदें मिल जाये" वह इत्मीनान से उसकी ओर देखते हुए कहती गई, "तो आप उन्हें बिलों समेत लेकर मेरे चचेरे भाई के पास चले जायें और इस पत्र के साथ उन्हें देदें। जब आप लौटेंगे तो मैं अपना वादा पूरा करूँगी।"

मजिस्ट्रेट सारी स्थिति को भली प्रकार समझ गया कि वह मुझे प्रेम में निराश होकर स्वीकार कर रही है। फिर वह मादमुआज़ेल ग्रांदे के आदेश का पालन करने जितनी जल्दी सम्भव हो सका, वहाँ से चल-दिया। उसे डर था कि कहीं दोनों प्रेमियों में सुलह न हो जाय।

मोसियो दे वोनफोन के विदा होते ही योज़ेन कुर्सी पर गिर पड़ी और फूट-फूट कर रोने लगी। सब कुछ खत्म हो चुका था और यह इस कहानी का अन्त था।

मजिस्ट्रेट डाकगाड़ी से पेरिस रवाना हुआ और दूसरी शाम वहाँ पहुँच गया। अगले दिन सुबह को वह दे ग्रासीं के पास गया और तमाम लेनदारों से उस सरकारी वकील के दफ्तर में आने को कहा जहाँ उसके

बिल जमा थे। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति ठीक समय पर पहुँच गया—लेन-दरों को भी उनके गुणों के लिए दाद मिलनी चाहिए।

मोसियो दे वोनफोन ने मादमुआज़ेल ग्रांदे की ओर से असल और सूद समेत तमाम रक़म अदा करदी। उन्हें सूद भी मिला था! पेरिस के व्यापारिक जीवन में यह एक विचित्र घटना थी। जब यह सब काम पूरा हो गया और मोसियो दे ग्रासीं को भी उसकी सेवाओं के लिए पचास हजार फ्रांक अदा कर दिये गये तो मजिस्ट्रेट होटल दे ओब्रियों पहुँचा। सौभाग्य से शारल उस समय घर पर मौजूद था और उसका भावी ससुर उससे बहुत नाराज़ था। बूढ़े मार्कोई ने थोड़ी ही देर पहले उससे कहा था कि जब तक ग्योम ग्रांदे के लेनदारों का हिसाब चुकता न हो जाय वह उसकी बेटी से ब्याह का विचार तक अपने मन में न लाये। अतएव इस विकट स्थिति में मजिस्ट्रेट ने शारल को योज़ेन का पत्र दिया, जिसमें लिखा था:

"प्यारे भाई!

मेरे चचा की जायदाद पर जो कर्ज था, उसे मोसियो दे वोनफोन ने चुका दिया है और वह स्वयं सारी रसीदें आप तक पहुँचाने आये हैं। साथ ही मैंने यह पत्र भी दिया है ताकि मुझे उनके सावधानी से आप तक पहुँच जाने का विश्वास हो सके। मुझे दिवालिया घोषित होने की सूचना मिली थी और मुझे ख्याल आया कि सम्भव है इस कारण मादमु-आजेल दे ओब्रियों से आपका विवाह होने में कुछ बाधा पड़े। हाँ, भाई! आपने मेरे स्वभाव, रहन-सहन और शिक्षा-दीक्षा का अनुमान ठीक लगाया है। जैसा कि आपने लिखा है, मैं अब तक दुनिया से इतनी अलग-थलग रही हूँ कि मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। और मुझ जैसे प्राणी का साथ आपको वह प्रसन्नता न दे सकता, जिसकी आपको उच्च सोसाईटी से आशा है। उम्मीद है कि सामाजिक परम्परा के अनुसार आपको वह प्रसन्नता अवश्य प्राप्त होगी, जिसके लिए आपने अपने पहले प्रेम को त्याग दिया है। आपकी प्रसन्नता को सम्पूर्ण बनाने के लिए मेरे वश

में सिर्फ यही एक बात थी कि मैं आप के पिता को बदनामी से बचा लूं। प्रणाम ! आप अपनी इस चचेरी बहन को सदा अपना हमदर्द पायेंगे ।

—योज़ेन"

जब उसकी दृष्टि रसीदों पर पड़ी तो इस सामाजिक उन्नति के मतवाले के मुँह से हठात् प्रशंसा के वाक्य निकल पड़े । मजिस्ट्रेट यह सुन-कर मुस्कराया और बोला :

"हम दोनों अब शादी का ऐलन कर सकते हैं !"

"ओह ! तो क्या योज़ेन से शादी करने वाले हैं ? अच्छा, मुझे यह सुनकर खुशी हुई । वह बड़ी नेक लड़की है। अरे हाँ !" सहसा एक विचार उसके मन में बिजली के सदृश कौंध गया । "वह तो बहुत अमीर होगी ?"

"चार दिन पहले उसके पास एक करोड़ नब्बे लाख की रक़म थी; लेकिन आज सिर्फ एक करोड़ सत्तर लाख रह गया है ।" यह कहते हुए मजिस्ट्रेट की आँखों में द्वेष झलक आया । शारल विमूढ़-सा उसकी ओर देखता रह गया ।

"एक करोड़ सत्तर......"

"हाँ जनाब, एक करोड़ सत्तर लाख ! जब हमारी शादी हो जायगी तो हम दोनो सात लाख पचास हज़ार लीवर सालाना की बचत किया करेंगे ।"

"मेरी प्यारी बहन !" शारल ने अपने आपको कुछ सचेत करते हुए कहा, "हम दोनों एक दूसरे का धन बढ़ाते रहेंगे ।"

"निस्संदेह !" मजिस्ट्रेट ने कहा, "आपके लिये एक और चीज़ है । यह एक छोट-सा डिब्बा है, जो मुझे सिर्फ आप ही के हाथ में देने का हुक्म मिला था ।" यह कहते हुए उसने एक बक्स मेज़ पर रख दिया, जिसमें सिगारदान था ।

इतने में दरवाजा खुला और मादाम दे ओन्नियों भीतर आगई। यह महिला मजिस्ट्रेट की उपस्थिति से सर्वथा अनजान मालूम होती थी ।

"सुनो मेरे प्यारे बेटे !" वह बोली, "मोसियो दे श्रोब्रियों जो तुम से उलटी-सीधी बातें करते रहे हैं, तुम उनका कुछ ख्याल न करना। डचेज़ दे विशोलोव ने उनका दिमाग खराब कर दिया है। मैं फिर कहती हूँ कि तुम्हारी शादी में कोई भी रुकावट नहीं······"

"नहीं मादाम।" शारल ने उत्तर दिया, "मेरे पिता पर जो तीस लाख का कर्ज़ा था, वह कल अदा कर दिया गया है।"

"पैसे भर दिये हैं ?" उसने पूछा।

"जी हाँ, असल और सूद समेत। मै उनके नाम को कलंकित न होने दूंगा।"

"क्या फिजूल बक रहे हो ?" उसकी सास चिल्लाई, "यह आदमी कौन है ?" उसने पहली बार क्रोसो को देखा और शारल के कान में पूछा।

"यह मेरा कारिन्दा है।" उसने धीरे से उत्तर दिया।

मादाम ने अवज्ञा से मोसियो दे वोनफोन को प्रणाम किया और कमरे से बाहर चली गई।

"हमने अभी से एक दूसरे का धन बढ़ाना शुरू कर दिया है।" मजिस्ट्रेट रुखाई से बोला। उसने अपनी टोपी उठाई और चलते हुए कहा "अच्छा भाई, प्रणाम।"

"यह सोमूर का बूढ़ा तोता मेरा मज़ाक उड़ा रहा है। जी चाहता है कि इसके तलवार भोंक दूं।" शारल ने सोचा।

लेकिन मजिस्ट्रेट जा चुका था।

तीन दिन बाद मोसियो दे वोनफोन सोमूर लौट आया। उसने योज़ेन से अपने विवाह की घोषणा कर दी। छः महीने बाद उसे आँज़े की अदालत में कौंसलर की जगह मिल गई। और वे दोनों वहाँ चले गये। लेकिन सोमूर छोड़ने से पहले योज़ेन ने वे जेवरात जो उसके लिए इतने मूल्यवान और पवित्र रह चुके थे पिघलाकर उन आठ हज़ार फ्रांक समेत जो उसके चचेरे भाई ने उसे भेजे थे उस गिरजे की बलिवेदी पर

चढ़ाने के लिये दे दिये, जहाँ जाकर वह शारल के लिए प्रार्थना किया करती थी। अब वह कुछ दिन आँजे में व्यतीत करती और कुछ दिन के लिये सोमूर चली आती। एक बार राजनैतिक संकट के दिनों में दे वोनफोन ने सरकार की बहुत तरफदारी की थी, जिसके एवज़ पहले उसे प्रेसिडेंट आफ दी चैम्बर का पद दिया गया और अन्त में प्रथम प्रधान नियुक्त हुआ। फिर वह बड़ी अधीरता से आम चुनाव की प्रतीक्षा करने लगा। वह मंत्री बनने के स्वप्न देख रहा था। उसे काऊंट की उपाधि मिलने की भी आशा थी और फिर उसके बाद·······

"तब तो वे शायद सम्राट को भी भैया कहने लगेंगे!" नांनों ने कहा।

लम्बी-तडंगी नांनों अब सोमूर के एक रईस की पत्नी बन चुकी थी। उसकी मालकिन उस समय अपने पति के उच्चपद और दिन-दिन बढ़ रहे साहस का जिक्र कर रही थी।

लेकिन अंत में उसके इतने स्वप्नों में से कोई भी पूरा न हुआ। और मोसियो दे वोनफोन के नाम में और किसी नाम का परिवर्तन न हुआ। उसने अपना पारिवारिक नाम क्रोशो बिलकुछ छोड़ दिया था। सोमूर में डिप्टी के पद पर नियुक्त होने के आठ दिन बाद उसका देहान्त हो गया। भगवान जो सब के दिल की जानता है कभी अकारण दंड नहीं देता। उसे भी निश्चय ही अपनी धूर्तता का दंड मिला था। उसने बड़ी चालाकी से विवाह के प्रतिज्ञा पत्र में ये शर्तें रखी थीं :

"अगर कोई संतान न हो तो पति और पत्नी में से जो पहले मर जाये उसकी सारी सम्पत्ति दूसरे को मिलेगी। ऐसी स्थिति में जायदाद की कोई सूची भी न बनाई जायगी। और इस शर्त से कोई चीज़ भी अपवाद न होगी।"

अतएव इस प्रतिज्ञा पत्र से भली प्रकार यह बात समझी जा सकती है कि मजिस्ट्रेट अपनी पत्नी के अलग रहने की इच्छा का इतना आदर क्यों करता था। स्त्रियाँ मजिस्ट्रेट को बहुत ही कोमल-हृदय और न्याय-

प्रिय व्यक्ति समझती थीं; इसलिए उन्हें उससे पूरी हमदर्दी थी और वे प्राय: योज़ेन को दोष देती थीं, जो अब तक अपने दुख और प्रेम में उलझी हुई थी। हमदर्दी के आवेश में वे स्वभावानुसार मजिस्ट्रेट की पत्नी की आलोचना करते हुए कटु वाक्य भी कह जातीं :

"मालूम होता है बेचारी मादाम दे वोनफोन का स्वास्थ्य बहुत खराब है वरना वह पति से कभी इस प्रकार अलग न रहती। भगवान जाने अब वह अच्छी भी होगी या नहीं ? वरना और क्या कारण हो सकता है। वह पेरिस जाकर किसी बड़े डाक्टर को क्यों नहीं दिखाती ? बहुत दिन से उसका रंग भी पीला पड़ गया है। आखिर उसे बच्चे की इच्छा क्यों नहीं है ? सुना है कि उसे अपना पति बहुत प्रिय है तो फिर उसे अपनी जायदाद का वारिस भी तो पैदा करना चाहिए जो उसका स्थान ग्रहण कर सके। ज़रा सोचो तो सही कितनी अजीब बात है ! अगर उसके मन में कोई उल्टी-सीधी बात समा गई है तो उसे किसी हालत में क्षमा नहीं किया जा सकता। बेचारा मजिस्ट्रेट !"

एकान्त और भक्ति का जीवन बिताने से मनुष्य में एक नई बुद्धि उत्पन्न हो जाती है। अतएव कुछ सालों के आदर्शवादी जीवन, दुख और विषाद और एकांत ने योज़ेन में भी इन संकीर्णतावादी लोगों को समझने की योग्यता उत्पन्न कर दी थी। वह जानती थी कि मजिस्ट्रेट को उसकी मृत्यु का इंतज़ार है ताकि वह उसकी विशाल सम्पत्ति का एकमात्र स्वामी बन जाय। अब इस सम्पत्ति में पादरी और सरकारी वकील की मृत्यु से और भी वृद्धि हो गई थी। उन दोनों को भगवान ने भू-लोक से स्वर्ग में बुला लेना उचित समझा था। बेचारी अकेली स्त्री सब कुछ समझती थी और उसे मजिस्ट्रेट पर दया आती थी। स्वार्थ और लोभ के कारण ही वह योज़ेन के असफल प्रेम का इतना आदर करता था क्योंकि बच्चे का जन्म होने पर भी उसके अहंवादी स्वप्नों और महत्त्वकांक्षाओं का अन्त होता। और आखिर भगवान ने उसकी इस निष्ठुर उदासीनता और धूर्तता का यह बदला लिया।

वह भगवान् की कैदी मात्र थी। भगवान् उसके सम्मुख सोने के अम्बार लगा रहा था यद्यपि उसके लिए सोने का कोई महत्त्व न था। उसे जीना पड़ रहा था। वह सदा परलोक के ध्यान में लीन रहती थी। अपने साथियों के प्रति उसके मन में सद्भावनायें थीं और वह गरीबों और पीड़ितों की गुप्त रूप से सहायता करती रहती थी। मादाम दे वोनफोन विवाह के तीन साल बाद विधवा हो गई। इस समय उसकी वार्षिक आय आठ लाख लीवर थी।

वह अब भी उतनी सुन्दर है जितनी कि कोई चालीस साल की रमणी हो सकती है। उसका चेहरा अब बहुत ही पीला और गम्भीर हो गया है और उसके धीमे स्वर में विषाद का सम्मिश्रण है। उसका स्वभाव बहुत ही सरल है। उसमें ऐसा आत्मसम्मान है जो बड़े-बड़े दुख उठाने के बाद उत्पन्न हो जाता है और दुनिया में रहते हुए भी उसकी आध्यात्मिक पवित्रता निर्मल और विशुद्ध है, लेकिन इसके साथ ही साथ उसमें वृद्धाओं की सी कठोरता भी है और कस्बे वालों की-सी संकीर्णता और कंजूसी भी।

यद्यपि उसकी आय अब आठ लाख लीवर है फिर भी वह उसी प्रकार जीवन बिता रही है, जैसे उस ज़माने में जब वह कुँवारी थी और खाने का सामान और जलाने की लकड़ी नाप-तोलकर मिलती थी। बैठक के आतिशदान में आग सिर्फ उन्हीं दिनों में जलाई जाती है जिन दिनों उसके पिता के जमाने में जलाई जाती थी। घर में जो कायदे-कानून उसके बचपन में लागू थे, वे अब भी उसी प्रकार लागू हैं। वह वस्त्र भी अपनी मां जैसे ही पहनने लगी है। उसका सर्द, अंधेरा और सूना-सा घर, जिसे चारों ओर से काली फसील ने घेर रखा है ठीक उसी प्रकार का है, जैसा उसका जीवन है।

वह अपने कामों की भली प्रकार देख-भाल करती है और उसका धन हर साल बढ़ता चला जा रहा है, जिसे वह दान और धर्म के कामों में बड़ी उदारता से खर्च करती है, वरना लोग उसे भी कंजूस ही कहते।

बहुत सी धार्मिक और परोपकारी संस्थाओं, मुहताज घरों, अनाथालयों, पुस्तकालयों और सोमूर के बहुत से गिरजों को वह चंदा दिया करती है। अगर कुछ लोग उसे लोभी कहते हैं तो यह बात सर्वथा निराधार है।

कई बार लोग उसे परिहास में मादमुआज़ेल कहा करते हैं। लेकिन सच यह है कि मादाम दे बोनफोन का लोगों पर काफी दबदबा है। ऐसा लगता है जैसे प्रत्येक से हमदर्दी जताने वाली इस स्त्री के भाग्य ही में यह लिखा है कि लोग उसे अपनी धूर्तता और स्वार्थ-सिद्धि का साधन बनायें। उसके जीवन में जो इतना निरीह और निर्दोष है, अब सोने की सर्द और पीली चमक के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया। वह लोगों की कितनी ही भलाई क्यों न करे पर बदले में उसे अविश्वास ही मिलता है।

"बस एक तुम हो जो मुझ से प्रेम करती हो।" वह कभी-कभी नाँनों से कहा करती है।

इन सब बातों के बावजूद वह सबकी आपत्ति में काम आती है और किसी को कानों-कान खबर नहीं होती। उसका जीवन ही परोपकार में बीत रहा है। उसकी आत्मा की वास्तविक महानता ने उसकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा और वातावरण के प्रभाव को बहुत कम कर दिया है।

यह उस स्त्री की आत्म-कथा है जो दुनिया में रहते हुए भी दुनिया की नहीं है, जिसमें शानदार पत्नी और मां बनने के सभी गुण विद्यमान हैं, लेकिन जिसके न पति है, न बच्चे हैं और न परिवार है। कुछ दिनों से सोमूर के लोगों में यह अफवाह गर्म है कि वह अब मार्कोई दे फिरवाफों से विवाह करेगी क्योंकि अब उसके परिवार ने धनी विधवा को उसी प्रकार घेर रखा है जिस प्रकार क्रोशो परिवार एक ज़माने में योज़ेन के गिर्द मंडराया करता था। कहते हैं कि नांनों और कोरनिवाये भी मार्कोई का पक्ष लेते हैं, लेकिन कोई भी बात इससे अधिक असत्य नहीं हो सकती। लम्बी नाँनों और कोरनिवाये दोनों में से किसी में भी इतनी बुद्धि नहीं है कि वे दुनिया की धूर्तता को समझ सकें।

◇ ◇ ◇